जर्मनी, पोलैण्ड और बहुत-से अन्य देशों से लेखक को दर्जनों की संख्या में पत्र प्राप्त हुए हैं। "इस पुस्तक की गणना उन सर्वोत्तम सोवियत उपन्यासों में की जाती है, जो पिछले कुछ सालों में प्रकाशित किये गये हैं।" – विदेशों से इस आशय के पत्र लेखक को मिले हैं। "अपने अमरीकी मेहमान के माध्यम से, गेम्यांक सोवियत संघ और पूंजीवाद के बीच मुख्य अन्तर स्पष्ट करने में सफल हुआ है।

सम्भव है यह पुस्तक वाद-विवाद का विषय बने। कुछ लोगों को यह पसन्द आ सकती है, और कुछ को नहीं। पर इस में कोई शक नहीं कि कोई भी पाठक इस के प्रति उदासीन नहीं रह पायेगा।

पुस्तक की भूमिका से लेखक तथा उसके रचनात्मक कार्य के बारे में पता चलता है।

येवगेनी पेर्म्याक

दो भाई

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक — भीष्म साहनी

दो शब्द,
अपने बारे में और पुस्तक के बारे में

अछूती भूमि के इलाक़े में—साइबेरिया की कुलुन्दा नामक स्तेपी में—मेरा श्रमिक जीवन आरम्भ हुआ था। अब वहां पर भरपूर खेत लहलहाते हैं और नयी बस्तियां उठ खड़ी हुई हैं। परन्तु उन दिनों वह इलाक़ा वीरान था और आबादी बड़ी विरल थी। इस शताब्दी के तीसरे दशक में मैं वहां काम किया करता था।

१९२३ में मैं अपनी जन्मभूमि उराल में था। दिन के वक़्त मैं काम करता और शाम को पढ़ता और शीघ्र ही मैंने पेर्म के राजकीय विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा पास की। १९२९ में मैंने इसी विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा पास की और पेशेवर साहित्यिक बना। इससे पहले, विद्यार्थियों और श्रमजीवी युवकों के विभिन्न प्रकाशनों के व्यवस्थापक के रूप में मैं कुछ अनुभव ग्रहण कर चुका था। कला, साहित्य और विज्ञान के प्रति नौजवानों में बड़ा उत्साह पाया जाता था।

मैंने लेख, नाटकीय रूपान्तर और लघु-नाटक प्रकाशित किये।

१९३८ में मुझे सोवियत संघ के लेखक-संघ का सदस्य बना लिया गया। मेरी पहली उल्लेखनीय पुस्तक थी 'क्या बनें?'—जो धन्धा चुनने के विषय पर लिखी एक कहानी थी। सौभाग्यवश मैं एक ऐसे स्कूल में पढ़ता रहा था जहां सात धन्धों में से किसी एक धन्धे में प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य था। मैं उनमें से पांच धन्धे—बढ़ई, फ़िटर, मोची, लुहार और ख़रादी के धन्धे—सीखने में कामयाब हो गया। शायद इसी कारण धन्धा चुनने के बारे में लिखी मेरी पुस्तक कामयाब साबित हुई थी। यह पुस्तक अन्य देशों में भी प्रकाशित की गयी थी।

पिछले कुछ सालों में मैंने बच्चों के लिए बहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं, इनमें परी-कथाओं के संग्रह — 'दादा का गुल्लक', 'इन्द्र-धनुप' और 'सात सौ सतहत्तर दस्तकार', और बच्चों के लिए कहानी-संग्रह — 'उतावला चाकू', 'बारीक तार', 'नन्हे पंछी का पुल' आदि शामिल हैं। वयस्कों के लिए लिखी पुस्तकों में से मैं 'दो भाई' और 'बुढ़िया चुड़ैल' का जिक्र करना चाहूंगा।

यह कहना बहुत कठिन है कि एक उपन्यास किस भांति अस्तित्व में आता है। हमारा एक दूर-पार का सम्बन्धी अमेरिका गया, वहीं पर उसने शादी कर ली और बस गया, और उसके बाद उसकी इच्छा हुई कि एक बार अपनी जन्मभूमि को जाकर देखे। परन्तु इस घटना ने तो मेरे कथानक के लिए केवल खूंटी का काम किया। वास्तव में मेरे मन में बरसों से यह इच्छा रही थी कि दोनों संसारों (पूंजीवादी संसार और समाजवादी संसार) के प्रतिनिधियों को जन-साधारण के स्तर पर खुलकर बातें करने का अवसर जुटाऊं, और यही इच्छा पुस्तक लिखने का वास्तविक कारण बनी। इस भांति उपन्यास की कथावस्तु और घटना-चक्र ने जन्म लिया।

पुस्तक संक्षिप्त रूप में 'सोवियत साहित्य' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी और इस बारे में मुझे बहुत-से पत्र उरुगाय, कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, पोलैण्ड और चेकोस्लोवाकिया से प्राप्त हुए थे। इन पंक्तियों के अज्ञात पाठक, आप से भी पत्र पाकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी।

येवगेनी पेर्म्याक

१

प्योत्र तेरेन्त्येविच बख़्रूशिन के सब काम ठीक ढर्रे पर चल रहे थे, और उस सुहावनी सुबह को धुंधलानेवाली कोई भी बदली कहीं नज़र नहीं आ रही थी।

अभी अभी प्योत्र तेरेन्त्येविच खेतों आदि का दौरा करके लौटा था। वह मन ही मन बहुत ख़ुश था, क्योंकि जो कुछ भी उसने वहां देखा था उससे उसे सन्तोष हुआ था। मकई ख़ूब पनप रही थी – देखकर दिल बाग़ बाग़ हो जाता था। और गर्मी के बावजूद गायों के दूध में कोई कमी नहीं हुई थी। छतों में इस्तेमाल की जानेवाली लोहे की चादरें – पूरी चौबीस टन – पहुंच चुकी थीं, जिनका उन्हें मुद्दत से इन्तज़ार रहा था। लगता था कि आकाश में सूर्य भी ख़ुश है और सामूहिक फ़ार्म के इस कामयाब अध्यक्ष पर आंखें मिचका रहा है। अब तो इनसान जीता ही जाय। कुछ भी हो सत्तावन बरस बहुत उम्र नहीं है। इस ढंग से चलते हुए तो बुढ़ापे को दूर रखा जा सकता था।

निजी जीवन में भी वह उतना ही सुखी था जितना कोई मनुष्य हो सकता है। नेव्यान्स्क में, उसके तीसरे पोते – प्योत्र – ने जन्म लिया था। और सारा परिवार उस रोज़ शाम को दादा के घर इकट्ठा हो रहा था।

दादा होने में बड़ा सुख है। सचमुच बड़ा आनन्द है। एक तरह से इनसान दूसरी बार बाप बनता है। कुछ ज़्यादा अक़्लमन्दी के साथ... और कहें तो कुछ ज़्यादा वज़नी तौर पर भी!

उसने जीमोलोस्त नामक अपने घोड़े पर से ज़ीन उतारी और उसे फ़ार्म के दफ़्तर के बाहर, खम्भे के साथ बांध दिया। फिर काम पर

आये हुए कुछेक बढ़इयों के साथ दुआ-सलाम करने के बाद जल्दी से प्रबन्ध-दफ़्तर के अन्दर चला गया। उसके पुराने, छोटे-से कक्ष में संगीत की हल्की हल्की धुनें लाउडस्पीकर पर से आ रही थीं, मानों उनके लिए फ़रमाइश की गयी हो। आर्केस्ट्रा राजहंसों के लयपूर्ण नृत्य की धुन बजा रहा था।

संगीत प्योत्र तेरेन्त्येविच का सहचर था। जीवन के कठोर वर्षों में संगीत से उसे बड़ी ढाढ़स मिलती रही थी।

बख़्रूशिन स्वभाव का दयालु और कोमल-हृदय जीव था। हां, दुनिया को वह अपना बाहरी रूखा रूप दिखाया करता, मानो अपने भावुक आन्तरिक व्यक्तित्व को दिखाने में उसे झेंप महसूस होती हो। ऐसे आदमी के लिए जिस के बाल सफ़ेद हो रहे हों, और साथ ही जो ऊंचे ओहदे पर काम कर रहा हो, किसी मनमोहिनी धुन को सुनकर मस्ती में झूमने से ज़रूर झेंप महसूस होगी। धुन अब बन्द हो चुकी थी लेकिन प्योत्र के सिर के अन्दर, जो काल की गति से सफ़ेद पड़ चुका था अभी भी गूंजे जा रही थी।

उसने लाउडस्पीकर को बन्द कर दिया और अपने मेज़ की ओर बढ़ गया। मेज़ पर एक चौरस लिफ़ाफ़ा रखा था जिसपर विदेशी डाक-टिकट लगे थे, और दो भाषाओं में सरनामा लिखा था।

"साशा!" उसने पुकारा, "कहां हो तुम?"

साशा – उसकी सेक्रेटरी-टाइपिस्ट अन्दर आयी। साशा छरहरे बदन की, सुनहरे बालों वाली लड़की थी, और एक हल्की-सी पोशाक पहने हुए थी।

"यह रही। मैं रिपोर्ट टाइप कर रही हूं।" वह बोली।

"यहां एक चिट्ठी रखी है, तुमने तो इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा।"

"मैं आपका ध्यान संगीत से हटाना नहीं चाहती थी... 'हंस-सरोवर' की धुन जो बज रही थी।"

बख़्रूशिन ने लड़की की ओर देखा और उपेक्षा का बहाना करते हुए बोला –

"क्या वह 'हंस-सरोवर' से थी? मैंने तो ध्यान नहीं दिया।"

"रहने दो प्योत्र तेरेन्त्येविच," लड़की ने मुस्कराकर कहा, "मेरे सामने बनने की कोशिश नहीं करो। मैं शर्त लगाकर कह सकती हूं कि वे नन्हे राजहंस अभी भी तुम्हारी आंखों के सामने नाच रहे होंगे।"

"हो सकता है। लेकिन यह काम का वक़्त है, और तुम और मैं संजीदा लोग हैं, नहीं क्या?"

"मैं तो ज़रूर हूं!"

बख़्रूशिन हंस पड़ा।

"यह ख़त कहां से आया है, साशा?"

"अमेरिका से।"

"क्या कहा? अमेरिका से?"

"न्यू-यार्क से, लिफ़ाफ़े पर लिखा है।"

बख़्रूशिन ने आंखों पर चश्मा लगाया और पता पढ़ने लगा—

"सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष महोदय, प्योत्र तेरेन्त्येविच बख़्रूशिन के नाम"।

"अमेरिका में भला मेरा नाम किसे मालूम होगा?" उसने कहा।

लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया।

"यह चिट्ठी ज़रूर उन नसली सांड़ों के बारे में होगी," बख़्रूशिन बोला, "हमसे निर्यात के लिए पांच नसली सांड़ लिये जा रहे हैं। तुमने इसे खोल लिया होता और मुझे बता दिया होता।"

"उस पत्र को खोलने का मुझे कोई अधिकार नहीं है।"

"क्या मतलब? क्या तुम सारी डाक नहीं पढ़ती हो?"

"हां, लेकिन इस ख़त की बात दूसरी है।" साशा ने जवाब दिया।

बख़्रूशिन ने फिर एक वार लिफ़ाफ़े की ओर देखा, और भेजनेवाले का नाम पढ़ते ही सहसा चुप हो गया। उसकी कमर में दर्द-सा उठा और लगा जैसे फ़र्श हवा में उठकर टेढ़ा-सा हो गया है। क्षण-भर के लिए उसकी आंखों के सामने अन्धेरा छा गया, फिर अन्धेरा हट गया और उसके स्थान पर रोशनी फैल गयी। तेज़ रोशनी।

"तुम जाओ साशा, और रिपोर्ट टाइप करो। दरवाज़े में से चाभी निकाल लो। देखना, दसेक मिनट के लिए मेरे पास कोई न आये।"

अपना लिया है और तीस दिन के लिए सोवियत संघ में जाने की इजाज़त मांगी थी—इनमें आने-जाने के, सफ़र के दिन, शामिल नहीं हैं। और यहां हमारे डिपार्टमेंट को भी इसमें कोई बुराई नज़र नहीं आयी कि मैं अपने भाई से मिलना चाहता हूं और अपने जन्म के गांव को एक नज़र देखना चाहता हूं। कागज़ात हासिल करने में जॉन टेनर ने मेरी मदद की है। वह अख़बारों के लिए लेख लिखता है, और अब मेरे साथ आ रहा है ताकि अपने वतन में मेरे पहुंचने और गांव में मेरे जीवन के बारे में ब्योरे के साथ लिख सके। इतना ही नहीं, अब चूंकि मैं मोलोकान हूं, मैं उस वक़्त तक मर नहीं सकता जब तक घुटनों के बल तुमसे और दार्या स्तेपानोव्ना से—जिसे मैं इस लिए छोड़ आया था कि मैं जवानी में मरने से डरता था—क्षमा न मांग लूं, अपने लिए नहीं बल्कि अपनी आत्मा के लिए।

"और यदि, प्योत्र, तुम मुझे क्षमा नहीं करोगे, और मुझे उस घर में घुसने नही दोगे जिसमें मैं जन्मा और पलकर बड़ा हुआ था, तो मैं कम से कम उन प्यारी खिड़कियों के बाहर एक भटके हुए आदमी की भांति खड़ा रहूंगा, मैं अपने पिता और माता की क़ब्र पर बैठूंगा और फिर न्यूयार्क राज्य में अपने फ़ार्म पर लौट आऊंगा।

"तुम्हारे देश के अख़बारों में से लोगों ने मुझे तुम्हारे बारे में और दार्या स्तेपानोव्ना के बारे में पढ़कर सुनाया था। उनमें लिखा था कि गायों की एक नयी नस्ल तैयार करने के लिए तुम्हें पदकों से पुरस्कृत किया गया है। तब मैंने फ़ौरन बख़्रूशी जाने का निश्चय कर लिया।

"सच मानो, भैया प्योत्र, मैं खुले दिल से तुम्हारे पास आ रहा हूं। तुम्हें मेरा ख़र्च बरदाश्त नहीं करना पड़ेगा। मैंने अपने यहां की मुद्रा देकर तुम्हारे देश की मुद्रा प्राप्त कर ली है, और अब मुझे जितने धन की ज़रूरत है, मेरे पास मौजूद है। मेरे प्रति अपने दिल में कोई मैल नहीं लाना, तुम भी मुझे खुले दिल से मिलना, भले ही तुम मेरे पापों को क्षमा नहीं कर पाओ जो मैंने तुम्हारे प्रति और अपनी पहली पत्नी दार्या स्तेपानोव्ना के प्रति किये हैं।

"अब ज़िन्दगी के इने-गिने दिन बाक़ी रह गये हैं, प्योत्र, और हमें

इस संसार में एक दूसरे से इनसानों की तरह विदा लेनी चाहिए। हमारा एक दूसरे के साथ अब कोई झगड़ा नहीं है। जब मैं तुम्हें सारी कहानी सुनाऊंगा और सारी बात उसी तरह साफ़ साफ़ बताऊंगा जैसे पादरी के सामने अपराध-स्वीकृति के समय बताया जाता है तो तुम समझ जाओगे।"

इसके बाद लड़खड़ाती-सी लिखावट में दस्तख़त किया हुआ था: "त्रोफ़ीम त० बख़्रूशिन"।

इस चिट्ठी को पूरे चार बार पढ़ चुकने और इस में छिपे अर्थ को समझने की चेष्टा करने के बाद, प्योत्र तेरेन्त्येविच ने साशा को बुलाया और जीमोलोस्त को अस्तबल में ले जाने को कहा। इसके बाद उसने गैरेज में टेलीफ़ोन किया और उनसे मोटर भेजने को कहा, "जैसी भी मोटर भेज सकते हो, भेज दो, भले ही कोई टिप-अप लॉरी भेज दो।"

दस मिनट बाद वह आग बुझानेवाली लॉरी पर सवार ज़िला पार्टी समिति की ओर बेतहाशा बढ़े जा रहा था।

२

उसी रोज़ दार्या स्तेपानोव्ना को भी, जो चालीस साल पहले अपने पति को "दफ़ना" चुकी थी, अमेरिका से एक पत्र मिला। यह पत्र उसे डाकिया लड़की अरीशा ने बछड़ा-घर में दिया था जहां दार्या स्तेपानोव्ना सलोतरी का इन्तज़ार कर रही थी। ऐनक पास में न होने के कारण उसने अरीशा से ख़त पढ़कर सुनाने को कहा—अरीशा उसकी दूर-पार की, दूसरे पति की ओर से रिश्तेदार भी थी।

यह पत्र उस पत्र का संक्षिप्त रूप ही था जो प्योत्र तेरेन्त्येविच को मिला था। इस आकस्मिक समाचार का जो असर बख़्रूशिन के मन पर हुआ था उससे भी कहीं ज़्यादा ज़ोरदार असर दार्या स्तेपानोव्ना के मन पर हुआ, पर स्वाभिमानिनी होने के कारण दार्या स्तेपानोव्ना ने इसकी झलक चेहरे पर नहीं आने दी।

ख़त पढ़ चुकने के बाद, अरीशा ने, जो इस ख़बर को लेकर गांव के लोगों में सनसनी फैलाने के लिए उतावली हो रही थी, दार्या स्तेपानोव्ना से पूछा—

"अब क्या होगा चाची?"

दार्या स्तेपानोव्ना उस फ़ोटो को उड़ती हुई नजर से देखकर, जो पत्र के साथ भेजा गया था, लापरवाही से बोली—

"इस क़िस्म की चिट्ठी में तुम्हारी दिलचस्पी भले ही रही हो अरीशा, पर मेरे लिए तो वह वैसा ही है जैसा बिन-बुलाया सपना। आंखें खोली नहीं कि सपना मन से उतर गया।"

"ठीक कहती हो चाची, चिट्ठियों की तरह सपने भी बिन-बुलाये आते हैं, और कुछ तो ऐसे बेशर्म होते हैं कि समझ में नहीं आता उनका क्या करें।"

जवाब में दार्या स्तेपानोव्ना बोली—

"इसमें समझने की क्या बात है? अगर वे इतने ही निर्लज्ज हैं तो उनके साथ औपचारिकता निभाने की कोई ज़रूरत नहीं..."

अरीशा के कान खड़े हो गये और दार्या स्तेपानोव्ना फ़ोटो के टुकड़े-टुकड़े करके नाली में फेंकने लगी। पर जब वह चिट्ठी के साथ भी वैसा ही करने लगी तो अरीशा ने उसे रोक दिया—

"पर चाची, क्या यह चिट्ठी प्योत्र तेरेन्त्येविच को नहीं दिखाओगी?"

"हां, तुम ठीक कहती हो," दार्या स्तेपानोव्ना ने कहा। "इसे अध्यक्ष के हाथ में दे देना। मुझे बछड़ा-घर में टीकों का काम देखना है, मेरे पास अमेरिका के लिए या किसी दूसरे के लिए वक़्त नही है।"

चिट्ठी ने दार्या स्तेपानोव्ना के दिल में जो हलचल मचा दी थी, उसे उसने छिपाने की बहुतेरी कोशिश की लेकिन डाकिया लड़की की पैनी नजर से वह छिपी न रह सकी। दार्या स्तेपानोव्ना का चेहरा पीला पड़ गया था और बायीं आंख बार बार फड़कने लगी थी, जो एक उद्विग्न मन की स्पष्ट निशानी होती है। तो यह चिट्ठी आख़िर दार्या स्तेपानोव्ना के लिए इतनी बेतलब नहीं थी, और अगर चाची ने ख़ुद चिट्ठी को पढ़ा होता तो फ़ोटो के टुकड़े—पीले और मुड़े हुए—इस वक़्त नाली में नहीं तैर रहे होते।

"आज मैं ज़रूर इसे प्योत्र तेरेन्त्येविच के हाथ में दे दूंगी।" अरीशा ने चहकते हुए वचन दिया। उन रहस्यपूर्ण अमरीकियों के आने की ख़बर सचमुच ही बड़ी उत्तेजनाजनक थी।

लड़की चली गयी, और दार्या स्तेपानोव्ना पीछे बछड़ा-घर में स्मृतियों और विचारों में खोयी हुई अकेली रह गयी। विचारों और स्मृतियों की एक बाढ़-सी आयी और दार्या स्तेपानोव्ना का मन उसमें इस क़दर डूबने-उतराने लगा कि उसके लिए, शायद जीवन में पहली बार, अपनी भावनाओं को समझ पाना और यह निश्चय कर पाना कठिन हो गया कि वह क्या करे।

हां, त्रोफ़ीम उसकी बड़ी बेटी नदेज्दा का बाप था, हालांकि उसने कभी भी नदेज्दा को नहीं देखा था। उसे तो इतना भी मालूम नहीं था कि उसके एक बच्चा हुआ था। इसके अलावा, क्या नदेज्दा इस आदमी को अपना पिता मानेगी जो "मुर्दों" में से फिर से ज़िन्दा होकर आ गया है। यह आदर का शब्द तो वह एक दूसरे आदमी के प्रति इस्तेमाल करती थी, उस आदमी के प्रति जिसने उसे पालकर बड़ा किया था और जो उससे पिता की भांति प्रेम करता था... फिर भी बेटी तो वह त्रोफ़ीम की ही थी...

जन्म-सर्टिफ़िकेट बदला जा सकता है, कुलनाम बदला जा सकता है, यह भी समझा जा सकता है कि शादी कब की रद्द हो चुकी है, पर त्रोफ़ीम और दार्या फिर भी सदा के लिए नदेज्दा के पिता और माता ही रहेंगे।

फ़ोटो में अंकित त्रोफ़ीम के चेहरे को तो फाड़ा जा सकता है, जलाया जा सकता है, पर नदेज्दा के चेहरे पर से त्रोफ़ीम के नाक-नक्श की छाप को—भौंहों की बनावट, सिर घुमाने के ढंग और स्वभाव की विशेषताओं को—तो नहीं मिटाया जा सकता।

स्मृति कभी समझौता नहीं करती। अतीत की किसी भी चीज़ को जो जीवन में एक बार रह चुकी हो और जिसकी अनुभूति हो चुकी हो, स्मृति झुठला नहीं सकती, उसे दूर नहीं कर सकती, उसे बढ़ाकर बड़ा नहीं कर सकती, काट नहीं सकती, यहां तक कि उसे बदल भी नहीं सकती।

स्मृतियों की बाढ़ को मन में से निकालने, अपनी जवानी के गिने-चुने आवेगभरे दिनों की याद से भाग निकलने की दार्या स्तेपानोव्ना व्यर्थ ही चेष्टा कर रही थी।

सलोतरी आया, और एक युवा शागिर्द की मदद से नस्ली बछड़ों को टीका लगाने लगा। लगता है कि उन बातों को याद नहीं करना चाहिए जो मुद्दतों पहले घटी हों, और जिन्हें ज़िन्दगी के अठावनवें वर्ष में फिर से जगाना अनुचित हो, पर दार्या स्तेपानोव्ना अपनी स्मृतियों से बच नहीं पायी, और मानो स्वप्न में, एक के बाद एक दृश्य उसकी आंखों के सामने घूमने लगा।

बख्रूशी की पुरानी सड़क, जहां ईस्टर से एक दिन पहले, बारिश हो रही थी और त्रोफ़ीम पहली बार उससे मिला था और उसके साथ दो बातें की थीं...

दार्या की आंखों के सामने शुत्योमी खड्ड का दृश्य घूम गया। शगूफ़े से खिले, चांदी की तरह झिलमिलाते बर्ड-चेरी के वृक्ष खड़े थे... दार्या ने ख़ुद भी सफ़ेद रंग की पोशाक पहन रखी थी मानो सफ़ेद फूलों से लदे बर्ड-चेरी के वृक्षों से होड़ ले रही हो। जगह जगह, पेड़ों पर त्रोफ़ीम ने दान्ते काटकर निशान बना दिये थे और इन्हीं निशानों को देख देखकर दार्या जंगल में, लुक-छिपकर, उस जगह की ओर बढ़ती जा रही थी जहां वे एक दूसरे से मिला करते थे...

फिर उसकी आंखों के सामने त्रोफ़ीम के दादा के घर का बड़ा कमरा घूम गया। उसके दादा का नाम द्यागिलेव था और वह कबाड़ी की दूकान किया करता था। विवाह की धूमधाम आंखों के सामने आयी... प्रेम और उल्लास के नशे में दार्या का सिर घूम रहा था... उसके चेहरे पर से त्रोफ़ीम की आंखें हटाये नही हटती थीं। फिर दार्या की आराधना में सुवह तक वह उसके सामने घुटनों के बल बैठा रहा था मानो उसे विश्वास नहीं हो पा रहा हो कि वे पति-पत्नी हैं...

उसके प्रथम, और जीवन के शायद एकमात्र प्रेम की स्मृति में कहीं छोटे से छोटा काला धव्वा भी नजर नहीं आ पाता था। बेशक उसने

अर्तेमी से भी एक तरह से प्रेम किया था। लेकिन वह भावना दूसरे प्रकार की थी। शायद उससे बेहतर ढंग की थी, मगर इससे भिन्न।

यदि उस समय, ओम्स्क के निकट त्रोफ़ीम सचमुच मर गया होता, और किसी दूसरे व्यक्ति के हाथ से वह पत्र लिखवाकर धोखा न दिया होता कि वह मारा गया है, तो उसे क्षमा किया जा सकता था, उसी तरह जिस तरह किसी भूल करनेवाले आदमी को क्षमा कर दिया जाता है। परन्तु अब—वह जिन्दा था। उसने सचमुच दार्या को धोखा दिया था, अपनी जान बचाने के लिए उसे पांव तले रौंद डाला था। उसे परवाह नहीं थी कि वह कहां रह रहा था, और किसके साथ रह रहा था, वह केवल ज़िन्दा रहना चाहता था।

अब भी त्रोफ़ीम ने उसके प्रति तनिक भी आदर का व्यवहार नहीं किया था। उसने दार्या की ख़ातिर नहीं बल्कि अपनी ख़ुशी के लिए अपने को ज़िन्दा ज़ाहिर किया। उसने क्षण-भर के लिए भी रुककर यह नहीं सोचा था कि चालीस साल के बाद दार्या उससे भला क्यों मिलना चाहेगी।

उसने फ़ेल्ट टोपी तो हासिल कर ली थी लेकिन टोपी के नीचे कुछ भी नहीं बटोर पाया था।

वह क्षमा चाहता था। अच्छी बात है... पर इससे त्रोफ़ीम को क्या लाभ होगा? इससे उसके जीवन पर क्या असर पड़ेगा? इससे क्या वह बेहतर महसूस करने लगेगा? इसमें भी वह केवल अपने बारे में ही सोच रहा था।

और दार्या?

नहीं, मिस्टर त्रोफ़ीम बख़्रूशिन। हमारी मुलाक़ात नहीं होगी। न तुम दार्या से, न बेटी नदेज्दा से और न ही नाती-पोतों से मिल पाओगे। तुम्हारे लिए तो वे जिन्दा हुए न हुए एक ही बात है। और लोगों के जो मन में आये करें। हर व्यक्ति अपनी ही राह चलता है। ऐसी भी स्थिति नहीं थी कि वह कोई राजदूत था, कोई प्रतिनिधि या कोई ऐसा आदमी जिसकी ख़ातिरदारी करनी पड़ती है।

यात्री! जहां उसका मन आये यात्रा करता फिरे। इससे दार्या को क्या मतलब? और अगर त्रोफ़ीम उसे याद करना चाहता है तो उसी

[illegible] जिसमें वह पहले हुआ करती थी। इस उम्र में वह उसे अपना चेहरा क्यों दिखाये?

कुछ भी हो, दार्या उससे नहीं मिलेगी। बस, ख़त्म हुई बात।

"दार्या स्तेपानोव्ना, मैंने सुना है अमेरिका से आपको ख़त आया है," टीकों के बीच सलोतरी ने कहा।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?" वह पूछने ही वाली थी जब सहसा समझ गयी कि सलोतरी को यह सूचना कहां से मिली होगी।

"हां," उसने जवाब दिया, "मुझे उस दुनिया से ख़त आया है। केवल उसका मेरे साथ कोई वास्ता नहीं है। मैं तो कूव्शा में अपने भतीजे से मिलने जा रही हूं।"

"इतनी जल्दी?"

"उस चिट्ठी से ताल्लुक रखनेवाले जितने कम लोग होंगे उतना ही अच्छा।" दार्या स्तेपानोव्ना वार्तालाप को बीच ही में तोड़ती हुई जो निजी रूप लेता जा रहा था, बछड़ा-घर में से चली गयी।

३

"अमरीकी चिट्ठी" को न केवल बख़्रूशी में ही बल्कि आस-पास के गांवों में भी चर्चा का विषय बनते देर नहीं लगी—अरीशा ने अपनी ओर से उसमें कुछ मिर्च-मिसाला ज़रूर लगाया होगा।

प्रकटत: भूले-बिसरे अतीत को फिर से वाणी मिली। लोगों को याद आने लगे उन पहले बख़्रूशिन परिवार के घरेलू जीवन के छोटे छोटे ब्योरे, जिनके नाम पर संयुक्त सामूहिक फ़ार्म की वर्तमान "राजधानी" का नाम रखा गया था।

जो क़िस्से-कहानियां सुनने में आयीं, अगर उनमें से केवल सबसे दिलचस्प कहानियों को ही इकट्ठा करने की चेष्टा की जाय तो क़लम उन के साथ इन्साफ़ नहीं कर पायेगी।

तुदोयेव पति-पत्नी ही अतीत में सबसे गहरे और सबसे अधिक सावधानी से उतरे। अस्तबल के सतरसाला बड़े साईस किरील अन्द्रेयेविच तुदोयेव

और उसकी पत्नी पेलागेया कुज़मीनिश्ना ने जो बातें सुनायीं उनपर सबसे अधिक भरोसा किया जा सकता था हालांकि दोनों को कहानियां सुनाने और अतीत में रंग भरने की लत थी।

बूढ़े की कहानी पर से सभी सजावटी झालरें उतारकर केवल सारभूत बातों को पेश कर देने से ही हमें पता चल जायेगा कि दो बख़्रूशिन भाइयों के बीच जो एक ही छत के नीचे पैदा हुए थे किस तरह कलह शुरू हुई थी। अतीत की हमारी यात्रा में पूरे तीन अध्याय खप जायेंगे, पर आगे की कहानी के लिए यह आवश्यक भूमिका का काम देगी।

किरील अन्द्रेयेविच तुदोयेव ने जो कुछ बताया, वह संक्षेप में इस प्रकार है।

आज जिस जगह बख़्रूशिन का घर खड़ा है, उस जगह पर, लगभग सत्तर साल पहले, एक बेढब-सी झोंपड़ी हुआ करती थी, जिस में ले-देकर एक ही खिड़की थी और जो धीरे धीरे ज़मीन से मिलती जा रही थी। उस झोंपड़ी में प्योत्र नाम का, काले बालों वाला एक आदमी अपने बेटे के साथ रहा करता था। बेटे का नाम था तेरेन्ती। यही तेरेन्ती हमारे अध्यक्ष प्योत्र तेरेन्त्येविच का बाप था।

तेरेन्ती बड़ा सुन्दर, ऊंचा-लम्बा जवान था। सिर पर काले, घुंघराले बाल, इतने घने कि उनसे तीन सिर ढक जायें। और दिमाग़ इतना कि गांव के, पुराने ज़माने के चार लिखारियों की खोपड़ी में भी न समा पाये। क़द-बुत्त ऐसा और बदन में इतनी ताक़त कि संभाले न संभले। जब भी वह अपना अकार्डियन बाजा बजाता हुआ गली में से गुज़र जाता—यह बाजा उसे मेले की एक दौड़ में इनाम में मिला था—तो गांव की कोई लड़की न थी जिसका दिल न फड़क उठता हो।

लेकिन बख़्रूशिन परिवार आज की कमाई को आज ही खाकर जीता था। उनके पास एक घोड़ी थी, चितकबरी, जो चलती तो घुटने एक दूसरे से टकराते थे, और एक मरियल गाय थी, जो क़द-बुत्त में हमारे गोदाम के कुत्ते से बड़ी नहीं होगी। उनके पास ज़मीन का भी एक हथेली-भर टुकड़ा था, जिसपर इतना ही अनाज पैदा हो पाता कि बाप-बेटे के शरीर में सांस चलती रहे। पेट भरने के लिए दोनों फ़ैक्टरी में काम करते

थे। पिघलाऊ-भट्ठियों के लिए हाथ-गाड़ियों म कच्चा लोहा ढोया करते थे। इस कमाई से कोई नया घर क्या बनायेगा, ढंग के कपड़े या बूट क्या ख़रीद पायेगा। तो बूढ़े प्योत्र बख़्तूशिन ने अपने बेटे का ब्याह किसी धनी घर की लड़की से करने का निश्चय किया। और ऐसी लड़की मिल भी गयी। वह थी कबाड़ी की बेटी, दोम्ना द्यागिलेवा। उसका बाप न बोता था न काटता था, केवल गांव गांव घूमकर चिथड़े और हड्डियां, सींग और खुर बटोरा करता था और उनके बदले में तरह तरह की चीज़ें दिया करता था। द्यागिलेव परिवार का घर अभी भी मौजूद है। हमारा पुराना क्लब-घर उसी की बग़ल में बनाया गया था।

पुराने ज़माने के हिसाब से त्रोफ़ीम द्यागिलेव को हमारे गांव में अच्छा खाता-पीता आदमी समझा जाता था। उसके पास काफ़ी बड़ी जोत थी। चार खलिहान... सात घोड़े... सींग और चिथड़े ख़रीदने के लिए तीन आदमी नौकर रखे हुए थे... और घर में केवल एक ही, इकलौती बेटी थी। शक्ल-सूरत से—और तन-बदन से भी—सुघड़ नहीं थी, पर दहेज़ में और चीज़ों को छोड़कर नक़द एक हज़ार साथ लानेवाली थी। *और उन दिनों एक हज़ार का मतलब था चालीस घोड़ों का झुण्ड, अगर* पचास का नहीं तो, अगर उन्हें स्तेपी में रहनेवाले लोगों से अन-सधी हालत में लिया जाये। कहते हैं, कितनी ही अन्य चीज़ों के अलावा उसके पास चार फ़र-कोट थे, और उनमें से एक लोमड़ी की फ़र का था। तेरेन्ती का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए दिन में तीन बार अपना शॉल बदलती थी। पर तेरेन्ती उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता था। यह लड़की उसके सपनों की रानी नहीं थी। रानी तो थी लूशा नाम की एक लड़की, शुत्योमी के बनरक्षक की बेटी।

लूशा सुबक-सी लड़की थी, पर इतनी सुन्दर जैसे मूरत गढ़ी हो। कितनी ही रातें, और कितने ही बसन्त, तेरेन्ती का अकार्डियन प्रेम की अवसादपूर्ण धुनें बजाता रहा। रात के वक़्त जब अकार्डियन, नदी के पार, तेरेन्ती के दिल के उद्गार उंडेलता तो गांव की बड़ी-बूढ़ियों के दिल भी पसीज उठते और वे आंसू पोंछने लगतीं।

पर अकार्डियन से हर किसी का दिल नहीं पसीजता। ख़ास तौर

पर दरिद्रता के उस भेड़िये का जो दरवाज़े पर मुंह फाड़े खड़ा हो। उस साल स्थिति इतनी बुरी थी जितनी पहले कभी नहीं हुई थी। बरसात से फ़सल बरबाद हो गये थे और फ़ैक्टरियां गांववालों को काम पर लगाने के लिए उत्सुक नहीं थीं। बात क्या थी, लोहे के लिए मांग नहीं थी या कोई नुक्स पैदा हो गया था... पर हालत ख़राब थी...

प्योत्र भांप गया कि कबाड़ी की अड़ियल घोड़ी तेरेन्ती के साथ एक ही साज़ में जुतने के लिए ललक रही थी। और जब कबाड़ी ने तेरेन्ती के बाप को चार-पांच रूबल उधार दे दिये और लौटाने के लिए एक बार नहीं कहा तो वह भली भांति जानता था कि वह क्या कर रहा है। और पांच रूबलों से उन दिनों दो भेड़ ख़रीदने के बाद भी जेब में पैसे बच रहते थे, या एक अच्छा हल ख़रीदा जा सकता था। अच्छी ख़ासी रक़म हुआ करती थी, पांच रूबल!

तेरेन्ती के पिता ने ख़ूब सोचा-विचारा, हिसाब लगाया, हर बात को तौला-मापा और फिर एक दिन तेरेन्ती के उस अकार्डियन के विलाप से खीझ उठा। उसने ज़ीन के कच्चे चमड़े के पट्टे से बेटे को पैतृक नियम समझाने का फ़ैसला किया।

अकार्डियन का रुदन बन्द हो गया। और दोम्ना द्यागिलेवा नाम की पीले दान्तों वाली खूसट चहक उठी। और जंगलात की कली ने ख़ून के आंसू रोये। और बख़्रूशी की युवतियां गाने लगीं—

नीले जंगल के पीछे
सूरज छिप गया है...
चमकता सूरज
जा छिपा है...

बाप को दहेज़ की आधी रक़म—पूरे पांच सौ रूबल पेशगी मिल गयी। उसने लकड़ी के कुन्दे ख़रीदे, और बढ़ई काम पर लगाये, क्योंकि आख़िर चार फ़र-कोटों और कपड़े-लत्ते से भरे पांच सन्दूक़ों वाली दुल्हन बख़्रूशिन की कानी झोंपड़ी में तो नहीं रह सकती थी।

इस तरह दोम्ना ज़रखरीद पति के नये घर में आयी। दुल्हन घर को सजाने-संवारने लगी। फ़र्श पर उसने दरियां बिछायीं, — घर की कती-बुनी दरियां नहीं, बल्कि असली दरियां जो त्यूमेन नगर से ख़रीदी गयी थीं। जालीदार पर्दे टांग दिये और एक शीशे की आलमारी रखी जिसमें सुनहरी झालवाले चीनी के बर्तन सजा दिये। अपनी सास को दोम्ना ने निक्कल की हुई एक समावार भेंट की और ससुर को बढ़िया कपड़े का एक टुकड़ा। और हर तीज-त्योहार के दिन वह नये उपहार दिया करती।

कबाड़ी द्यागिलेव अपने ज़रखरीद दामाद के लिए धन की कोई किफ़ायत नहीं करता था। बख़्रूशी गांव में सबसे पहले ग्रामोफ़ोन तेरेन्ती के ही घर में बजा। इस ग्रामोफ़ोन के बोल उस दिन सुनायी दिये जिस दिन द्यागिलेव नाना बना और दोम्ना मां बनी थी।

जंगलात की परी के लिए तो बस, ख़ैरबाद थी। सारे गांव के सामने ग्रामोफ़ोन के स्वर गूंजे कि अब पति-पत्नी को एक अटूट कड़ी ने जीवन-भर के लिए जोड़ दिया है। और कड़ी का नाम, कबाड़ी नाना के नाम पर त्रोफ़ीम रखा गया।

ग्रामोफ़ोन के स्वर ख़ूब गूंजे, पर ज़्यादा देर तक नहीं। बच्चे के नामकरण के कुछ ही दिन बाद मां चल बसी। हफ़्ता-भर भी नहीं बीत पाया था। डण्ठल कमज़ोर था, अनाज की बाली को सह नहीं सका। टहनी कमज़ोर थी, सेब को झेल नहीं पायी। त्रोफ़ीम ख़ूब मोटा-ताज़ा बच्चा था। कबाड़ी ने अपने नाती को सभी सम्बन्धियों के सामने उसी तक्कड़ पर तोला जिस पर वह चिथड़े तोला करता था। उसने डींग मारकर कहा कि बच्चे का वज़न एक दैत के वज़न के बराबर है, पर वही वज़न उसकी मां की मौत का कारण बना।

दोम्ना "मर "गयी। तेरेन्ती रण्डुआ हो गया। द्यागिलेव सिर पीटकर रह गया। मेरी भावी दुल्हन, पेलागेया ने उसी समय संसार पर आंखें खोली थीं। उसी की मां ने, मेरी भावी सास ने ही, उस मातृहीन बच्चे पर रहम खाया। उसने दोनों को अपना दूध पिलाकर बड़ा किया। मतलब कि नन्हे त्रोफ़ीम को भी और मेरी पेलागेया को भी। तुम्हें पता चलेगा कि त्रोफ़ीम

बख़्तूशिन और मेरी पत्नी एक दूसरे के धातृ भाई-बहिन ही तो थे। उस हालत में अब वही आगे की कहानी सुनायें, मैं इस बीच पाइप पर दो कश लगा लूं।

४

कहानी का अगला हिस्सा,—अधिकांश बड़े-बूढ़ों की गवाही के मुताबिक—पेलागेया कुज़्मीनिश्ना तुदोयेवा के मुंह से ज़्यादा फबता था।

इसलिए हम इस कहानी का सूत्र उसी के हाथ में देंगे। अब सुनिये वह क्या कहती है।

दिन पर दिन, साल पर साल, सूरज अपना चक्कर काटता रहता है, पर ज़बान की पहुंच तो बहुत दूर नहीं जा पाती। चुनकर बोले गये दस शब्द—पिछले ज़माने में बितायी ज़िन्दगी के दस साल के बराबर होते हैं।

साल भी नही बीत पाया था कि लूशा ने तेरेन्ती को माफ़ कर दिया, पिता का हुक्म मानने का जो अपराध किया था उसे क्षमा कर दिया। उन दिनों लोग, मैं आप से कहूं, बड़े धर्म-स्वभाववाले हुआ करते थे, हर बात में उन्हें भगवान की इच्छा दिखायी देती थी। यहां तक कि अपना आदमी छीनने के लिए लूशा ने दोम्ना को भी माफ़ कर दिया। क्षमा किये बिना रह भी तो न सकती थी, यह देखते हुए, कि उसने इसका मोल अपने प्राण देकर चुकाया है। और इस ढंग से केवल लूशा ही नहीं सोचती थी। हर कोई इसी तरह सोचता था, और गांव-भर की यही राय थी कि लूशा की शादी तेरेन्ती से हो जानी चाहिए। यहां तक कि उस चालबाज द्यागिलेव ने भी वचन दिया कि वह विवाहोत्सव में भाग लेने आयेगा। आख़िर उसका नाती तेरेन्ती के पास ही तो रहता था। और वह बच्चे के लिए एक अच्छी सौतेली मां जुटाने के लिए उत्सुक था। 7618

शादी के लिए गिरजे में जाने से पहले लूशा दोम्ना की क़ब्र पर गयी। उसने वहां सदाबहार पौधा रोपा और मृत नारी को वचन दिया कि वह उसके नन्हे त्रोफ़ीम को मां की भांति छाती से लगाये रखेगी। और उसने अपना वचन निभाया, उस कठिन साल तक जब कोल्चाक प्रकट हुआ।

लेकिन हमें सूरज से ज़्यादा तेज़ रफ़तार से नहीं चलना चाहिए। कोल्चाक के प्रकट होने तक लूशा को अभी अठारह साल और जीना था।

लूशा अपने पति के घर में रहने लगी। वह अपने साथ ख़ुशियों का उजाला लायी। साल-भर के नन्हे त्रोफ़ीम को मां की ममता मिली। सुबह सवेरे ज्यों ही वह आंखें खोलता, सबसे पहले मां को पुकारता। उसकी आवाज़, सिर के बाल, आंखें, चेहरा, यहां तक कि छोटे से छोटा जन्म-चिन्ह भी, तेरेन्ती की मूरत था। ऐसे बच्चे को वह कैसे प्यार नहीं करती? जहां तक दोम्ना का सवाल था, यों कहना चाहिए कि वह कोयल के बच्चे के लिए पराये घोंसले के समान थी।

कुछ वक़्त गुज़रने पर लूशा के अपना बेटा हुआ। वही जो अब हमारे फ़ार्म का अध्यक्ष है। मैं उन दिनों बहुत छोटी थी, पर मुझे याद है जब प्योत्र तेरेन्त्येविच दूध-पीता बच्चा हुआ करता था। त्रोफ़ीम की तरह वह भी बछड़े-सा मोटा-ताजा और भारी-भरकम था और उतना ही हठी भी। और वैसा ही वह आज तक बना हुआ है। कोई भी बात उसके मन में समा जाय तो, दुनिया इधर से उधर हो जाये, वह उसे नहीं छोड़ता। मुझसे लिखवा लो, यह हम सब को पुराने बख़्रूशी में से निकालकर नये बख़्रूशीनो में बसाकर दम लेगा। लेकिन एक ही सांस में पुराने और नये सालों को गड़बड़ाना ठीक नहीं है।

मां बनने के बाद लूशा का रूप निखर आया। कंवारपन के दिनों से भी ज़्यादा सुन्दर निकल आयी। जैसे भी कपड़े पहने, अच्छे या बुरे, उसे फबते थे। अनधुले गाढ़े की पोशाक पहनकर भी निकलती तो लगता जैसे राजहंस चला जा रहा है। पटुआ भी पहनती तो रानी नजर आती। तेरेन्ती तो उसको पूजता था। स्नान-घर से उसे अपनी बाहों में भरकर लाया था। और लूशा के सास-ससुर भी उसका मुंह जोहते थे। आख़िर उनका अन्तःकरण उन्हें कचोटता था। उन्हीं ने ही तो दोम्ना के साथ तेरेन्ती का ब्याह रचा था। वे इस बात को कभी ज़बान पर नहीं लाये, पर वे इसे भूले भी नहीं थे।

कबाड़ी द्यागिलेव भी उसका बड़ा मान करता था। वह यथासंभव उसकी मदद करता। उसके लिए उसकी रूबलों की थैली हर वक़्त खुली

रहती। लूशा को तोहफ़े देता। उसे बेटी कहकर बुलाता। कहता भगवान ने मेरे नाती के लिए मां भेजी है। पर वह ख़ूब जान-समझकर यह सब कर रहा था। वह चाहता था कि उसका नाती त्रोफ़ीम एक दिन, चिथड़ा-हड्डी व्यापार में उसका उत्तराधिकारी बने। वह मौक़े की राह देख रहा था। बेटे को अपने बाप से छीना भी तो नहीं जा सकता न। जब त्रोफ़ीम होश संभालेगा तो ख़ुद नाना के घर आयेगा। साइबेरियन व्यापार-बैंक में सात हज़ार रूबल की रक़म किसी ऐरे-ग़ैरे के लिए तो नहीं रखी गयी थी। और द्यागिलेव का घर भी किसी ऐरे-ग़ैरे के नाम नहीं लिखवा दिया गया था... इस बीच लूशा से मेल-मिलाप रखना चाहिए। इस घिनौनी औरत के प्रति प्यार दिखाते रहना चाहिए, डर्बित के मेले से उसके लिए सिल्क की शालें ख़रीद ख़रीदकर लाते रहना चाहिए। और उसके बेटे – प्योत्र – का सिर सहलाते रहना चाहिए।

अगर भेड़िया चालाक बनना चाहता हो तो वह लोमड़ी के ढंग अपनाता है।

इसी तरह कुछ वक़्त बीत गया। फिर एक दिन कबाड़ी को अपना मौक़ा नज़र आया। वह उस मौक़े से लाभ उठाकर कि त्रोफ़ीम को गिरजा-क्षेत्र का स्कूल पास करने के बाद उसे शहर के किसी स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं भेज सकता, वह अपने नाती को फुसलाकर घर ले आया और उसके कान भरने लगा, न केवल उसकी सौतेली मां के ख़िलाफ़, बल्कि उसके अपने बाप के ख़िलाफ़ भी। वह बूढ़ा चौदह साल के छोटे-से बालक को बख़्रूशिन परिवार से अलग कर देने में कामयाब हो गया, जाहिर है उसने बड़ी ज़हर उगली होगी, और बड़े विषैले शब्द मुद्दत से बटोर बटोरकर दिल में रखता रहा होगा। उसने अपने नाती को इस बात का यक़ीन दिला दिया कि तेरेन्ती ने उसकी मां से कभी प्रेम नहीं किया था। उस बूढ़े भेड़िये ने झूठी तोहमतें लगायीं, ऐसा द्वेश उगला, जो केवल एक नीच आदमी ही उगल सकता था। उसने एक कहानी गढ़ ली कि दोम्ना की मौत बच्चा जनने के कारण नहीं हुई थी। उसने बताया कि लूशा ने जंगल के जादू-टोनों से उसकी मां की हत्या कर डाली थी।

वह धूसर भेड़िया एक एक चाल सोच सोचकर चल रहा था। वह इतने बरस पाखण्ड करता रहा था, और अब उस सारे धन का, जो उसने ख़र्च

किया था, और उस घर का, जिसमें बख्त्रशिन परिवार रह रहा था, बदला लेने लगा था। अपने नाती को वह भेड़िये के बच्चे की तरह पाल रहा था।

त्रोफ़ीम अभी मुश्किल से सोलह बरस का हो पाया था जब धूसर भेड़िये का उपनाम जो नाना को दिया गया था, त्रोफ़ीम पर भी लागू किया जाने लगा।

त्रोफ़ीम अपने पिता के लिए अजनबी बन गया। उसका नाना अब उसकी आंख का तारा था, और नानी उसकी सच्ची मां थी, और चिथड़े और हड्डियां, सींग तथा खुर उसके लिए मुनाफ़े का स्रोत थे। तरुण भेड़िये ने गांवों में भी घूमना शुरू कर दिया, और वह केवल सींग और खुरों की ही तलाश में नहीं घूमता था... वह उन सब चीज़ों को खरीद लेता जिनमें से कुछ पैसे बन सकते थे। वह ढोरों में खरीद-फ़रोख्त करता, यहां तक कि फटीचर शराबियों से उनके साज तक खरीद लेता। वह अपने साथ वोद्का शराब भी लिये फिरता ताकि बेचारों को शराबखानों तक जाने की तक़लीफ़ नहीं उठानी पड़े...

उस वक़्त ही दोनों भाइयों के रास्ते अलग अलग हो गये थे। एक ने भेड़िये का रास्ता अपनाया था जो अपने शिकार की तलाश में घूमता है। दूसरे ने जनता के साथ सब के सुख के लिए ईमानदारी से काम करने का रास्ता अपनाया था। पर यह दूसरी कहानी है। इस कहानी को कहने के लिए, मैं सोचती हूं, मेरा नारी-कण्ठ बहुत कमज़ोर है। इसके अलावा किरील मुझसे ज़्यादा अच्छी तरह से जानता है कि त्रोफ़ीम ने किस तरह श्वेत गार्डों का पक्ष लिया और प्योत्र ने, किस तरह, सत्तरह बरस की उम्र से सोवियतों के पक्ष में लड़ना शुरू किया था।

५

यहां से बूढ़ा तुदोयेव कहानी कहने लगा।

उस तूफ़ान के बाद, उस ववण्डर के बाद जब मैं बैसाखियां पटपटाता घर लौटा—गोलियों से मेरा बदन छलनी हो रहा था—तो यहां सोवियत सत्ता पांव जमा चुकी थी।

उन दिनों प्योत्र लड़का ही था, फिर भी जन-मिलीशिया में उसने वालन्टियर के रूप में नाम लिखवा लिया था। त्रोफ़ीम बीस का हो चुका था, और मन ही मन एक लड़की से प्रेम भी करने लगा था। यह लड़की शुल्योमी की रहनेवाली थी और यतीम थी। नाम था उसका दार्या। उसके बाप का नाम था स्तेपान, इस तरह पैतृक नाम मिलाकर उसका पूरा नाम बनता था, दार्या स्तेपानोव्ना। तुम समझे कि नहीं, मैं किसकी बात कर रहा हूं?

और दार्या उन दिनों वैसी ही थी जैसा वसन्त में बर्च का वृक्ष होता है। लचीला पर मज़बूत। सभी काम कर सकती थी। रोटी पका सकती थी, कपड़े धो सकती थी। घर का सारा काम कर सकती थी, दूध दुह सकती थी। पढ़-लिख भी सकती थी, हिसाब-किताब भी रख सकती थी। इसी लिए बूढ़े द्यागिलेव ने उसे घर में रख लिया। उसने उसे रखा तो घर के काम-काज में मदद करने के लिए, पर वह नहीं जानता था कि त्रोफ़ीम ने ही उसे अपने नाना के पास भेजा था। त्रोफ़ीम ने शादी से पहले ही दुल्हिन को घर में ले आने का इन्तज़ाम कर लिया था। पर अपने बेटे के लिए कबाड़ी की नज़र एक अन्य लड़की पर थी। थी तो वह भी दोम्ना ही की तरह काली-कलूटी, पर उसके साथ दहेज में एक दूकान थी। बिसाती की दूकान। यह सच है कि दूकान छीन ली गयी थी और उसे गोदाम या कुछ ऐसी ही जगह के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा था, लेकिन उसकी आशा अभी तक बनी हुई थी। दिखावट के लिए द्यागिलेव ने फाटक पर लाल झण्डी लगा रखी थी, और ज़ार और पूंजीपतियों के ख़िलाफ़ तरह तरह की बातें भी कहा करता था, लेकिन उसके असली विचार उसकी खोपड़ी के अन्दर थे। वह उन्हें अपने तक ही रखता, वह सरकार के बदलने का इन्तज़ार कर रहा था। भेड़िया मेमना बना हुआ था। वह सोचता था कि लोग ऊधम तो मचायेंगे, लड़ाई-भिड़ाई करेंगे, पर १९०५ की तरह यह सब ठण्डा पड़ जायेगा और ज़ार बादशाह फिर से वापिस लौट आयेगा।

द्यागिलेव ने पंसारी के साथ समझौता कर लिया। उसने देव-चित्र को उतारकर शपथ लेते हुए क्रास को चूमा कि त्रोफ़ीम उसी का दामाद बनेगा।

त्रोफ़ीम जानता था कि उसका नाना दार्या को अपनी बहू बनाना स्वीकार नहीं करेगा। पर उसकी बला से। इस वक़्त तक नन्हे भेड़िये को ठोक-बजाकर तैयार कर दिया गया था। उसने खोज खोजकर पता लगा लिया था कि उसके नाना ने कहां पैसा दबा रखा है। त्रोफ़ीम ने वहां से धन का घड़ा खोदकर एक दूसरी जगह—अपने छिपने की जगह—उसे गाड़ दिया। और अगर नाना पूछे कि "पीले छोकरों का क्या हुआ?" तो वह मासूम बना रहेगा, त्रोफ़ीम को क्या मालूम, न उसने उन्हें कभी देखा न उनके बारे में कभी कुछ सुना ही था।

धूसर भेड़िये द्यागिलेव ने अपने चहेते नाती को अपनी ही मूरत बनाया था।

धीरे धीरे काले बादल फिर घिरने लगे। उफ़ा में श्वेत गार्डों की सरकार प्रकट हुई। सभी सांपों ने सिर उठाना शुरू कर दिया। लामबन्दी शुरू हो गयी। त्रोफ़ीम नौ दो ग्यारह हो गया। कहते हैं वह एक गिरोह में शामिल हो गया जो जंगल में बैठा इन्तजार कर रहा था, और इस गिरोह के लोगों ने अपने को 'धूसर भेड़िये' का उपनाम दे रखा था। यह बात कहां तक सच है मैं नहीं जानता। न ही यह जानता हूं कि उस गिरोह ने वही नाम अपनाया था जो त्रोफ़ीम को अपने नाना से मिला था। पर मैंने यह ज़रूर देखा था कि कोल्चाक के आने से कुछ ही समय पहले धूसर भेड़िया सफ़ेद भेड़िये में बदल चुका था। और अकेला वही नहीं बदला था। कुछ लोगों ने गिरजे के घण्टे बजाने शुरू कर दिये थे। कुछ लोग देव-चित्रों को हाथों में उठाये कोल्चाक बटालियन का स्वागत करने के लिए निकले थे।

श्वेत गार्ड जंगल में से निकल आये और लाल सैनिक जंगल में घुस गये।

चार साथियों को साथ लिये, त्रोफ़ीम, द्यागिलेव के दोगले घोड़े पर सवार, अपने बाप के घर जा पहुंचा।

"प्योत्र कहां है?" उसने अपने पिता से पूछा।

"उसके साथ तुम्हें क्या काम है?" आंखों में आंखें डालकर बाप ने बेटे से पूछा। आखिर था तो उसका बाप ही। अपने ही हाड़-मांस से बात कर रहा था।

बाप के सामने बेटे की नजरें झुक गयी, और वह बे सिर पैर की हांकने लगा।

"मैं उसे बचाना चाहता था, बापू। उसकी आंखें खोलना चाहता था। उसकी गारण्टी देना चाहता था।"

तेरेन्ती मुंह से एक शब्द भी नही बोला। वे एक दूसरे से जुदा हुए। त्रोफ़ीम उराल के पार चला गया। वह मास्को पर क़ब्ज़ा करना चाहता था। घण्टियों की टन टन में वह क्रेम्लिन में दाखिल होना चाहता था।

और मै और प्योत्र—मतलब कि प्योत्र तेरेन्त्येविच वख़्रूशिन—जंगल में जाकर छिप गये। लूशा को कुछेक गुप्त स्थान मालूम थे, ऐसे कि कोई हमें ढूंढ़ने आता तो ख़ुद भटक जाता। बनरक्षक की बेटी वहां यों घूमती-फिरती जैसे वह उसका घर हो। हमारे लिए खाना तक ले आया करती थी। हां, सर्दियों में मुसीबत हुआ करती थी। रीछ की खोह सूखी और गरम तो होती है लेकिन फिर भी इनसान के रहने के लिए नहीं बनी है। यातनाओं की चर्चा करने से क्या लाभ? लूशा की बरकत से हम बच गये, यही ग़नीमत है। उसी ने हमें बताया कि श्वेत गार्डो को शीघ्र ही मुंह की खानी पड़ेगी। शहर में शरणार्थी नमूदार होने लगे थे। जिन की जेब में पैसे थे, उन्होंने सीधा इर्कूत्स्क और क्रास्नोयार्स्क का रुख़ किया। और छोटे लोग, इक्के-दुक्के, कोई घोड़े पर, कोई छकड़े पर, मोर्चे पर से भाग भाग कर आने लगे।

शीघ्र ही त्रोफ़ीम भी आ पहुंचा। चला तो था मास्को फ़तह करने, लेकिन कज़ान तक भी नहीं पहुंच पाया था। अपना ज़ख़्म सहलाता घर लौट आया। कहते हैं ज़ख़्म भी नाम का ही था। जरा-सी खरोंच थी, बस। लेकिन डाक्टर सारा वक़्त उसकी छुट्टी बढ़ाता रहा। उन दिनों जिसकी जेब में पैसे होते, जैसा सर्टिफ़िकेट चाहता, ले सकता था। चाहता तो

पासपोर्ट में अपने नाम के आगे पादरी या डीकन तक दर्ज करवा सकता था। सब खेल नक़द पैसे का था। लेकिन मुख्य बात दरअसल यह नहीं है। मुख्य बात यह है कि त्रोफ़ीम के एक और जख़्म भी था जो भरने में नहीं आ रहा था। दिल का ज़ख्म। उसे दार्या से प्रेम था। दार्या से उसे इतना ही गहरा प्रेम था जितना उसके बाप तेरेन्ती को लूशा से रहा था। लगता है बूढ़े द्यागिलेव ने लड़के के दिल को बिल्कुल ही निःस्पन्द नहीं बना दिया था। उसके खू़न को बिल्कुल ही विषैला नहीं बना दिया था।

त्रोफ़ीम और दार्या का क़ानूनी तौर पर विवाह हो गया। वह उसे शहर ले गया। और उसे अपनी वैध पत्नी के तौर पर, दार्या स्तेपानोव्ना बख़्रूशिना के नाम से द्यागिलेव परिवार में ले आया।

हां, केवल त्रोफ़ीम के लिए ज्यादा देर तक अपने स्वर्ग में रहना, दार्या की नीली आंखों में अपनी परछाइयां देखना नहीं बदा था... शहर के बाहर लाल फ़ौज की तोपें गरजने लगीं। श्वेत गार्ड, त्यूमेन और तोबोल्स्क की दिशा में, और तूरा के पार भाग भागकर जाने लगे।

त्रोफ़ीम उन लोगों में से था जो बख़्रूशी में से सबसे आख़िर निकले थे। उसने अपने नाना को पिस्तौल दिखाकर कहा—

"अगर मेरे पीछे तुमने मेरी दार्या का ख़्याल नहीं रखा तो मैं लौटकर तुम्हारा गड़ा मुर्दा भी खोद निकालूंगा और उसकी हड्डी हड्डी अलग कर दूंगा।"

इसके बाद लगभग साल-भर बाद एक ख़त आया। ख़त किसी सैनिक के हाथ का लिखा था, कि ओम्स्क के नजदीक त्रोफ़ीम मारा गया है और मैंने ख़ुद उसे दफ़ना दिया है। और यह दिखाने के लिए कि बात सच है साथ में उसने दार्या का फ़ोटो भी भेज दिया था, जिसकी गेन छाती में से संगीन काटकर निकल गयी थी...

मतलब कि वह धूर्त वीरों की तरह, संगीनों की लड़ाई में, लड़ते हुए मारा गया था...

बस यही उसकी कहानी है। वह जिन्दा कैसे बच रहा और अमेरिका में जाकर कैसे रहने लगा, यह उसी से पूछना चाहिए, अगर वह सचमुच बख़्रूशी में पहुंचा तो।

* * *

अब चालीस साल पुराने पूर्वइतिहास से हम आज की कहानी पर आते हैं।

६

पुराने दिनों की तरह, बोआई और घास-कटाई के बीच के मौसम में, गुड़ाई के काम को छोड़कर खेतों में काम की रफ़तार मन्द पड़ जाती है।

फ़ार्म के अध्यक्ष के पास, और लोगों की तरह, शाम का वक़्त अब कुछ कुछ खाली रहता था। वसन्त के शुरू में ही उसने बच्चों को वचन दे रखा था कि वह खाली वक़्त में उनके साथ मिलकर एक बड़ा-सा नया कबूतर-ख़ाना बनायेगा।

प्योत्र तेरेन्त्येविच बख़्रूशिन के बच्चे बड़े हो चुके थे और शादियां करके अपने अपने घरों में रहने लगे थे। बख़्रूशिन-गृह में केवल उसकी पत्नी येलेना सेर्गेयेव्ना और वह ही रहते थे, और पोता-नाती कोई नहीं रहता था।

बख़्रूशिन को बच्चों से बहुत प्यार था और वह उनकी ओर बहुत ध्यान दिया करता था। लेकिन केवल उस तरह नहीं जिस तरह बड़े छोटों की ओर ध्यान देते हैं। और केवल फ़ार्म का अध्यक्ष-मण्डल ही उन के प्रति चिन्ताशील नहीं था। विरले ही फ़ार्म के अध्यक्ष-मण्डल की कोई बैठक होती जिस में "बच्चों" के किसी न किसी सवाल पर विचार न किया जाता हो। कभी किश्तियों की चर्चा होती तो कभी जाड़ों की छुट्टियों में बच्चों को शहर की सैर कराने के सवाल पर विचार किया जाता... बच्चों के लिए विशेष पुस्तकालय की व्यवस्था पर या फिर पायोनियर-भवन खड़ा करने के बारे में सोच-विचार किया जाता। भले ही छोटा-सा हो लेकिन भवन जरूर हो... और संगीत-स्कूल भी प्योत्र तेरेन्त्येविच की ही कृतियों में से एक था। उसका लम्बा-चौड़ा बखान तो नहीं किया जा सकता, फिर

भी ... तीन जमातें थीं उसमें। पियानो की जमात, वायलिन की जमात और एक लोक-वाद्यों की जमात। बालालाइका से लेकर अकार्डियन तक। सिखानेवाले शहर से आते थे। उनमें से एक, नारी-शिक्षिका, स्थायी रूप से काम करती थी। उसे साधारण सामूहिक किसान की तरह ही पगार मिलती थी—काम के दिनों के हिसाब से।

संगीत-स्कूल पर बख़्रूशिन को बड़ा नाज़ था। शुरू शुरू में कुछ लोग उसका मज़ाक़ उड़ाते थे। लोग कहते कि फ़ार्म में बिलोने की मशीन तो है नहीं, अनाज पीसने की मशीन भी नहीं है, लेकिन चार पियानो ज़रूर हैं... पर साल ख़त्म होने से पहले, जब तरुण संगीतज्ञ प्रगट हुए तो स्कूल की तारीफ़ होने लगी।

बख़्रूशिन बात का धनी था, इसी लिए अब उसने बच्चों के साथ मिलकर एक साझा कबूतर-ख़ाना बनाने का काम हाथ में लिया। कबूतरों के शौक़ीन दो छोटे छोटे बच्चे एक बार आपस में झगड़ रहे थे, बस इसी से कबूतर-ख़ाना बनाने का विचार पैदा हुआ था। एक ने दूसरे की काले रंग की पेंडुकी फुसलाकर अपनी ओर खींच ली थी।

"वापिस दे दो!"

"पैसे दो और ले लो।"

ज़बान की जगह घूंसों ने ले ली। सीधी-सादी लड़ाई थी। और जहां लड़के होंगे, वहां लड़ाई तो होगी ही! पर उस लड़ाई को देखकर प्योत्र तेरेन्त्येविच को वे बुरे दिन याद हो आये जब कबूतर पालने का मुख्य आकर्षण ही और लोगों के कबूतरों को फुसलाने, पैसे लेकर उन्हें लौटाने उनकी ख़रीद-फ़रोख़्त करने और यहां तक कि उनकी चोरी तक करने में हुआ करता था...

"अब तुम नौजवान सामूहिक किसान, हो, भला एक साझा कबूतर-ख़ाना क्यों नहीं बना लेते?" लड़नेवालों को छुड़ाते हुए उसने कहा।

"न लड़ाई, न झगड़ा, न कबूतरों को फांसना, न निकालना... बड़ा-सा कबूतर-ख़ाना होगा, कबूतर उसमें मज़े से रह सकेंगे। और जब सभी कबूतरों को एक साथ आसमान में छोड़ोगे तो देखते बनेगा।"

बच्चे बड़े व्यवहार-कुशल होते हैं, सीधे काम की बात पर आ गये।

"चाचा प्योत्र, हमें तख़्ते कौन देगा?" एक ने पूछा।

"और हमें तार की जाली की भी तो ज़रूरत होगी... जाली के बिना कबूतर-खाना कैसे बनेगा?" दूसरे ने कहा।

बख़्रूशिन ने बच्चों को वचन दिया कि वह इस पर "विचार करेगा" और एक तारीख़ मुक़र्रर कर दी जिस दिन गांव के सभी कबूतरबाज़ आपस में बैठक करें और कबूतरों का मामला तय करें।

बैठक हुई, हालांकि उन दिनों प्योत्र तेरेन्त्येविच को और बहुत-से काम थे। त्रोफ़ीम के आगमन को प्योत्र ने कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया था, फिर भी सारा वक़्त उसके मन को घुन लगा रहता था। उसका फिर से नमूदार होना, प्योत्र और दार्या, दोनों के लिए अगर वास्तव में अपमानजनक नहीं था, तो कम से कम उन्हें शोभा भी नहीं देता था।

इस तथ्य से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता था कि त्रोफ़ीम उसका भाई था। माएं अलग अलग थीं तो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। सीधी बात तो यह थी कि वह आकर कहेगा—"कहो, भैय्या"। भाई! इसके जवाब में प्योत्र यह तो नहीं कह सकता था, "मैं तेरा कोई भैय्या-वैय्या नहीं हूं।" अगर वह कह भी पाये तो भी सभी लोग जानते थे कि त्रोफ़ीम उसका भाई था।

बख़्रूशिन को अपनी प्रतिष्ठा का बड़ा ध्यान रहता था। वह अपने पर कड़ा नियन्त्रण रखता था लेकिन अपनी ख़ातिर नहीं, बल्कि उसी तरह जिस तरह वह फ़ार्म के अध्यक्ष के पद पर डटा हुआ था इस विश्वास के साथ कि उसकी उस पद पर ज़रूरत है। और अनेक पिछड़े हुए फ़ार्मों को समृद्ध बख़्रूशी सामूहिक फ़ार्म 'वेलीकी पेरेलोम' के साथ मिलाने के बाद तो और भी ज़्यादा उसकी ज़रूरत थी। यह मिलान काफ़ी लड़ाई-झगड़े के बाद सम्पन्न हो पाया था। यह दिखाने के लिए कि छोटे फ़ार्मों को बड़े फ़ार्म में महज़ मिलाया ही नहीं, बल्कि सभी को एक साथ जोड़ा जा रहा है, उसने प्रस्ताव किया था कि नये फ़ार्म का नया नाम—'इक्कीसवीं पार्टी कांग्रेस' फ़ार्म रखा जाय। और जो लोग एकीकरण के समय सबसे ज़्यादा शोर मचाते थे और बख़्रूशिन को "हड़पू" कहा करते थे, अब कह रहे थे कि उसे सभी के हितों का ख़्याल है। पर तीन ही दिन हुए, फिर एक

बार पुरानी बात को दोहराया गया। फ़ार्म के एक दूरवर्ती गांव में एक बुढ़िया ने, जिसे अपने बंगले की छत के लिए लोहे की चादरें नहीं "मिल पायी थीं" बख़्रूशिन पर छींटा कसते हुए कहा था – "एक भाई अमेरिका में हुक्मरानी कर रहा है, दूसरा भाई यहां हुक्मरानी कर रहा है"।

यह कोई ऐसी बात तो न थी जिस की ओर बहुत ध्यान दिया जाता, लेकिन फिर भी...

बख़्रूशिन को इस बात का दृढ़ विश्वास था कि जो आदमी सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठा हो उसे कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिस से उस पर कोई उंगली उठा सके।

अब लड़कों के साथ मिलकर कबूतर-ख़ाना बनाने का काम शुरू करते हुए बख़्रूशिन मन ही मन ख़ुश था। इस तरह ख़ाली वक़्त में वह भाई को भूले रहता था। इतना ही नहीं, कबूतर-ख़ाने के बनते समय उसे एक बढ़िया विचार सूझा। विचार यह था – एक छोटा-सा मुर्ग़ी-ख़ाना भी बनाया जाय।

"बड़ी शानदार चीज़ होगी! कबूतरों के साथ साथ तुम्हारे पास मुर्ग़-मुर्ग़ियां भी होंगे। और अगर तुम दो-एक सौ के क़रीब चूज़े पाल सको, तो मुनाफ़ा भी होगा। दो-एक साल में तुम इस पैसे से कुछेक लोमड़ियां पाल सकोगे। या ख़रगोश। यहां तक कि तुम गोज़नों का एक फ़ार्म तक चला सकते हो।"

लड़के चहक उठे और ख़ुशी से उछलने-कूदने लगे। सबसे ज़्यादा ख़ुश था बोरीस, दार्या स्तेपानोव्ना का नाती, जो छुट्टियों में अपनी नानी के पास रहने आया था। वह अन्य बच्चों से भिन्न था, वह प्योत्र तेरेन्त्येविच का सम्बन्धी था, चाचा प्योत्र का नाती था।

"यदि बोरीस को मालूम होता कि उसका नाना कौन है..." बख़्रूशिन ने सोचा।

इससे भी पता चलता था कि त्रोफ़ीम का आना बहुत अप्रिय था।

इस बीच निर्माण-स्थल पर नये नये चेहरे नज़र आने लगे। मुर्ग़ियों की देख-भाल करनेवाली लड़कियां। पायोनियर-नेता की सारा वक़्त यही इच्छा रही थी कि पायोनियर लड़कियां हाथ बंटायें। और लो, वे पहुंच गयी थीं।

लड़कों के साथ बख़्त्रूशिन भी लड़का बन जाता था। उन्हें प्रोत्साहित करते हुए उसका अपना उत्साह बढ़ जाता था। बड़ी उम्र के और लोगों को भी देखा-देखी जोश आ गया। संभवतः बचपन में वे खेल-कूद का मज़ा नहीं ले पाये थे और अब प्रौढ़ावस्था में, बल्कि कुछेक तो अधेड़ उम्र में भी उसके अभाव की पूर्ति कर रहे थे।

अगर कोई बात अध्यक्ष को पसन्द थी तो यही कि पूरे उत्साह के साथ तरुणों के काम में जुट जाय, यहां तक कि उनके खेल-कूद में भी शामिल हुआ करे। उसे बच्चों से बहुत प्रेम था, और उसका प्रदर्शन करने में उसे किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव नहीं होता था। वे अवकाश की पवित्र घड़ियां थीं। और अगर कोई छिपे इशारे से भी इस बात के लिए उसकी खिल्ली उड़ाता तो वह उसका जबान समेत सिर क़लम कर सकता था।

बख़्त्रूशिन में एक यह गुण भी था कि वह वार्तालाप करते समय जैसे लोगों के बीच होता, वैसे ही अपने को ढाल लेता। अलग अलग मौक़ों पर अलग अलग ढंग से बात करता था। मिसाल के तौर पर बूढ़े तुदोयेव के साथ बातें करते हुए वह पुराने शब्दों का प्रयोग करता जो लोगों को बहुत कुछ भूल चुके थे। ऐसे शब्दों को उसे ढूंढ़ना नहीं पड़ता था, वे अपने आप उसकी जबान पर आ जाते थे। बाहर से आनेवाले व्याख्यानदाता के साथ, जिसे आम बोल-चाल की भाषा की तुलना में विशेष पुस्तकों में से बटोरे हुए शब्द ज़्यादा पसन्द होते, वह अलग ढंग से बात करता था। बच्चों के साथ उसका बात करने का ढंग बिल्कुल ही अलग था। वह इस बात को स्वयं स्वीकार करता था—

"मेरे अन्दर मानो एक क़िस्म की रिले-मशीन चालू हो जाती है, जो बातचीत के ढंग को उस आदमी के अनुरूप बना देती है जिस के साथ मैं बातें कर रहा होता हूं।"

पर इस बात की चर्चा, केवल प्रसंगवश ही अगले अध्यायों के लिए एक टिप्पणी के रूप में की गयी है।

कबूतर-मुर्ग़ीख़ाना ख़ूब कामयाब रहा। ऊपर की मंज़िल में कबूतर और नीचे की मंज़िल में मुर्ग़ियां रखी गयीं। ड्यूटी-कर्मचारी के लिए एक

छोटी-सी चौकी और दाना-पानी के लिए एक छप्पर बना दिया गया। बच्चे खुश थे कि इतनी बड़ी उम्र के आदमी ने, जो इतना प्यारा और सद्भावनापूर्ण व्यक्ति भी था, उनके लिए ऐसा बढ़िया काम कर दिया है।

पर उन अमरीकियों के आने का विचार अभी भी उसके मन को अन्दर ही अन्दर कुरेद रहा था...

७

गहरी शाम गये घर लौटने पर प्योत्र ने अपनी पत्नी से कहा—

"सच कहूं, येलेना, मैं बहाना तो बना रहा हूं कि त्रोफ़ीम के यहां आने की मुझे कोई परवाह नहीं, पर यह बहाना चलता नहीं..."

येलेना सेर्गेयेव्ना बख्रूशिना उन लोगों में से थी जो कभी भी पस्त-हिम्मत नहीं होते। वह सदा अपने पति का उत्साह बढ़ाने की कोशिश करती रहती। पर इस आगमन को उसने भी "बखेड़ा" कहकर पुकारा था।

"हमने कौनसा ऐसा कुकर्म किया है कि हमें यह परेशानी उठानी पड़ रही है?" येलेना सेर्गेयेव्ना ने जवाब में कहा, "दार्या को बड़ा अच्छा विचार सूझा है। औरत के नाते उसे त्रोफ़ीम के खिलाफ़ शिकायत तो होगी ही। यह समझा जा सकता है। पर तुम्हें और मुझे तो उम्र-भर ऐसा विचार नहीं सूझ सकता था। हां, पर हमें इसकी जरूरत भी क्या है?" पति के मन में से कुविचारों को दूर करने की चेष्टा करते हुए, येलेना सेर्गेयेव्ना ने जोड़ा। "हमने उसका कोई कर्ज़ तो नहीं देना है। हमने उसके साथ कोई बुराई नही की है, क्यों? अगर हमें कुछ कहना होगा तो कह लेंगे।"

"हां कह लेंगे। शब्द ढूंढ़ लेना तो सबसे आसान बात है। और उस आदमी के लिए तो थोड़े-से ही शब्दों से काम चल जायेगा। उसकी चिट्ठी से ही पता चल जाता है कि इतने बर्सों में वह बहुत दूर नहीं जा पाया। मुझे किसी दूसरी ही बात की चिन्ता है।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच अपनी पत्नी के साथ सटकर बैठ गया और हमेशा की तरह अपने मन का बोझ हल्का करने लगा।

"येलेना, इतने साल से हमारा यह फ़ार्म अपनी ही ज़िन्दगी बिताता रहा है। अपने देश के अन्दर और अपने देश के साथ। सब कुछ साफ़ था। यह रहा राज्य का सामान्य काम। यह रहा उसका हिस्सा – सामूहिक फ़ार्म का काम। इसे हाथ में लो, इसे पूरा करने के लिए संघर्ष करो, वक़्त के साथ साथ बढ़ते जाओ, हम शायद हमेशा कामयाबी का मुंह नहीं देख पाते थे। पर भूलें और ग़लतियां घर ही में होती थीं। देश के अन्दर होती थीं। और अब पता चलता है कि और लोगों की – अमेरिका की – भी दिलचस्पी बख़ूशी में है।"

"ओह, प्योत्र," येलेना ने हंसकर कहा, "पर लोफ़ीम तो अमेरिका नहीं है।"

"नहीं, नहीं है," प्योत्र ने स्वीकार किया, "पर उसके साथ टेनर आ रहा है। पत्रकार। और पत्रकार का मतलब होता है – आंख। पर किसकी आंख? वह यहां किस काम के लिए आ रहा है? वह इसलिए आ रहा है कि कुछ भी नहीं देखेगा और किसी बात के बारे में भी लौटकर नहीं बतायेगा।"

"तो फिर?"

"अगर टेनर एक आंख है तो लोफ़ीम – दूसरी आंख होगी। इसका मतलब है दो आंखें। अगर एक आंख देखने में चूक जायेगी तो दूसरी आंख इस कमी को पूरा कर देगी।"

"अच्छी बात है, उन्हें देखने दो। हमारी बला से। इस से क्या फ़र्क़ पड़ता है प्योत्र?" येलेना सेर्गेयेव्ना ने उसे शान्त करते हुए फिर एक बार कहा।

पर प्योत्र के विचारों का तांता पहले की तरह ही चलता रहा।

"अगर हमारी नज़र गांव की हद्दबन्दी तक ही जाये, तो बेशक, इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन अगर तुम ज़्यादा विस्तार से देखो तो तुम्हें ज़्यादा नजर आने लगेगा। हमारे लिए यह भी अन्य सामूहिक फ़ार्मों जैसा एक सामूहिक फ़ार्म है, पर उनकी नज़रों में यह समाजवादी खेतीबारी का एक टुकड़ा है, एक परायी चीज़ है जिस पर वे सबके सामने अपना निर्णय देंगे। अख़बारों में। और यक़ीन मानों, बहुत हमदर्दी के साथ

ऐसा नहीं करेंगे। तुम समझो न येलेना, कि उलानोवा बोल्शोई थियेटर में – उलानोवा होती है, लेकिन अमेरिका में वह – सोवियत संघ होती है।"

"मैं समझती हूं," येलेना सेर्गेयेव्ना ने जवाब दिया। "मैं यह भी जानती हूं कि हमारे फ़ार्म में और उलानोवा के बीच क्या फ़र्क़ है। अमेरिका-भर ने उलानोवा को देख लिया है। हर कोई जानता है कि वह कैसा नाचती है। तुम जैसा मन आये लिखो, दोष निकालो, मीन-मेख करो, लेकिन तुम्हारी बात पर कोई यक़ीन नहीं करेगा। लेकिन हमारे फ़ार्म पर केवल दो व्यक्ति अपना निर्णय देंगे – त्रोफ़ीम और टेनर। और हमारे "नाच" के बारे में जो कुछ वे कहेंगे, उसी के आधार पर वे लोग हमारे बारे में जान पायेंगे।"

"बिल्कुल ठीक!" बख़्रूशिन ने क़रीब क़रीब चिल्लाकर कहा। "कैसी अक़्ल की बात तुमने कही है। जिस ढंग से वे हमारे "नाच" का ब्योरा देंगे, अमरीकी पाठक हमें उसी रूप में देखेंगे। बेशक," थोड़ी देर तक सोचते रहने के बाद वह बोला, "दो-एक अख़बारों से क्या बनता-बनाता है, लेकिन छींटा तो उड़ेगा ही... बख़्रूशी में अगर भूलें भी नजर आ जायें तो उस से सोवियत संघ की उपलब्धियां छिप तो नहीं जातीं, हां साया जरूर पड़ जाता है, भले ही वह बहुत हल्का-सा हो। और चाहूं या न चाहूं मुझे इसके बारे में सोचना है, मानो मैं भी मैं नहीं हूं, समूचा सोवियत संघ हूं।"

पति पत्नी के बीच यह असाधारण-सा वार्तालाप देर तक चलता रहा। एक ही आवेग से उत्प्रेरित होकर दोनों ने रेडियो पर 'वायस आफ़ अमेरिका' लगाने का निश्चय किया। आनेवाली भेंट के लिए यह एक तरह की तैयारी थी... इन कार्यक्रमों को उन्होंने पहले कभी नहीं सुना था, इसलिए उन्हें मालूम नहीं था कि किस मीटर-बैंड पर रेडियो लगाएं। येलेना सेर्गेयेव्ना नॉब घुमा रही थी जब सहसा कहीं से बाख़ का ऑर्गन-संगीत सुनायी दिया।

इस सुपरिचित भव्य स्वर-लहरी को सुनकर बख़्रूशिन ने पत्नी का हाथ रोक दिया –

"छोड़ो अमेरिका की इस 'वॉयस' को। बाख़ का संगीत सुनेंगे। असीम प्रसार है, और चारों ओर रोशनी ही रोशनी है।"

उसने धीरे से अपनी पत्नी का हाथ सहलाया।

"हमारी फ़ैक्टरियां हारमोनियम क्यों नहीं बनातीं?" उसने कहा। "वे भी ऑर्गन की ही तरह होते हैं, केवल उनके स्वर अधिक कोमल होते हैं।"

येलेना सेर्गेयेव्ना ख़ुश थी कि उसे अचानक ही प्योत्र का मन दूसरी ओर खींचने का साधन मिल गया था। उसने मन ही मन कहा, "कोई नहीं जानता कि मुझे कैसा पति मिला है"। उसे स्वयं भी बख़्रूशिन की आत्मा के, जो इस संगीत की ही भांति विशाल थी, सभी कोनों का मालूम नहीं था।

बाख़ की स्वर-लहरियां गूंज रही थीं, संसार-भर में गूंज रही थीं। आकाश के तारों ने भी अवश्य ही उन्हें सुन लिया होगा। इन भव्य स्वर-लहरियों ने प्योत्र तेरेन्त्येविच को जैसे अपने पंखों पर उठा लिया और उसकी नज़रों में त्रोफ़ीम अब केवल दलदल में एक गलते-सड़ते पेड़ के ठूंठ-सा लग रहा था, और टेनर उस ठूंठ पर उगनेवाली काई के समान था।

"भाड़ में जायं दोनों! हमारी बला से!"

"बस, यही रवैया होना चाहिए प्योत्र," रात के लिए चौड़े पलंग पर बिस्तर बिछाते हुए येलेना सेर्गेयेव्ना ने कहा। पर...

पर आख़िर बाख़ का संगीत समाप्त हो गया और उसके साथ ही साथ दलदल का ठूंठ फिर बड़ा होने लगा। प्योत्र तेरेन्त्येविच उसे मन में से नहीं निकाल पा रहा था। वह उसे सपनों में भी परेशान करेगा।

चलने दो, इस बाधा से भी निबट लेंगे...

८

जिस दिन अमेरिका की इस चिट्ठी के बारे में बख़्रूशिन ज़िला पार्टी समिति के दफ़्तर में स्तेकोल्निकोव से मिलने गया, उस दिन भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि त्रोफ़ीम के आगमन के प्रति क्या रुख़ अपनाये। जो कुछ उसमें लिखा है क्या उसी को सच माने, या इसे अन्य अभिप्रायों को छिपाने की एक चाल समझे। इन "अन्य छिपे अभिप्रायों" की ओर

बख़्रूशिन और ज़िला पार्टी समिति के सेक्रेटरी, दोनों का ध्यान गया था, मुख्यत: इस कारण कि त्रोफ़ीम अकेला नहीं बल्कि टेनर को साथ लेकर आ रहा था, जो दोनों भाइयों की भेंट का ब्योरा लिखेगा।

क्यों? क्या ये दोनों इतने जाने-माने व्यक्ति थे कि उनकी निजी भेंट की इश्तहारबाज़ी की जाय?

किसी निश्चित परिणाम पर पहुंचने के लिए बख़्रूशिन और स्तेकोल्निकोव के पास पर्याप्त तथ्य नहीं थे। पर दो दिन बाद जब स्तेकोल्निकोव स्वयं बख़्रूशिन से मिलने आया तो स्थिति पहले से ज़्यादा स्पष्ट थी, हालांकि ज़्यादा आसान नहीं बन पायी थी।

स्तेकोल्निकोव की मुलाक़ात बख़्रूशिन के साथ "अछूती धरती" पर हुई, जिस नाम से अब बड़ी चीशा को पुकारा जाता था। यह ज़मीन सदियों तक "बंजर" रही थी और अब उसे सुखाया जा रहा था।

"कोई ख़बर मिली, फ़्योदोर पेत्रोविच?" बख़्रूशिन ने पूछा।

"यही समझो," स्तेकोल्निकोव ने अभिवादन के तौर पर कहा।

"बता दो फिर ..."

"बस, कोई सूखी जगह बैठने के लिए ढूंढ़ लेने दो, सब बता दूंगा।"

बख़्रूशिन ने आंखें तरेरकर स्तेकोल्निकोव की ओर देखा।

"चिढ़ाना हो तो किसी जवान को चिढ़ाओ। मैं शेख़ी नहीं बघारूंगा— उन्हें शेख़ी बघारने दो," उसने दहाड़ते बुलडोज़रों की ओर सिर हिलाते हुए कहा जिन्हें बीसेक साल की उम्र के युवक चला रहे थे। "मैं उनके काम का श्रेय स्वयं नहीं लेना चाहता। पर मैं यह ज़रूर कहूंगा कि इस दलदल में अब इतना पानी भी नहीं कि उड़ती चिड़िया की भी प्यास बुझा सके।"

बख़्रूशिन अपने मित्र को घास के सूखे, हरे बिछावन पर से ले चला जो जंगल के अन्दर लगभग दो हज़ार हेक्टर भूमि पर बिछा था, और जिसके एक-चौथाई से ज़्यादा भाग पर हलवाही की जा चुकी थी।

इस स्थल पर जंग के ज़माने की उस दोस्ती का ज़िक्र कर देना चाहिए जो इन दोनों आदमियों के बीच पायी जाती थी। बख़्रूशिन ज़ख़्मी हो जाने के कारण अपने मित्र के साथ ऐल्ब नदी तक नहीं पहुंच पाया

था, लेकिन बख्रूशी में लौटकर उसने अपने मित्र के साथ सम्पर्क बनाये रखा था। अपनी चिट्ठियों में उसने अपने मित्र से आग्रह किया था, जो उस समय युवा कृषिविशेषज्ञ था, कि वह बख्रूशी में आकर बस जाय, और वचन दिया था कि उसे "तजरबों के लिए बिना खर्च या जोखिम की चिन्ता किये, पूरी आजादी दी जायेगी"। स्तेकोल्निकोव बख्रूशी में पहले अकेला आया, फिर पेन्ज़ा से अपनी मां को लिवा लाया, फिर स्कूल की एक युवा अध्यापिका नदेज्दा तोशकोवा से ब्याह कर लिया और सदा के लिए वहीं पर बस गया था।

इस बात को लगभग पन्द्रह बरस बीत चुके थे। उत्साही कृषिविशेषज्ञ ने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया और शीघ्र ही उसे पार्टी-कार्य के लिए नियुक्त किया गया। अब ज़िला पार्टी समिति का सेक्रेटरी बन जाने के बाद भी उसकी चाल-ढाल मोर्चे पर के बटालियन-कमांडर जैसी ही थी। बख्रूशिन के साथ "अछूती धरती" पर चलते हुए वह ऐसा लग रहा था जैसे सामूहिक फ़ार्म के भावी खेत को नहीं, जंग के नये मोर्चे को लांघ रहा हो।

"तुम्हारे लड़कों ने एक अच्छा ख़ासा अड्डा चुन लिया है।" कृषि-योग्य बनायी गयी जमीन की नज़रसानी करते हुए उसने कहा। "पर तुम इसके बारे में गुप-चुप क्यों बने रहते हो?"

"एक तो इसलिए कि यह कोई ऐसी बड़ी कामयाबी नहीं है कि अभी से उसकी डींग मारने लगूं।" बख्रूशिन कहने लगा, "दूसरे, कम्युनिस्ट श्रम दल इस का दिखावा करके कोई नाम नहीं कमाना चाहता था। तुम कहोगे कि यह दिखावटी विनम्रता है। मैं मानता हूं, पर फिर भी विनम्रता ज़रूर है... और तीसरे यह, कि तुम बैठ जाओ। बैठने के लिए ये टीले बड़े अच्छे हैं, कई आराम कुर्सियों से तो ज्यादा अच्छे हैं। बैठो, तक़ल्लुफ़ न करो।"

बख्रूशिन का अनुसरण करते हुए स्तेकोल्निकोव उसके सामने एक सूखे, लचीले टीले पर बैठ गया, फिर अपने अफ़सरों के फ़ौजी थैले में से दो काग़ज निकाले और उन्हें बख्रूशिन के हाथ में देते हुए बोला—

"ये 'तास' एजेन्सी के एक बुलेटिन में से लिये गये हैं। समझे?"

"सब बात का दारोमदार इस बात पर है कि आगे क्या होगा।"

"आगे होगा यह। न्यू-यार्क से हमारा सोवियत संवाददाता लिखता है... तुम पढ़ोगे या मैं पढ़ूं?"

"पढ़ो, मैं बाद में पढ़ूंगा। क्या यह प्रकाशन के लिए नहीं है?"

"नहीं नहीं... मैं नहीं समझता कि इसे बड़े बड़े दैनिक अख़बारों में छापा जायेगा.. लेकिन हम इसे शायद अपने स्थानीय अख़बार में छाप दें। अब सुनो।"

स्तेकोल्निकोव ने बुलेटिन में दिये गये अन्य समाचारों को एक नज़र देखा और फिर धीरे धीरे, एक एक शब्द को स्पष्टतः पढ़ने लगा—

"...समाचारपत्र में न्यू-यार्क राज्य के एक फ़ार्मर, त्रोफ़ीम त० बख़्रूशिन की सोवियत-यात्रा के बारे में लिखा गया है। यह व्यक्ति पेर्म गुबर्निया का एक भूतपूर्व रूसी किसान है जो १९२० में अमेरिका में उत्प्रवास कर गया था। बख़्रूशिन ने एक मौसमी कामगार के रूप में काम शुरू किया और धीरे धीरे कुछ पूंजी जमा कर ली और उस से अपना एक फ़ार्म चलाने लगा। एक मनचला, परिश्रमी फ़ार्मर होने के कारण, चालीस साल के अर्से में वह धनवान बनने में कामयाब हो गया। अब, अधेड़ उम्र में उसने अपने जन्म के गांव में लौटकर अपने पिता और माता की क़ब्रों पर श्रद्धा और सम्मान के फूल चढ़ाने का निश्चय किया है। सोवियत समाचारपत्रों से बख़्रूशिन को पता चला कि उसका भाई प्योत्र त० बख़्रूशिन उसी गांव में रहता है, एक कामयाब आदमी है और उसे, दूध देनेवाली गाय की एक नई नस्ल तैयार करने के लिए, देश के उच्चतम पदक से सम्मानित किया गया है।"

"कहो, क्या कहते हो प्योत्र तेरेन्त्येविच?"

"अभी तक तो स्पष्ट ही है।"

"अब सुनो। मिनट-भर बाद तुम्हें इतना साफ़ नहीं जान पड़ेगा।" स्तेकोल्निकोव ने कहा और आगे पढ़ने लगा।

"समाचारपत्र को विश्वास है कि दो भाइयों की यह भेंट—एक अमरीकी फ़ार्मर और दूसरा रूसी सामूहिक किसान—दो महान राष्ट्रों की मैत्री को सुदृढ़ बनाने और अनुभव के आदान-प्रदान के नाते सामाजिक रुचि

का कारण बन सकती है। सुप्रसिद्ध पत्रकार जॉन टेनर का कहना है कि, अनुमानतः, बख़्रूशिन भाइयों के पास, जो एक दूसरे से पिछले ४० बरस से नहीं मिल पाये, बहुत कुछ एक दूसरे को बताने को होगा। यह भेंट किसी सुप्रसिद्ध स्थान पर कोई शिखर-वार्ता नहीं है, फिर भी अमरीकी और सोवियत पाठकों के लिए कम दिलचस्पी का कारण नहीं होगी। इसी लिए मैं फ़ार्मर मिस्टर त्रोफ़ीम त० बख़्रूशिन के साथ सोवियत संघ में जाना चाहता हूं ताकि दो विभिन्न संसारों के इन दो भाइयों की मुलाक़ात को देख सकूं।"

"बस, यही कुछ लिखा है?"

"हां।"

"और कोई टिप्पणी?"

"हां एक बात है, लेकिन इसकी बाद में चर्चा करेंगे।' पहले तुम मुझे यह बताओ, प्योत्र तेरेन्त्येविच कि तुम इसका क्या मतलब निकालते हो?"

"शैतान जाने। मेरे पल्ले तो कुछ नहीं पड़ा, फ़्योदोर पेत्रोविच," बख़्रूशिन ने स्वीकार किया। "एक ओर से तो यह ठीक जान पड़ता है। एक आदमी बूढ़ा हो रहा है। उसके दिल में ललक उठती है कि पुराने स्थानों को जाकर देखे। बुढ़ापे में वह दौरा करने का निश्चय करता है। इसका व्यक्ति के अन्तःकरण के साथ भी कुछ न कुछ सम्बन्ध हो सकता है। शायद उसका अन्तःकरण उसे कचोटता है। और अगर वह धार्मिक वृत्ति का आदमी है, तो भगवान का भी इसमें हाथ हो सकता है। अपने पाप धोना चाहता है। यह भी सवाल का एक पहलू है।"

"दूसरा पहलू कौनसा है?"

"दूसरा पहलू, प्यारे फ़्योदोर पेत्रोविच, यह टेनर-कन्टेनर है... अख़बार में एक लेख लिखने के लिए न्यू-यार्क से दूर-दराज़ बख़्रूशी में आना, मुझे लगता है, कुछ ज्यादा ही महंगा मामला है।"

"ठीक है, लेकिन एक किताब की ख़ातिर वक़्त और डालर ख़र्च करने से ज़रूर लाभ हो सकता है।" स्तेकोल्निकोव ने कहा।

"किताब?" बख़्रूशिन ने पूछा। "कैसी किताब?"

"तुम्हारे सामूहिक फ़ार्म की कामयाबियों के बारे में किताब। बड़े पैमाने पर कम्युनिज़्म के निर्माण के शुभारम्भ के बारे में किताब। एक ऐसी

किताब जो हमारी सामाजिक प्रणाली का गुण-गान करती है," स्तेकोल्निकोव ने तनिक व्यंग से कहा।

बख़्रूशिन ने नज़र नीची कर ली। सहसा, जिस टीले पर वह बैठा था वह नीचे धंस गया। वह बड़बड़ाया और उठकर दूसरे टीले पर जा बैठा। कमर दबाते हुए बोला—

"क्या यह तुम्हारी राय है, फ़्योदोर पेत्रोविच, या तुम किसी दूसरे आदमी के साथ इसपर विचार कर चुके हो?"

"मैंने एक आदमी से बात की है और मेरी राय है कि तुम भी उससे बात कर लो।"

"उसका नाम क्या है?"

"उसका नाम है सहज बुद्धि, प्योत्र तेरेन्त्येविच। सहज बुद्धि।"

"वह धोखा तो नहीं देगा?"

"कभी नहीं! वह हमारा बड़ा आज़मूदा और ओजस्वी पार्टी साथी है।"

"हुं, ठीक है, मगर..." बख़्रूशिन बोला। वह फिर सोच में पड़ गया।

स्तेकोल्निकोव ने आंख उठाकर सूर्य की ओर देखा, फिर अपनी घड़ी की ओर। बख़्रूशिन यह देखकर बोला—

"वक़्त हो चुका है और हमारी भेंट समाप्त हो चुकी है—क्या इसका यही मतलब है, फ़्योदोर पेत्रोविच?"

"नहीं, तो। हमारी बातचीत तो अभी शुरू भी नहीं हुई। आठ बजे के क़रीब अपने घोड़े पर साज़ डलवाना और हमारे यहां आकर हमारा नया टेलीवीजन-सेट देखना। संयोग से आज के कार्यक्रम में अमेरिका के बारे में भी कुछ है... इस क़िस्म के कार्यक्रमों को अब हमें जरूर सुनते रहना चाहिए..."

"ठीक कहते हो।"

"मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगा। कुछ बातचीत करेंगे।"

बख़्रूशिन अपने दोस्त को मोटर-कार तक छोड़ने गया जो सड़क पर खड़ी थी, और फिर अपने टीले पर लौट आया। उसे अपने विचारों को तरतीब देना था।

९

एक बार फिर 'तास' का बुलेटिन पढ़ने के बाद, बख़्रूशिन ने अपनी ओर से अनुमान लगाने का निश्चय किया।

उसका पहला अनुमान तो बड़ा उत्साहवर्द्धक था, कि बुढ़ापे में त्रोफ़ीम को "धर्म का जनून" हो गया है और वह सचमुच अपने पाप धोने के लिए आ रहा है, जब कि जॉन टेनर, उस जॉन रीड की तरह जिसने वह बढ़िया किताब—'दुनिया को हिला देनेवाले दस दिन' लिखी थी, बख़्रूशी सामूहिक फ़ार्म के बारे में सच सच लिखेगा, और इस तरह सोवियत समाज-व्यवस्था के बारे में और विशेषकर सामूहिक फ़ार्म के जीवन के बारे में संयुक्त राज्य अमेरिका में जानकारी को बढ़ाने में मदद देगा।

बख़्रूशिन को अपनी इस उपकल्पना में बहुत विश्वास नहीं हुआ, लेकिन उसने इसे रद्द भी नहीं किया, इसलिए कि वह अपना दृष्टिकोण वस्तुगत रखना चाहता था और मामले के उज्ज्वल पहलू की ओर देखते रहना चाहता था।

उसका दूसरा अनुमान था कि वह सधा हुआ और चालाक चिपटू दोस्त, जॉन टेनर, त्रोफ़ीम के साथ इसलिए चिपटा हुआ था कि ज्यादा बातें देख और सुन सके और बाद में ज्यादा अच्छे ढंग से सारी बात को विकृत रूप में पेश कर सके।

बख़्रूशिन जानता था कि विदेशी पत्रकारों के सम्बन्ध में पहले भी इस तरह की बातें हो चुकी हैं। जितनी देर वे देश के अन्दर रहते हैं तारीफ़ों के पुल बांधते हैं, लेकिन ज्यों ही देश के बाहर निकलते हैं वे कीचड़ उछालने और तरह तरह के निर्लज्ज और बे-सिर-पैर के झूठ गढ़ने लगते हैं।

उसका तीसरा अनुमान था कि टेनर और त्रोफ़ीम दोनों को कोई तीसरी शक्ति भेज रही है, जिसने सोवियत संघ की उनकी यात्रा के वास्तविक, नीच अभिप्राय को छिपाने का एक अच्छा बहाना गढ़ लिया है।

यह तीसरी शक्ति कौन हो सकती है? शायद कोई प्रकाशक, या कोई ऐसे व्यक्ति जो इस अवसर से लाभ उठाकर अपना उल्लू सीधा करना

चाहते हैं? बख़्रूशिन ने अनुमान लगाने की कोशिश नहीं की। क्या फ़र्क़ पड़ता है, कि उनका नाम क्या है? इससे तीसरे अनुमान का बुनियादी स्वरूप तो नहीं बदल जाता।

इस तीसरे और निकृष्टतम अनुमान में बख़्रूशिन को जॉन टेनर हिंसक विदेशी मछुए के रूप में नज़र आया जिसने अपनी बंसी पर त्रोफ़ीम को चुग्गे के रूप में लगा रखा था।

इन अनुमानों में से कोई भी अनुमान ठीक निकले, आगन्तुकों के रहने का तो कहीं पर इन्तज़ाम करना था।

लेकिन कहां?

अपने घर में? नहीं। इसका मतलब है कि प्योत्र ने त्रोफ़ीम को क्षमा कर दिया है, उस त्रोफ़ीम को जो – उसके अन्य विश्वासघातों की चर्चा न भी करें तो – अपने नाना-कबाड़ी को, और अपने परिवार को धोखा देकर निकल गया था।

त्रोफ़ीम और टेनर को प्योत्र अपने घर पर तो मिलेगा, क्योंकि वे "उसके मेहमान" थे, लेकिन ठहरायेगा वह उन्हें किसी दूसरी जगह।

पुराना द्यागिलेव-गृह इसके लिए उचित स्थान था लेकिन इस समय वहां पुस्तकालय और वाचनालय स्थित थे। मेहमानों के लिए वहां पर एक कमरा बनाया जा सकता था, लेकिन क्या इससे यह नज़र नहीं आयेगा कि उनका बहुत आदर-मान किया जा रहा है? लोग क्या सोचेंगे?

पुराना मेहमान-घर भी ठीक नहीं रहेगा। वह बहुत बेढब और पुराना था। और नया मेहमान-घर अभी तक बनकर तैयार नहीं हुआ था। हां, तीन कमरे तैयार किये जा सकते थे, एक त्रोफ़ीम के लिए, एक टेनर के लिए, और तीसरा उस परिचारिका के लिए जो उनका सब काम करेगी।

जहां तक उनके खाने-पीने का सवाल है, वे फ़ार्म के भोजनालय में खाना खायेंगे। अगर भोजनालय की मेज़ों पर मोमजामों की जगह बाक़ाइदा कपड़े के मेज़पोश बिछा दिये जायं और कुछ नये प्याले आदि भी ख़रीद लिये जायं, तो... नहीं, वह कोई ऐसी बात नहीं करेगा। वह कुछ भी नहीं बदलेगा, कहीं कोई रंग-रोग़न नहीं करवायेगा, कुछ भी संवारने-सजाने की कोशिश नहीं करेगा। जैसा है उन्हें सब कुछ वैसा ही देखने दो।

आख़िर तो वह फ़ार्म का अध्यक्ष है, गांव में हैसीयत रखता है वह क्यों अनजान लोगों को जबानदराज़ी का मौक़ा दे, वे कहेंगे कि बख़्रूशिन डरता था कि कुछेक खड़पंच कहीं फ़ार्म की ज़िन्दगी को उसके असली रूप में न देख लें।

मुख्य सड़क के बीचोंबीच जो गड्ढा पड़ गया है, वह उसे भी ठीक नहीं करवायेगा, हालांकि उसका इरादा रहा था कि घास-कटाई से पहले बजरी से उसे भरवा देगा।

"वाह रे," लोग कह सकते हैं, "अध्यक्ष नहीं चाहता कि अजनबी की आंख उसपर पड़े।"

उसे अजनबी की आंख से क्यों डरना चाहिए? अगर वह आंख सतह से नीचे देख सकती है तो उसे नजर आ जायेगा कि फ़ार्म ने कैसे विकास किया है, और किस तरह वह आगे विकास करता जायेगा। लेकिन अगर वह आंख केवल "गड्ढे" ही देखना चाहती है तो वह उसी चीज़ को एकटक देखेगी, जो किसी तरह उन उपलब्धियों को छिपा सकती है, जिनकी ओर वह नहीं देखना चाहती।

वास्तव में, आगामी भेंट में, सच्चाई से बेहतर कोई दोस्त नहीं होगा। और वहां काफ़ी मात्रा में ऐसी सच्चाई पायी जाती थी जिस से बड़े से बड़े दुश्मन को भी कान हो जायेंगे कि सामूहिक फ़ार्मों के बारे में बड़ी सतर्कता से झूठ लिखना चाहिए।

बेशक, यह बड़े अफ़सोस की बात थी कि शैतान उन्हें इसी साल भेज रहा है। कुछ देर बाद बख़्रूशी गांव के स्थान पर यहां रेलवे-लाइन बिछी होगी और बख़्रूशिनो नाम का एक नया गांव लेनीवी टीला की दक्षिणी ढलान पर खड़ा होगा। तब वहां उनके देखने के लिए बहुत कुछ होगा। पर किया क्या जाय? उनके दौरे को स्थगित नहीं किया जा सकता था। और किया भी क्यों जाय? इस साल भी नयी जगह पर वे देख लेंगे कि बिजली के खम्भे गाड़ दिये गये हैं, घरों की बुनियादें पड़ चुकी हैं। और वे पहाड़ी पर उठती हुई अनेक इमारतें भी देख लेंगे।

बस, शुरू के लिए यही काफ़ी है। बाक़ी बातें वक़्त के साथ साथ अपने आप ठीक होती जायेंगी।

घास-कटाई का वक़्त सिर पर था। इस साल घास पर से आखें हटाये न हटती थीं। और मौसम सूचना-केन्द्र का कहना था कि अब की बार धूप ख़ूब खिलेगी...बस काफ़ी खीझ लिया, काफ़ी बूझ-बुझक्कड़ी कर ली। अब आयेंगे तो देखा जायेगा। इस वक़्त तुम्हारे सामने ज़्यादा ज़रूरी काम पड़े हैं। अब घास-कटाई और पुराने गांव के मकान गिराकर नयी जगह लेनीवी टीले पर जाकर बसने के ही काम ले लो। रेलवे-लाइन यों तो बहिन के समान है, लेकिन गांठ की बड़ी पक्की है। और अगर आंखें खोलकर नही चले तो कड़ा सौदा पटाने की कोशिश करेगी। फ़ार्म के लोग भी नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते और फ़ार्म के मुनीम भी कौड़ी कौड़ी का हिसाब रखते हैं, पर इसका यह मतलब नहीं कि अपनी तरफ़ से उसे हिसाब लगाने की कोई ज़रूरत नहीं है। पुरानी जगह पर घर भले ही दस बरस और खड़ा रहे, पर जब उसे वहां से ले जाने लगो तो ईंधन की लकड़ी के दामों भी नहीं बिकता।

रेल का तख़मीना लगानेवालों को इसका एहसास कराना होगा।

प्योत्र तेरेन्त्येविच के सिर पर ढेरों चिन्ताएं थीं, पर उनके बिना न जीवन में उत्साह था, न ख़ुशी। उनके बिना ज़िन्दगी सूनी थी...

सब ठीक होगा, बस, मौसम सूचना-केन्द्र धोखा न दे जाय।

१०

'लेनिन के झण्डे के नीचे' नामक स्थानीय अख़बार में त्रोफ़ीम बख़्रूशिन और पत्रकार जॉन टेनर की आगामी यात्रा के बारे में एक छोटी-सी ख़बर छापी गयी थी। शीर्षक था: 'अमेरिका से बख़्रूशी को' और साथ में न्यू-यार्क के एक संवाददाता का हवाला दिया गया था। उसमें इस बात की भी हल्की-सी चर्चा की गयी थी कि दोनों भाइयों ने जो एक ही छत के नीचे पलकर बड़े हुए थे, जीवन में किस तरह अलग अलग रास्ते अपनाये थे।

समाचार के अन्तिम शब्द थे: "निश्चय ही, सामूहिक किसान, मुनासिब रूसी आवभगत के साथ अपने भूतपूर्व ग्रामवासी का स्वागत करेंगे

और श्री जॉन टेनर का भी, जिन्होंने दो संसारों में रहनेवाले दो भाइयों की मुलाक़ात का ब्योरा देने का बीड़ा उठाया है"।

अमरीकियों का आगमन, जो कल तक अनुमान का विषय बना हुआ था, अब एक पक्की ख़बर बन चुका था। रविवार को उनका इन्तज़ार था। त्रोफ़ीम ने मास्को से इस आशय का तार अपने भाई को भेज दिया था।

दार्या स्तेपानोव्ना अपने इरादे के मुताबिक, बख़्रूशी से चली गयी और जाने से पहले प्योत्र तेरेन्त्येविच से कहती गयी कि वह अपने भाई को बता दे कि दार्या न तो उसे ख़ुद देखना चाहती है और न ही यह चाहती है कि वह उसे देख पाये।

नये मेहमान-घर में जो कमरे उनके लिए ठीक-ठाक किये गये थे, उन्हें अन्तिम रूप दिया जा रहा था। अच्छे मजबूत तख़्तों से "निजी प्रयोग के लिए" एक शौचालय जल्दी से बना दिया गया था। बख़्रूशिन ने देखा कि वह अच्छा काम देगा।

बुढ़िया तुदोयेवा ने मेहमानों के लिए काम करने का ज़िम्मा लिया। आख़िर तो वह त्रोफ़ीम की धातृ-बहिन थी। मदद के लिए उसने अपनी पोती सोन्या को चेल्याबिन्स्क से बुला लेने का इरादा किया।

"उससे मुझे बड़ी मदद मिल जायेगी क्योंकि वह उनकी भाषा जानती है," पेलागेया कुज़्मीनिश्ना ने कहा। "और अगर जॉन नाम का वह आदमी रूसी नहीं जानता होगा तो सोन्या मेरे लिए दुभाषिये का काम करेगी।"

फ़ार्म के चीफ़ मेकेनिक अन्द्रेई लोगिनोव को, जो "पत्रव्यवहार पाठ्यक्रम" का युवा इंजीनियर और फ़ार्म के अध्यक्ष का चहेता था, कहा गया कि टेलीफ़ोन का एक आरज़ी कनेक्शन लगा दे, क्योंकि मुमकिन है मिस्टर टेनर न्यू-यार्क के साथ बात करना चाहें।

बख़्रूशिन ने अपना रेफ़्रीजरेटर दे दिया। यों भी उसकी पत्नी को इन मशीनों की रासायनिक ठण्ड की तुलना में चीज़ों को ठण्डा रखने के लिए तहख़ाने की क़ुदरती ठण्ड ज़्यादा पसन्द थी। कमरों में एक टेलीवीजन-सेट भी रख दिया गया। टेलीवीजन के पर्दे पर सोवियत संघ की गतिविधि की ज़्यादा पूरी तसवीर देखते हुए त्रोफ़ीम और टेनर को कोई नुक्सान नहीं पहुंचेगा।

बख्रूशिन को इस बात में भी कोई दोष नजर नहीं आया कि मेहमानों की सेवा में एक छोटा कुमैती घोड़ा रख दिया जाय, घोड़े का नाम भी बड़ा आशाजनक था – वीख्र (बवंडर)। उन्हें सवारी का मज़ा लेने दो। जवानी के दिनों में त्रोफ़ीम घुड़सवारी का बड़ा शौक़ीन हुआ करता था। और वीख्र के मुक़ाबले का घोड़ा तो द्रयागिलेव-घर से पूरे मील-भर के घेरे में नहीं मिलता था। वे भी देख लें कि बख्रूशी में आजकल कैसे घोड़े पाले जाते हैं। और अगर आगन्तुकों को मोटर-कार ज्यादा पसन्द हो, तो, शौक़ से, वे नयी जीप-गाड़ी में घूम-फिर सकते हैं। अगर मन आये तो उसे ख़ुद चलायें, चाहें तो ड्राइवर उसे चला सकता है।

और चूंकि अख़बार ने सिफ़ारिश की है कि उनकी "मुनासिब रूसी ढंग से आवभगत" की जाय, तो वैसे ही उनकी आवभगत करनी होगी। बख्रूशिन ने "रूसी आवभगत" के अनुसार किये गये सारे इन्तजाम की जांच की, यह निश्चय करने के लिए कि कहीं वह ज़रूरत से ज्यादा आवभगत तो नहीं कर रहा है, लेकिन उसमें उसे कोई भी ऐसी बात नहीं मिली जो उसकी हैसीयत को बट्टा लगानेवाली हो। और अगर कोई त्रुटि रह गयी हो तो उसे किसी समय भी दूर किया जा सकता है।

अब उसके लिए अपने घर की भीतरी तैयारी की ओर ध्यान देना बाक़ी रह गया था। शायद ज़िन्दगी में पहली बार बख्रूशिन रसोईघर के मामलों में अपनी टांग अड़ाने लगा था। उसकी पत्नी को ताज्जुब हुआ।

"तुम क्या समझते हो, मैं उन दो सैंडविच-ख़ोरों को खाना भी नहीं खिला सकूंगी, जब कि लगभग सारी सरकार यहां रह चुकी है?"

पर प्योत्र तेरेन्त्येविच टस से मस न हुआ।

"सरकार की अलग बात है," वह बोला। "सरकार तो हमारी अपनी है। जो कुछ उसके सामने रखोगी वह उसे यथोचित समझकर खा लेगी। लेकिन इनकी आंखें उन चीज़ों को खोजती फिरेंगी जो दिखावा करने के लिए रखी गयी हैं। इसलिए केवियार नहीं होगी, और स्टर्जन मछली भी नहीं होगी, हालांकि फ़ार्म के अध्यक्ष-मण्डल ने खाने-पीने के लिए साढ़े तीन हज़ार रूबल की रक़म निर्धारित की है, और प्रादेशिक केन्द्र ने केवियार का पूरा कनस्तर भेज दिया है, क्योंकि केवियार को देखकर

अमरीकियों के मुंह से उसी तरह राल बहने लगती है जिस तरह चूज़े को देखकर लोमड़ी के मुंह से।"

"फिर हम उनके सामने ग़रीबड़े क्यों बनें?" येलेना सेर्गेयेव्ना ने प्रतिवाद किया।

"मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हमें ग़रीबड़े बनना चाहिए। मैं तो सिर्फ़ यह कह रहा हूं कि हमें बहुत भाग-दौड़ नहीं करनी चाहिए। हम शिष्टतापूर्वक मेहमानों का स्वागत करेंगे। कोई वजह नहीं है कि हम ऐसा न करें। लेकिन हमें उनके सम्मान में पलकें बिछाने की ज़रूरत नही है।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने कमरा लांघकर पिता के चित्र की ओर देखा, जिसे हाल ही में एक पुराने फ़ोटो में से निकालकर बड़ा किया गया था।

"अगर पिता जी न होते तो त्रोफ़ीम ने तो उस दिन मुझे मार ही डाला होता..." वह कहता गया। "कम से कम, मार सकता था। और अगर वह नहीं मार पाया तो इस से वह ज्यादा बेहतर या शरीफ़ इनसान नहीं बन जाता। मैं पुराने बदले नहीं चुकाना चाहता हूं। पार्टी ने मुझे निजी शिकायतों से ऊंचा उठने की तालीम दी है। फिर भी उस रोज़ वह मुझे एक व्यक्ति के नाते नहीं बल्कि "लाल" के नाते, एक बोल्शेविक के नाते खोज रहा था..."

येलेना सेर्गेयेव्ना अपने पति के पास जाकर उसका सिर सहलाने लगी।

"इसके बारे में बहुत सोचो नहीं," उसने कहा, "आख़िर वह कोई हत्यारा नहीं है..."

"वह हत्यारा बन तो सकता था। संयोग से अगर वह बन नहीं पाया, तो इससे उसका अपराध धुल नहीं जाता। तुम बड़ी नेकदिल हो, येलेना," प्योत्र ने बड़े स्नेह से अपनी पत्नी की आंखों में आंखें डालकर कहा। "मुझे भी ऐसा महसूस होता है, कि इस लम्बे अर्से में उसके भी पापों का बोझ कुछ हल्का हुआ होगा पर इतना कम कि मेरी समझ में नहीं आता कि मैं उसके साथ हाथ कैसे मिला पाऊंगा... पर कोई चारा नहीं है। मुझे उसके साथ हाथ मिलाना ही होगा। पर हमारे घर में हम उन से उसी तरह से पेश आयेंगे जिस तरह हमारे दिल और अन्तःकरण ने हमें आज्ञा दी। यहां पर कूटनीतिक औपचारिकता नहीं चल सकती।"

इसके बाद प्योत्र तेरेन्त्येविच खाने-पीने की चीजों की चर्चा करने लगा।

"पीने के लिए क्वास, वोद्का, और जंगली गुलाब की नारस्तोयका-शराब। न आर्मीनियाई ब्रांडी रखेंगे और न ही जार्जियाई अंगूरी शराब, जो केवल सम्मानित और प्रिय अतिथियों के सामने रखी जाती हैं। अब "चारे" पर आओ। ताजा खीरे, सभी क़िस्म के, बिना कटे। प्याज, काली मिर्च और सिरके के साथ टमाटर। गुलाबी रंग के टमाटर बिल्कुल नहीं रखेंगे। गाल्या सभी सत्ताईस के सत्ताईस पौध-घरों में जाय और जहां से भी सबसे लाल टमाटर मिलें चुनकर ले आये। फूल गोभी। इसे सीधा उबालकर परोसना। इसके साथ सजावटी सामान कुछ नहीं होगा। हरा प्याज़। नमक लगी ताजा खुम्मियां। तुदोयेव के घर से मंगवा लेना। ताजा आलू। बस।"

"और खाने के लिए क्या होगा?"

"अगर वे लोग सुबह के वक़्त आये तो शांगी या फिर प्याज़ के साथ पर्च मछली के समोसे। मोटा आटा इस्तेमाल करना। याद रखोगी न?"

"उम्मीद तो है।"

"अब आगे चलो। अगर दिन के भोजन के समय आये तो शुरू करेंगे "चारे" से और ख़त्म करेंगे पेल्मेनी से। और अगर शाम को आये तो तुम इन सभी चीजों में से जो मन आये चुन लेना।"

"और चाय?"

"हां, पूर्वी जर्मनी वाला चाय का सेट नहीं निकालना। यह कोई पर्व का दिन नहीं है। हम झुक झुककर उनकी मेहमाननेवाज़ी करेंगे तो बेवकूफ़ नजर आयेंगे।"

"ठीक," येलेना सेर्गेयेव्ना ने व्यंग से कहा, "अब पता चला कि इस घर का एक मालिक भी है। हर चीज में दिलचस्पी लेता है। शायद, साथी अध्यक्ष, अब चूंकि आप इस काम में लगे हुए हैं आप मुझे मशिवरा दे सकेंगे कि मैं इस मौक़े पर कौनसी पोशाक पहनूं?"

"जरूर। अच्छा किया जो मुझे याद दिला दिया। तुम वही पोशाक पहनोगी जो तुमने इस समय पहन रखी है। तुम किसी आपेरा पर नहीं जा रही हो। घर में बैठी हो। कोई भड़कीले कपड़े नहीं होंगे,

मास्को के अलंकार-आभूषण नहीं होंगे। और अगर बाद में यह अनुचित जान पड़े, तो थोड़ी बहुत अदला-बदली कर लेना, जैसे कहते हैं आदर-मान की निशानी के तौर पर। जब मिलें तो 'आप कैसे हैं?' कहकर उनका अभिवादन करना। अगर आप के इरादे अच्छे हैं तो हमारे इरादे दुगने अच्छे हैं। न कुरेद कुरेदकर सवाल पूछना और न कोई भेद निकालने की कोशिश करना। न तुम दिखावा करो और न उन्हें अपनी ओर तिरस्कार की नजरों से देखने दो। खाने के लिए बहुत आग्रह नहीं करना, भोजन वहां खाने के लिए ही रखा जायेगा। अगर वह कुछ नहीं खाये तो उससे कहना: 'हेल्प युअरसेल्फ़, मिस्टर टेनर'। कल पुस्तकालय की कर्मचारिन तुम्हें अंग्रेजी के कुछेक शब्द सिखा देगी। दर्जनेक शब्द काफ़ी होंगे। मेहमाननेवाज़ी के लिए। और अगर भूल जायं तो चिन्ता नहीं करना। जो कहना हो रूसी में कह देना, त्रोफ़ीम तुम्हारे लिए अनुवाद कर देगा। बस, इतना बहुत है, और अब इस पर बहस नहीं होगी।"

वख्रूशिन ने अपनी पत्नी को गाल पर चूमा, फिर सहसा उसे याद हो आया कि कबूतरबाज़ों के प्रतिनिधि देर से उसका इन्तजार कर रहे हैं, उसने खिड़की में से चिल्लाकर कहा:

"आ रहा हूं। औज़ार ले चलो। छोटे कील मिल गये?"

"जी, मिल गये," जवाब आया, "स्टोर-कीपर ने हमें कुछ रोग़न भी दे दिया है।"

"अच्छी बात है।"

पति को दूर जाते देखकर येलेना सेर्गेयेव्ना ने निश्चय किया कि धूप तेज होने से पहले ही वह सब्ज़ी बाग़ में खीरों की गुड़ाई करेगी।

अजीब बात थी... खीरे बोने की उसे कोई जरूरत नहीं थी। कुछ भी हो, अपनी सब्जियां उगाना अन्त में हमेशा महंगा बैठता है... ज्यों ज्यों साल पर साल गुज़रते गये यह एक आदत-सी, एक तरह की बन्धी-बन्धायी बात बन गयी, त्यूत्या नाम की उस बुढ़िया गाय की तरह जिस के सींग नहीं थे, जो न दूध देती थी और न ही उसका गोश्त किसी काम का था। न आप उसे फ़ार्म के सुपुर्द कर सकते थे और न ही उसे काटने को मन मानता था।

कोई परवाह नहीं। शीघ्र ही वे लोग लेनीवी टीले पर जाकर रहने लगेंगे, और वहां येलेना सेर्गेयेव्ना हर बात की व्यवस्था अलग ढंग से करेगी। घर – रहने की जगह है। उसके काम की जगह तो मुर्गी-फ़ार्म है। वहां अपने कोई सुअर, टर्की-मुर्गियां, बत्तखें या चूज़े नहीं होंगे। यहां तक कि स्ट्राबेरी की क्यारियां भी नहीं होंगी। हां, वह अपना छोटा-सा बाग़ तो ज़रूर बनायेगी। फूल होंगे। दस-बारह सेबों के पेड़ होंगे। तीन पेड़ चेरी के होंगे। एक नाशपाती का। फलों की ख़ातिर नहीं। महज़ ख़ूबसूरती के लिए। उनपर खिले फूलों के लिए, रंगीनी के लिए।

यह सब बातें मैंने संयोगवश कह डालीं। कुछ कुछ चरित्र-चित्रण करने के लिए और इस अध्याय को अन्तिम स्पर्श देने के लिए।

११

दो दिन और बीत गये। इतवार का दिन आया। एक दिन पहले बख़्रूशिन ने हजामत बनवायी और ख़ूब गर्म भाप-स्नान किया। इससे वह अपने को जवान महसूस करने लगा।

उसने रेडियो पर सुबह के अख़बारों की समीक्षा सुनी, फिर कुछ हल्का-फुल्का संगीत सुनने के बाद शराब की छोटी-सी चुस्की ली जो वह इतवार के दिन लिया करता था, और त्रोफ़ीम से मिलने के लिए तैयार हो गया।

और येलेना सेर्गेयेव्ना – उसने रोज़मर्रा की वही पोशाक पहन रखी थी जो उस रोज़ पहने हुए थी जब बख़्रूशिन उसे हिदायतें दे रहा था, फिर भी आज वह उसमें रानी-सी लग रही थी। पोशाक पर ख़ूब लोहा किया गया था, ख़ूब कलफ़ लगायी गयी थी और वह इतनी साफ़ थी कि प्योत्र भी उसकी तारीफ़ किये बिना न रह सका –

"तुम्हारी तो सदाबहार जवानी है येलेना, तुम पर तो उम्र का कोई असर ही नहीं हो रहा।"

"और मैं चाहती भी नहीं हूं," प्योत्र की बगल में बैठते हुए उसने कहा। "जिसे ऐसा जवान ख़ाविंद मिला हो वह क्यों बूढ़ी होने की सोचे।

बच्चे पल गये हैं और अपने पांवों पर खड़े हैं। यही तो वक़्त है गुलाब खिलने का।"

बख़ूशिन ने पर्दे गिरा दिये। यह ठीक नहीं लगता कि राहजाते लोग फ़ार्म के अधेड़ उम्र के अध्यक्ष और उसकी बीवी को प्रेमालाप करते हुए देखें।

और जब येलेना उसके साथ सटकर बैठ गयी तो प्योत्र बोला–

"तुम तो अभी पच्चास की भी नहीं हुई हो। पर वह कौनसा क़ुदरत का क़ानून है जिस से मेरी बूढ़ी बाहें भी तुम्हें छाती से लगा लेने को तड़प उठती हैं?"

उसी वक़्त प्योत्र को घर के बाहर किसी मोटर-कार के रुकने की आवाज़ सुनायी दी।

उसने खिड़की में से झांककर देखा। 'वोल्गा' गाड़ी खड़ी थी और उसमें त्रोफ़ीम बैठा था। उसने त्रोफ़ीम को देखते ही पहचान लिया और चिल्लाकर बोला–

"मैं अभी आया!"

वह फाटक में से निकलकर बाहर गया। त्रोफ़ीम अपना बोझ घसीटता हुआ मोटर में से निकला और प्योत्र की ओर बढ़ने लगा।

पड़ोसी अपनी खिड़कियों में खड़े यह दृश्य देख रहे थे। वे यह देखने के लिए उत्सुक थे कि दोनों भाई एक दूसरे से किस तरह मिलते हैं। क्या वे बग़लगीर होकर मिलेंगे या नहीं? कौन पहले अपना हाथ आगे बढ़ायेगा? कौनसे शब्द उनके मुंह से निकलेंगे?

सहसा इन सभी बातों ने महत्त्व ग्रहण कर लिया था।

"कहो, भैय्या," त्रोफ़ीम ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"कहो, त्रोफ़ीम," प्योत्र ने हाथ मिलाते हुए जवाब दिया।

त्रोफ़ीम ने अपने भाई को सिर से पांव तक देखा, फिर गर्दन पर से पसीना पोंछकर बोला–

"लगता है पानी बरसेगा, क्यों? बड़ी घुटन है।"

"कल भी घुटन थी पर बारिश नहीं हुई।"

त्रोफ़ीम ने फिर एक बार अपने भाई की ओर देखा, फिर अपने माता-पिता के घर की ओर देखते हुए गहरी सांस लेकर बोला –

"अभी तक खड़ा है।"

"उसे क्या हो सकता था?"

"नीचे के कुन्दे गल-सड़ नहीं गये हैं?"

"मामूली से शायद, आख़िर हैं भी तो क़रीब सत्तर साल पुराने।"

"सत्तर साल!" त्रोफ़ीम ने फिर एक बार गहरी सांस भरकर कहा। "काफ़ी लम्बा अर्सा है।"

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे। उन्होंने फिर एक दूसरे की ओर देखा। प्योत्र तेरेन्त्येविच का दिल भर आया लेकिन इसे छिपाने के लिए उसने मज़ाक करते हुए कहा –

"अगर और कोई ज़रूरी सवाल न हों, तो, हम अन्दर चलें?"

"मैं अकेला नहीं हूं।" मोटर-कार की ओर घूमकर देखते हुए त्रोफ़ीम ने कहा। "आओ, मैं तुम्हारा परिचय करा दूं। यह हैं मिस्टर टेनर। इनके बारे में मैंने तुम्हें लिखा था।" उसने कहा और एक नाटे क़द के, गठीले लेकिन फुरतीले लगभग चालीस साल के आदमी की ओर इशारा किया जो मोटर-कार में से निकल रहा था।

"सफ़र में एक एक और दो ग्यारह होते हैं। आपसे मिलकर ख़ुशी हुई।" सिर एक ओर को झुकाते हुए प्योत्र तेरेन्त्येविच ने टेनर से कहा। "तुम मिस्टर टेनर को अनुवाद करके बताओ कि मैं उन्हें भी आमन्त्रित कर रहा हूं।"

"शुक्रिया, शुक्रिया मिस्टर बख़्रूशिन प्योत्र तेरेन्त्येविच," उस सज्जन ने रूसी भाषा में जवाब दिया। "आपका भाई मुझ से ज़्यादा देर रूस से बाहर रहा है। अब मुझे आपकी ज़िन्दगी का बहुत कुछ इस रूसी त्रोफ़ीम को अनुवाद करके बताना पड़ता है।"

टेनर बढ़कर प्योत्र तेरेन्त्येविच की ओर गया और बड़े सहज ढंग से उसके साथ हाथ मिलाया।

"मेरी पत्नी ने और मैंने अंग्रेज़ी के लगभग बीस बीस शब्द सीख लिये थे, लेकिन अब देखता हूं कि यह दिक़्क़त उठाने की कोई ज़रूरत नहीं

थी।" बख्रूशिन ने हंसकर कहा। "फ़िर भी उन्हें ज़ाया जाने देना बड़े अफ़सोस की बात होगी। इसलिए कम इन मिस्टर टेनर, कम इन," उसने जोड़ा।

टेनर ठहाका मारकर हंस पड़ा, ताली बजायी और चिल्लाकर बोला –

"ब्रावो! प्रिय प्योत्र तेरेन्त्येविच! हुर्रा!"

जवाब में पड़ोसियों की खिड़कियों से भी हंसने की आवाज़ आयी।

"देखा," टेनर ने कहा, "मैं हमेशा कहता था या नहीं कि इस स्तर पर लोगों के साथ समझ-बूझ क़ायम करना ज्यादा आसान होता है।"

टेनर का गोल मुस्कराता चेहरा, जिस पर लाल लाल रंग के दो धब्बे भौंहों का काम देते थे, खिल उठा। उसकी पैनी हरे रंग की आंखें ख़ुशी से नाच रही थीं। यहां तक कि उसके गंजे सिर पर चन्द एक बालों की लट उस नाटे ख़ुशमिज़ाज आदमी की आमोदपूर्ण तसवीर को मुकम्मल बना रही थी जिस से मसख़री फूट फूट पड़ती थी।

प्योत्र तेरेन्त्येविच मुस्कराया और फिर उनसे पूछा कि वे मोटर के बारे में क्या करना चाहते हैं।

"मोटर, जितनी देर ज़रूरत होगी खड़ी रहेगी।"

"उस हालत में आप, कृपया मेरे मेहमान बनिये।" उसने छोटा फाटक खोलते हुए कहा। फिर ड्राइवर को सम्बोधन किया –

"मैं तुम्हारी जगह होता, छोकरे, तो मोटर को पाप्लर के नीचे साये में खड़ा कर देता। वरना तुम झुलस जाओगे।"

इस बीच त्रोफ़ीम सकुचाते हुए फाटक को लांघकर पुरखाओं के अपने पुराने आंगन में दाख़िल हुआ। इस पहले क़दम से ही – इस एक क़दम से ही – उसकी ज़िन्दगी में से बहुत-से बरस झर गये। उसकी आंखों ने जो कुछ देखा उससे वह सीधा उस जमाने में पहुंच गया जब किसी चीज़ ने भी उसे उस घर से अलग नहीं किया था। यहां तक कि बारिश का पानी इकट्ठा करनेवाला पुराना पीपा भी अभी तक वहीं पर मौजूद था। वह शेड के नीचे रखा रहता था और चित्तीदार कुत्ते के लिए – ज़ोर्का के लिए – कुत्ता-घर का काम किया करता था। और इस समय जो छोटी-सी कुतिया उसमें से दौड़ती हुई बाहर आयी थी, उसकी खाल पर भी काले धब्बे थे

और वह उस पहले ज़ोर्का से, इतनी मिलती-जुलती थी कि शायद वह उसी आवारा कुत्ते ही की कोई वंशज रही हो जिसे त्रोफ़ीम कहीं से उठा लाया था और पालता-पोसता रहा था।

उराल के अधिकांश किसान-घरों के आंगनों की तरह इस आंगन में भी पत्थर के चौके लगाये गये थे। समय का उन पर कोई असर नहीं हुआ था। आज भी वे उसी तरह चुपचाप पड़े थे, और उनके बीच, बल खाते सांपों जैसे टेढ़े-मेढ़े जोड़, उस सुनहरे बालू से भरे थे जिसे नन्हा त्रोफ़ीम छाल के बने एक बक्से में गोरामीलका नदी के तट पर से लाया था।

त्रोफ़ीम सहसा रुक गया और फूट फूटकर रोने लगा।

प्योत्र तेरेन्त्येविच इन आंसुओं का कारण समझ गया, लेकिन ढाढ़स बन्धाने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी – वह ऐसा कर ही नहीं सकता था।

हाथों से मुंह को ढांपे, जितनी देर त्रोफ़ीम सिसकियां भरता रहा, उतनी देर टेनर अपना कैमरा खटखटाता रहा और साथ साथ कमेन्टरी भी देता रहा –

"*यह फ़िल्म बेशक़ीमत होगी। उसे रोता देखकर लोग रोने लगेंगे।* घर लौटने का यह सीन सचमुच बड़ा ड्रामाई है।"

इसमें किसी न किसी तरह हाथ बंटाने के लिए प्योत्र ने कुएं में से पानी का डोल खींचा और अपने भाई की ओर बढ़ा दिया।

"ठण्डे पानी का छींटा मारो, त्रोफ़ीम। तबीयत संभल जायेगी।"

त्रोफ़ीम ने वैसा ही किया। फिर शैड के नीचे एक कुन्दे पर बैठकर अपनी सफ़ाई देने लगा –

"कुछ दिनों से मैं बात बात पर रोने लग जाता हूं। तुम्हारे अख़बार पढ़ते हुए भी कभी कभी आंसू नहीं रोक पाता। हालांकि उनमें छपनेवाली सभी बातों पर मेरा विश्वास नहीं है, फिर भी रोना आ जाता है। मेरे वतन की भाषा जो ठहरी।"

"ऐसा हो जाता है," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने सहमति प्रगट करते हुए कहा। "फिर एक बार मुंह धो लो और अन्दर चलकर कुछ नाश्ता कर लो। तबीयत संभल जायेगी। आप कहिए, मिस्टर टेनर, क्या आपको वोद्का पसन्द है?"

"नेकी और पूछ पूछ!" टेनर ने हवा को चमते हुए कहा, "मैं तो वोद्का को उसी तरह चाटता हूं जिस तरह बिल्ली दूध को।"

"ख़ूब, आइये फिर हमारी आपकी अच्छी पटरी बैठेगी।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच पहले त्रोफ़ीम की अगवानी करके उसे अन्दर ले गया, यह दिखाते हुए कि वही प्रधान अतिथि था, भले ही उसका आना बहुत प्रिय न रहा हो, और टेनर दूसरे दर्जे पर था।

मुलाक़ात हो चुकी थी। जहां तक प्योत्र तेरेन्त्येविच का सम्बन्ध था सबसे बड़ी कठिनाई पार की जा चुकी थी।

अभी तक तो हर बात सहज, तिरती हुई सी गति से चलती रही थी...

१२

त्रोफ़ीम ने आख़िरी बार जब इस घर को देखा था तब से कुन्दों के बने इस पुराने घर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। उसके पिता का कुछ फ़र्नीचर भी अभी तक मौजूद था—दीवारों के साथ मजबूती से जोड़े गये मोटे मोटे बेंच, बोझल टांगों पर खड़ा पुराना खाने का मेज़ वही थे। प्रकटतः अभी भी घरवालों को अलावघर के नजदीक बैठकर भोजन करना ज़्यादा सुविधाजनक लगता था, जहां से खाना ज़्यादा आसानी से परोसा जा सकता था। देव-चित्र रखने का तख़्ता भी उसी जगह कोने में मौजूद था, और त्रोफ़ीम ने घर की मालकिन के साथ हाथ मिलाने से पहले बड़े दिखावटी ढंग से उसके सामने छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाया था, हालांकि तख़्ते पर अब केवल मिट्टी का एक चपटा-सा गुलदान रखा था जिस में जालीदार फ़र्न के पत्ते रखे थे।

"भगवान का वास तो इनसान के अन्दर होता है," त्रोफ़ीम ने येलेना सेर्गेयेव्ना को समझाते हुए कहा, "न कि कोने में, एक लकड़ी के तख़्ते पर।"

"कहां वास है, यह तो इनसान पर निर्भर करता है," येलेना सेर्गेयेव्ना ने जोड़ा।

त्रोफ़ीम ने देखा कि अलावघर को फिर से बनाया गया था। अब वह पहले से छोटा और ज़्यादा सुघड़ नज़र आता था। धोने का तसला अब वहां पर नहीं था। उसकी जगह पर एक चुस्त-सा हाथ धोने का स्टैंड रखा था जिस में संगमरमर का फलक और उसमें आइना लगा था। उसके साथ ही त्रोफ़ीम को 'उराल' नाम की कपड़ा धोने की मशीन नज़र आयी। वह भी उसे स्वाभाविक-सी बात जान पड़ी। आख़िर चालीस साल बीत चुके थे। अगर इतने सालों में तुम कपड़ा धोने की मशीन जैसी चीज़ों तक भी नहीं पहुंच पाये तो तुम्हारी उपलब्धियां किस काम की?

कमरों में चारों ओर नज़र दौड़ाते हुए त्रोफ़ीम मुस्कराये बिना नहीं रह सका। नये फ़र्नीचर—अख़रोट की लकड़ी की नक़्क़ाशदार कुर्सियां, चीनी के बर्तनों की अलमारी, किताबदान, टेलीवीजन-सेट जो अख़रोट की लकड़ी की ही बनी और ख़ूब पालिश की हुई तिपाई पर रखा था—के साथ काली पड़ती हुई कुन्दों की दीवारें और लकड़ी की नीची छतें बड़ी अटपटी लग रही थीं। इस देहाती वायुमण्डल से शहरी क़िस्म का यह साज़-सामान मेल नहीं खा रहा था।

येलेना सेर्गेयेव्ना ने त्रोफ़ीम के चेहरे के भाव में अपने घर की आलोचना देख ली। वह मन ही मन बड़ी क्रुद्ध थी कि लेनीवी टीले पर जाकर बसने में क्यों विलम्ब पड़ता जा रहा है। वह चाहती थी कि त्रोफ़ीम देखे कि वहां किस प्रकार के घरों में लोग रहेंगे।

उसकी आंखों ने त्रोफ़ीम को फ़ौरन तौल-माप लिया था कि वह सतही क़िस्म का सभ्य व्यक्ति था। वह बिल्कुल वैसा ही था जैसी उसकी घड़ी की जंजीर जो शायद पीतल की बनी थी लेकिन बाहर से सोने की नज़र आ रही थी। येलेना सेर्गेयेव्ना ने उसकी आंखों को भी अच्छी तरह से देख लिया था। वे प्योत्र की आंखों से मिलती थीं। रंग में ज़रूर मिलती थीं लेकिन भाव में नहीं। वे उदास और विचार-शून्य थीं, त्यूत्या गाय की आंखों की तरह, जिन में अक़्ल की झलक नहीं मिलती थी। वे आंखें कांच की बनी उन आंखों जैसी थीं जो ठूंसकर भरे हुए जानवरों के थूथनों पर लगी रहती हैं। त्रोफ़ीम को देखने पर ऐसा ही जानवर उसे याद आ जाता था।

इस बीच टेनर कैमरे से फ़ोटो पर फ़ोटो खींच रहा था।

त्रोफ़ीम अपने बाप के चित्र के सामने रुक गया। प्योत्र तेरेन्त्येविच उसकी ओर देख रहा था और सोच रहा था कि अगर उसके भाई के दाढ़ी होती तो लगता जैसे वह आईने के सामने खड़ा अपना ही प्रतिबिम्ब देख रहा है। शायद इसी एक तत्त्व ने भाइयों की मुलाक़ात को किसी हद तक सहनीय बना दिया था। इस बात को नज़रन्दाज़ नहीं किया जा सकता था कि त्रोफ़ीम के आने से लगता था जैसे उनके पिता की सप्राण मूर्ति ने घर के अन्दर प्रवेश किया है।

जब सभी लोग खाने के मेज के आसपास बैठ गये तो त्रोफ़ीम ने पूछा –

"तुम्हारे बच्चे-बाले तो होंगे, प्योत्र?"

"हां, तीन हैं, पर वे अपने अपने घरों में रहते हैं।"

"क्या वे भी खेतीबारी करते हैं?"

"एक करता है, मेरी तरह। दूसरा लड़का नेव्यान्स्क में धमन-भट्टी में फ़ोरमैन है। बेटी सेर्गी में अध्यापिका का काम करती है।"

"बड़ी अच्छी बात है। मेरे कोई बच्चा नहीं, बस एक सौतेली बेटी है।"

ऐन उसी वक़्त त्रोफ़ीम के जेब में से संगीत सरीखा टुन्-टुन् का शब्द सुनायी दिया।

"मुझे संगीत का बहुत शौक है," उसने अपनी घड़ी दिखाते हुए कहा। फिर सहसा उसे कुछ याद आया। अपने जेब में हाथ डालते हुए बोला –

"तोहफ़ों को तो मैं भूल ही चला था।"

उसने अपने जेब में से एक चीज़ निकाली जो देखने में एक जेबी-टार्च सी लगती थी।

"मामूली-सी चीज़ है, लेकिन दिलचस्प है। शायद तुम्हारे यहां अभी ऐसी चीजें नहीं बनती हैं।"

वह जेबी रेडियो सेट था। उसपर संगीत और एनाउंसर के शब्द अच्छी तरह सुनाई देते थे और अनेक कार्यक्रम भी आते थे।

"मेरे ख़्याल में अभी यह हमारे यहां बिकते नहीं हैं," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने कहा, "या फिर बख़्रूशी तक नहीं पहुंचे हैं।"

"और यह आपके लिए है, भौजाई जी। इसे चाभी देने की ज़रूरत नहीं रहती, अपने आप इसे चाभी मिलती रहती है।"

येलेना सेर्गेयेव्ना ने अपने पति की ओर देखा, और फिर घड़ी बंधवाने के लिए त्रोफ़ीम के सामने अपनी कलाई रख दी। घड़ी पर सोने का पानी चढ़ा था।

"शुक्रिया, त्रोफ़ीम," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने कहा।

"यों कहें कि तोहफ़ों से इन्कार नहीं किया जाना चाहिए। वे इसलिए होते हैं कि मंजूर किये जायं। हम भी मुनासिब वक़्त पर तोहफ़ों के बदले में तोहफ़े हाज़िर करेंगे। और अब कहो, तुम क्या पियोगे। जाती तौर पर, मुझे तो घर की बनी शराब ज्यादा पसन्द है।"

"मैं थोड़ी-सी यह पिऊंगा," टेनर ने कहा। उसकी आंखें सुराही में से वोद्का का जाम भरने की इजाज़त मांग रही थीं। "हैरान मत होइएगा। मैं हर बात जरा तेजी से करता हूं।"

"तो हमारी मुलाक़ात के नाम!"

"हमारी मुलाक़ात के नाम, प्योत्र!" त्रोफ़ीम ने कहा। उसने उठकर सभी के साथ जाम टकराये, झुककर एक एक का अभिवादन किया और फिर आराम से घूंट घूंट करके जाम पीता रहा।

पाखण्डी है, प्योत्र ने सोचा। टेनर ने प्रतिवाद करते हुए कहा मानो वह प्योत्र के मन की बात पढ़ रहा हो—

"नहीं नहीं, इसे बुरा आदमी नहीं समझिये। मैं अपने देश में इसे व्हिस्की चढ़ाते देख चुका हूं। जरा इसे माहौल का आदी हो जाने दीजिये, फिर देखिये इसका असली रंग कैसे निकलता है।"

प्योत्र का अपना "बातचीत का रिले-यन्त्र" कभी त्रोफ़ीम तो कभी टेनर के अनुरूप बातचीत चलाने की कोशिश करता रहा, लेकिन लगता था जैसे उसे ठीक लहजा नहीं मिल रहा है।

त्रोफ़ीम की रूसी कुछ कुछ पुरानी पड़ चुकी थी और वह अपने शब्दों की भी कांट-छांट कर देता था मानो डरता हो कि कोई उसे ग़लत

न समझ ले। विदेश में देर तक रहने के कारण वह धीरे धीरे, रुक रुककर बोलता था। आधा रूसी में और आधा अंग्रेजी में सोचते हुए वह शायद सही शब्द ढूंढ़ता रहता था।

जहां तक टेनर का सम्बन्ध है, इसका लहजा विभिन्न होते हुए भी वह चलती रूसी जबान में बोलता था। प्योत्र का ध्यान इस ओर गया तो उसने पूछा—

"माफ़ कीजिये, मिस्टर टेनर, आपने इतनी अच्छी रूसी बोलना कहां से सीखा? मैंने पूछकर गुस्ताख़ी तो नहीं की?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं। और आपने पूछने का वक़्त भी ठीक चुना। क्योंकि आधे घण्टे के बाद मैं शायद ख़र्राटों के अलावा आप को कोई जवाब भी न दे सकूंगा। पर याद्दाश्त कुरेदने के लिए पहले एक और गिलास ज़रूरी है।"

उसने जाम भरा, हल्की-सी चुस्की ली और कहने लगा—

"मुद्दत हुई जब अनुवादक बनने के इरादे से मैंने रूसी भाषा सीखना शुरू किया। अनुवादक का धन्धा बड़ा ऊंचे दर्जे का धन्धा है। यह धन्धा पारस्परिक मेलजोल और सभी व्यवसायों और राष्ट्रों को समृद्ध बनाने का उत्प्रेरक है। इस शताब्दी के आरम्भ में ही मेरे बाप ने समझ लिया था कि संयुक्त राज्य अमेरिका में रोज़ी कमाने के लिए रूसी भाषा उसके बेटे की मदद करेगी। और उसने ग़लत नहीं समझा था। महान् रूसी भाषा की जानकारी से मैं अपनी रोजी भी कमा रहा हूं और अपने बूढ़े बाप की भी देख-भाल कर रहा हूं। दोस्तोयेव्स्की जब मरा तो दौलतमन्द आदमी नहीं था, लेकिन मेरे लिए वह अच्छी विरासत छोड़ गया है। आपके कुछेक सोवियत लेखक भी एक बड़े परिवार की सार-संभार में मेरी मदद कर रहे हैं।"

जाम से एक और चुस्की भरते हुए, मानो वह वोद्का नहीं, चाय हो, टेनर ने अपनी वार्ता जारी रखी—

"बेशक, आंखों से ही किसी भाषा को जानना काफ़ी नहीं होता। मैं इसे कान द्वारा भी जानना चाहता था। और इसमें मैं कामयाब हो गया। रूस की मेरी यह चौथी यात्रा है। पहली बार मैं यहां दूसरे मोर्चे के साथ

आया था। हालांकि वह जर्मनी में था, रूस में नहीं। लेकिन सैनिक रूसी थे। एल्ब नदी पर मैं रूसियों के साथ एक अर्से तक रहा। ध्यान से रूसी सीखने की वह मेरी पहली जमात थी। इसके बाद विदेशी संवाददाता की हैसीयत से मैं मास्को में काम करता रहा। लेकिन ज्यादा देर तक नहीं। मुझे वापिस बुला लिया गया, क्योंकि मेरी आंखें उन चीज़ों को नहीं देख पाती थीं जिनको 'शीत युद्ध' भड़कानेवाले लोग देखना चाहते थे। बस इस जाम में से कुछेक और चुस्कियां और सब बात साफ़ हो जायेगी। मुझे अब सौ से ज्यादा शब्द नहीं कहने हैं।"

टेनर जाम की ओर मुख़ातिब हुआ और फिर कहने लगा—

"फिर मैं यहां एक यात्री की हैसीयत से आया। यह पढ़ाई की मेरी तीसरी जमात थी। तब मैं इस भांति वाक्य-रचना कर सकता था, कि रूसियों द्वारा उन्हें ठीक करवाने की लगभग ज़रूरत नहीं रहती थी। और अब मैं चौथी जमात में हूं। येलेना सेर्गेयेव्ना, आप मुझे कितने नम्बर देंगी?"

"सबसे ज़्यादा नम्बर, मिस्टर टेनर, उत्तम," येलेना सेर्गेयेव्ना ने मिलनसारी के लहजे में जवाब दिया।

"नहीं नहीं, आप बहुत ज्यादा मेहमाननेवाज़ी कर रही हैं। जब मैं टेप-रेकार्डर पर अपने को रूसी भाषा बोलते हुए सुनता हूं तो बहुत-सी भौंड़ी आवाज़ें सुनाई देती हैं।" यह कहते हुए वह प्योत्र तेरेन्त्येविच की ओर मुख़ातिब हुआ—"उम्मीद है अब मैं अपनी ज़बान को किसी और बात के लिए इस्तेमाल कर सकता हूं?"

प्योत्र तेरेन्त्येविच और येलेना सेर्गेयेव्ना दोनों को टेनर अच्छा लगा। उसकी बातें सुनकर ही फ़ौरन किसी नतीजे पर पहुंच जाना ग़लत होगा। फिर भी यह अमरीकी पत्रकार उनकी उम्मीद से ज्यादा ख़ुशगवार आदमी निकला।

उनकी एक पड़ोसिन ने भोजन के लिए पेल्मेनी अपनी अंगीठी में तैयार कर दी थी ताकि घर बहुत गरम न हो जाये।

पेल्मेनी को देखते ही त्रोफ़ीम की आंखें फिर डबडबा आयीं।

"हे भगवान, हे भगवान... तो प्योत्र, तुम ने मेरा, मुझ पापी

का इन्तज़ार किया। अमेरिका में यह मुझे केवल सपनों में नज़र आया करती थीं। बिल्कुल बीते ज़माने में पहुंच गया हूं। हे भगवान..."

त्रोफ़ीम बड़ी सावधानी से एक एक करके पेल्मेनी को अपनी प्लेट पर रखने लगा, मानो वह देवताओं का भोजन हो।

लेकिन टेनर ने ऐसे अन्दाज़ से, मानो वह हफ़्ते में कम से कम एक बार पेल्मेनी खाता हो, सिरका, राई और काली मिर्च लेकर प्लेट पर रखीं, उन्हें मिलाया, फिर बड़ी प्लेट में से लगभग दो दर्जन पेल्मेनियां अपनी तश्तरी पर डाल लीं, और बिल्कुल एक उराल-निवासी की भांति बड़े स्वाभाविक ढंग से उनपर टूट पड़ा।

"तुम ग़लत कहते हो," टेनर ने त्रोफ़ीम से कहा, "पेल्मेनी न्यू-यार्क में भी मिल जाती हैं। सिर्फ़ पौधा अपनी ही धरती पर ज़्यादा अच्छी तरह से फलता-फूलता है। कहिए, मैं कितनी पेल्मेनी और खा सकता हूं?"

"जितनी आपका जी चाहे," येलेना सेर्गेयेव्ना ने कहा, "हमने हज़ार से ज़्यादा बना रखी हैं।"

"येलेना सेर्गेयेव्ना, मेरी पत्नी को पता नहीं चलने पाय कि आज अपने घर से दूर मैं जशन मना रहा हूं। वह मुझे खिलाती है गाजरें, कद्दूकश करके, और साथ में छेना देती है ताकि इस लोक में वह मेरी संगति का ज़्यादा से ज़्यादा आनन्द ले सके, और परलोक तक के सफ़र का ख़र्च न देना पड़े। और सच मानिये, अमेरिका में इस सफ़र-ख़र्च पर पीं बोल जाती है।"

फिर यह देखकर कि उसके मज़ाक़ का कोई असर नहीं हुआ, वह अपनी सफ़ाई में कहने लगा—

"वोद्का और पेल्मेनी मिल जायं तो ज़बान कतर कतर कैंची की तरह चलने लगती है। मैं सोचता हूं इसपर ताला लगाने की ज़रूरत है, क्यों प्योत्र तेरेन्त्येविच?"

उसने फिर एक बार अपना जाम भरा, प्लेट पर फिर सिरका, राई और मिर्च मिलायी, और फिर कुछेक दर्जन पेल्मेनी रख लीं।

"बस पांच मिनट में आपका ख़ुशमिज़ाज अमरीकी मेहमान आपके खलिहान में सूखी घास पर लेटा ख़र्राटे भर रहा होगा," उसने कहा।

"मेज पर बैठने से पहले मैं हमेशा अपने लिए सफ़री बिस्तर का इन्तज़ाम पक्का कर लेता हूं।"

"मिस्टर टेनर, अगर आप चाहें तो मैं आपके लिए फ़ौरन साये में सफ़री खाट बिछवा देती हूं।"

"जैसे आप की मर्ज़ी, येलेना सेर्गेयेव्ना... कुछ भी हो, मेरी हालत ऐसी है कि मुझे नाटक-मंच पर से विदा लेने का बहाना मिल जायेगा और दोनों बख़्रूशिन भाइयों को एक दूसरे से खुलकर बातें करने का मौक़ा भी मिल जायेगा।"

टेनर ने विदा ली और चला गया। प्योत्र तेरेन्त्येविच उसके लिए एक सफ़री खाट ले आया और बोला–

"इस कूटनीति की तो कोई ज़रूरत नहीं थी, मिस्टर टेनर। कोई ऐसी बात नहीं है जो त्रोफ़ीम और मैं आप की मौजूदगी में एक दूसरे से न कह सकते हों।"

"कुछ भी हो, हूं तो मैं आपके लिए अजनबी ही," सफ़री खाट पर लेटते हुए टेनर ने कहा।

"आपकी इच्छा।"

टेनर के बारे में सोचते हुए जब प्योत्र तेरेन्त्येविच घर लौटा तो दादी की पुरानी कहावत उसे बार बार याद आने लगी–

"कथा का निर्णय उसके आरम्भ से नहीं, उसके अन्त से किया जाता है।"

१३

घर लौटने पर प्योत्र की इच्छा नहीं थी कि वह अपने भाई के साथ दू-बदू बातें करे। इसलिए जब त्रोफ़ीम ने कहा कि "मुझे संगीत का शौक है" तो प्योत्र ने झट से रेडियोग्राम का ढक्कन उठाकर बटन दबा दिया और रेकार्डों का एक डिब्बा उठा लाया जिस पर 'चैकोव्स्की' शब्द अंकित था। उसने कोई सा एक रेकार्ड निकाल लिया। वह निकला प्रथम पियानो कन्सर्टो।

"तुम ने कहा था कि तुम्हें संगीत का शौक है। मुझे भी शौक है। इस बात में तो हम एक दूसरे से मिलते हैं।"

त्रोफ़ीम मिनट-भर के लिए प्रथम कन्सर्टो को सुनता रहा, और फिर पेल्मेनी पर टूट पड़ा। कुछ देर बाद उसने पूछा, "यह कौनसा संगीत है?"

"यह हमारे देशवासी चैकोव्स्की की एक रचना है।"

"मैंने तो कभी उसका नाम नहीं सुना," त्रोफ़ीम ने जबड़े हिला हिलाकर नवाला चबाते हुए कहा।

"यह तो और भी ज़्यादा अफ़सोस की बात है।"

"इनसान हर किसी को तो नहीं जान सकता, प्योत्र। हमारे वहां स्टेट्स में ढेरों ऐसे रेकार्ड पड़े रहते हैं। कुछ तो ऐसे कि सुनते ही उबकाई आने लगती है। उनके सामने शोर भी शर्मा जाय। लगता है आंधी में सुअर किकिया रहे हैं। तुम लोग भी एक दिन उस स्थिति में पहुंच जाओगे, मुझे यक़ीन है। तुम्हारी रुचि भी एक दिन उन जैसी हो जायेगी। अफ़सोस है कि मैं उनमें से कुछेक यहां नहीं उठा लाया। तुम सुन पाते कि वह कैसा संगीत है। सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ख़ास तौर पर जब तुरहियां बजने लगती हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे शिकारी कुत्ते भूंकते हैं। और जब वे बिगुलों पर मिमियाने लगते हैं, तो लगता है जैसे बहुत-सी भेड़ों को एक साथ ज़बह किया जा रहा हो। कुछ भी कहो, अमेरिका चमत्कारों का देश है। हमारे वहां एक रेकार्ड है जिसे जब भी सुनो, डर से पतलून उतर जाती है। अगर उसके नाम का तुम रूसी जबान में अनुवाद करो तो कुछ इस तरह होगा—'छत पर मार्च'। समझे? बिल्लियां तो अपनी स्वाभाविक आवाज में गुर्राती-चिल्लाती हैं, इसके लिए शब्दों की जरूरत नहीं रहती। तुम आवाज तो बिल्लियों की सुनते हो लेकिन देखते गर्ल्स—लौंडियों को हो।"

येलेना सेर्गेयेव्ना कमरे से बाहर चली गयी। प्योत्र तेरेन्त्येविच ने रेकार्ड उतार दिया।

"चलो, एक दूसरे की ज़िन्दगी के बारे में कुछ पूछें, पता लगायें," त्रोफ़ीम ने सुझाव दिया।

"यही सही," बख़्रूशिन ने कहा।

त्रोफ़ीम ने पहले कुछेक सवाल पूछे, जिनके जवाब प्योत्र तेरेन्त्येविच ने विस्तार के साथ यथातथ दिये, इस बात का लिहाज़ किये बिना कि त्रोफ़ीम उसका मेहमान है, हालांकि वह एक बिनबुलाया मेहमान था।

दार्या स्तेपानोव्ना के बारे में पूछे जाने पर भी प्योत्र तेरेन्त्येविच ने दो-टूक जवाब दिया –

"वह तुमसे मिलना नहीं चाहती, त्रोफ़ीम। आख़िर, जब तुमने मरने का बहाना किया था तो तुम्हें केवल अपनी रक्षा की चिन्ता थी। उस वक़्त तुमने न तो दार्या के बारे में सोचा, न ही उस बच्चे के बारे में जिसे तुम पीछे छोड़े जा रहे थे।"

"क्या दार्या के बच्चा हुआ? मेरा बच्चा?"

त्रोफ़ीम की आवाज़ कांप उठी। उसके चेहरे पर पीले पीले दाग़ नज़र आने लगे।

"हां, उसके बेटी हुई। उसने उसका नाम नदेज्दा (आशा) रखा। शायद उसने यह नाम बिना प्रयोजन के नहीं रखा था। इस समय नदेज्दा के अपने तीन बच्चे हैं। एक तरह से कहें तो वे तुम्हारे ही नाती-पोते हैं।"

"उनके नाम क्या हैं?"

"उनके नाम न पूछो तो ज़्यादा अच्छा होगा, त्रोफ़ीम। इससे क्या लाभ? हमारी तुम्हारी बात अलग है, हम एक ही छत के नीचे पैदा हुए थे। उनकी बात दूसरी है। वे तुम्हें क्यों जानें, या तुम उन्हें क्यों जानो?"

"लेकिन प्योत्र," त्रोफ़ीम ने याचना भरे लहजे में कहा, "मैं उन्हें देखे बिना कैसे रह सकता हूं? आख़िर तो उनकी रगों में मेरा ख़ून है।"

"छोड़ो त्रोफ़ीम, हम किसी अस्तबल में नहीं बैठे हैं कि ख़ून की बात करें। घोड़ों और गायों के सिलसिले में ख़ून की चर्चा समझ में आ सकती है, लेकिन इनसानों के सम्बन्ध में और बातों पर विचार किया जाता है। मेरी दो-टूक बातों पर नाराज़ नहीं होना। जहां तक उन लोगों का ताल्लुक है उनके लिए तुम १९१९ में ओम्स्क के निकट मर गये थे।"

"नदेज्दा का पितृनाम क्या है?"

"अब फिर तुमने वही राग छेड़ दिया। इसके साथ उसके पितृनाम का क्या सम्बन्ध है? तुम्हारा पितृनाम तेरेन्त्येविच है, मेरा भी वही है। हम दोनों वकूशिन हैं। इससे क्या साबित होता है? तुम किसी नदी के बारे में उसके स्रोत को देखकर राय क़ायम नहीं करते, लेकिन इस आधार पर कि वह कैसे बहती है और कहां जाती है। शायद मैं इसे ठीक तरह से व्यक्त नहीं कर पाया, लेकिन मतलब साफ़ है। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि तुम अपने बारे में मुझे कुछ बताओ? मैं भी तो जानना चाहता हूं कि तुम किस दिशा में बहते रहे हो और अब किस सागर में जा पहुंचे हो।"

"ज़रूर, प्योत्र, लेकिन चालीस सालों की कहानी तो एक लम्बी कहानी है, एक ही शाम में नहीं सुनायी जा सकती।"

"मुख्य बातें बता दो। जैसा कि आत्म-जीवनियों में किया जाता है।"

"किन में?"

"कोई बात नहीं, तुम संक्षेप में अपनी जीवन-कहानी सुनाओ। समझे?"

"समझा।" त्रोफ़ीम ने सिर हिलाया और अपनी कहानी कहने लगा।

"क़िस्सा मुख़्तसर, ओम्स्क के निकट मैंने एक भगोड़े को पकड़ लिया। पढ़ा-लिखा आदमी था। मैं सही बात करना चाहता था, उसे अधिकारियों के हवाले करना चाहता था, पर वह मिन्नत-समाजत करने लगा कि ऐसा मत करो, और मुझे मोर्चे की हालत के बारे में बताने लगा। पूरी की पूरी तसवीर खींचकर रख दी। यक़ीन न करना असम्भव था। क़िस्सा यह कि हम बाज़ी हार चुके थे। इतना ही नहीं, पिछवाड़े से हम पर गोलियां बरसायी जाने लगी थीं। साइबेरिया तो टूट चुका था। यहां तक कि उन किसानों ने भी जिन पर भरोसा किया जा सकता था, और जो भाड़े के मज़दूर लगाया करते थे, देख लिया कि कोल्चाक कोई तुर्प का इक्का नहीं है बल्कि एडमिरल की वर्दी में केवल एक कठपुतली है। सो मैंने ख़ूब सोचा, ख़ूब सोचा और उसी भगोड़े के साथ जंगल में भाग गया। कुछ देर तक तो हम भटकते रहे, फिर हमें कुछ शरणार्थी मिल गये। वे व्यापारी लोग थे। साथ में उनके चार-पांच छकड़े थे। वे भी समझ नहीं पा रहे थे कि कहां जायं, क्या करें। हमने उन्हें लूटा नहीं। हमने

उनके साथ समझौता कर लिया। 'भले लोगो, तुम्हें अपनी जान प्यारी है, हमें अपनी जान प्यारी है। हमें कुछ खाने के लिए दे दो, साफ़ कपड़े पहनने के लिए दे दो, और अगर मुमकिन हो तो उनके साथ जानेवाले काग़ज़ात भी। शरणार्थियों ने हमारे लिए कपड़े ढूंढ़ निकाले। हमने कपड़े बदले, हजामत बनायी, हाथ-मुंह धोया और दोस्तों की तरह उनसे विदा हुए। हम तो उन्हें पैसे भी देना चाहते थे लेकिन उन्होंने लेने से इन्कार कर दिया। लगता है उन्हें पैसे की सबसे कम चिन्ता थी। हम तातारस्काया नाम के एक रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। दो-एक जरूरत की चीजें मोल ली और रेल-गाड़ी में बैठकर नोवो-निकोलायेव्स्क तक चले गये। मेरे साथी ने निश्चय किया कि वह वहीं रुककर लाल फ़ौज का इन्तज़ार करेगा। उसी इलाक़े में उसकी कोई चाची रहती थी। लेकिन मैं आगे बढ़ गया। मैंने उसे ख़ैरबाद कहा, वह अपना नाम निकोलाई निकोलायेविच सुदारुश्किन बताया करता था लेकिन मुझे शक था कि यह नाम उसने ख़ुद गढ़ रखा है। पर मुझे इससे क्या लेना-देना। मैंने उससे आग्रह किया कि जब अमन-शान्ति हो जाय तो दार्या को उसका फ़ोटो भेज दे और अपनी ओर से इस आशय का पत्र भी लिख दे कि त्रोफ़ीम मारा गया था और उसने—मतलब मेरे साथी ने—मुझे मरे हुए पड़े देखा था। मैं मौत का बहाना करके सब मामला ख़त्म करना चाहता था। और साथ ही चाहता था कि दार्या पर कोई आंच नहीं आय। मेरे लिए और कोई रास्ता नहीं था।"

त्रोफ़ीम की आवाज़ टूटने लगी। उसकी आंखों में फिर एक बार आंसू उमड़ आये। प्योत्र ने देखा कि उसके आंसू सतह के नज़दीक बने रहते थे और वह उन्हें जब चाहे निकाल लेता था, जिस तरह चीड़ का रुग्ण पेड़ राल छोड़ता रहता है।

"मौत का बहाना करना ही बस, एकमात्र रास्ता रह गया था।" त्रोफ़ीम ने फिर एक बार कहा।

"मुमकिन है," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने सहमति प्रगट की। "यों भी लोग दार्या की ओर बड़ी देर तक शक की नज़र से देखते रहे थे, क्योंकि वह

एक श्वेत गार्ड सैनिक की बीवी थी। तुम्हारे मारे जाने पर, यों कहें कि उसका सारा अतीत भी मर गया। अच्छा, आगे कहो, त्रोफ़ीम।"

"यहां दादा का सोना बड़े काम आया। दार्या ने उसके बारे में तुम्हें बताया होगा।"

"हां, बताया था।"

"कुछ देर तक मैं शांघाई में रहा। लेकिन वहां रहने में ख़तरा था। मैंने सोचा विचारा, जो कुछ जेब में बच रहा था उसका जोड़ लगाया और वहां से अमेरिका का रुख़ किया। और कोई रास्ता नहीं था। वहां पहुंचकर मैंने अपना असल नाम बता दिया—त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच बख़्रूशिन। कुछ देर के लिए उन्होंने मुझे, जैसा कहते हैं, कुराटीन में रखा। फिर उन्होंने देख लिया कि मैं सच बोल रहा हूं और मेरा कोई ठौर-ठिकाना नहीं है तो मुझे छोड़ दिया। कुछ आरज़ी काग़ज़ात भी दे दिये। जाओ जहां जाना चाहते हो। बस, मैं निकल पड़ा और पांव घसीटता बन्दरगाहों और फ़ार्मों में घूमता रहा।"

"भाषा का काम कैसे चला पाते थे?" प्योत्र ने बात काटते हुए पूछा।

"जरूरत सब काम करवाती है। एक शब्द यहां से पकड़ा, दूसरा वहां से। अमेरिका की ओर जब जा रहा था तो जहाज़ के नाविकों से कुछेक शब्द सीखे थे। अमेरिका में काम चलाने के लिए बहुत शब्दों की जरूरत नहीं रहती। सबसे बड़ी चीज पैसा है। पैसा हर भाषा बोल लेता है। मैंने भी कुछ पैसा जोड़ा और कुछ नये कपड़े-लत्ते ख़रीदे। एक दिन मैंने दो औरतों को रूसी भाषा में बातें करते सुना। मैं उनके पास जा पहुंचा। हम बतियाने लगे। उन्होंने मुझे एक पता बताया। इस तरह मैं एक अमरीकी विसिम* में, रूसी केर्जाकों के बीच जा पहुंचा। चारों ओर अमेरिका ही अमेरिका फैला था और वे वहां अलावघर जलाते, रूसी ढंग के कुन्दों के बने घरों में रहते थे। वहां पीतल की देव-प्रतिमाएं थीं। सब्ज़ी बाग़

---

*विसिम—उराल की एक छोटी-सी बस्ती का नाम जहां केर्जाक (धर्मानुयाइयों के एक पुराने सम्प्रदाय के सदस्य) बस गये थे।

थे जिन में उन्होंने रूसी मटर, रोम की फलियां, और शलजम बो रखे थे। मैंने सोचा कि मैं यहीं किसी से व्याह कर लूंगा और यहीं पर बस जाऊंगा। एक लड़की पर मेरी नज़र भी थी। मार्फ़ा नाम की जवान विधवा थी वह। उसके पास घर भी अच्छा था। पर दार्या से उसका क्या मुक़ाबिला। पर फिर चारा ही क्या था? मगर बात बनी नहीं।"

"उसने तुम्हें ठुकरा दिया?"

"नहीं, नहीं। वह तो रो रोकर अधमरी हुई जा रही थी। मैं सोचता हूं इस वक़्त तक मैं काफ़ी संगदिल हो चुका था। पीछे बक्रूशी में इतना कुछ खो चुकने के बाद जो हाथ लगे उसी से सन्तोष करनेवाला अब मैं नहीं रहा था... इसके बाद एल्सा उस गांव में पहुंची। घोड़ा-गाड़ी में आयी थी जिसे दो शानदार घोड़े खींच रहे थे। अपने फ़ार्म के लिए भाड़े के मज़दूर लेने आयी थी। उसे देखते ही मैं दिल थामकर रह गया..."

उसी वक़्त येलेना सेर्गेयेव्ना यह पूछने के लिए अन्दर आयी कि क्या समावार ले आये। वोफ़ीग ने अपनी कहानी बीच ही में छोड़ दी।

"बाद में पूरी कर देना," प्योत्र ने कहा, "अब तो चाय की प्याली पीने को जी चाह रहा है।"

१४

टेनर उसी तरह एकाएक जाग उठा जिस तरह वह सो गया था। घर के अन्दर क़दम रखने पर, जहां बक्रूशिन भाई बैठे चाय पी रहे थे, वह बोला—

"क्यों साहिब, अब मेहमानों को चलता नहीं कीजियेगा, और मैं पूछ सकता हूं कि हमें कहां सिर छिपाना होगा?"

"मैं आप के साथ चलूंगा, मिस्टर टेनर। आइये, ख़ूब तेज़ चाय पीजिये, तबीयत खुल जायगी।"

"शायद आप नमक लगे खीरों का पानी पीना पसन्द करेंगे?" येलेना सेर्गेयेव्ना ने पूछा।

"ज़रूर! मैंने उसके बारे में पढ़ा तो बहुत कुछ है, लेकिन पीने का

मौक़ा नहीं मिला। रूसी साहित्य इसकी ज़मानत देता है, ज़रूर अच्छा होगा।"

येलेना सेर्गेयेव्ना बाहिर गयी और उन्हीं क़दमों लौट आयी। ज़ाहिर था कि खीरों का पानी पहले से ही सुराही में डाल लिया गया था।

"अब समझ में आया कि रूस में घरेलू दवाइयों को क्यों इतना ऊंचा स्थान प्राप्त है, येलेना सेर्गेयेव्ना।" टेनर ने झुककर कहा और गट गट करके सारी सुराही चढ़ा गया।

चाय पी चुकने पर, त्रोफ़ीम ने भी अपने स्थान पर पहुंचा दिये जाने की इच्छा प्रकट की।

शीघ्र ही मोटर गांव के होस्टल की ओर जाने लगी।

प्योत्र को उम्मीद न थी कि गांव में कुतूहली लोगों की संख्या इतनी अधिक होगी। "अमरीकियों" के साथ जब फ़ार्म का अध्यक्ष मोटर में बैठने लगा तो छोटे-बड़े सभी उम्र के बच्चों की भीड़ लग गयी। बड़ी उम्र के लोग अपनी खिड़कियों में से झांकने लगे। बहुत-से लोगों ने तो पहले से ही मौजी मिस्टर टेनर के बारे में सुन रखा था। गांव में ख़बर जल्दी फैलती है, वहां आंखों और कानों से कोई बात छिपी नहीं रहती।

"वह रहा टेनर, वह जो आगे ड्राइवर के साथ बैठा है।" उंगली से दिखाते हुए नौ साल के एक बालक ने कहा।

टेनर ने सिर पर से बेरेट टोपी उतारकर हिलायी।

बालकों को यह अच्छा लगा। उन्हें यह बात भी अच्छी लगी कि मौक़ा पड़ने पर उससे रूसी भाषा में बोला जा सकता था।

मौक़ा मिल गया था। बच्चे टेनर को ऊदबिलाव की झील, खुले में घूमता हुआ गोज़न, चचा टाम की कुटिया जो उन्होंने जंगल में बना रखी थी और निश्चय ही, कबूतर-ख़ाना दिखाना चाहते थे।

लड़के छोटे रास्ते से भागते हुए लेनीवी टीले पर जा पहुंचे। वे देखना चाहते थे कि बुढ़िया तुदोयेवा अमरीकियों से कैसे मिलती है।

तुदोयेवा, इतवार की अपनी बढ़िया पोशाक पहने उस मेहमान-घर की सीढ़ियों पर खड़ी—जो अभी तक पूरा नहीं बन पाया था—देर से अपने पहले अतिथियों का इन्तज़ार कर रही थी। ज्यों ही मोटर आकर रुकी,

वह त्रोफ़ीम का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ी – स्वागत के शब्द उसने बहुत पहले से तैयार कर रखे थे।

मोटर में आते हुए, रास्ते में ही प्योत्र तेरेन्त्येविच ने अपने भाई को तुदोयेवा के बारे में बता दिया था। और त्रोफ़ीम ने ऐसे जताया मानो उसे पहचान लिया हो।

"कहो कैसी हो, धातृ बहिन पेलागेया कुज्मीनिश्ना," उसने झुककर कहा और अपना स्थूल, बोझल हाथ आगे बढ़ा दिया।

"कैसे हैं आप धूसर भेड़िये साहिब?" जवाब में झुककर बुढ़िया ने कहा। "घर से दूर घूमते रहे हो, पर लगता है आख़िर तुम्हें याद आयी।"

"बहुत याद आयी, पेलागेया कुज्मीनिश्ना! मुझे अपनी टांगों पर विश्वास नहीं हो रहा है कि अपने वतन की ज़मीन पर चल रहा हूं।"

"रूसी भूले तो नहीं हो?"

"अभी तक तो नहीं भूला हूं। बेशक कुछेक शब्द दिमाग़ में से निकल गये हैं, लेकिन मेरे फ़ार्म पर कुछ रूसी लोग रहते हैं। वे मुझे अपनी मातृभाषा नहीं भूलने देते।"

टेनर ने स्वयं अपना परिचय तुदोयेवा से कराया –

"होटल की इतनी भली मैनेजर से मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। मेरी मां मुझे जॉनी कहकर बुलाती है – रूसी में यह नाम इवान बनता है। आप मुझे वान्या बुला सकती हैं..."

"मैं तुम्हें लाड़ से वान्यूशा कहकर बुलाऊंगी।" पेलागेया कुज्मीनिश्ना ने मज़ाक़ का जवाब मज़ाक़ में देते हुए कहा। उसने उन्हें अन्दर चलने का न्योता दिया।

टेनर गा उठा – "मेरी विशाल मातृभूमि!" उसने कहा कि अगर उसे सोवियत संघ में ज़्यादा देर तक रहने की इजाज़त दी जाय तो वह सप्तवर्षीय योजना काल के अन्त तक रहना चाहेगा।

प्योत्र तेरेन्त्येविच बड़े मिलनसार ढंग से मुस्कराया। वह टेनर का एक एक शब्द ध्यान से सुन रहा था। "यह आदमी राजनीति ख़ूब जानता है। और हमारे मामलों से भी भली-भांति परिचित है। शायद कुछ ज़रूरत

से ज्यादा ही परिचित है।" लेकिन उसने निश्चय किया कि अभी वह जल्दी में किसी नतीजे पर नहीं पहुंचेगा। "जल्दी में निकाले हुए निष्कर्ष भ्रान्तिजनक हो सकते हैं। उनसे आदमी किसी व्यक्ति के बारे में वस्तुतः निर्णय नहीं करता लेकिन उस निष्कर्ष से प्रभावित होकर करता है जो वह स्वयं गढ़ लेता है।"—उसे स्तेकोल्निकोव के ये शब्द याद हो आये।

"मैं सोचता हूं तुम ने ठीक ही सोचा है, यही बेहतर होगा।" अपने किसी अव्यक्त विचार को वाणी देते हुए त्रोफ़ीम ने कहा और उस कमरे में अपने सूटकेस रखते हुए बोला, जो उसके लिए तैयार किया गया था। "इस तरह मैं तुम पर बोझ नहीं बनूंगा और मुझे झेंप भी महसूस नहीं होगी।"

"ठीक कहा, त्रोफ़ीम। दिल की बात साफ़ साफ़ कहना ही सबसे अच्छा होता है। अब तुम आराम करोगे या थोड़ा घूमना चाहोगे?"

"घूमना चाहूंगा। यहां पड़े पड़े अकेला महसूस करने लगूंगा। चलो, प्योत्र, आज का दिन तुम मुझे ही सौंप दो। क्यों? चलो, नदी पर चलें... शायद हम वहां नहायेंगे और बीते दिनों को याद करेंगे... इसके अलावा, मैं अपनी कहानी का बाक़ी हिस्सा भी तुम्हें सुनाना चाहता हूं।"

टेनर ने, जो ड्राइवर का बिल चुका रहा था, यही ठीक समझा कि दोनों भाइयों को फिर अकेला छोड़ दे। प्योत्र तेरेन्त्येविच से बोला—

"मैं तो अपनी नयी खाट से ज़ोर-आज़माई करूंगा। पेट में खीरे का पानी और वोद्का ऊधम मचा रहे हैं। मैं लेटूंगा तो इन्हें भी अपना झगड़ा निबटाने का मौक़ा मिल जायेगा।"

इसी पर बात ख़त्म हो गयी।

खेतों में पहुंचने पर त्रोफ़ीम ने अपनी कहानी शुरू कर दी। उसकी वार्ता को भावना छू तक नहीं गयी थी। जिस पाप-स्वीकृति का उसने अपने पत्र में प्योत्र तेरेन्त्येविच को आश्वासन दिलाया था, वह यहां ढूंढ़े न मिलती थी। उसकी बातें सुनते हुए प्योत्र तेरेन्त्येविच को उन बातों का भी यक़ीन नहीं हो रहा था जो सच थीं। इसके अतिरिक्त, प्योत्र तेरेन्त्येविच की रुचि त्रोफ़ीम के जीवन के केवल उसी भाग में थी जब वह अभी अमेरिका नहीं पहुंचा था।

नदी किनारे पहुंचने पर प्योत्र तेरेन्त्येविच ने कहा—

"सब कुछ तो बता पाना नामुमकिन है... आओ नहाएं!"

लड़कपन में वे यहां पर नहाया करते थे। मछलियां भी यहीं पर पकड़ा करते थे। अब, ज़िन्दगी की तिपहरी में वे फिर वहां खड़े थे। नदी अब भी वैसे ही बह रही थी जैसे उन दिनों बहा करती थी। शायद वह पहले से कुछ छोटी हो गयी थी। या शायद बीते दिनों में वह ज़्यादा चौड़ी, ज़्यादा गहरी जान पड़ती थी।

"हां, चलो, नहाएं," सुपरिचित तट को निहारते हुए त्रोफ़ीम ने धीरे से कहा। "ढेरों पानी बह चुका है, प्योत्र, बहुत वक़्त बीत चुका है।"

"हां," प्योत्र तेरेन्त्येविच बोला, और अपने भाई की ही तरह धीरे धीरे कपड़े उतारने लगा।

१५

उस शाम बख़्रूशिन ने बूढ़े तुदोयेव और फ़ार्म की पार्टी समिति के सेक्रेटरी, दुदोरोव को अपने घर पर आमन्त्रित किया।

उनके पहुंचने पर वह बहुत ख़ुश हुआ और मज़ाक में बोला—

"हम इतनी सारी पेल्मेनी खाया तो नहीं कर सकते। पेल्मेनी के साथ साथ, आज की ख़बरों पर भी विचार करना होगा।"

दिन की तपश अलसाकर शाम की स्निग्धता में बदल चुकी थी। सूरज अभी नहीं डूबा था, येलेना सेर्गेयेव्ना के आंगन के बाग़ में तम्बाकू के फूलों की महक हवा में व्याप रही थी। इतवार का दिन था, दूर से युवकों-युवतियों के गाने की आवाज़ आ रही थी।

अपने विचारों को वाणी देने से पहले बख़्रूशिन काफ़ी देर तक इधर-उधर की बातें करता रहा। परिवार का कुशल-क्षेम पूछना, यह पूछना कि दिन कैसे बीता, 'शान्त झील' पर दुदोरोव को कितनी मछलियां हाथ लगीं—दुदोरोव हर इतवार सुबह को वहां जाया करता था—यह सब पूछना लाज़िमी था।

"तुम मछली की चिन्ता नहीं करो, यार, तुम त्रोफ़ीम की कहो,"

तुदोयेव बोला। "मछली के बारे में यह तुम्हें कल बतायेगा, आज हम इस 'पक्षी' के बारे में सुनना चाहते हैं।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच क्षण-भर के लिए कुछ सोचता रहा फिर कहने लगा –

"एक के दिमाग के पेंच तो ख़ूब कसे हुए हैं, लेकिन दूसरे के ढीले हैं। मेरा मतलब त्रोफ़ीम से है। खोखला आदमी है, खोपड़ी भी ख़ाली, दिल भी ख़ाली। देखने में लगता है कि उसने बहुत कम पढ़ा है, शायद कुछ भी नहीं पढ़ा। पर जान पड़ता है फ़ार्म के अपने धन्धे से उसे अच्छी जानकारी है। उसे अपनी रूसी भाषा कुछ कुछ भूल चुकी है, लेकिन अपना काम चला लेता है। राजनीतिक आस्थाएं – शून्य। मुझे एक तरह से उसपर शर्म आती है। उसके दिमाग में अभी भी लोग "श्वेत" और "लाल" में बंटे हुए हैं, जैसा कि १९१९ में था। राजनीति के बारे में उसे बस, इतना ही मालूम है। अपनी सफ़ाई देने की कोशिश नहीं करता पर उसे कोई पछतावा भी नहीं है। लोगों के बारे में उनके कपड़ों और उनके घरों की दीवारों के आधार पर राय क़ायम करता है। मैं सोचता हूं कि उसकी एकमात्र कसौटी पैसा है। अगर उसके आत्मा है तो वह प्याज़ से बड़ी नहीं है। एक शब्द में कहूं तो तुच्छ सा आदमी है। कृपण भी है। लालची... अपने को बहुत कुछ समझता है। सारा वक़्त मैं और मेरा की ही रट लगाये रहता है। अपनी पत्नी एल्सा से प्रेम नहीं करता। मैं सोचता हूं कि भगवान में विश्वास नहीं करता, लेकिन उसका नाम बहुत लेता है। अमेरिका में और भी बहुत-से लोग ऐसा ही करते हैं। इस प्रकार के लोग हमारे यहां भी हैं। हमारे फ़ार्म में उसे बहुत कम देखने को मिलेगा और अपने साथ तो वह और भी कम बांध ले जायेगा। नये प्रभाव ग्रहण करने के लिए वह खोपड़ी कहां से लायेगा? उसका सिर आकार में बड़ा है और अन्दर से ख़ाली है, पर मैं सोचता हूं उसमें कुछ भी नहीं डाला जा सकता। वह किसी भी नये तत्त्व को ग्रहण नहीं कर सकता। और जो कुछ उसमें पुराना था भी, वह गल-सड़ गया है। कुल मिलाकर वह आदमी जड़ है।"

"क्या है?" दुदोरोव ने पूछा।

"वह तो एक डिब्बे-बन्द जीव की तरह है।" बख़्रूशिन व्याख्या करने लगा। "जब यह आदमी नौजवान था तो उसका दिमाग़ एक तरह

से काम करता भी था। वह समाजवादी-क्रान्तिकारी और गाय की दुम में भेद बता सकता था। पर फिर लगता है कि उसे डिब्बे-बन्द कर दिया गया और चालीस साल तक इसी स्थिति में रहा। और अब डिब्बा खोला गया है और यह आदमी उसमें से निकलकर यहां पहुंच गया है–१६२० की फ़सल का तरबूज़... शायद मैं ग़लत कह रहा हूं, बढ़ा-चढ़ाकर कह रहा हूं, उसे बुरे रंगों में पेश कर रहा हूं। मैं नहीं जानता। मेरे साथ उसका ख़ास ताल्लुक है। पर कुछ भी हो, जहां तक मेरा सम्बन्ध है, यह आदमी मर चुका है।"

"अब दूसरे के बारे में कहो।" टेनर की ओर लक्ष्य करते हुए तुदोयेव ने पूछा। "बच्चे तो उसपर लट्टू हो रहे हैं।"

"अभी तक उसके ख़िलाफ़ न मुझे और न येलेना सेर्गेयेव्ना को ही कुछ बुरा कहना है। वह अमरीकी है। लगता है जैसे मैं उस से पहले मिल चुका हूं। बेशक, किताबों में। किताबों में उसके नाम अलग अलग थे, शक्ल-सूरत अलग अलग थी, शायद उसका लिंग भी कोई दूसरा रहा हो, लेकिन मूलतः यह वही आदमी है। परन्तु ये," उसने दुदोरोव की ओर मुख़ातिब होकर कहा, "केवल पहले विचार हैं। और मैं सोचता हूं, सतही विचार हैं। हां, एक बात यक़ीनी है–टेनर मिलनसार आदमी है, लोगों के साथ सीधे-सादे ढंग से पेश आता है। बड़ी चलती ज़बान है उसकी। रूसी भाषा अच्छी जानता है, और मैंने देखा है कि रूसी के ज्ञान का दिखावा करने का भी शौक़ीन है। पैनी नज़र और खोजी दिमाग़वाला आदमी है, और दो-टूक बात कहता है। या इसका स्वांग रच रहा है। त्रोफ़ीम की तुलना में वह हमें सौ गुना ज़्यादा जानता है। मोटर में सप्तवर्षीय योजना के बारे में थोड़ी बातें हुई, और पता चला कि उसने ख़्रुश्चोव की कांग्रेस-रिपोर्ट पढ़ी है, और कुछेक आंकड़े भी उसे याद हैं। इस्पात। अनाज। उत्पादन-क्षमता में वृद्धि। बिजलीकरण की तारीफ़ करता था।"

"क्या उसके मतानुसार यह मुमकिन है कि हम अमेरिका से आगे निकल जायेंगे?"

"हमारी इस विषय पर बातचीत नहीं हुई, लेकिन उसने इतना ज़रूर कहा कि जितने लम्बे डग हम भर रहे हैं उतने और कोई देश नहीं

भर रहा है। हालांकि उसने बातों बातों में यह जरूर जोड़ दिया कि इतने लम्बे डग भरते हुए हम बहुत-सी चीज़ों को दरगुज़र कर जाते हैं मतलब कि हम किसी काम को बारीकी के साथ पूरा नहीं करते। हम कुछेक बातों की ओर ध्यान नहीं देते। कुछेक चीजों की कोटि की ओर हम ध्यान नहीं देते। इस बात में मैं उसके साथ सहमत हुए बिना नहीं रह सका, विशेषकर जब हम अपने पुराने पुल को पार कर रहे थे। हमने उसे भी दरगुज़र किया और उसके आधार-स्तम्भ नहीं बदले।"

"मुझ पर भी उसकी बुरी छाप नहीं पड़ी।" दुदोरोव ने कहा, जिसे सुनकर बख़्रूशिन हैरान रह गया।

"तुम्हारा मतलब है तुम पहले से उसे मिल चुके हो?"

"हां, ज़रूर। क्या यह जानना पार्टी समिति के सेक्रेटरी का फ़र्ज नहीं है कि मेहमान आराम से तो रह रहे हैं?"

"और उसने क्या कहा?"

"कहा कि मैं ख़ूब मजे में हूं, उम्मीद से बढ़कर, फिर पूछने लगा कि उसे किस आदमी से बात करने का सम्मान प्राप्त हो रहा है। सो मैंने अपना नाम और पार्टी-पद बता दिया।"

"इस पर उसने क्या कहा?"

"वह बहुत ख़ुश हुआ और मुझे देखकर तनिक भी हैरान नहीं हुआ। उसने अनुरोध किया कि मैं उसे गांव दिखाऊं। जिस वक़्त तुम एक अमरीकी के साथ नहा रहे थे, मैं दूसरे अमरीकी को नया फल-बाग़, पुस्तकालय और संगीत-स्कूल दिखा रहा था। पता चला कि टेनर वायलिन बजा लेता है, बहुत अच्छी तो नहीं बजाता, पर फिर भी... हमारे किशोर वायलिन-वादकों को अमरीकी बच्चों के गीत बहुत पसन्द आये। फिर उसने ग्लीन्का की एक छोटी-सी कृति बजायी। मुझे अफ़सोस है कि तुम वहां पर नहीं थे, प्योत्र तेरेन्त्येविच।"

"मुझे इस बात पर कभी शक ही नहीं गुज़रा कि टेनर को संगीत से प्रेम है और बच्चों से प्रेम है। कल मैं उसे इसके लिए इनाम दूंगा, उसे पेत्रोव्स्काया वोद्का की एक बोतल भेंट करूंगा।"

"एक के बजाय दो भेज देना।" दुदोरोव ने कहा। "टेनर ने अमरीकी टेलीवीजन के लिए नन्हे वायलिन-वादकों की छोटी सिने-फ़िल्म उतारी है और उनके वादन को टेप पर रेकार्ड किया है। तुम्हें भी इस पर खुश होना चाहिए। गांवों में हर रोज़ संगीत-स्कूल देखने को नहीं मिलते। मैंने उसे यह कहा भी।"

वख्रूशिन को यह सुनकर ख़ुशी हुई। क्या मालूम टेनर सचमुच वैसा ही हो जैसा नजर आता था। यह तो नहीं हो सकता कि लोगों का दिल जीतने के लिए वह मिलनसारी का स्वांग भर रहा हो। कुछ भी नहीं कहा जा सकता...

इस संसार में अनोखी से अनोखी बातें हो जाती हैं।

उस शाम केवल वख्रूशिन के घर में ही टेनर और त्रोफ़ीम की चर्चा नहीं की जा रही थी। शायद ही कोई ऐसा घर, देहरी या सड़क रही होगी जहां इनके नाम न सुनने में आते हों और जहां दिन की ख़बरें पूरे ब्योरे के साथ एक कान से दूसरे कान तक न पहुंच रही हों। पर, पेलागेया कुज्मीनिश्ना के शब्दों में, यह तो कहानी की शुरूआत है, जो आगे चलकर खुलेगी। वह क्या रूप लेगी, इसका अभी से अनुमान लगाना कठिन है।

"इसी पर अब सो जाना चाहिए। सुबह का वक़्त शाम के वक़्त से ज्यादा अक़्लमन्द होता है,"—रूसी परी-कथा के शब्दों में पेलागेया ने जोड़ा। "और दिन का वक़्त इससे भी ज़्यादा। और कुछ नहीं किया जा सकता, केवल इन्तज़ार करो और देखो क्या होता है।"

१६

सामूहिक फ़ार्म पर श्रमिक-जीवन अपनी सामान्य गति से चल रहा था।

हमेशा की तरह, घास-कटाई के पहले दिन प्योत्र तेरेन्त्येविच तड़के उठ खड़ा हुआ ताकि ओस के रहते वह बाहर पहुंच जाय। और लोग भी पौ फूटने से पहले जग गये थे।

घास-कटाई के वक़्त अब भी गांव में उत्सव का सा समा हुआ करता था। यहां तक कि फ़ार्म के मुनीम भी आग्रह किया करते कि उन्हें घास-कटाई,

पंजाई, और ढेर लगाने के काम पर जाने दिया जाय। सामान्यतः फ़ार्म पर, मुद्दत से मशीनों का प्रयोग किया जा रहा था, लेकिन फिर भी टेक्नीकल तरक्क़ी के कारण पुराने हंसिया को त्याग नहीं दिया गया था। अब भी हंसिया, कटाई की सभी तेज़-तरार मशीनों की पड़दादी थी, जीती-जागती, कभी बूढ़ी न होनेवाली, लकड़ी के पुराने पंजे की ही भांति, जो सदियों के जमघटे में अपनी उम्र का हिसाब तक रखना भूल चुका था। इसका भी अपना विशेष कारण है।

बख़्रूशी में सबसे बढ़िया और सबसे रसीली घास जंगल में उगती थी, जंगल के अन्दर छोटे छोटे मैदानों में, जहां पर कटाई की चुस्त मशीन – जिसे एक घोड़ा खींचता था – काम नहीं दे सकती थी। लेकिन हंसिया, हर ठूंठ और हर पेड़ के आसपास से घास काट लेती थी, हरे चारे का कम से कम एक तिहाई भाग जुटाती थी जो उस घास से किसी भांति भी घटिया नहीं था जिसे बोया जाता था।

यहां तक कि फ़ार्म का अध्यक्ष भी "ज़रा बदन खोलने के लिए" घास की कटाई करता था। घास-कटाई के वक़्त केवल वही लोग अपने अपने काम पर बने रहते थे जिन का काम अत्यावश्यक हुआ करता, जैसे मुर्ग़ी-ख़ाने, पौधा-घर, डेरी में काम करनेवाली लड़कियां, चौकीदार, पम्प-घर पर ड्यूटी देनेवाले लोग, टेलीफ़ोन पर बैठनेवाला सेक्रेटरी ... पर ये लोग भी जैसे-तैसे, किसी न किसी को अपनी जगह पर बिठाकर दो-एक दिन खुले में, घास-कटाई का मज़ा ले लेते थे।

हंसिये के साथ कटाई करनेवाले बहुत-से लोग एक दिन पहले शाम के वक़्त अपने अपने क्षेत्र में पहुंच जाते थे ताकि रात जंगल में काट सकें, टहनियों के बने झोंपड़ों में, सीधे-सादे तम्बुओं में या फिर घनी शाख़ोंवाले किसी चीड़ के पेड़ के नीचे, जहां पास में जलते अलाव की धीमी धीमी आंच मिलती रहे।

बिना किसी प्रयोजन के जंगल में रात बिताना किसी को भी अनोखा जान पड़ेगा लेकिन घास-कटाई के बहाने वहां रात बिताने का विचार बहुत-से लोगों को भा जाता था। स्निग्ध रातों, गूंजते गीतों, रात की महक, ताज़ी खुम्मियों के सूप, ज़ायकेदार मछली के शोरबे, जिस में हल्की हल्की

धुएं की महक हो, चुस्की-भर शराब और भुने हुए आलुओं के भोजन का अपना मजा था।

घास-कटाई के दिनों में, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी ख़ुशियां मनाते हैं। कुछेक की पुरानी स्मृतियां जाग उठती हैं, और कुछेक के दिल में नयी आशाएं अंगड़ाइयां लेने लगती हैं।

दार्या स्तेपानोव्ना की पोती कात्या, पूरे सत्तरह साल की हो चली थी। मुबक-सी लड़की, इतनी शर्मीली कि उसकी पलकें नहीं उठती थीं। उसके लिए देवदारु के जंगलों में खिलने और चीड़ के पेड़ों के बीच चहकने का वक़्त अभी नहीं आया था। पर कोई क्या करे, जब महीना-भर पहले जंगल के एक खुले मैदान में कात्या को देखकर छोकरे ने अपनी मोटर-साइकल को ब्रेक लगाया हो—चमचमाती, आसमानी रंग की मोटर-साइकल—और धीमी आवाज में—मानो उसे अपनी आवाज से डरते हुए—कहा हो—

"कहिये, कात्या! आपको मोटर-साइकल पर ले चलूं?"

सहसा कात्या लजा गयी थी। पलकें झुकाये उसने लड़के को इस भांति सम्बोधन किया मानो वह उसका पुराना पायोनीयर लीडर अन्द्रेई लोगिनोव न होकर, कोई अजनबी हो।

"शुक्रिया, पर मैं पैदल जा सकती हूं। तीन किलोमीटर का ही तो फ़ासिला है।"

जवाब में लड़का बोला—"तीन नहीं, पांच!" और मोटर-साइकल के साथ जुड़ी हुई बग्घी का पर्दा खोलते हुए उसने अपने न्योते को फिर से दोहराया।

अगर उस वक़्त बग्घी के अन्दर कात्या को छोटी-सी कसीदा की हुई रेशमी गद्दी नजर नहीं आ जाती, और अगर उसे यह न सूझ गया होता कि जंगल के साथ साथ जानेवाली हमवार सड़क को छोड़कर अन्द्रेई ने जंगल की पगडण्डी निष्प्रयोजन ही नहीं चुन रखी है, तो शायद कात्या उसके न्योते को ठुकरा देती।

उसी दिन से वरूशी की सभी युवतियों के सामने यह बात स्पष्ट हो गयी कि फ़ार्म के चीफ़ मेकेनिक की बग्घी की सीट, जो सदा ख़ाली

रहा करती थी और जिसे लड़कियां ईर्ष्या की नजर से देखा करती थी, अब दार्या स्तेपानोव्ना की पोती कात्या ने अच्छी तरह से संभाल ली है।

आज भी अन्द्रेई लोगिनोव घास-काटनेवालों के कैम्पों के इर्द-गिर्द मंडरा रहा था. उसकी मोटर-साइकल उसके पीछे पीछे नीले धुएं की लकीर छोड़ती जा रही थी। बहाना तो वह कर रहा था मशीनों की जांच करने का, पर हर कोई जानता था कि जंगल में घास-काटनेवाली 'मशीनरी' ऐसी नहीं थी कि इतने हुनरमन्द हाथों को उसकी जांच करने की ज़रूरत पड़े।

अन्द्रेई को उस कड़ी हिदायत की ख़बर नहीं थी जो कात्या को उसकी नानी ने दे रखी थी, कि सारा महीना वह बख्रूशी से दूर रहे। जब तक "नानी का वैरी" अमेरिका लौट नहीं जाता उस वक़्त तक कात्या और उसके भाइयों को शुत्योमी के निकट मित्यागिन चरागाह में रहना होगा।

दार्या स्तेपानोव्ना की बेटी नदेज्दा इससे सहमत नहीं थी। उसे कोई वजह नज़र नहीं आती थी कि वह अपने बच्चों को और अपने को उस आदमी से छिपाती फिरे जिस के प्रति उनके दिल में किसी प्रकार का आदर भाव नहीं हो सकता था बल्कि वह तो चाहती थी कि वह आदमी उसे और उसके बच्चों को देखे।

"उसे पता तो चले कि हमारे और उसके बीच कितनी दूरी पायी जाती है," उसने प्रतिवाद करते हुए अपनी मां से कहा। "उसे अपने किये की कुछ तो सजा मिले।"

लेकिन दार्या स्तेपानोव्ना टस से मस न हुई। यहां तक कि उसने ऐसे तर्क पेश किये जिन्हें स्वयं उसका दिल नहीं मानता था—

"बच्चों को उसकी बुरी नज़र लग सकती है। ख़ासकर कात्या को।"

उस रोज़, जंगल की ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर अन्द्रेई की मोटर-साइकल दहाड़ती रही, लेकिन बेसूद। कात्या ने उसका न्योता नहीं सुना। उसकी आंखों के सामने कात्या आह्लाद की प्रतिमा बनकर प्रगट नहीं हुई। सदा की भांति "फिर आप से मुलाक़ात हो गयी!" कहकर उसका अभिवादन नहीं किया।

फिर दिन चढ़ आया। हंसिया के फल सांय सांय करते हुए झूमने लगे और जंगली घास जो उस साल, कमर से कहीं ऊंची उठ आयी थी, चुपचाप कट कटकर गिरने लगी।

प्योत्र वरूशिन खुले गलेवाली, सफ़ेद कमीज़ पहने, काम कर रहा था। वह नौजवानों का अनुसरण करते हुए कठिन स्थानों पर से घास काट रहा था।

घास-कटाई शुरू हो गयी थी...

१७

सूरज निकल आया था लेकिन जंगल के अन्दर अभी भी ख़ुनकी थी और ओस से सनी घास सूखने का कोई इरादा नहीं रखती थी।

प्योत्र तेरेन्त्येविच घास काटने में इतना व्यस्त था कि उसे त्रोफ़ीम के आने का कुछ पता नहीं चला। त्रोफ़ीम ने भी रूसी ढंग की कमीज़ पहन रखी थी, लेकिन उस पर पेटी नहीं लगी थी, और हंसिया उठाये हुए था।

"यह क्या?" प्योत्र तेरेन्त्येविच बोला। "हंसिया का खेल खेलने आये हो?"

"ऐसा ही समझो, भैय्या। मौसम बड़ा अच्छा है। अच्छी फ़सल के लिए मेरी शुभकामनाएं!" त्रोफ़ीम ने झुककर कहा और सधे हुए हाथों से हंसिया तेज़ करने लगा।

"मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि तुदोयेवा ने तुम्हें इस तरह सजा-धजा कर भेजा है।"

"हां। उसी ने मुझे हंसिया भी दी है।" त्रोफ़ीम ने जवाब दिया।

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने अपने भाई की ओर देखा। त्रोफ़ीम ने बूढ़े तुदोयेव की पतलून पहन रखी थी जिसे देखकर प्योत्र तेरेन्त्येविच को हंसी आ गयी।

"तुम तो बिल्कुल रूसी नजर आते हो, सच!" उसने कहा।

"मैं रूसी ही तो हूं, प्योत्र!" त्रोफ़ीम ने दृढ़ता से कहा। "रूसी क़ौम रूस की धरती पर ही तो नहीं बसती।"

"ठीक है, त्रोफ़ीम, लेकिन सौ फ़ी सदी ठीक नहीं। पर छोड़ो इस सवाल को... देखें तुम हंसिया चलाना भूले हो या नहीं।"

त्रोफ़ीम घास काटने लगा। ज़ाहिर था कि हंसिया उसके लिये बहुत हल्की थी। लेकिन दस-बारह बार चला चुकने के बाद वह अभ्यस्त हो गया। वह घास को नीचे से काटता था, ज़मीन के साथ साथ, यहां तक कि पेड़ों के बीच में भी जहां हंसिया चलाना कठिन था, वह किसी टुकड़े को भी नहीं छोड़ता था।

"तुम्हारा हाथ अभी भी ख़ूब चलता है," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने भाई की तारीफ़ करते हुए कहा।

"लेकिन मैं ज़्यादा देर तक नहीं काट सकता। मेरे अपने फ़ार्म में छोटा-सा जंगल है। दसेक साल पहले मैं एक दिन में अकेला सारे जंगल की घास काट डालता था। लेकिन अब तीन दिन लग जाते हैं। पेड़ों की टहनियों से एक झोंपड़ा-सा खड़ा करता हूं हालांकि घर काफ़ी नजदीक है।"

"बूढ़े आदमी भी बच्चों की तरह होते हैं, उन्हें भी खिलौने ख़ूब भाते हैं," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने कहा, "क्या तुम्हारा जंगल हमारे जंगलों जैसा है?"

"इनसे मिलता-जुलता है लेकिन बिल्कुल इन जैसा नहीं। प्योत्र, अमेरिका में रूसी बर्च का पेड़ भी अमेरिकी ढंग से उगता है।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने घास काटना छोड़ दिया और ठहाका मारकर हंस पड़ा।

"देखा, त्रोफ़ीम, अगर बर्च का पेड़ अलग क़िस्म की ज़मीन पर अपने ढंग से उगता है, तो आदमी पर तो यह बात और भी ज़्यादा सच बैठती है। तुम किसी क़ौम के बारे में केवल भाषा से या, मिसाल के तौर पर घास-कटाई से, राय क़ायम नहीं कर सकते। क़ौम केवल साझी ज़मीन ही नहीं, हवा भी है। जिस हवा में आदमी सांस लेता है, जिस तरह से उसका मन सोचता है वह शायद बोलचाल की भाषा से ज़्यादा महत्त्व रखता है।"

"तो फिर मैं क्या हूं? एक ऐसा आदमी जिसका कोई कुल-वंश नहीं है?" त्रोफ़ीम ने प्रतिवाद किया। "क्या हम एक ही बीज के फल नहीं

हैं? क्या इसी धरती ने मुझे पाला-पोसा नहीं है? क्या तुम यह कहना चाहते हो कि राजनीति ख़ून से ज्यादा महत्त्व रखती है?"

"आज जंगल में बहुत लोग हैं," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने चेतावनी देते हुए कहा, "इस लिए ख़ून की बात न करें तो अच्छा है। तुम मेरे मेहमान हो और मैं—मेजबान। हमारा आपस में कोई झगड़ा नहीं है। पुराने मुर्दे उखाड़ने या भविष्य के बारे में अपनी राय देने की कोई जरूरत नहीं है..."

"तुम्हारी मर्ज़ी, प्योत्र। जैसा तुमने कहा है, तुम मेजबान हो, मैं तुम्हारा मेहमान हूं। पर मैंने सोचा था कि राजनीति के अलावा और विषयों पर भी बातें करने के लिए हमारे पास बहुत कुछ है।"

"छोड़ो, रहने दो। उस चीड़ के पेड़ के नीचे कुछ क्वास रखी है। तुम्हें इस तरह के काम की आदत नहीं है, शायद तुम थक गये हो। थोड़ी क्वास पियो। कुछ सुस्ता लो, इस बीच मैं इस टुकड़े पर से घास काट लेता हूं, फिर, अगर तुम्हारी इच्छा हुई तो मैं तुम्हें खेत दिखाने ले चलूंगा। मुझे यों भी उधर जाना है..."

त्रोफ़ीम चुपचाप चीड़ के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। वह अपना पाइप भरने लगा। पसीने से उसकी कमीज तर हो रही थी।

उसी वक़्त अपनी मोटर-साइकल पर अन्द्रेई आ पहुंचा।

"साथी चीफ़ मेकेनिक, मुझे यक़ीन है कि काम के वक़्त, तुम कात्या की टोह में यहां नहीं आये होगे?"

"आया तो उसी की टोह में हूं, प्योत्र तेरेन्त्येविच," अन्द्रेई ने स्वीकार किया। "सुना है वह दार्या स्तेपानोव्ना के साथ ही बछ़रूशी से चली आयी थी।"

"अगर लोग यह कहते हैं तो जरूर ठीक होगा। क्यों?"

"मैं कात्या के लिए एक बहुत बढ़िया एल्बम लाया हूं। दुनिया-भर की गायें। उसमें रंगीन चित्र और फ़ोटो हैं। मैं उसे यह ऐल्बम देना चाहता हूं। वह कहां है?"

"इस बात की ख़बर रखना मेरा काम नहीं है, अन्द्रेई," त्रोफ़ीम की ओर देखकर प्योत्र तेरेन्त्येविच ने कहा। "तुम जानते हो, उसकी नानी नहीं चाहती कि उसके नाती-पोते अपने विदेशी नाना से मिलें। इस लिये

वह अपना अता-पता बताये बिना कहीं चली गयी है... आओ तुम्हारा परिचय करा दूं, आप हैं मिस्टर बख़्रूशिन, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच।"

इस तरह अचानक पकड़ा जाने पर अन्द्रेई अटपटा महसूस करने लगा। पर प्योत्र तेरेन्त्येविच पहले की तरह ही बतियाता रहा—

"शर्माओ नहीं। कौन जाने, अगर कात्या को नये सलोतरी की 'मसक्वीच' मोटर-कार से तुम्हारी यह कमरतोड़ ज्यादा पसन्द आ गयी तो तुम्हारे भी ऐसे रिश्तेदार होंगे जो अमेरिका में रहते हैं। सलोतरी उन चारों को अपनी मोटर में भरकर न जाने कहां ले गया है। सुन्दरी कात्या को उसने अगली सीट पर अपनी बग़ल में बिठा रखा था। और मोटर का आगे का शीशा एक तरह से उस सुन्दर चित्र के लिए फ़्रेम का काम कर रहा था।"

अन्द्रेई हक्का-बक्का रह गया। वह अटपटे ढंग से चलता हुआ उस पेड़ के पास पहुंचा जिसके नीचे त्रोफ़ीम बैठा था और अभिवादन में सिर हिलाकर बोला—

"नमस्ते, मिस्टर बख़्रूशिन, आपसे मिलकर ख़ुशी हुई।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच यह जाहिर नहीं होने देना चाहता था कि उसके दिल में अपने नौजवान सहायक के लिए बड़ा आदर-भाव है, इस लिये वह हटकर फिर से घास काटने लगा।

"नमस्ते, मेरे फ़ार्म पर भी एक मेकेनिक है। केवल वह तुमसे उम्र में कुछ बड़ा है।"

वहीं पर वार्तालाप ख़त्म हो गया। अन्द्रेई कुछ देर तक हिचकिचाता हुआ खड़ा रहा, फिर वहां से निकल जाने के लिए बहाना गढ़कर बोला—

"मुझे तीसरे क्षेत्र में जाना है। वहां दो ट्रैक्टरों की अभी मरम्मत की गयी है। उन्हें एक नजर देखना चाहता हूं।"

जितनी जल्दी अन्द्रेई वहां आया था, उतनी ही जल्दी वह वहां से ग़ायब हो गया। जब मोटर-साइकल की गड़गड़ाहट बन्द हुई तो त्रोफ़ीम ने पूछा—

"तो क्या वह ब्याहने लायक़ हो गयी है?"

"अभी तो छोटी है," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने जवाब दिया। "जब तक वह कालिज की पढ़ाई पूरी न कर ले, शादी का सवाल नहीं उठता।

वह पशु-पालन विशेषज्ञा बनेगी। तुम यह क्यों नहीं पूछते कि उसकी शक्ल-सूरत कैसी है?" प्योत्र तेरेन्त्येविच ने अपनी हंसिया एक टहनी पर लटका दी और कात्या का बखान करने लगा। ऐसा करते हुए अनजाने में उसने जवानी के दिनों की दार्या का चित्र पेश कर दिया। नातिन के वर्णन से, हालांकि वह बड़ा संक्षिप्त था, यह एकरूपता उभड़कर सामने आ गयी।

बख़्रूशी में घटनाओं ने जो रुख़ पकड़ा था वह इतना सरल नहीं था जितना त्रोफ़ीम ने आशा की थी। इस बात से अपना मन हटाने के लिए, या शायद हृदय के आवेग को छिपाने के लिए, उसने टहनी पर से अपनी हंसिया उतारी, और बड़ी तेज़ी से घास काटने लगा, मानो वह अपनी खीझ घास पर निकालना चाहता हो।

१८

किरील अन्द्रेयेविच तुदोयेव ने, जो स्वयं बड़ा मिलनसार, बातूनी और कुतूहली स्वभाव का आदमी था, जल्दी ही टेनर से दोस्ती गांठ ली। बूढ़ा उसे जॉन, या "छोकरा" तक कहकर बुलाता। उस रोज़ वह टेनर को बड़ी चरागाह में ले गया।

"देखा न छोकरे, घास-कटाई के लिए कैसा अच्छा दिन है! गर्मी भी है और हवा भी। घास इतनी जल्दी सूखती है मानो कड़ाही में उसे सुखाया जा रहा हो। देखो तो यह कितनी कुरमुरी है, कितनी ऊंची उठ आयी है।"

"हां, हां," टेनर ने कहा और हर एक अपरिचित शब्द को मुंह में दोहराने और बुढ़ऊ से उसका अर्थ समझने के बाद उसने उन्हें एक मोटी-सी कॉपी में लिख लिया।

गरमी बहुत थी, उससे परेशान होकर तुदोयेव ने अपने बूट उतार दिये। उसने झट से उन्हें उतार फैंका, पैरों पर बन्धी साफ़-सुथरी सफ़ेद पट्टियां खोल दीं और नंगे पांव चरागाह में से जाने लगा।

"ख़ूब सूझा!" टेनर ने चिल्लाकर कहा। "क्या अभी भी आप घास काट सकते हैं, किरील अन्द्रेयेविच?"

"यह भी कोई पूछनेवाला सवाल है?" बूढ़े ने कहा, "पर तुम किस लिए जानना चाहते हो?"

"इसे आप कभी भी नहीं बूझ पायेंगे। आप जैसा आदमी तो ढूंढ़े नहीं मिलता। आप के देश का एक महान् लेखक था न, लेव तोलस्तोय! आप उससे बहुत मिलते हो। वह भी नंगे पांव घास काटा करता था।"

सुनते ही तुदोयेव की बाछें खिल गयीं। इस एकरूपता के बारे में उसे पहले भी कई बार बताया गया था, और इसका कारण वह अपनी कहानी कहने की प्रतिभा को समझे बैठा था।

"आप घास काटिये, और मैं इस मुलाक़ात की याद में एक अच्छी-सी तसवीर खींचता हूं।"

"मुझे कोई एतराज़ नहीं है। केवल यहां पर हंसिया नहीं मिलेगी। देखो किस चीज़ के साथ घास काटी जा रही है," मशीनों की ओर इशारा करते हुए उसने कहा। "चलो, जंगल में चलें।"

उन्होंने छकड़े की पेटी ताज़ी घास से भर ली और जंगल की ओर जाने लगे। बढ़िया नस्ल का और ख़ूब सजा-धजा घोड़ा—वीख़र—हल्की, स्थिर गति से, अपनी पतली टांगों को बढ़ाते हुए भागने लगा।

जंगल नजदीक ही था। टेनर घोड़े को एक पेड़ के साथ बांध ही रहा था कि तुदोयेव भागता हुआ जंगल में घुस गया और उन्हीं क़दमों एक हंसिया उठाये लौट आया। जब वह बाहर निकला तो उसके पीछे पीछे गांव के कुछेक कुतूहली लोग भी थे। इन्हीं में, ज़िला पार्टी समिति का सेक्रेटरी, स्लेकोल्निकोव भी था, जिसे घास-कटाई के मौसम में खेतों पर जाने की आदत पड़ चुकी थी।

"आओ, किरील अन्द्रेयेविच को लेव तोलस्तोय की भूमिका अदा करते हुए देखें," मुख्य कृषि-विशेषज्ञ, सेर्गेई सेर्गेयेविच स्मेतानिन के साथ जंगल में से बाहर निकलते हुए उसने कहा। "साथ ही हमें एक जीते-जागते अमरीकी को भी एक नज़र देखने का मौक़ा मिल जायेगा। अपने ज़माने में मैंने हज़ारों अमरीकी देखे हैं।"

कहते हुए उसने अपनी रफ़्तार धीमी कर दी ताकि तसवीर खींचने में रुकावट नहीं डाले।

तुदोयेव ने ख़ूब पोज़ बनाये। टेनर ने बहुत-सी तसवीरें खींची, उसके बाद सिने-कैमरा उठा लिया।

"मेरी ओर चलते आइये," उसने कहा, "अपने माथे का पसीना नहीं पोंछियें, किसी हालत में भी नहीं, और कैमरे की ओर भी नहीं देखिये।"

टेनर कूल्हों के बल बैठ गया, अपनी आंख कैमरे में जमा ली और धीरे धीरे तुदोयेव की गतियों के अनुरूप कैमरे को चलाने लगा।

"बस एक बार और, नज़दीक से।"

टेनर भागता हुआ बुढ़ऊ के पास गया।

"आप थक गये हैं। माथे पर से पसीना पोंछ लीजिये।"

बूढ़ा बहुत अच्छा ऐक्टर साबित हुआ और टेनर ने तारीफ़ों के पुल बांध दिये।

"बहुत ख़ूब! आश्चर्यजनक! बहुत ही स्वाभाविक है!"

"मैं यह तो नहीं जानता कि जॉन टेनर की ये तसवीरें कितने आश्चर्यजनक ढंग से स्वाभाविक होंगी," स्तेकोल्निकोव ने अपने साथी से कहा, "लेकिन मैं इतना जानता हूं कि इन फ़िल्मों को खींचने के बाद टेनर को इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात देखने को मिलेगी या फिर मेरी याद्‌दाश्त और मेरे कान मुझे धोखा दे रहे हैं।"

"क्या मतलब?" स्मेतानिन ने पूछा।

"अगर मेरी याद्‌दाश्त मुझे धोखा नहीं दे रही है, तो मैं कहूंगा कि दुनिया बड़ी छोटी-सी जगह है, एक घिसी-पिटी, नीम-सच कहावत के शब्दों में कहूं तो... हम एल्ब नदी के तट पर एक दूसरे से मिल चुके हैं। उन दिनों यह दुभाषिया हुआ करता था। मेरे लिए तो यक़ीन करना मुश्किल है..."

"लो, सोचो। पर शायद यह वह आदमी न हो। बहुत-से चेहरे एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं।"

"लेकिन आवाज़? और झमेलिया तबीयत? और वे ठूंठों जैसी उंगलियां? ठीक है, वही आदमी है। मुझे यक़ीन है।"

"क्या और नज़दीक चलें?"

"नहीं, किस लिए? बाद में... यह अपने तक ही रखना, सेर्गेई सेर्गेयेविच, समझे? मुमकिन है मैं ग़लती पर हूं। कुछ लोगों के चेहरे एक दूसरे से बहुत मिलते हैं।"

"बिल्कुल ठीक। इसके अलावा, क्या उसे यह बताना सचमुच ज़रूरी है कि तुमने उसे पहचान लिया है? आख़िर तो तुम... जानते हो न... इससे कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ता, लेकिन फिर भी..."

स्तेकोल्निकोव ने अपने साथी की छोटी छोटी भूरी आंखों में आंखें डालकर देखा और मुस्कराकर कहा–

"तुम बड़े चतुर और दूर की सोचनेवाले रण-नीतिज्ञ हो।"

मुख्य कृषि-विशेषज्ञ ने विनम्रता से पलकें झुका लीं।

"मैं डींग नहीं मारना चाहता, फ़्योदोर पेत्रोविच, लेकिन चौकसी हमेशा मेरा एक गुण रही है। जब मैं अभी पार्टी सदस्यता के लिए उम्मीदवार नहीं था, तब भी। अगर मैं तुदोयेव की जगह होता तो कभी भी नंगे पांव, हंसिया उठाये, तसवीर खिंचवाने को राज़ी न होता जब कि हमारे पास चारों ओर इतनी ज्यादा मशीनें मौजूद हैं," दूर दूर तक फैली हुई हरी चरागाह की ओर हाथ फैलाकर स्मेतानिन ने कहा, जहां मशीनें घास काटने, पंजाई करने और घास के ढेर लगाने में लगी हुई थीं।

स्तेकोल्निकोव फिर एक बार मुस्कराया और जंगल की ओर चला गया।

१९

अपने सारे इतिहास में बख़्तूशी गांव की इतने व्योरे के साथ फ़िल्में और फ़ोटो शायद कभी नहीं उतारे गये थे जितने उन कुछेक दिनों में। टेनर कभी थकता ही न था – उसने हर चीज़ के फ़ोटो लिये – फ़ार्म के अध्यक्ष-मण्डल के दफ़्तर के, काम करते हुए फ़िटरों के, सब्ज़ी-बाग़ों के, पोखरों में लोटते सुअरों के, पुराने घरों के, नई इमारतों के – सभी के चित्र लिये।

बुढ़िया तुदोयेवा तो सारा वक़्त अपनी पोशाकें बदलने में ही लगी रहती। कभी टेनर उसकी तसवीर नयी शहरी पोशाक में खींचता जो पेलागेया कुज़्मीनिश्ना ने टेलीवीजन पर लोक-कथाएं सुनाते समय पहनी थी, कभी प्राचीन ग्रामीण पोशाक में सूत कातनेवाली औरत के रूप में, कभी अपने घर के दरवाज़े की सीढ़ी पर बैठे हुए... नये नये विषयों की टेनर की खोज कभी ख़त्म नहीं होती थी।

सहज स्वभाव और मिलनसार, सामूहिक किसानों के साथ झट से दोस्ती गांठनेवाला,—क्योंकि वह भाषा जानता था, और उसमें नये शब्द सीखने की स्पृहणीय योग्यता पायी जाती थी—टेनर ने अपने उत्साह से सभी लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था। अमेरिका के बारे में सवालों का जवाब देने के लिए भी वह वक़्त निकाल लेता। और उन जवाबों को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता था कि वह अमरीकी जीवन-प्रणाली को या अमेरिका की बहुत-सी निर्विवाद उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ाकर बयान कर रहा है। वह किसी हद तक हमारे प्रचारक से मिलता था जो समाजवादी निर्माण के बारे में तथ्य और आंकड़े भली-भांति जानता है।

"हां, कुन्दों के बने घर... बड़े तंग हैं वे," वह कहता। "पर मेरी नज़रों में हर बंगलिया एक सुखी नारी के समान है, तोंद बढ़ी हुई, जो इस साल नहीं, तो अगले साल एक शानदार बेटे को जन्म देगी। बेटे और मां में जो समानता होगी, वह सिर्फ़ कुन्दों की होगी... हां, केवल कुन्दों की... उसकी बड़ी बड़ी चमकती आंखें होंगी, जिनमें बढ़िया कांच लगा होगा। उसके सिर के ऊपर बढ़िया छत होगी और ड्योढ़ी गरम होगी। मुझे यक़ीन है, मैं इसे देख सकता हूं... मैं जानता हूं कि उस टीले पर जो अभी भी कुछ सुस्त[1] है, इस जैसे बहुत-से काठ के बेटे प्रगट होंगे। उनसे नयी सड़कें बनेंगी। हां, हां, मुझे इस बात का यक़ीन है।"

कठिनाई के दिनों में भी बख़्तूशी हमेशा एक सुगठित फ़ार्म रहा था, और अब, पास-पड़ोस के फ़ार्मों के मिलाव से और पूरे साज़-सामान से लैस मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन ख़रीद लेने से तो वह शीघ्र ही बड़ा समृद्ध उद्यम

---

[1]सुस्त के लिए रूसी में 'लेनीवी' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

बनने जा रहा था। प्योत्र तेरेन्त्येविच ने इस बारे में टेनर को बताया। उसने बताया कि फ़ार्म किस तरह बड़ा हुआ था, और आगे वह और कितना पनपेगा।

जो तथ्य और आंकड़े बख़्रूशिन पेश करता, टेनर उनके प्रति बहरा नहीं बना हुआ था। बख़्रूशिन का शंका-समाधान का साधन था अकाट्य प्रमाण पेश करना। और ये प्रमाण बड़े सीधे-सादे होते। भविष्य का ख़ाका खींचने के लिए वह निकट अतीत का पर्यवेक्षण करता। और टेनर इस बात को स्पष्टतः समझता था कि अगर प्रगति की टेढ़ी रेखा साल दर साल तेज़ी के साथ ऊपर उठती रही है तो यह न मानने का कोई कारण नहीं कि आगे चलकर भी यह प्रवृत्ति क़ायम रहेगी।

पहली मुलाक़ात से तो बख़्रूशिन हमेशा ही एक स्वप्नद्रष्टा जान पड़ता जो आकाश के तारे तोड़ लाने के इरादे रखता था। टेनर पर भी उसका यही प्रभाव पड़ा था। या शायद प्योत्र तेरेन्त्येविच वाद-विवाद को उकसाने के उद्देश्य से इस प्रकार का प्रभाव डालता था। दूसरे आदमी में सन्देह की मनोवृत्ति पैदा करने के लिए। और जब वह ऐसा कर चुकता तो अपनी बात सिद्ध करने के लिए तथ्यों और आंकड़ों पर आ जाता। तथ्यों और आंकड़ों से टेनर का शंका-समाधान हो जाता, वह उन चीज़ों को भी भांप लेता था जो नक़्शे पर नहीं आयी थीं – फ़ार्म का डिब्बेबन्दी का कारख़ाना, छोटा-सा गोश्त-विधायन कारख़ाना, एक मशीनीकृत धान्यागार, नये बख़्रूशिनो के लिए नालियां और पम्पिंग स्टेशन जो घरों और मवेशी-घरों से मल-मूत्र को खेतों तक ले जायेगा।

टेनर शहर में रहनेवाला व्यक्ति था, लेकिन वह भली-भांति समझता था कि यह काम बहुत विवेकसंगत और लाभप्रद था। यहां तक कि उसने प्योत्र तेरेन्त्येविच से कह भी दिया कि शायद किसी रोज़ वह एक किताब लिखे जिसका शीर्षक होगा 'स्वप्न और आंकड़े'।

कौन जाने उसका सचमुच इरादा था या नहीं, लेकिन उसकी दूसरी मोटी कॉपी, जिसमें वह अपने वार्तालापों और निरीक्षणों के टिप्पण दर्ज करता जा रहा था, ख़त्म हो चली थी। आशुलिपि के संकेतों से भरे सभी पन्ने शायद किसी बुरे काम के लिए प्रयोग किये जायेंगे। बख़्रूशिन इस

संभावना को रद्द नहीं कर सकता था। टेनर के प्रति प्योत्र तेरेन्त्येविच का रवैया कितना ही अच्छा क्यों न हो लेकिन टेनर फिर भी उसके लिए अपने फ़ौंटेन-पैन की उपज का व्यापारी था, मांग पर निर्भर रहनेवाला व्यापारी। और अमेरिका में प्रेस की जिस स्वतन्त्रता की वह चर्चा किया करता था वह पालतू कबूतरों की स्वतन्त्रता से मिलती-जुलती थी, जो अपने कबूतर-ख़ाने के घेरे के बाहर नहीं जा सकते।

टेनर शायद स्वयं यह नहीं समझता था कि वह उन लोगों पर कितना निर्भर है जो उसके लेखों को छापते थे, उसी तरह जिस तरह त्रोफ़ीम यह नहीं समझ सकता था कि समुन्नत पूंजीवादी देशों में छोटे पैमाने की निजी सम्पत्ति किराये पर ली गयी एक मोटर-कार के समान थी जिस पर वास्तविक अधिकार पूंजीवादी देश के मालिकों – पूंजीवादी इजारेदारियों का था। लेकिन प्योत्र तेरेन्त्येविच यह बात टेनर को कैसे बता सकता था? क्या मालूम वह बुरा मान जाय... इस लिए बख़्रूशिन ने उस आदमी की इतनी मदद करने तक ही अपने को सीमित रखा कि वह सामूहिक फ़ार्म को केवल अपने कैमरों की कांच की आंखों से ही नहीं, बल्कि एक ऐसे आदमी की आंखों से भी देखे जो भविष्य में झांक सकता था और भले ही केवल रूप-रेखा के रूप में हो, उसे देख सकता था।

सामूहिक किसानों को टेनर का बातें करने का अन्दाज़ बहुत पसन्द था। उसकी रंगीन शब्दावली उन्हें बहुत भाती थी, हालांकि वह बहुत अल्प और उच्चारण की दृष्टि से दोषपूर्ण थी। मुश्किल से ही कोई ऐसा घर रहा होगा, जिसमें लोग उत्सुकता से उस दिन का इन्तज़ार नहीं कर रहे हों जब बख़्रूशी में से उस रेलवे-लाइन को बिछाने का काम शुरू किया जायेगा, जिसकी सहायता से लेनीवी टीले पर बसने के लिए लोगों को मदद और इमारती सामान उपलब्ध हो सकेगा।

प्योत्र तेरेन्त्येविच के उत्साह और नये गांव को अपने ढंग का एक आदर्श गांव बनाने की उसकी इच्छा को देखकर टेनर भी उत्साहित हो उठा और बख़्रूशिन के विचारों की बड़ाई करने लगा। यह काम वह इतनी ख़ूबसूरती से करता कि कुछ लोग, अपने भोलेपन में, उसे कम्युनिस्ट समझने लगे थे। कुछेक को तो इसका विश्वास भी हो गया था, और वे

समझते थे कि पार्टी के साथ अपने सम्बन्ध को टेनर इस कारण छिपा रहा है कि देश लौटने पर उसे परेशानी न उठानी पड़े।

एक दिन यह सवाल उससे सीधा, दो-टूक पूछा गया... लेकिन इसके लिए एक अलग अध्याय की जरूरत होगी।

२०

टेनर से एक दिन बिना लाग-लपेट के पूछा गया—

"आप कम्युनिज़्म की बहुत चर्चा करते हैं, क्या इसका कारण यह है कि आप उसमें विश्वास रखते हैं?"

सवाल पूछा सुनहरे बालों और नीली आंखोंवाली एक युवती ने जिसने हल्का कोट और हाथों पर नाइलान के दस्ताने पहन रखे थे। टेनर के साथ उसने अपना परिचय मास्को-रेडियो की एक रिपोर्टर येलेना मिखाइलोव्ना मलीनिना के नाम से कराया था।

"मैं यथार्थवादी हूं, हमपेशा मलीनिना," टेनर ने उत्तर दिया। "मैं जो देखता हूं और जिसे छू सकता हूं, उसी में विश्वास करता हूं।"

"यह सीधा जवाब तो नहीं है, मिस्टर टेनर। मैं आप से यह सवाल उसी तरह पूछ रही हूं जिस तरह एल्ब पर कभी आप से पूछा गया था। यह रेडियो के लिए नहीं है। जैसा कि आप देखते हैं, मेरे पास कोई टेप-रेकार्डर नहीं है।"

"आप ने कहा है 'एल्ब पर'। लेकिन उम्र में आप इतनी छोटी हैं कि संभव नहीं कि आप वहां रही हों।"

"नहीं, मैं इतनी छोटी नहीं हूं। मैं पैंतीस साल की हूं। अफ़सोस है कि मुझे यह स्वीकार करना पड़ रहा है। मैं भी एल्ब पर हो सकती थी, मिस्टर टेनर, पर मैं वहां नहीं थी। लेकिन यदि मैं वहां होती तो मेरी मुलाक़ात एक ऐसे दुभाषिये से हो जाती जो शक्ल-सूरत में आप ही जैसा था और जिसके पास एक घड़ी थी जिस के डायल पर उसकी पत्नी, बेट्सी, की चमकती तसवीर थी। वह तसवीर केवल अन्धेरे में ही नजर आ सकती थी। तब शीशे के नीचे से बेट्सी का चेहरा मुस्कराता था..."

टेनर के काटो तो खून नहीं। वह मेहमान-घर के दरवाज़े की सीढ़ी पर ही बैठ गया। उसके गंजे सिर पर पसीने की बूंदें झलक आयीं।

"नहीं नहीं, आप, मुझे यक़ीन है एल्ब पर नहीं हो सकती थीं।"

"बात यह नहीं है। मैं तो घड़ी के बारे में बात कर रही हूं।"

"यह रही घड़ी। इधर आइये," टेनर ने उस महिला को सीढ़ियों के नीचे चले आने का इशारा किया। "आइये, मैं आपको अपनी पत्नी के दर्शन कराऊं... वह अब इतनी जवान नहीं रही लेकिन मैं एक बढ़िया घड़ी का डायल तो बार बार नहीं बदल सकता।"

टेनर ने घड़ी पर हाथ की आड़ की और मलीनिना को फ़ासफ़ोरी चमक में एक हंसती हुई महिला का चेहरा नज़र आया जिसके सिर पर ढेरों सुनहरे बाल थे।

"ख़ूब है! मुझे इस बात की ख़ुशी है कि मैंने अपने एक मित्र का अनुरोध पूरा कर दिया है जिसने कल आपको देखते ही पहचान लिया था।"

"कौन था वह?"

"आप शायद उसे याद न कर पायें। वह उस समय बटालियन-कमांडर था। उसने अमरीकी सैनिकों के सामने भाषण दिया था और आपने भाषण का अनुवाद किया था। आप एक साझी पार्टी में उसके साथ थे। लगता है उन दिनों भी आपको वोद्का का शौक हुआ करता था।"

"आपका समाचार-स्रोत बहुत अच्छा है। पर मेरी याद्दाश्त अच्छी नहीं... मैंने बहुत-से भाषणों का अनुवाद किया था। उन दिनों सभी रूसियों की शक्ल एक जैसी लगती थी। सैनिक ही सैनिक... मैं उस आदमी से मिलना चाहता हूं जो मुझे एल्ब पर जानता था।"

"वह आपको स्वयं ढूंढ़ लेगा, मिस्टर टेनर। शायद आज ही। और अब मैं आपसे कुछेक सवाल पूछना चाहूंगी। ये रहे सवाल, आप के लिए मैंने उन्हें नक़्ल कर लिया है। आप इतने हाज़िर-जवाब आदमी हैं, और एक विदेशी होते हुए भी हमारे जीवन और रूसी भाषा को इतनी अच्छी तरह से जानते हैं कि मुझे यक़ीन है आप कल मुझे एक रेडियो-इन्टर्व्यू देने से इन्कार नहीं करेंगे।"

"हां, हां... बेशक, लेकिन मैं बख़्तूशी को इतना कम देख पाया हूं..."

"कोई बात नहीं। हम इन्टर्व्यू का नाम देंगे–'मिस्टर टेनर के मन पर बख़्तूशी की पहली छाप'।"

"अच्छी बात है।"

"धन्यवाद।"

मलीनिना ने विदा ली। तुदोयेवा उसे फाटक तक छोड़ने गयी, फिर घर के साये में लौट आयी और यह सोचते हुए कि धूसर भेड़िये की कहानी का क्या तात्पर्य निकाला जा सकता है, वह अपनी बुनाई में जुट गयी– तोहफ़े के तौर पर वह लोफ़ीम के लिए एक जोड़ा ऊनी मोज़े बुनने लगी थी।

तुदोयेवा, अपनी कहानी का मौखिक डिज़ाइन, उन दिनों की घटनाओं के अनुसार, एक एक शब्द, एक एक फन्दा करके बुनती चली जा रही थी; और उस डिज़ाइन में, तुदोयेवा के न चाहने पर भी, टेनर, एक अनोखे धागे की भांति प्रगट होने लगा था। परन्तु उसने अब निश्चय किया कि टेनर रूपी धागे के बिना उसके डिज़ाइन में शोख़ रंग नहीं आ पायेंगे।

उसकी बुनाई की सिलाइयों की ही भांति तुदोयेवा के रूखे, पतले होंठ, निःशब्द फरफरा रहे थे, मानो होंठ और सिलाइयां एक दूसरे की मदद कर रहे हों...

२१

मित्यागिन चरागाह, जहां दार्या स्तेपानोव्ना, कात्या को और उसके छोटे भाइयों को ले गयी थी, सम्मिलित फ़ार्म की मिल्कीयत में एक उर्वर जंगली क्षेत्र था।

क़िस्से-कहानियों के मुताबिक, इसका नाम आतामान मित्यागा के नाम पर रखा गया था जो उसे अपने डाकुओं के गिरोह के छिपने के लिए इस्तेमाल किया करता था।

इस जंगल और बड़ी चीशा को लेकर तरह तरह की रहस्यपूर्ण कहानियां बुनी गयी थीं। कहा जाता था कि यहां पर पुराणपन्थियों का गुप्त आश्रम हुआ करता था और उसके बिल्कुल पड़ोस में युवा चुड़ैलों

की खोह हुआ करती थी जो दलदल के हज़ारों भूत-पिशाचों का मनबहलाव किया करती थीं।

उराल के कारख़ानों से भागकर आनेवाले कम्मी यहां आश्रय लिया करते थे, और कई सालों के बाद यह उन किसानों का आश्रय-स्थान बना, जो कोल्चाक के फ़ौजियों से छिपते-फिरते थे।

नौजवान प्योत्र बख़्रूशिन और किरील तुदोयेव भी वहीं पर छिपते रहे थे।

पहली बार देखनेवालों को आज भी मित्यागिन चरागाह एक बीहड़, और निरुल्लास-सी जगह प्रतीत होता है। लेकिन दार्या स्तेपानोव्ना तो उसे घर बराबर समझती थी क्योंकि वहीं पर त्रोफ़ीम के साथ उसकी गुप्त मुलाक़ातें हुआ करती थीं। इस समय वहां पर उसकी पुरानी सहेली, मित्यागिन चरागाह की मुख्य वन-रक्षिका, अगाफ़्या यागोदकिना, रहती थी।

जंगल के ऐन बीचोंबीच, फ़ार्म ने अगाफ़्या के लिए लकड़ी के कुन्दों का एक बड़ा-सा घर बना दिया था। साल ख़त्म होने से पहले ही पुराने जंगल में भी वैसी ही चहल-पहल नजर आने लगेगी जैसी बड़ी चीशा पर। लकड़ी चीरने के कारख़ाने और एक बड़ी-सी बढ़ई-वर्कशाप की नींवों के लिए मटमैले रंग के पत्थर की शिलाएं अभी से लगायी जा चुकी थीं। यहां पर नये बख़्रूशिनो के घरों के लिए कुन्दों के चौखटे और लकड़ी के हिस्से बनाये जायेंगे। आगाफ़्या का दिल एक युवती के दिल की तरह बल्लियों उछल रहा था कि इसी पतझड़ में उसके एकाकी जीवन में रौनक आ जायेगी।

जहां तक दार्या का सवाल था उसके मन पर अन्य समस्याएं बोझ बनी हुई थीं...

उसके मन में यह विचार उठने लगा था कि त्रोफ़ीम से कन्नी काटकर उसने भीरुता का परिचय दिया है, मानो उसके मन में किसी बात का डर समाया हो। क्या उसके गांव के लोग उसे ठीक समझ पायेंगे और जिन कारणों से वह वहां से चली आयी है, उनका समर्थन करेंगे? क्या कुछ लोग यह तो नही कहेंगे कि दार्या त्रोफ़ीम के मुंह पर यह कहने का साहस नहीं कर पायी कि उसके विश्वासघात को वह किस नजर से देखती है?

मगर वह कहे ही क्यों? वह आदमी इस लायक़ ही नहीं था। जहां तक दार्या का सम्बन्ध था, त्रोफ़ीम का होना या न होना एक बराबर था। उसके लिए वह एक अजनबी था। उसकी कोई हस्ती नहीं थी। वह तो इस योग्य भी नहीं था कि उससे घृणा की जाय।

नहीं, वह किसी भी दूसरी तरह का आचरण नहीं कर सकती थी। इस बारे में सोचना भी फ़िज़ूल था। जैसे आया था वैसे ही चला जायेगा। और अगर दार्या उससे नहीं मिली, तो लगेगा जैसे वह बिल्कुल आया ही नहीं था। जहां तक उसके नातियों का सवाल है, तो उससे मिलने में उन्हें कोई लाभ नहीं। कौन जाने, वह आंसू ढरकाने लगे। क्या मालूम वह उनके गले में बाहें डालकर रो रोकर मरसीहा पढ़ने लगे। इससे बच्चों को क्या लाभ? सेर्गेई को तो इससे बहुत नुक़सान नहीं होगा, वह तो अभी केवल चार साल का है, पर बोरीस... वह तो स्कूल में चौथी जमात में पढ़ता है।

हां, उसने ठीक ही किया था। यही कुछ वह कर भी सकती थी। बेशक, इस बात का उसे खेद था कि उसे बछड़ों को छोड़ आना पड़ा। लेकिन बछड़ों की ख़ातिर कोई अपने नाती-पोतों की उपेक्षा तो नहीं कर सकता, भले ही वे कितने ही क़ीमती क्यों न हों।

कात्या अपनी नानी की भावनाओं को तो समझती थी लेकिन उससे सहमत नहीं थी। उसका दिमाग़ मानता था, पर दिल नहीं मानता था। कात्या की नानी उसकी दूसरी मां के बराबर थी। उसी ने उसे पाला-पोसा था। और कात्या के लिए अपनी नानी का काम जारी रखना जरूरी था। नानी की तरह नहीं जिसने अपनी मेहनत के आधार पर निपुणता प्राप्त की थी, बल्कि पशुपालन की एक सुशिक्षित विशेषज्ञा के रूप में। कात्या के लिए भी बछड़े, मात्र बछड़े नहीं थे, उसके "सक्रिय जीवन का प्रयोजन" थे। नातिन के सामने अपने जीवन का ब्योरा देते समय दार्या स्तेपानोव्ना ने उन्हें यही नाम दिया था।

और कात्या ने उस जीवन को किसी विशाल, भरपूर और सुखमय वस्तु के रूप में देखा... जंगल के एक मैदान में, अन्द्रेई के साथ अपनी उस अविस्मरणीय मुलाक़ात के बाद तो उसे इस का भास और भी अधिक होने लगा था।

भाड़ में जाय वह नाना जो मरकर जी उठा है! बख्तूशी जाने के लिए वह क्या नहीं करेगी, लेकिन एक एक दिन एक एक हफ़्ते के बराबर हो रहा था। सूरज था कि रेंग रेंगकर मुश्किल से आसमान को पार कर पाता था।

बख्तूशी में घास-कटाई का ख़ुशियों भरा मौसम चल रहा था। हर कोई जंगल में पहुंचा हुआ था। रातें उजली थीं, बेहद उजली। वे दोनों अन्द्रेई की मोटर-साइकल पर बिना हैड-लाइट जलाये इधर-उधर घूम सकते थे। गरम गरम हवा कात्या के बालों को पंखा करती और वह कहती – "अन्द्रेई मोटर-साइकल रोको। मेरे बालों में गुंझल पड़ गये हैं। तुम तो इसे सरपट दौड़ाते चले जा रहे हो!"

और वह अपराधियों की तरह मोटर-साइकल खड़ी कर देता और कहता – "हैंडल के डंडे पर शीशा लगा है, कात्या, अपने बाल ठीक कर लो।"

कात्या जानती थी कि अन्द्रेई उससे प्रेम करता है, और उसे इस बात की भी ख़ुशी थी कि वह इसकी चर्चा नहीं करता। कितना समझदार था वह। क्योंकि अगर वह कात्या के प्रति अपनी भावनाओं को स्वीकार कर लेता तो कात्या से उत्तर की भी आशा करता। कात्या क्या कह सकती थी? उसके लिए सच सच कह देना कि "अन्द्रेई, मैं भी तुम से प्रेम करती हूं" – असंभव था। उसने अपनी नानी और मां को वचन दे रखा था कि वह जल्दबाज़ी नहीं करेगी... और वह अपने वचन पर दृढ़ रहेगी। लेकिन कात्या अन्द्रेई को यह नहीं बता सकती थी, उसी भांति जिस भांति वह उसके सामने झूठ नहीं बोल सकती थी या कोई ऊल-जलूल बात कहकर – जैसे, "मेरे दिल में अभी प्रेम का अंकुर नहीं फूटा है" – उसे टाल नहीं सकती थी।

वह तो झूठ बोलने से भी बुरा था।

शायद अगली बार अन्द्रेई से मिलने पर उसे कहना चाहिए – "मेहरबानी करना, और दो साल के लिए मेरे सामने प्रेम की बात नहीं करना।"

यह विचार मन में आते ही वह हंस पड़ी, और अटपटी-सी महसूस करने लगी।

"देखते हैं क्या होता है," उसने निश्चय किया और फिर से सोचने लगी कि उस छोटी-सी नीली गद्दी पर बैठने का कितना मज़ा है जिसे अन्द्रेई ने अपने हाथों से बनाया था। कात्या की आंखों का रंग भी नीला था। शायद मोटर-साइकल ख़रीदते समय उसे यह बात सूझ गयी हो, मोटर-साइकल भी तो नीले रंग की थी!

कितना अच्छा था... कितना भला लगता था कि उस तेज-रफ़तार और चुस्त-सी मोटर-साइकल के साथ, ख़ास कात्या के ही बैठने के लिए बग्घी लगी थी!

ये विचार अभी कात्या के मन में घूम ही रहे थे जब मोटर-साइकल की सुपरिचित आवाज़ उसके कानों में पड़ी। पहले तो उसे लगा कि वह सपना देख रही है, क्योंकि वह उसी के बारे में सोचती रही थी... पर अगर ऐसा है तो उसके भाई क्यों भागते हुए सड़क पर पहुंच गये हैं और चिल्ला चिल्लाकर कह रहे हैं, "आ रहा है, वह आ रहा है!"

हां, वही था। ऐसी ऊबड़-खाबड़ सड़क के साथ जूझते हुए मित्यागिन चरागाह की ओर कौन आ सकता था?

वही था, सोलह आने वही था। नानी ने यों ही तो नहीं कहा था –

"अगर मैं तेरी जगह होती, बिटिया, तो थोड़ी देर के लिए गाल ठण्डे करने के लिए जंगल में ज़रूर चली जाती।"

"मैं झरने के पानी से मुंह धो लूंगी और किसी को पता भी नहीं चलेगा, नानी।" कात्या ने कहा और भागती हुई जंगल में झरने की ओर निकल गयी।

मोटर-साइकल काफ़ी नज़दीक आ गयी थी और चिल्ला चिल्लाकर पुकार रही थी – "का – त्या! का – त्या! का–त्या!"

झरने के समस्त शीतल जल से भी उसके गालों की लाली बुझ नहीं पायी, और दिल की धड़कन शान्त नहीं हुई जो मोटर-साइकल की पुकार के जवाब में बराबर धक धक करता हुआ कहे जा रहा था – "अन्द्रे – ई, अन्द्रे–ई, अन्द्रे – ई..."

२२

बख़्तूशी के जीवन के साथ परिचय प्राप्त करने के बाद त्रोफ़ीम ने देखा कि खेतीबारी की सामूहिक प्रणाली इतनी निराशाजनक नहीं थी जितनी उसने अमेरिका में कल्पना कर रखी थी। यहां तक कि उसने कुछेक सुविधाओं को जो निजी उद्यम की तुलना में सामूहिक फ़ार्म को प्राप्त थीं, मन में आंक भी लिया था। और इन सुविधाओं में – जैसी कि वे उसे नजर आयीं – मुख्यत: जमीन का विशाल क्षेत्र और भूमि की विविधता शामिल थीं। जंगल, खेत, चरागाह, झीलें, नदियां... अगर चाहो तो जल-पक्षी भी पाल सकते हो। झीलों और नदियों को मछलियों से भर सकते हो। अपना पशु-धन बढ़ा सकते हो। पौध-घरों में साग-सब्ज़ी पैदा करने का काम हाथ में ले सकते हो। चारे की फ़सलें उगा सकते हो, मधु-मक्खियां पाल सकते हो। पत्थर और लकड़ी के इतने बड़े भण्डार मौजूद होने पर जो चाहो बना सकते हो। हर जगह पैसा ही पैसा है...

दार्या ने जो गायों की नयी नस्ल तैयार की थी, उसमें पैसा था... पौध-घरों में कांच के नीचे जो टनों खीरे पक रहे थे, उनमें पैसा था। सफ़ेद पेकिंग बत्तख़ों में जो कांय-कांय करती तैर रही थीं, पैसा साफ़ चलता हुआ नज़र आ रहा था। पैसा जौ की फूलती बालियों में खिल रहा था, गोभी के लहरिये पत्तों में लहरें ले रहा था ... जिस तरफ़ निगाह डालो, जिस चीज़ पर हाथ रखो, मुनाफ़ा ही मुनाफ़ा बटोरा जा सकता था... लेकिन ...

लेकिन सबसे ज़रूरी चीज का यहां पर तोड़ा था। और वह ज़रूरी चीज़ त्रोफ़ीम ख़ुद था। लगभग चालीस साल तक वह एक ऐसे देश में रहता रहा था जहां लोग हर चीज़ में से मुनाफ़ा निकालना जानते हैं। इस लिए त्रोफ़ीम ने यहां पर अपनी मृदु स्मृतियों को छोड़कर, नेक से नेक इरादों के साथ, सामूहिक खेतीबारी के अमली काम में एक उस्ताद की भूमिका अदा करने का कार्यभार अपने ऊपर लेने का निश्चय किया। और जब शिक्षा देने का यह काम उसने शुरू किया, जिसका बीड़ा उसने स्वयं उठाया था, तो प्योत्र तेरेन्त्येविच का नाक में दम आने लगा।

"इस त्रोफ़ीम को मुझसे दूर रखो," उसने तुदोयेव की मिन्नत-समाजत की। "उस आदमी की खोपड़ी में भूसा भरा है, और उसने हमें अक़्ल सिखाने का फ़ैसला कर रखा है। आज मुझे सांस लेने की भी फ़ुरसत नहीं है। मुझे घुड़दौड़ वालों के साथ सूखी घास के बारे में अग्रिम सौदा पटाना है। रेलवेवालों ने भी आज आकर सौदा पक्का करने का वचन दिया है। और यह आदमी हर जगह टांग अड़ाता फिरता है, अपनी दो कौड़ी की नसीहत देता फिरता है। सारा दिन दफ़्तर के इर्द-गिर्द मंडराता रहता है।

"मैं तो उसे तुमसे दूर रखने की भरसक कोशिश करता हूं," तुदोयेव ने कहा। "दो बार उसे मैं क़ब्रिस्तान में ले जा चुका हूं ताकि बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर फूल चढ़ा सके। द्यागिलेव के पुराने घर में भी न जाने कितनी देर तक हम बैठे रहे। मैं उसे मकई के खेत दिखा चुका हूं। यहां तक कि मैं उसे क्रेफ़िश पकड़ने का न्योता दे चुका हूं। इससे ज़्यादा मैं क्या कर सकता हूं?"

"कोई ज़रिया सोचो," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने आग्रह किया, "कोई पादरी-वादरी मिलता हो तो उसे पकड़ लाओ जो पूर्वजों के लिए प्रार्थना करवा दे। दो-तीन घण्टे के लिए तो यह उसी में व्यस्त रहेगा।"

"अब पादरी कहां से लाऊं? शहर जाऊं, शायद वहां मिल जाय?"

"क्यों नहीं? मैं कोई भी मोटर तुम्हारे हवाले कर दूंगा। इसे घुमा-फिरा लाओ। संग्रहालय ले जाओ इसे, कोई पुरानी जगह दिखा लाओ। किसी रेस्तरां में चले जाना। बिल मैं चुकाऊंगा। मेरा मेहमान ही तो है। इसी में दिन निकल जायेगा। इस के बाद शायद मैं बहुत व्यस्त नहीं हूंगा। मुझे अपना फ़र्ज़ पूरा करना है। शायद यह जल्दी ही यहां से दफ़ा हो जायेगा।"

"जो कुछ मुझसे बन पड़ेगा, मैं करूंगा, प्योत्र तेरेन्त्येविच। अगर सिर के बल खड़ा होकर भी मैं इसे तुम से दूर रख सका तो रखूंगा।"

तुदोयेव के चले जाने पर बख़्रूशिन ने चैन की सांस ली। उसे पक्का यक़ीन था कि बूढ़ा भरसक कोशिश करेगा। लेकिन अभी एक घण्टा भी नहीं बीत पाया था कि त्रोफ़ीम फिर आ धमका।

"मैं फिर पहुंच गया हूं, प्योत्र। तुदोयेव ने मुझे बताया है कि आज तुम रेलवे-कम्पनी को बख़ूशी बेचने जा रहे हो। मैं नहीं चाहता कि तुम घाटे में रहो—तुम बहुत सीधे आदमी हो।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच बड़ी मुश्किल से अपनी ज़बान क़ाबू में रख पाया, वरना ज़रूर उसके मुंह में से कोई गाली निकल जाती।

"नहीं त्रोफ़ीम, तुम बीच में मत आओ; यह कोई अमरीकी स्टॉक एक्सचेंज नहीं है, तुम जानते हो—यह एक सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष-मण्डल है।"

"तो क्या हुआ? सभी रेलवे-कम्पनियां एक जैसी होती हैं—ठग सभी जगह पर होते हैं। सौदा अच्छा पटाना हो तो बस, रेलवे अफ़सर की मुट्ठी गरम करो।"

"त्रोफ़ीम!" प्योत्र तेरेन्त्येविच गुस्से से कांपने लगा। अन्दर ही अन्दर वह उबलने लगा था। "हम यहां सब काम और तरह से करते हैं। बिल्कुल अलग ढंग से।"

"मैं कब कहता हूं कि तुम नहीं करते," त्रोफ़ीम ने हठ किया। "शायद तुम दूसरी तरह से करते हो, पर पैसा सभी जगह पर एक सा होता है, केवल उसके नाम अलग अलग होते हैं। वहां डालरों के बग़ैर और यहां रूबलों के बग़ैर काम नहीं चलता। बिजनेस बिजनेस ही है।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने अपने को बहुत ज्यादा नियन्त्रण में रखा वरना धक्का देकर त्रोफ़ीम को बाहर निकाल देता। मेहमाननेवाज़ी का तक़ाज़ा भी उसे रोक नहीं पाता। क्या वह इस आदमी की काफ़ी ख़ातिरदारी नहीं कर चुका था, इसका मन-बहलाव नहीं कर चुका था, इसके लिए काफ़ी दौड़-धूप नहीं कर चुका था? मेहमाननेवाज़ी की भी आख़िर कोई हद्द होती है। पर टेनर... त्रोफ़ीम के साथ टेनर था। अगर वह गुस्से में कुछ कह बैठा तो जाने टेनर उसका क्या प्रयोग करे।

उसे ज़रूर अपनी लगाम कसकर रखनी होगी। सो, जितने धैर्य से हो सकता था उसने समझाने की कोशिश की—

"त्रोफ़ीम, अगर तुम्हारे फ़ार्म के मामलों में मैं इसी तरह टांग अड़ाने लगूं तो?"

"वाह, भैय्या, मैं तो तुम्हें धन्यवाद कहूंगा। अमेरिका में हमारा उसूल है कि नसीहत को सुनो, अगर वह फूटी कौड़ी की भी हो, तो भी सुनो। अगर सलाह अच्छी नहीं, तो ज़रूरी नहीं है कि तुम उसे मानो। बख़्शीश में मैं कुछ छोड़ जाना चाहता हूं जिससे लोग मुझे याद करें। जहां ख़रीद-फ़रोख़्त का मामला हो, यक़ीन मानो, त्रोफ़ीम को मात देना ख़ाला जी का घर नहीं है। जहां और लोग एक डालर लेते हैं, मैं पूरा डेढ़ डालर लेता हूं। मैं किसी भी सौदे में मार नहीं खाता।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच का धैर्य चुकता जा रहा था। उसने निश्चय किया कि मिनट-भर के लिए वह भाई को छोड़कर फ़ार्म के पार्टी समिति के सेक्रेटरी के पास जायेगा और उससे कहेगा कि जब रेलवेवाले आयें तो उन्हें स्थिति समझायें, ग्राम सोवियत में ले जाय, और वहां से उसे टेलीफ़ोन करके बुला ले।

उसने ऐसा ही किया, पर जब लौटा तो फिर उसे त्रोफ़ीम का नीरस भाषण सुनने को मिला।

"तुम केवल स्वर्ग में ही सन्त-महात्मा बनकर रह सकते हो, क्योंकि वहां पर सन्त-महात्माओं के अलावा कोई और रहता नहीं है।" त्रोफ़ीम अपनी हांके जा रहा था। "पर इस दुनिया में तो भेड़िये और मगरमच्छ बसते हैं। और अगर तुम मगरमच्छ को नहीं निगलोगे तो मगरमच्छ तुम्हें निगल जायेगा। मेरे पड़ोसी ही की मिसाल लो। मुझसे ज़्यादा अमीर था और मेरा फ़ार्म हड़प जाना चाहता था। और वह हड़प जाता पर मैं उसे चकमा दे गया। उसे मालूम ही नहीं हो पाया और उसके प्रामिसरी नोट मेरे हाथों में थे ... वह इस उम्मीद पर बैठा था कि कम्पनी उनकी अदायगी के लिए ज़्यादा मोहलत देगी। उसकी कमज़ोरी मैंने पकड़ ली। अदा करो, और मामला ख़त्म! फ़ौरन क़ानूनी कार्रवाई करवा दी। वह अभी संभल भी नहीं पाया था कि उसका फ़ार्म मेरी मिल्कीयत में आ चुका था। कुछ टूटा-फूटा सामान मैंने तरस खाकर उसे ले जाने दिया। सुअर का बच्चा जाय जहां जाना चाहता है।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने निश्चय किया कि वह वार्तालाप को धीरे धीरे ख़त्म हो जाने देगा। वह कोई सवाल नहीं पूछेगा, किसी बात पर आश्चर्य

प्रगट नहीं करेगा, कोई वितर्क करने की कोशिश नहीं करेगा। वह चुपचाप अपने भाई की ओर देखता रहा और सोचता रहा कि इस आदमी की तुलना में उसका दादा, कबाड़ी द्यागिलेव, कहीं कम लालची और कम पाशविक वृत्ति का आदमी था।

पर त्रोफ़ीम का उत्साह अपने विषय के बारे में बढ़ता जा रहा था और वह ख़ूब चहक रहा था—

"और तुम्हारे सामूहिक फ़ार्म क्या हैं? बस फ़ार्म हैं, हमारे फ़ार्मों जैसे। केवल वे साझे तौर पर चलाये जाते हैं और उनका सिर कोई नहीं।"

"क्या मतलब, सिर कोई नहीं?" प्योत्र तेरेन्त्येविच ने भड़क कर पूछा।

"कोई मालिक नहीं। आख़िर, तुम तो एक तरह के कारिन्दे हो न। यहां पर कुछ भी तुम्हारा नहीं है। तुम उस पेंसिल की तरह हो जिससे लिखा जाता है।"

"एक पेंसिल जिससे लिखा जाता है?"

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने त्रोफ़ीम की तरफ़ इस तरह घूरकर देखा कि त्रोफ़ीम समझ गया कि वार्तालाप को ख़त्म कर देने में ही भलाई है।

"भगवान के हाथ में हम सभी पेंसिलें हैं," उसने बात को टालते हुए कहा।

"बचकर निकल गया? तुम्हारे लिये भी अच्छा है। बेहतर है इसकी चर्चा न करें कि कौन किस से और किस तरह लिखता है। इस तरह की शिक्षा के लिए कुछ लोगों के पास दिमाग़ नहीं होता। मैं यह तुम्हें इस लिए कह रहा हूं कि मुझे तुमपर रहम आता है।"

"मुझ पर रहम करने की तुम्हें कोई ज़रूरत नहीं, प्योत्र। आख़िर मैं अपनी टांगों पर तुमसे ज़्यादा जमकर खड़ा हूं। अपनी ज़मीन पर। मेरी अपनी ज़मीन-जायदाद पर से मुझे लात मारकर कोई नहीं निकाल सकता, न ही तुम्हारी तरह किसी दूसरे आदमी को मेरी जगह चुना जा सकता है। मैं मालिक हूं। तुम कौन हो?"

बात प्योत्र तेरेन्त्येविच को तीर की तरह चुभ गयी। अब उसे अपने प्रतिवादी में वितर्क करनेवाला झगड़ालू नहीं, बल्कि बुरा चाहनेवाला शत्रु नज़र आ रहा था।

"झगड़ा नहीं करो, त्रोफ़ीम!" उसने कहा। "हमें शान्ति से एक दूसरे से विदा होना चाहिए। तुम अपने को बहुत कुछ समझे बैठे हो, लेकिन हो तुम दो कौड़ी के आदमी। तुम कुछ भी नहीं हो। तुम्हारे पास तो वे शब्द भी नहीं हैं जिनसे तुम पूंजीवाद की योग्यता से तरफ़दारी कर सको। पहले भी तुम लालची हुआ करते थे और अब भी लालची हो। तुम जैसे लोगों के न पीछे कुछ है, न आगे। केवल अन्धेरा है। बरसों पहले ही तुम्हारा अस्तित्व ख़त्म हो चुका था। तुम केवल कल्पना में जी रहे हो, जैसे एक टांग के बिना कोई आदमी समझे कि उसकी एड़ी में खुजली हो रही है। तुम केवल इस बात की कल्पना किये बैठे हो कि मेरे साथ वाद-विवाद कर रहे हो, वास्तव में तुम अपने साथ वाद-विवाद कर रहे हो। जो कुछ तुमने यहां पर देखा है, तुम उसपर विश्वास करना नहीं चाहते, क्योंकि अगर तुम विश्वास करो, तो तुम्हारा सारा संसार – भेड़ियों और मगरमच्छों का तुम्हारा संसार – भरभराकर गिरने लगेगा। तुमने देख लिया है कि लोग एक दूसरे को निगले बिना जी सकते हैं। तुम इसपर यक़ीन करने से डरते हो, पर इसे स्वीकार किये बिना नहीं रह सकते हो। क्योंकि स्वीकार करने का मतलब होगा अपनी हस्ती पर क़लम फेर देना। और यह आसान काम नहीं है, ख़ास तौर पर तुम्हारी उम्र में। मुझे खेद है, पर मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता। मैं उन चीजों की व्याख्या नहीं कर सकता जो हमारे स्कूली बच्चों को भी स्पष्टतः नजर आ जाती हैं।"

तुदोयेव अन्दर आया।

"तो, मिस्टर बख़्रूशिन, भीतरी मामलों में दख़ल देना बन्द कर दें," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा।

"अच्छा तो आप यहां पर हैं!" तुदोयेव ने कहा, "मैंने द्यागिलेव परिवार की कुछेक पुरानी तसवीरें खोज निकाली हैं। परिवार की बाक़ाइदा चित्रमाला है। उसमें तुम्हारे दादा की, दादी की और नन्हे बालक के रूप में तुम्हारी तसवीर है... दार्या की जवानी के दिनों की तसवीर है, और एक तसवीर है तुम्हारी मां की, पूरे जोबन में, लोमड़ी की खाल का कोट पहने हुए..."

"अच्छी बात है," अनिच्छा से उठते हुए त्रोफ़ीम ने कहा। अपने

भाई को सम्बोधन करते हुए वह बोला, "नाराज़ नहीं होना, प्योत्र, इसपर हम फिर किसी वक़्त बहस करेंगे। और बहस करते वक़्त अगर टेनर भी साथ हो तो अच्छा रहेगा... ख़ुदा हाफ़िज़!"

प्रत्यक्षत:, प्योत्र तेरेन्त्येविच के लिए सुबह का वक़्त बरबाद कर दिया गया। त्रोफ़ीम के पीछे दरवाज़ा बन्द होने पर उसने दरवाज़े की ओर थूक दिया।

२३

शाम के वक़्त फ़्योदोर पेत्रोविच स्तेकोल्निकोव मेहमानघर में पहुंचा। वहां उसे तुदोयेवा मिली जिसने बताया कि जॉन नदी में नहाने के लिए गया है और त्रोफ़ीम उसके पति के साथ मछलियां पकड़ने गया है, और वे दोनों, जवानी के दिनों की तरह, जंगल में रात गुज़ारेंगे।

"ख़ूब," स्तेकोल्निकोव ने कहा। "जितनी अधिक वे मछलियां पकड़ें और जितना ज़्यादा मछली का शोरबा पकायें, प्योत्र तेरेन्त्येविच के लिए उतना ही अच्छा – इससे त्रोफ़ीम उससे दूर रहेगा।"

"बिल्कुल ठीक कहा। त्रोफ़ीम तो जानो, तिलछटा है, सभी दरारों में रेंगता फिरता है और हर कड़ाही में घुसने की कोशिश करता है।" पेलागेया कुज़्मीनिश्ना ने शिकायत की। "वह हमारे मामलों का क ख भी नहीं जानता, लेकिन फिर भी हर बात पर अपनी राय देता है।"

"और मिस्टर के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

इस बारे में बुढ़िया की कोई स्पष्ट राय नहीं थी।

"वह तो बड़ा चिकना-चुपड़ा आदमी है। चंचल-चकोर है। बर्फ़ पर गेंद की तरह कभी इधर लोटता है कभी उधर। तुम उसे कभी भी पकड़ नहीं सकते। बातें बड़ी मीठी करता है, लेकिन उसके इरादे क्या हैं, कुछ पता नहीं चलता... राजनीति में तो, तुम जानते हो, मैं काला अक्षर भैंस बराबर हूं।"

"यह मैं नहीं कह सकता। क्या वह हमारा आदमी ही तो नहीं चला आ रहा?"

आंखों पर हाथ की ओट करके पेलागेया कुज़्मीनिश्ना ने डूबते सूरज की दिशा में देखा।

"वही है। तुमने बर्सों बाद उसे पहचान लिया?"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"मेरे कानों में अभी कोई दोष पैदा नहीं हुआ है।" पेलागेया कुज़्मीनिश्ना ने उत्तर दिया।

"हां, मैं इसे जानता था।" स्तेकोल्निकोव ने कहा। उसने अपने हल्के टाप-बूटों के सिरे खींच कर ऊंचे कर लिये, ट्यूनिक के बटन लगा लिये और टेनर की ओर जाने लगा।

"हल्लो, जॉन," उसने अभिवादन करते हुए कहा। "तुम मुझे भले ही भूल गये हो, पर मैंने तुम्हें पहचान लिया।"

टेनर रुक गया, घूर घूरकर स्तेकोल्निकोव की ओर देखने लगा, माथा मलता रहा, फिर खोपड़ी के पीछे घूंसा मारा, मानो अपनी याद्दाश्त को ठकोर रहा हो। फिर सहसा उछल पड़ा और प्रचलित रूसी गीत की पहली पंक्ति गाने लगा—

"'सेब और नाशपाती के पेड़ों पर नया बूर आया है'... सलाख़ पर भुने क़बाब... कैन्टीन के डिब्बे में से स्पिरिट ... यह पत्थर उठाकर मेरे सिर पर मारो, कप्तान... शायद इसी से तुम्हारा नाम बाहर आ जाय..."

"फ़्योदोर।" स्तेकोल्निकोव ने कहा।

"फ़्योदोर!" एक बार फिर उछलकर टेनर चिल्लाया।

दोनों बग़लगीर हुए...

"'विदा, प्यारे नगर, प्रभातवेला में हमारा जहाज़ लंगर उठा देगा...'" टेनर गाने लगा। "तुम्हींने मुझे पहले रूसी गीत सिखाये थे। तुम्हींने मुझे एक टुन टुन करनेवाला प्याला भेंट किया था। और अब तुम्हारा नाम भूल जाने के लिए मेरे जबड़े पर एक रूसी घूंसा मारो, फ़्योदोर। केवल अमरीकी ही इस तरह भूल सकते हैं... नहीं, बहस नहीं करो... अमरीकी बड़े भुलक्कड़ होते हैं। मुझ से बेहतर कौन जानता होगा।"

"अरे छोड़ो जॉन। मैं भी तो तुम्हारा नाम भूल गया था ... पर मैंने तुम्हें फ़ौरन पहचान लिया, जब तुम बूढ़े किरील अन्द्रेयेविच के फ़ोटो उतार रहे थे। अब हम बराबर हैं।"

"बराबर! हां। बहुत अच्छा है यह शब्द, छोटा-सा। अब चलो होटल डि बछ्रूशी में चलें और इस पुनर्मिलन का उत्सव मनायें—वहां मैंने कुछ बचा रखा है।" टेनर ने स्तेकोल्निकोव की बांह में बांह डाली और उसे खींचता हुआ साथ ले चला।

नदी की ओर घूमकर देखते हुए उसने कहा—

"अगर लोग चाहते तो कोई भी नदी एल्ब नदी बन सकती थी... अगर वे चाह सकते ... लेकिन इसके बारे में बाद में बातें करेंगे। अब, मुझे यह बताओ, फ़्योदोर—क्या तुम चाहते हो कि मैं संसार के गोलक को बांहों में भर लूं? या तुम सोचते हो कि मेरी बांहें बहुत छोटी हैं? अगर यह बात है, तो पेश्तर इसके कि सूरज लुढ़कता हुआ और दूर चला जाय मैं चाहता हूं कि उसे पकड़ लूं और डोरियों के थैले में इसे लटका दूं जो आज मैं समझदारी करके गांव के स्टोर में से ख़रीद लाया हूं। मैं चाहता हूं कि सूरज हम पर वैसे ही चमकता रहे जैसे एल्ब पर चमका करता था।"

टेनर को यों धुआंधार बातें करते देखकर स्तेकोल्निकोव बड़ा ख़ुश हुआ। जॉन पहले से कुछ मोटा हो गया था, और सिर के बाल भी कुछ ज़्यादा झर गये थे, पर अब भी वह ख़ुशमिजाज, उत्साही जीव था, वैसा ही जैसा उसकी याद में बना हुआ था। फ़्योदोर यों महसूस कर रहा था जैसे वे दोनों एल्ब नदी के चिरस्मर्णीय तटों पर स्थानान्तरित कर दिये गये हों, मानो उन्हें उनके दोनों देशों के बीच पायी जानेवाली बेचैन, तनावभरी "शान्ति" और शीत "मैत्री" के लम्बे सालों ने कभी भी एक दूसरे से जुदा नहीं किया हो; उन दोनों देशों के बीच, जिनके हाथों में परस्पर कल्याण की सौभाग्यवती तालियां थीं, दर्जनों राष्ट्रों की क़िस्मत और लाखों परिवारों के जीवन की डोरी थी।

काश कि पुनर्मिलन की वे घड़ियां जितनी देर तक बनी रह सकें, बनी रहें। आज स्तेकोल्निकोव कंटीले विषयों की चर्चा नहीं करेगा। वे

अपने परिवारों के बारे में बातें करेंगे, अपने बच्चों के बारे में, उराल की दौलत के बारे में, बेहतर क़िस्म के कैमरों के बारे में, यहां तक कि अन्तर्ग्रहीय यात्राओं के बारे में ... उन विषयों को छुए बिना, जिनके बारे में अपने विचार व्यक्त करना चन्द्रमा की ओर उड़ान भरने अथवा इनसान की उम्र बढ़ाने जैसे सवालों की तुलना में कहीं ज़्यादा कठिन था, बहुत-सी ऐसी बातें थीं जिनके बारे में लोग आपस में बातें कर सकते थे।

इस तरह भोजन शुरू हुआ। पेलागेया कुज़्मीनिश्ना ने बड़ी-सी काली कड़ाही में हरे प्याज के साथ तले हुए अण्डे परोस दिये। पेलागेया कुज़्मीनिश्ना सौंफ़ के अर्क वाली एक कार्डियाल की बोतल भी निकाल लायी, जिसका वह कभी कभी मज़ा लिया करती थी। साथ में ताजा नमक-लगे खीरे थे और ताजा आलू थे जिन्हें नमकीन पानी में सिरका डालकर, उबाला गया था।

स्तेकोल्निकोव ने एल्ब नदी के तट पर की मुलाक़ात से लेकर अब गोरामिल्का नदी के तट पर पुनर्मिलन तक की अपनी सारी आप-बीती सुना डाली।

टेनर ने इसी कालान्तर में बीते अपने जीवन का भी ब्योरा दिया। उसकी कहानी ज़्यादा लम्बी थी और उसमें हंसी-मज़ाक की पुट थी।

इस कहानी से, जिसमें बहुत-सी अनावश्यक तफ़सीलें और ब्योरे भरे थे, स्तेकोल्निकोव ने समझा कि टेनर अपनी रोज़ी मुख्यतः रूसी से अनुवाद करके और रूसी प्रकाशनों से किये गये संकलनों द्वारा कमाता है। यह देखते हुए कि टेनर ने त्रोफ़ीम की यात्रा का ख़र्च अपनी जेब से दिया था – और उसके लिए अच्छी ख़ासी रक़म देनी पड़ी होगी – जाहिर था कि इससे अच्छी कमाई हो जाती थी।

टेनर ने इस बात को छिपाने की कोशिश नहीं की कि इस यात्रा से अच्छी इश्तहारबाजी हो जायेगी, बल्कि धन की दृष्टि से भी अच्छा लाभ होने की आशा थी।

"बेशक, सोवियत संघ के बारे में झूठ की तुलना में सच की बिक्री कम है, फिर भी सच की लोकप्रियता बढ़ रही है। यह स्थिति मेरे अनुकूल

बैठती थी, और मैंने क़रारों पर दस्तख़त किया जिससे मुझे इतने पैसे मिल गये कि मैं त्रोफ़ीम को यहां ले आया।"

यह पूछे जाने पर कि त्रोफ़ीम से उसकी मुलाक़ात कैसे हुई, टेनर ने जवाब दिया –

"दो भाइयों के बारे में अपनी पुस्तक के लिए मैं मुद्दत से एक नायक की खोज में था। मुझे बहुत-से लोगों के नाम सुझाये गये थे। पर उनका विश्वास नहीं किया जा सकता था। ऐसी संभावना भी थी कि वे अमेरिका लौटकर नहीं जाते, उस हालत में मेरी किताब की क्या गति होती?"

"यह कैसे?"

"अमेरिका में कौनसा प्रकाशक ऐसी किताब प्रकाशित करना चाहेगा जिसमें नायक अपने अमरीकी स्वर्ग के साथ कम्युनिस्ट नर्क की अदला-बदली कर ले? कोई बेवकूफ़ ही ऐसी किताब लिखेगा। फ़्योदोर, मेरा बाप दवाई-फ़रोश था, और मैं जानता हूं कि मात्रा का क्या मतलब होता है। और मेरी मां वायलिन बजाया करती थी। उससे मैंने विरासत में ताल-लय का ज्ञान लिया है।"

"मैं सहमत नहीं हूं, जॉन," स्तेकोल्निकोव ने झट से जवाब दिया, "मेरा बाप दवाई-फ़रोश नहीं था, न ही मेरी मां वायलिन बजाती थी, पर इसके बावजूद भी, मात्रा और ताल-लय का मुझे भी ज्ञान है। इसी कारण मैं जो कुछेक दोस्ताना टिप्पणियां करना चाहता था, उन्हें अब मैं अगली मुलाक़ात तक स्थगित कर दूंगा। और अब जरा सुनें कि तुमने त्रोफ़ीम को कैसे खोज निकाला।"

"वह ख़ुद आ पहुंचा। उसके पहुंच जाने से मेरा भाग्य जागा। मेरी पुस्तक 'रूस के मार्गों पर' के माध्यम से उसे मेरे बारे में पता चला। मैं समझता हूं कि इस पुस्तक का रूसी भाषा में अनुवाद किया जायेगा। उसने मुझे ढूंढ़ निकाला और अपनी जीवन-कहानी कह सुनायी। तब उसने मुझसे पूछा कि अगर वह रूस जाये तो उसे जान का जोखिम तो नहीं उठाना पड़ेगा। और जब उसने मुझे वह अख़बार दिखाया जिसमें उसके भाई के नाम की चर्चा थी तो मैंने अपने भाग्य को लाख लाख सराहा कि उसने जॉन टेनर पर कृपा की है। उस वक़्त से मैंने सारे मामले की बागडोर

अपने हाथ में ले ली। त्रोफ़ीम को बस इतना कहना था कि "मैं जा रहा हूं", बाक़ी किसी चीज़ के बारे में उसे चिन्ता नहीं करनी थी। यहां तक कि उसने अपने भाई को जो ख़त लिखा, मैंने उसे नये हिज्जों के मुताबिक़ ठीक करके दोबारा लिखा। त्रोफ़ीम रूसी भाषा के संशोधित नये हिज्जों के बारे में कुछ नहीं जानता। और मुझे यक़ीन नहीं कि वह पुराने हिज्जों को भी जानता है।"

प्रत्यक्षतः टेनर को यह ज़ाहिर करके ख़ुशी होती थी कि वह रूसी भाषा अच्छी जानता है, और उसने आधी रात तक स्तेकोलिनकोव को बिठाये रखा और उसे सुनाता रहा कि इस यात्रा का प्रबन्ध कैसे हो पाया।

स्तेकोलिनकोव ने मोटर भेजने के लिए टेलीफ़ोन किया। विदा लेते समय उसने टेनर को अपने घर पर आमन्त्रित किया और आश्वासन दिया कि लिवा लाने के लिए वह उसे रूसी 'जीप गाड़ी' भेजेगा।

२४

त्रोफ़ीम ऐसी कबाहत बन गया था कि गांववालों को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं रह गयी थी और बहुत-से लोग तो उससे कन्नी तक काटने लगे थे।

सामूहिक फ़ार्म की पार्टी समिति के सेक्रेटरी, दुदोरोव ने, अमरीकी यात्री के पराये प्रभाव से ग़ैर पार्टी जन समूहों को बचाने के लिए कम्युनिस्टों को हिदायतें दे रखी थीं कि ज़रूरत पड़ने पर हस्तक्षेप करें और उसका "डटकर मुक़ाबिला करें", पर उसने शीघ्र ही देख लिया कि ऐसी एहतियात की कोई ज़रूरत नहीं थी।

दुदोरोव मौजी तबीयत का आदमी था और हंसी-मज़ाक़ पसन्द करता था; उसने एक दिन कहा कि पूंजीवाद का पर्दाफ़ाश करने के लिए त्रोफ़ीम से बेहतर प्रचारक, पास-पड़ोस की तो बात ही क्या, सारे इलाक़े में नहीं मिल सकता।

एक लुटेरे का, लोभी का असली रूप लोगों के सामने इतना प्रत्यक्षतः

प्रगट हो गया था कि सामूहिक किसानों को उसकी व्याख्या करके बताना न केवल व्यर्थ था बल्कि क्लेशजनक भी था।

त्रोफ़ीम की लम्बी-चौड़ी बातों को ठीक ठीक समझने में प्योत्र तेरेन्त्येविच और दुदोरोव ने भूल नहीं की थी। उसकी बकवास उम्र या दम्भ के कारण इतनी नहीं थी जितनी इस कारण कि वह अपनी आस्थाओं की बुनियादों और अपनी जीवन-पद्धति की जांच करना चाहता था। और जैसा कि पता चला, ये आस्थाएं जो त्रोफ़ीम को अपने दादा द्यागिलेव से विरासत में मिली थीं और जिनका वह आज तक समर्थन करता रहा था ऐसी नहीं थीं कि उनकी जांच न की जा सके।

निःसन्देह, उससे मिलनेवाले ये सभी लोग केवल मनबहलाव के लिए ही तो इससे मत-भेद नहीं रखते थे और उन सभी सच्चाइयों का जिनका बहुत-से देश समर्थन करते थे मज़ाक नहीं उड़ा रहे थे। ज़रूर कोई अन्य कारक रहा होगा, और वह बड़ा शक्तिशाली कारक होगा, जो उन सभी चीज़ों का निषेध कर रहा था जिन्हें वह जीवन-पद्धति के लिए अत्यावश्यक मानता था।

वह कारक क्या था? विशेष रूप से वह क्या चीज़ थी जो इन लोगों के सामूहिक फ़ार्म को चलाये जा रही थी? आंखों पर पट्टी बांधे, केवल सुन्दर शब्दों से ही, ये लोग एक नये जीवन का निर्माण नहीं कर रहे थे, जो त्रोफ़ीम के फ़ार्म पर पाये जानेवाले जीवन से भिन्न था। वह क्या चीज़ थी जिसके कारण ये लोग उस सभी कुछ से प्रेम करते थे, उससे चिपटे हुए थे, उसकी रक्षा करते थे।

"उनके" विचारों से अपने विचारों का मुक़ाबिला करना दिन पर दिन उसके लिये ज्यादा ज़रूरी होता गया। विचारों की इस मुठभेड़ में ही वह उन धारणाओं के बारे में कुछ जान सकता था जो उसकी अपनी आस्थाओं से बहुत परायी थीं, उन आस्थाओं से जो जिन्दगी-भर की जांच का मुक़ाबिला करती रही थीं।

एक दिन मटरों की एक नई क़िस्म की प्रशंसा करते हुए जिसे कृषि-विशेषज्ञ स्मेतानिन ने तैयार किया था, और जिसे जई के साथ बोया गया था, त्रोफ़ीम ने कृषि-विशेषज्ञ से कहा—

"तुम तो सचमुच सोने के आदमी हो, कैसे शानदार मटर उगाये हैं! एक डण्ठल पर इतनी ज्यादा फलियां पड़ी हैं, और एक एक फली में इतने ज्यादा मटर। पर एक बात मेरी समझ में नहीं आती, तुम अपने मटर पीसकर क्यों नहीं बेचते हो ?"

"हम क्यों पीसें ?" त्रोफ़ीम की बात का आशय न समझते हुए स्मेतानिन ने कहा।

"क्यों, जिन मटरों को पीसा नहीं जाय, वे तो बीज होते हैं। तुम्हारे प्रतिस्पर्द्धी, पड़ोस के अन्य सामूहिक फ़ार्म, स्वयं तुम्हारे मटर बीज देंगे और साल दो साल में तुम्हारा सारा किया-कराया चौपट हो जायेगा।"

स्मेतानिन को उस वक़्त कोई जवाब नहीं सूझा। उसने मटरों की यह मज़बूत, ऊंची उपजवाली क़िस्म, ख़ास तौर से इसलिये उगायी थी कि विस्तृत पैमाने पर उसकी खेती की जाय, लेकिन त्रोफ़ीम इस बात को नहीं समझ सकता था। उसकी नजर में सामूहिक फ़ार्म एक तरह से उन किसानों की ज्वाइंट स्टाक कम्पनी था जो अन्य कम्पनियों – पास-पड़ोस के सामूहिक फ़ार्मों – के साथ होड़ में भागीदारों के रूप में व्यापार कर रहे थे।

दूसरे मौक़े पर उसने फ़ार्म के पशु-पालन विशेषज्ञ कोज़्लोव से कहा –

"मवेशियों के बारे में काम की कोई ऐसी बात नहीं जो मुझे मालूम न हो। मैं यह भी आपको बता दूं कि मेरे फ़ार्म पर भी कुछेक बहुत बढ़िया गायें हैं। पर सच कहूं तो तुम्हारी गायों का मुक़ाबिला नहीं कर सकतीं। पर तुम एक ग़लती करते हो, तुम बछियों को ही नहीं, बछड़ों को भी बेच डालते हो।"

कोज़्लोव की बड़ी बड़ी भूरी आंखें हैरत से फैल गयीं।

"क्यों, दस या ग्यारह महीने की उम्र के बछड़े के लिए हमें सात हज़ार, कभी कभी आठ हज़ार रूबल तक मिल जाते हैं," उसने समझाते हुए कहा। "हमारे यहां तो उनकी पांत लगी रहती है। बछड़ों से बड़ा लाभ होता है।"

जवाब में त्रोफ़ीम ने आवाज़ धीमी करके, रहस्यपूर्ण ढंग से उस युवक को अक़्ल सिखाने की कोशिश की–

"मैं तुम्हारे साथ बहस नहीं कर रहा हूं। अगर दूरन्देशी से काम न लें, अगर हमारी नज़र अगले चार सालों तक ही जाती हो, तो शायद ऐसा करने से फ़ायदा होगा। लेकिन अगर दूरन्देशी से काम लें, तो तुम अपने लिए वैसा ही जंजाल खड़ा कर लोगे जैसा तुम ने मटरों के कारण कर लिया है।"

"कौनसा जंजाल?" युवक ने पूछा, ज्ञान-पिपासा से उसका कण्ठ सूख रहा था।

"क्या मतलब?" त्रोफ़ीम ने कहा। इस अज्ञानता को देखकर वह भौचक्का-सा रह गया था। "अगर तुम केवल बछियों को बेचो और बछड़ों को गोश्त के लिए काटते जाओ, अगर तुम नुक़सान उठाकर भी ऐसा करो तो भी उस विरल नस्ल की इजारेदारी तुम्हारे हाथ में रहेगी। तुम केवल बछियों से ही तो रेवड़ खड़ा नहीं कर सकते न। और इसका मतलब है कि तुम्हारी बछियों के लिए हमेशा मांग रहेगी।"

स्मेतानिन की ही भांति कोज़्लोव ने भी त्रोफ़ीम को यह समझाने का कष्ट नहीं उठाया कि सामूहिक फ़ार्मों के बीच, और देश के सभी उद्यमों के बीच पाये जानेवाले सम्बन्ध परस्पर-सहायता पर आधारित थे, वे एक को नुक़सान पहुंचाकर दूसरे को लाभ पहुंचाने के उसूल पर आधारित नहीं थे। समझाने की कोशिश करना समय बरबाद करना और अपनी ज़बान थकाना होता। इसके लिए उसे उत्पादन के नये सम्बन्धों का आशय समझाना पड़ता। जनता-मालिक और जनता-कामगार का आशय समझाना पड़ता। और उसके बाद समाजवाद की बुनियादों और सार्वजनिक सम्पत्ति की व्याख्या, और भले ही संक्षेप में, सप्तवर्षीय योजना के मुख्य लक्ष्यांकों की चर्चा भी करनी पड़ती। और इस पर एक या दो घण्टे नहीं, कुछेक महीने तक पसीना बहाने की ज़रूरत थी, क्योंकि त्रोफ़ीम की उस सड़ांध भरी खोपड़ी को साफ़ करना, बड़ी चीशा को सुखाने और उसकी हलवाही करने से भी कहीं ज़्यादा कठिन था।

"आप यह बात फ़ार्म के प्रबन्धकों से या हमारे पार्टी-समिति के

सेक्रेटरी से क्यों नहीं कहते?" कोज़लोव ने कहा। "वे उम्र में बड़े हैं, आपकी बात को ज़्यादा अच्छी तरह से समझेंगे।"

"कहूंगा क्यों नहीं, जरूर कहूंगा।" त्रोफ़ीम ने वचन दिया।

२५

त्रोफ़ीम ज़बान का धनी निकला, दुदोरोव से मिलने के लिए पार्टी-समिति के दफ़्तर जा पहुंचा।

शायद पहले कभी भी पार्टी-समिति के दफ़्तर की दीवारों को ऐसी बातें सुनने का अवसर नहीं मिला था।

त्रोफ़ीम ने अपना भाषण इस प्रकार शुरू किया—

"तुम कम्युनिस्ट नाव के कर्णधार हो, और मुझे यक़ीन है तुम यह जानना चाहोगे कि समृद्धि और बहुलता का जीवन कैसे प्राप्त किया जाय।"

"जरूर जानना चाहता हूं।" अपनी हंसी दबाते हुए दुदोरोव ने कहा। वह अपने मुलाक़ाती के सामने आरामकुर्सी पर बैठ गया, और न केवल उसकी बातें सुनने बल्कि उसके मुंह से झरनेवाले मोतियों को अपनी कॉपी में बटोर लेने की भी उसने तत्परता जाहिर की।

बछड़ों और मटर के सवाल का विवेचन करने के बाद त्रोफ़ीम समृद्धि सम्बन्धी कार्यक्रम पर आया।

"वे मटर, वह रेवड़, यह जमीन, ये जंगल, वे पक्षियों से भरी झीलें और मुख्य बात, ये लोग मुझे दे दो, तो मैं तीन या चार साल के अर्से में तुम्हें ऐसा ही जीवन-स्तर जुटा दूंगा जैसा अमेरिका में पाया जाता है।"

"बड़ी दिलचस्प बात है," उसे उकसाते हुए दुदोरोव ने कहा। उसके चेहरे के भाव से जान पड़ता था कि वह दत्तचित्त होकर त्रोफ़ीम की बातें सुन रहा है। उसका अंग-प्रत्यंग—उसकी नीली, सतर्क आंखें, उसका ऊंचा चिकना माथा जिस पर से हल्के लाल रंग के बाल पीछे की ओर कंघी किये हुए थे, उसके गाल जिनमें गड्ढे पड़ते थे, यहां तक कि उसके छोटे छोटे गुलाबी कान—एकाग्रता का मूर्तरूप बने हुए थे।

त्रोफ़ीम अपने से और अपने श्रोता से गदगद होते हुए आगे बढ़ा—

"मेरा भाई प्योत्र भोला बादशाह है। हद से ज़्यादा नर्मदिल है। लोग उसके अनुभव से लाभ उठाने के लिए आते हैं, और यह अपने दिल की बात साफ़ कह देता है, उनके पूछने-भर की देर है कि अपने पेटेन्ट उनके हवाले कर देता है। टीम-लीडर और दल-नेता भी यही कुछ करते हैं।"

"अपनी उपलब्धियों के भेद बता देते हैं?"

"बिल्कुल।"

"तो क्या किया जाय?"

"सामूहिक फ़ार्म की ज़मीन के इर्द-गिर्द बाड़ लगा देनी चाहिए। बाड़ लगा दो और स्पर्द्धियों को उससे दूर रखो।"

"समझा," दुदोरोव ने कहा। उसने त्रोफ़ीम के चिपचिपे चेहरे की ओर जहां आंखों के नीचे बड़े बड़े गूमड़ पड़ते थे, एकटक देखा। शायद पहली वार वह एक सचमुच के और जीते-जागते कुलक को देख रहा था।

"यह रही एक बात," त्रोफ़ीम कह रहा था। "दूसरे, तुम्हें नगर में सामूहिक फ़ार्म की मण्डी को अपनी मुट्ठी में करना होगा। अगर यह तुम ख़ुद नहीं कर सकते तो तुम्हें किसी विश्वसनीय सामूहिक फ़ार्म के साथ—जिसके पास पूंजी हो—भागीदारी कर लेनी चाहिए और दूध, गोश्त, साग-सब्ज़ी और मुर्ग़ियों की क़ीमतों को अपने अधिकार में कर लेना चाहिए।"

"यह कैसे किया जाता है?" दुदोरोव ने पूछा।

त्रोफ़ीम ने इस तरह अपनी मुट्ठी बन्द की मानो किसी का गला घोंट रहा हो, और बोला—

"क़ीमतें कम करके। शुरू में कुछ नुक़सान भी हो तो डरना नहीं चाहिए। अगर तुम होड़ करने निकले हो तो जान की बाज़ी लगाकर होड़ करो—जिसे हम मारू होड़ कहते हैं। दूसरे सामूहिक फ़ार्म हाय-तोबा मचाने लगेंगे। तब तुम उन्हें नंगे हाथों से पकड़ सकते हो और उनकी नाक में नुकेल डालकर जैसा चाहो चला सकते हो। वे इस बात

पर रज़ामन्द हो जायेंगे कि अपनी उपज तुम्हारे माध्यम से बेचें और तुम्हें दलाली दें। उसके बाद सामूहिक फ़ार्म की मण्डी तुम्हारी उंगलियों पर नाचेगी। मेरी बात समझे?"

"मैं समझ रहा हूं, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच। लेकिन एक बात मेरी पकड़ में नहीं आयी।"

"पूछो। शर्माओ नहीं। अपने गांव के लोगों से मैं कोई भी भेद छिपाना नहीं चाहता। मैं इस खेल के सभी दांव-पेच जानता हूं।"

"सो तो मैं देख रहा हूं।" दुदोरोव ने व्यंगपूर्ण आदरभाव से कहा, लेकिन त्रोफ़ीम ने उसे शाब्दिक अर्थ में ही समझा। "कृपया एक बात मुझे साफ़ साफ़ बताइये—मण्डी को क़ाबू में कर लेने से क्या अन्य सामूहिक फ़ार्मों को नुक़सान पहुंचेगा?"

"कुदरती बात है। मण्डियां होती ही इसी काम के लिए हैं। जिसके हाथ में तुर्प है, उसी के हाथ में पैसा है, और जिस आदमी के हाथ में पैसा है, उसी के हाथ में जिन्दगी है।"

"और भगवान?"

"भगवान क्या?"

"वही जिसने इनसान को आदेश दिया था कि अपने पड़ोसी से उसी तरह प्रेम करो जिस तरह अपनी जान से करते हो। जिसने आदेश दिया था कि प्रत्येक इनसान को अपने भाई अथवा बहिन के रूप में देखो। आपके विचार में यदि हम अपने पड़ोसियों को सताने लगें, ख़ून-पसीने से कमायी गयी उनकी रोटी को उनसे छीनने लगें तो भगवान क्या कहेगा?"

त्रोफ़ीम के तेवर चढ़ गये, बोला—

"तुम भगवान को बीच में क्यों घसीटते हो? तुम यों भी तो सर्वशक्तिमान में विश्वास नहीं करते।"

"इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। अन्तिम निर्णय के दिन यदि प्योत्र तेरेन्त्येविच को और मुझे भगवान की अदालत में पेश होने का बुलावा आये, तो हम पर हमारे कर्मों के लिए, न कि हमारी आस्थाओं के लिए मुक़द्दमा चलाया जायेगा। और हमारे कर्म तो खुली किताब की तरह हैं,

कोई भी उन्हें देख सकता है। हमने मटर नहीं पीसे, हमने ज़्यादा क़ीमतें नहीं वसूल कीं। हमने हर किसी से कहा – शौक़ से स्मेतानिन के मटर बीजो। हम नस्ली बछड़े जुटाते हैं। हम अपनी प्रतिभा को छिपाते नहीं बल्कि यथासंभव दूसरों के साथ बांटते हैं। हम दूसरे लोगों के काम का नाजाइज़ फ़ाइदा नहीं उठाते ... पर आपको, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच, अन्तिम निर्णय के दिन, शायद आलोचना के कुछेक शब्द सुनने पड़ेंगे।"

"मुझे? क्यों?"

"और नहीं तो केवल इस लिये कि आप एक नौजवान पार्टी-समिति के सेक्रेटरी को जिसका काम न्यायपूर्ण व्यवस्था के पक्ष में डटकर खड़ा होना है, मुनाफ़ाख़ोरी और अपने पड़ोसियों का गला घोंटने का उपदेश देकर गुमराह करने की कोशिश करते रहे हैं। सिनाई पर्वत पर मूसा को भगवान ने जो दस धर्मादेश दिये थे, उनमें भगवान ने यह कहकर अपना आशय स्पष्ट कर दिया था – 'अपने पड़ोसी के घर को ललचाई आंखों से नहीं देखना, न उसकी पत्नी को, न उसके नौकर को, न ही उसके बैल को...' आदि। मैं अपनी याद्दाश्त के आधार पर बोल रहा हूं। पर अन्तिम निर्णय के दिन इस आदेश को शब्दशः याद किया जायेगा, और शायद मुझ पर सोवियत क़ानून के अधीन और आप पर पूंजीवादी क़ानून के अधीन अभियोग लगाये जायेंगे।"

"कैसे अभियोग?"

"यह अपने दिल से पूछिये, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच। भगवान के नियमों के अनुसार अपना दिल टटोलकर देखिये और अपने से पूछिये – क्या मैंने अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है? मेरा मतलब है अपने स्वर्गीय पिता तेरेन्ती पेत्रोविच बख़्रूशिन का। क्या मैंने अपने पड़ोसी की पत्नी को ललचाई आंखों से देखा – बूढ़े फ़ार्मर राबर्ट की पत्नी को? क्या मैंने अपने भाइयों की हत्या की? मेरा मतलब क़त्ल करने से नहीं, लेकिन होड़ द्वारा छोटे किसानों को रौंद डालने से है। मूसा के धर्मादेशों के अनुसार इस बात की जांच कीजिये, तब उसी तराज़ू पर अपने भाई प्योत्र तेरेन्त्येविच के जीवन और कर्मों को तौलिये, तो आपको उन संभावनाओं का साफ़ अन्दाज़ हो जायेगा जो अन्तिम निर्णय से पहले जांच

करनेवाले फ़रिश्ते के सामने आरम्भिक सुनवाई के वक़्त आप दोनों के सम्मुख होंगी।"

त्रोफ़ीम का चेहरा पीला पड़ गया, उसने गले पर से कमीज़ का बटन खोला और कहा–

"बाइबल की इतनी अच्छी जानकारी तुम्हें क्योंकर हुई?"

"क्योंकि मैं कम्युनिस्ट हूं, मिस्टर त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच। किसी चीज़ का खण्डन या निषेध करने से पहले हम कम्युनिस्ट उस चीज़ का– जिसका हम खण्डन अथवा निषेध करने जा रहे हैं–पूर्ण रूप से अध्ययन करते हैं। और अगर आप, या आप ही की तरह सोचनेवाले और लोग कम्युनिज़्म के, लेनिन के सिद्धान्त का खण्डन अथवा निषेध करने से पहले उसके बारे में कुछ जानकारी हासिल करने की तकलीफ़ गवारा किया करें, भले ही, वह आम ख़ाके के रूप में ही क्यों न हो, तो हम लोगों को इतना वक़्त बरबाद नहीं करना पड़े जितना इस वक़्त करना पड़ रहा है।"

"मुझे इजाज़त दीजिये, मिस्टर कम्युनिस्ट।"

दुदोरोव ने, जवाब में, झुककर अभिवादन किया।

"साफ़गोई के लिए माफ़ कीजिये," उसने कहा। "लेकिन आपने ग़ुलामी का उपदेश देकर मुझे यह कहने पर विवश किया। जो कुछ मैंने कहा है, यदि आप उसपर विचार करने की तकलीफ़ गवारा करेंगे तो शायद आप समझ लेंगे कि हमें ऐसी बातों का विश्वास दिलाने की कोशिश करने में कोई तुक नहीं है, जिनमें आप स्वयं बहुत विश्वास नहीं करते... नमस्कार..."

त्रोफ़ीम ने फिर एक बार झुककर अभिवादन किया, क़ालीन की पट्टी के सिरे पर गिरते गिरते बचा और दरवाज़े की ओर बढ़ गया। दरवाज़े के पास वह कुछ बड़बड़ाया लेकिन ज़मीन पर उतरते हुए एक हवाई जहाज़ की गड़गड़ाहट के कारण उसके शब्द सुनाई नहीं दिये।

सड़क पर पहुंचकर उसकी समझ में नहीं आया कि किस ओर को घूमें। अन्त में उसने एक दूकान का रुख़ किया जिसकी खिड़की में रखी चीनी वोद्का–खान्जा (पाखंडी)–की एक बोतल की ओर वह बहुत दिनों से ललचाई आंखों से देखता रहा था।

घास-कटाई का काम जो बड़े जोश से शुरू हुआ था, सुभीते से ख़त्म हो गया; अन्त तक एक बूंद भी पानी नहीं बरसा। किसी किसी जगह छोटे छोटे पेड़ों के दूरस्थ झुरमुटों और साफ़ मैदानों में पायोनियर और कोमसोमोल दल, सूखी घास के ढेर लगा रहे थे। यह काम योजना के अतिरिक्त था। फ़ार्म पर स्वेच्छा से किये जानेवाले इस काम की परम्परा बन गयी थी। कोई चार साल पहले जब सामूहिक फ़ार्म के पास धन की कुछ कमी थी और वह कोमसोमोल और पायोनियर सरगर्मियों के लिए पैसा नहीं जुटा सकता था, तो प्योत्र तेरेन्त्येविच ने यह सुझाव दिया था कि युवा लोग अपने लिये धन का कोष किसी न किसी तरह स्वयं जुटायें। फ़ार्म के हिसाब-किताब रखनेवालों ने उनके नाम से एक विशेष खाता खोल दिया था। यह दोनों ओर से लाभदायक था। जिस समय फ़सल-कटाई का काम पूरे ज़ोरों पर होता तो एक एक बाली, एक एक डण्ठल की ओर ध्यान देना असम्भव हो जाता था। अक्सर फ़सल काटनेवाली मशीनें अपने पीछे अछूते टुकड़े भी छोड़ जाती थीं। उन्हें साफ़ करने के लिए सामूहिक किसानों को लगाना बड़ा महंगा बैठता, और ऐसा किये बिना ज़मीनों को छोड़ देना भी लापरवाही होता। इसलिए यह रास्ता ढूंढ़ निकाला गया कि किशोरों के उत्साही हाथों और पैनी आंखों का इस्तेमाल किया जाय।

"क्या ख़ूब विचार है! महान सामूहिक बिज़नेस! मैं इसके बारे में 'कोमसोमोल्स्काया प्राव्दा' के लिए एक लेख लिखूंगा – आप एक स्टेडियम या पायोनियर प्रासाद को जो खेतों में पड़ा है कैसे "समेट" सकते हैं। कम्युनिस्ट सोद्देश्यता के साथ अमरीकी रुख़ है। सप्ताहान्त में आपके किशोरों ने इतना घास काट लिया है कि उससे उनके भावी स्टेडियम की दो दीर्घाओं की क़ीमत निकल आयेगी। आपके स्कूली बच्चों ने इतनी कमाई कर ली है कि वे नये साल तक स्कूल के फ़ार्म की अपनी मुर्ग़ियों और कबूतरों को चुग्गा डाल सकते हैं। यह बहुत अच्छा है, फ़्योदोर, बहुत अच्छा है!"

स्तेकोल्निकोव के नये घर के छोटे-से भोजन-कक्ष में शाम की चाय पीते हुए जॉन टेनर ने इस भांति अपने विचार व्यक्त किये।

"मुझे इस बात की बड़ी ख़ुशी है, जॉन। निश्चय ही 'कोमसोमोल्स्काया प्राव्दा' बख़्रूशिन की कोमसोमोल पहलक़दमी के बारे में तुम्हारा लेख छापेगा। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि तुम्हारी पैनी आंखों ने "कम्युनिस्ट सोद्देश्यता के साथ अमरीकी रुख़" को देख लिया है। तुमने इसे बड़े अच्छे शब्दों में बांधा है। अगर हमारे कुछेक पत्रकार कम्युनिस्ट सोद्देश्यता के साथ अमरीकी रुख़ अपनाते, तो हमें एक अच्छी किताब पढ़ने को मिलती जिसमें बताया जाता कि किस भांति लाखों रूबल हमारे खेतों में बिखरे पड़े रहते हैं ... शायद तुम्हें ही यह किताब लिखनी चाहिए। अपने देश की तुलना में विदेश में नज़र ज्यादा तेज़ी से सफलताओं और त्रुटियों को देख सकती है ... पर यह तो बताओ जॉन, तुम हमारे बारे में अमरीकी पाठक के लिये क्या लिखोगे?"

"सच्चाई!"

"हां, लेकिन कौन सी सच्चाई? मशीनीकरण की उपलब्धियां, भरपूर पैदावार—यह सच्चाई है। पर फ़ार्म-दफ़्तर के बाहरवाला गड्ढा जिसमें सूअर लोटते हैं, वह भी सच्चाई है।"

इसी समय स्तेकोल्निकोव की पत्नी यह कहकर कि रसोईघर में उसे काम है, मेज़ पर से उठ गयी। टेनर फ़ौरन समझ गया कि वास्तव में गंभीर वार्तालाप शुरू होने जा रहा है। इसी पूर्वाशा से उसने कहा—

"बेशक, मैंने और चीज़ों के साथ गड्ढे का भी फ़ोटो उतारा, अनोखेपन की पुट देने के लिए। मैंने फूस के छप्परवाली टूटी-फूटी पुरानी गोशाला का भी फ़ोटो लिया है जिसके ऊपर मोटे अक्षरों में यह वाक्य लिखा है—'दूध और मांस के उत्पादन में हम अमेरिका से आगे निकल जायेंगे', क्या यह सच्चाई नहीं है?"

"सच्चाई है, जॉन। लेकिन यह एक मख़ौल लगेगा, बिना किसी शीर्षक के भी। इसी भांति फ़ार्म-दफ़्तर के बाहर गड्ढे में लोटते सूअरों के तुम्हारे फ़ोटो भी मख़ौल नज़र आयेंगे, जिन्हें तुमने ऐसे ढंग से खींचा

है कि फ़ार्म-दफ़्तर का दरवाज़ा तसवीर में आ जाय, जिसके ऊपर '२१ वीं पार्टी कांग्रेस सामूहिक फ़ार्म का प्रबन्ध कार्यालय' का बोर्ड लगा है। क्या तुम इस बात से सहमत नहीं हो कि तसवीरें उतारने का यह ढंग बहुत सद्भावनापूर्ण नहीं है? विशेषकर इसलिए भी कि यह चित्र खींचने के लिए तुम ख़ुद गड्ढे में लगभग लेट गये थे, ताकि बोर्ड और सूअर एक ही चित्र में आ सकें।"

"तुम मुझ पर अच्छी नज़र रखते हो, फ़्योदोर।"

"नहीं जॉन, तुम और त्रोफ़ीम बिल्कुल आज़ाद हो, जो मन में आये करो। लेकिन जिस वक़्त बच्चे, नन्हे शौक़िया फ़ोटोग्राफ़र ऐसी बातों को देखते हैं, और अपने पायोनियर दल-नेता से—जो ख़ुद भी किशोर है—शिकायत करते हैं, तो मेरा कोई अधिकार नहीं रह जाता कि मैं उनके विरोध की उपेक्षा करूं।"

"यहां पर बड़े समझदार बच्चे रहते हैं, फ़्योदोर पेत्रोविच।"

"हां, जॉन। सुधार के लिए अभी बड़ी गुंजाइश है, पर उनके मन ठीक दिशा में सोचते हैं। गड्ढा—सच्चाई है। इसी तरह वह टूटी-फूटी गोशाला भी एक सच्चाई है, जिसे दर्जनों खम्भों का सहारा देकर खड़ा रखा गया है। इसी तरह हमारी सप्तवर्षीय योजना-काल के पहले साल में, नंगे पांव, हंसिये से घास काटता हुआ बूढ़ा तुदोयेव भी एक सच्चाई है, हालांकि यह सच्चाई तुम्हारी कल्पना की उपज है। पर तुम इस बात से तो सहमत होगे कि गोशाला की मरम्मत करने में कोई तुक नहीं है, जब कि उसकी जिन्दगी ही महीना-भर बाक़ी रह गयी हो, क्योंकि उस जगह से रेलवे लाइन निकलकर जायेगी, और इसी साल पतझड़ में गायों को लेनीवी टीले पर नये मवेशीघरों में रखा जायेगा। यह भी एक सच्चाई है। और बेहद किफ़ायती प्योत्र तेरेन्त्येविच गड्ढे को इस लिये नहीं भरना चाहता कि वह अब उसकी ज़मीन पर न होकर भावी रेलवे की ज़मीन पर आ गया है—यह भी एक सच्चाई है हालांकि मैं इसका अनुमोदन नहीं करता। टीले पर आधुनिक सूअर-बाड़े बनाये गये हैं, जिनमें सारा वक़्त पानी चलता है और नालियां बनायी गयी हैं, और जो अर्द्ध-स्वसंचालित सफ़ाई-मशीनों और नहलाई-घर से लैस है—

वह भी एक सच्चाई है। तुम अपने कैमरे के शीशे को इस सच्चाई पर क्यों नहीं आज़माते? क्यों?"

जॉन अपने पैरों की ओर देखने लगा और अपनी गठीली उंगलियां मेज पर बजाने लगा। फिर जवाब में बोला—

"बात इस तरह है, फ़्योदोर। मैं मौजी तबीयत का आदमी हूं। मुझे ये अन्तर बड़े विनोदपूर्ण लगे। मुझे डर था कि गड्ढा सूख जायेगा और गोशाला की छत बैठ जायेगी, और मैं कुछेक ऐसे चित्र नहीं ले पाऊंगा जिनसे मेरी पुस्तक आकर्षक बन सकती है ... हां ... तुम नहीं जानते कि अमरीकी पाठक के लिए पुस्तक को कैसे तैयार करना चाहिए। अगर मैं एक चरमराती पुरानी गोशाला को दिखाता हूं, और उसके बाद ऐसी गायें दिखाता हूं जो अमरीकी, यहां तक कि डेनमार्क की अपनी बहिनों को भी मात दे गयी हैं, और फिर अन्तर दिखाने के लिए नयी गोशाला दिखाता हूं तो यह चीज़ों को अमरीकी ढंग से आकर्षक बनाकर दिखाना होगा। गड्ढे के बारे में भी यही कहूंगा। तुम नहीं जानते कि इस गड्ढे के बारे में कैसी कैसी टिप्पणियां मेरे मन में घूम रही हैं। मैं कहूंगा कि इसी गड्ढे में, १६५६ में पुराने बख़्रूशी के सूअर लोटा करते थे। लेकिन १६६३ में, सप्तवर्षीय योजना-काल में बनायी जानेवाली बहुत-सी बिजली-चालित रेलवे लाइनों में से एक रेलवे लाइन, यहां पर बिछायी जायेगी ... और फिर, अगले पन्ने पर ... हां, फ़्योदोर, मैं अपनी आंखों के सामने अपनी किताब के छपे हुए पन्ने देख सकता हूं—अगले पन्ने पर मैं एक बहुत बड़ा सूअर-बाड़ा दिखाऊंगा... मैं एक अमरीकी पत्रकार हूं, फ़्योदोर ... और मैं अपना धंधा जानता हूं। मैं ऐसी किताब तैयार नहीं कर सकता जो छापेख़ाने का मुंह भी न देख पाये। अमरीकी पाठक रोमांचकारी घटनाएं चाहता है। अगर मैं मांस के बजाय जैम या आईस-क्रीम से भरे सॉसेज बेचना शुरू कर दूं, तो सच मानो वे उस वक़्त तक हाथों-हाथ बिकते जायेंगे जब तक लोगों को इस बात का एहसास न हो जाय कि भेड़ की आंत में आईस-क्रीम ठूंसना मूर्खता है ... पर इस बीच मेरी जेब गरम हो चुकी होगी। मुझ पर नाराज़ नहीं होना, फ़्योदोर ... मैं अमरीकी हूं, मेरा इसपर बस

नहीं है ... और अगर मैं ... लेकिन नहीं, में वैसा नहीं करूंगा ... लेकिन अगर मैं आवरण-पृष्ठ पर टूटी-फूटी गोशाला का चित्र दूं जिसके नीचे यह नारा लिखा हो: 'हम अमेरिका से आगे निकल जायेंगे', तो प्रकाशक उस किताब में दस लाख डालर लगाने में भी संकोच नहीं करेगा, ताकि बीस लाख कमा सके। उस प्रकार का आवरण-पृष्ठ एक अच्छी, बिकने लायक भेड़ की आंत का काम देगा। सच मानो फ्योदोर, जितनी देर माल हाथों-हाथ बिकता रहे प्रकाशकों को इस बात की परवाह नहीं रहती कि उसके अन्दर क्या ठूंसा गया था।"

स्तेकोल्निकोव ने गहरी सांस ली, और गिलास में से चाय के—जो पड़ी पड़ी ठण्डी हो चुकी थी—आख़िरी घूंट भरकर बोला:

"तुम जानते होगे, जॉन, लेकिन यह कुछ ठीक नहीं जान पड़ता।"

"फ्योदोर, अमेरिका का इतिहास मैंने नहीं बनाया, न ही अब्राहाम लिंकन ने, हालांकि उसने उसे बनाना शुरू किया था।" टेनर ने अपनी सफ़ाई देते हुए कहा। "मैंने रॉक-ऐण्ड-रोल ईजाद नहीं किया, न ही हुला-हूप के कुरूप अंग-चालन ईजाद किये हैं। मैंने हत्या को सिनेमा का मुख्य विषय भी नहीं बनाया। न ही मैंने सोने की वह चाभी बनायी है, जिसके बिना फलियों का सस्ते से सस्ता डिब्बा भी नहीं खोला जा सकता। लेकिन त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच बख़्रूशिन के शब्द मैं ज़रूर दोहराकर कहूंगा: 'आख़िर जीना तो है'। सो, मैं जीता हूं, और इसके लिए कभी कभार अपनी ज़मीर से समझौता कर लेता हूं।"

लगता था जैसे जॉन सच बोल रहा है। उसकी चमकती हरी आंखें सहसा धुंधला गयीं, और उसने केवल इतना और जोड़ा—

"मेरा परिवार बहुत बड़ा है और बेट्सी को अभी भी चटकीले कपड़ों का शौक़ है। वह यह नहीं समझती कि हडसन नदी पर अपने सुन्दर घर की अभी तक हम आधी किश्तें भी नहीं चुका पाये। फ्योदोर, तुम्हें यह जानने की क्योंकर ज़रूरत होगी कि टेनर परिवार अपनी गुज़र-बसर कैसे चलाता है। बेशक, मैं इस बात का वचन तुम्हें नहीं दे सकता कि मैं एक कम्युनिस्ट किताब लिखूंगा। नहीं। इस बात का वचन मैं नहीं दे सकता, और लिखूंगा भी नहीं। पर मैं जो सॉसेज बनाऊंगा उनमें मसाला अच्छा भरूंगा।"

दूसरे दिन, बख़्रूशिन के साथ खेतों का चक्कर लगाते हुए, स्तेकोल्निकोव टेनर की चर्चा करने लगा।

"अब तो तुम उसे बहुत बार मिल चुके हो, फ़्योदोर पेत्रोविच, तुम्हारी उसके बारे में क्या राय है?" बख़्रूशिन ने पूछा।

"उसकी सभी सनकों के बावजूद यह आदमी मुझे अच्छा लगता है। यों तो उससे किसी भी बात की आशा की जा सकती है, लेकिन सब से बुरी बात की नहीं। वह मुझे इस बात का विश्वास दिलाना चाहता है कि अमरीकी प्रेस जैसा संसार-भर में कोई दूसरा प्रेस नहीं, कि उसके संचालक जिस चीज़ को छापते हैं, उसे मुनाफ़ा देनेवाले माल से ज्यादा कुछ नहीं समझते, उसके विचारधारात्मक आशय की उन्हें कोई परवाह नहीं होती। वह कहता है कि इस कारण वह जो चाहे लिख सकता है।"

"तुमने क्या कहा?"

"ज़ाहिर है, टेनर यह स्वीकार नहीं करना चाहता कि वह नौकर है, अगर डालर का चाकर नहीं तो–और परिणामतः उन लोगों का चाकर जो उसे काम के लिए पैसे देते हैं ... और यह बात उसे दो-टूक कहते हुए मुझे कुछ झिझक महसूस होती है ..."

बख़्रूशिन ने हैरान होकर स्तेकोल्निकोव की ओर देखा।

"सच बात कहने में तुम्हें झिझक क्यों होनी चाहिए? एल्ब नदी पर तुम्हारे बीच भाईचारा नहीं रहा था?"

"यह स्वीकार करते हुए मुझे लज्जा का अनुभव होता है, प्योत्र तेरेन्त्येविच, लेकिन इस आदमी पर मुझे तरस आता है। मैं सोचता हूं कि अन्त में टेनर स्वयं समझ लेगा कि उसके तर्क बड़े खोखले हैं। वह यह नहीं समझ सकता कि समाजवाद और पूंजीवाद के सह-अस्तित्व का मतलब दोनों प्रणालियों का मिलाव नहीं है, या उसके शब्दों में 'दो उसूलों का विसरण' नहीं है। एक नयी सामाजिक व्यवस्था हासिल करने के लिए वह चाहता है कि पूंजीवाद में समाजवाद को डालकर और समाजवाद में पूंजीवाद को डालकर एक मिश्रण तैयार किया जाय। वह यह नहीं जानता

कि ये पुराने गले-सड़े विचार उसकी नई खोज नहीं हैं, इन्हें कुछेक सिद्धान्तकार, जिनका अपनी पार्टियों के साथ ही दीवाला बोल चुका है, पहले पेश कर चुके हैं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तुम यह कैसे कह सकते हो कि उसमें बस, बाइसिकल का आविष्कार किया गया है?"

बख्रूशिन सहमत नहीं हुआ।

"अगर वे लोग 'अमेरिका' नामक अपनी पत्रिका में जो रूसी भाषा में प्रकाशित की जाती है, पूंजीवादी, अमरीकी जीवन-प्रणाली का खुल्लमखुल्ला प्रचार कर सकते हैं; अगर वे सोकोल्निकी में आयोजित प्रदर्शनी के रूप में उस जीवन-प्रणाली को यहां ला सकते हैं तो हम इसी ढंग से अपनी जीवन-प्रणाली की बात क्यों नहीं कह सकते? टेनर को खरी खरी सुनानी चाहिए ..." बख्रूशिन अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाया।

सहसा उसकी नज़र जई के खेत पर पड़ी, जिस में से टेनर दो लड़कों के साथ, रेंगकर निकल रहा था। लड़कों ने सिर पर पंख लगा रखे थे। यह दिखाने के लिए कि दुनिया-भर के बच्चे, एक जैसे होते हैं, और सोवियत बच्चे भी रैड इन्डियनों का खेल उसी तरह खेलते हैं जिस तरह अमरीकी बच्चे, एक फ़िल्म का अंश खींचा जा रहा था।

"टेनर को क्या खरी खरी सुनानी चाहिए? मैं कान खोलकर सुनने के लिए तैयार हूं, प्योत्र तेरेन्त्येविच," टेनर ने कहा।

"घोड़ा-गाड़ी में हमारे साथ बैठ जाइये, मिस्टर टेनर," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने जवाब दिया। "अगर आप अपनी रैड इन्डियन फ़िल्म खींच चुके हों तो चलिए गोभी की ताज़ा फ़सल दिखायें आप को। मैं आपको बता दूंगा कि मैं स्तेकोल्निकोव से कौनसी बात कहने का अनुरोध कर रहा था।"

टेनर ने लड़कों से छुट्टी ली। उन्होंने सिर पर से रैड इन्डियनों के असली सिर-टोप नहीं उतारे जिन्हें एक असली अमरीकी, चच्चा जॉन टेनर ने उनके लिए तैयार किया था—एक ऐसे अमरीकी ने जिसने अपनी आंखों से असली रैड इन्डियन देखे थे। बच्चों ने टेनर का अभिवादन किया, मुंह से कुछ बुदबुदाये जो सचमुच रैड इन्डियन भाषा का कोई शब्द जान पड़ता था, और रेंगते हुए जई के खेत में फिर घुस गये।

"क्या मैं फिर कोई भूल कर बैठा हूं?" टेनर ने पूछा, "मुझे क्या साफ़ साफ़ सुनना होगा?"

"कोई ख़ास बात नहीं, जॉन," स्तेकोल्निकोव ने उत्तर दिया। "मैं पूंजीवाद और समाजवाद के विसरण के तुम्हारे सिद्धान्त की चर्चा कर रहा था।"

"इससे तो मेरा नाम अमर हो जायेगा! जी, हां! मैं बड़ी संजीदगी से यह बात कह रहा हूं। मेरे चेहरे पर कोई मुस्कराहट तो नहीं है न? देखा? मैं भी संजीदा हो सकता हूं। और यह सब इस लिए कि मैं उन लोगों के लिए सुख की कामना करता हूं जिनसे मुझे प्रेम है। तुम्हारे और अपने लोगों की। विसरण का सिद्धान्त संसार के हाथ में सुख की सुनहरी कुंजी सौंप देगा। हमें जरूर विसरण करना होगा। यह अनिवार्य है।"

टेनर की बात सुनने के बाद स्तेकोल्निकोव बख़्रूशिन की ओर मुख़ातिब हुआ।

"अब प्योत्र तेरेन्त्येविच, तुम मिस्टर टेनर को बताओ कि तुम क्या कहना चाहते थे।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने, जो कोचवान की सीट पर आ गया था, लगाम को झटका दिया। घोड़ा दुलकी चाल में भागने लगा और अपने बछेड़े की ओर मुंह फेरकर जो घोड़ा-गाड़ी के पीछे पीछे भागता आ रहा था, हिनहिनाया। वार्तालाप थोड़ी देर के लिए थम गया।

बेशक, उसे जारी भी कैसे रखा जा सकता था? "हां" और "न", "न" और "हां"—निरर्थक, निरुद्देश्य शब्द थे जिनसे कुछ भी सिद्ध नहीं होता था। प्रमाण के बिना "हां" और "न" समानार्थी शब्द होते हैं। और यदि टेनर के राजनीतिक ज्ञान का स्तर विचाराधीन विषय के बारे में बहुत नीचा हो तो बख़्रूशिन कौनसा प्रमाण पेश कर सकता था? उसने लेनिन की प्रसिद्ध पांच प्रणालियों के बारे में कभी सुना तक न था। एंगेल्स की पुस्तक 'परिवार, निजी सम्पत्ति और राज्य का उद्भव' के अस्तित्व तक से वह अनभिज्ञ था।

टेनर की तुलना त्रोफ़ीम से तो नहीं की जा सकती थी लेकिन दोनों में दूर-पार की एकरूपता ज़रूर थी। शब्द के पूंजीवादी अर्थ में, शिक्षित होने के नाते, टेनर को सामाजिक विकास के नियमों की तनिक भी जानकारी नहीं थी।

उस आदमी के साथ जो आतिशी हथियारों के बारे में कुछ भी नहीं जानता हो, आप राकेट-टेकनीक पर कैसे बातचीत कर सकते हैं?

गोभी के खेत पर पहुंचने पर–शहर में गोभी की सप्लाई का ढंग इतना असन्तोषजनक था कि जिला पार्टी समिति के दफ़्तर में उसके बारे में स्तेकोल्निकोव को टेलीफ़ोन किया गया था–बख़्रूशिन ने टेनर की ओर देखा और बोला–

"यह गोभी देखने में तो आकार में बड़ी और बढ़िया लगती है, पर अगर गोभी के किसी एक फूल को उठाकर देखें तो वह हल्का, खोखला और कच्चा निकलेगा। अन्दर से बिल्कुल ख़ाली। मिसाल के लिए इसी फूल को लीजिये। इसका सिर तो बड़ा है लेकिन अन्दर से पिलपिला है।"

इशारा समझकर टेनर उसी तरह अपना सिर दबाने लगा जिस तरह बख़्रशिन गोभी को दबा रहा था।

"मैं आपकी बात का विरोध नहीं करना चाहता, प्योत्र तेरेन्त्येविच," उसने कहा, "अपनी टोपी को देखते हुए शायद मेरा सिर भी बड़ा है और अन्दर से पिलपिला है। गोभी सभी तरह की होती हैं। पर हर तरह की गोभी की अपनी अपनी उपयोगिता होती है। मिसाल के तौर पर मेरी मां गोभी के इस फूल को सबसे ज्यादा उपयोगी मानती। इसके अन्दर के ख़ाली हिस्से को क़ीमे से भरा जा सकता है और उबाला जा सकता है। बड़ी ज़ायकेदार भाजी बनती है... ठूंसने के लिए अन्दर से ख़ाली गोभी जैसी कोई चीज़ नहीं। इसलिए प्योत्र तेरेन्त्येविच, आप जो कुछ कहना चाहते हैं, कहिए, मैं ख़ुशी से सुनूंगा।"

बख़्रूशिन का चेहरा लाल पड़ गया।

"नाराज़ मत होइये, प्रिय मिस्टर टेनर। आप सचमुच बड़े मिलनसार आदमी हैं, और मुझे इस बात का बड़ा खेद है कि हमारी पटरी नहीं बैठ सकती... लगता है हम विभिन्न दिशाओं में अपने घोड़ों को खींच रहे हैं।"

"पर इस वक़्त तो सब बात साफ़ हो गयी है।" स्तेकोल्निकोव बीच में बोल उठा। "जब हम गोभी को घोड़ों के साथ गड़बड़ाने लगते हैं तो हम कहीं भी नहीं पहुंच पाते... कहो जॉन, सिल्वर-फ़ॉक्स के फ़ार्म को देखना चाहोगे?"

"शुक्रिया। मुझे वे पसन्द नहीं हैं, प्रत्यक्ष और आलंकारिक, दोनों अर्थों में।"

"अरे जॉन, तुम मुझे क्या समझे बैठे हो? तुम ऐसी बात कैसे कह पाये?"

जॉन ठहाका मारकर हंस पड़ा। स्तेकोल्निकोव का हाथ अपने हाथ में लेकर बोला –

"मेरा सिर भी नहीं चाहता कि उसे गोभी समझा जाय, विशेषकर जब वह अपने को शानदार विचारों की फ़ैक्टरी समझता है!"

झगड़ा टल गया। वे खुम्मियां बटोरने के लिए जाने की चर्चा करने लगे, टेनर की विशेष टेलीवीजन फ़िल्म की भी, जिसे वह 'बच्चे, आख़िर बच्चे होते हैं' का नाम देने जा रहा था। पर उनकी "पटरी" अभी तक नहीं बैठी थी।

"हम विसरण नहीं कर रहे हैं!" अपने निवास-स्थान के बाहिर उनसे विदा लेते हुए टेनर ने कहा।

"लेकिन हम झगड़ भी नहीं रहे हैं," स्तेकोल्निकोव ने उत्तर दिया।

"तुदोयेवा से कहना कि इसमें क़ीमा भर दे। उसे बताना कि कैसे भरा जाता है। जमीन में से निकाले हुए गोभी के इस फूल को जाया करना बड़े अफ़सोस की बात होगी। आज मैं तुम्हारा मेहमान बनूंगा और इस विषय पर हम कुछ विसरण करेंगे।" टेनर के हाथ में गोभी का फूल देते हुए बख़्रूशिन ने कहा। उसने विदा में हाथ हिलाया और घोड़ा-गाड़ी में स्तेकोल्निकोव को फ़ार्म के दफ़्तर तक छोड़ने चला गया।

२८

"काश कि तुम लोग एक आंख बन्द करके भी देख पाते कि अमरीकी ख़ुशहाली की तह में क्या है," त्रोफ़ीम तुदोयेवा से कह रहा था। "तब मुझे यह साबित करने की जरूरत नहीं रहती कि दो और दो चार होते

कहें, तो बख़्रूशी के लोगों के जीवन में अब वह भेद नहीं पाया जाता जो पुराने ज़माने में पाया जाता था और जो उसे याद है।

तो क्या, नतीजा यह निकला कि त्रोफ़ीम की तुलना में जो भगवान में विश्वास करता था, नास्तिक लोग भगवान के अधिक निकट थे?

त्रोफ़ीम भगवान में विश्वास करता था, परन्तु क्या वह भगवान के आदेशों का भी पालन करता था? पाइप को खाली करके त्रोफ़ीम फिर अपने विचारों में डूब गया।

उसके विचारों से यही निष्कर्ष निकला कि फ़ार्मर त्रोफ़ीम बख़्रूशिन एक विभिन्न भगवान की पूजा करता था, और अन्य खोटे नियमों का पालन करता था। और इस दूसरे भगवान का आदेश था कि वह अपने भाइयों का उत्पीड़न करे। यहां तक कि अपने धर्म-भाइयों का भी उत्पीड़न करे। अपने जैसे मोलोकानवादियों का। यह भगवान लोगों को उत्प्रेरित करता था कि वे अपने पड़ोसियों को तबाह कर डालें, उनका बुरा चेतें। नास्तिक दुदोरोव, स्मेतानिन, प्योत्र, बूढ़े तुदोयेव, युवा पशु-विशेषज्ञ कोज़लोव और उन सभी लोगों के व्यवहार का जिनसे वह यहां पर मिल पाया था, इसके साथ कोई मेल नहीं बैठता था।

"कुछ तो बोलो, धातृ बहिन पेलागेया? तुम अपने भाई की ताड़ना क्यों नहीं करती हो, या ऐसे शब्द ही बोलो जिनसे उसकी आत्मा को शान्ति मिले?" त्रोफ़ीम ने सहसा तुदोयेवा को सम्बोधन किया, उसी भांति जिस भांति कोई मदर-सुपीरियर को सम्बोधन करता है।

तुदोयेवा के कान तेज़ थे, आवाज़ की बारीक से बारीक अभिव्यंजनाओं को भी भांप जाते थे, उसने झट से भांप लिया कि त्रोफ़ीम इस दम्भपूर्ण शैली द्वारा अपने विचार-विभ्रम को छिपाना चाहता था।

पेलागेया ने जवाब में कहा—

"मैं तुम्हें क्या बता सकती हूं, धातृ भाई, त्रोफ़ीम। तुम्हें सच सच कहूं तो तुम नाराज़ हो जाओगे। आखिर तुम मेहमान हो। तुम्हें झूठी सान्त्वना दूं? इससे मुझे ख़ुद शर्म महसूस होगी। मैं तुम्हें केवल इतना ही कह सकती हूं—तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए था।"

"क्या मतलब?"

"मतलब वही जो मैं कह रही हूं। वहां तुम अपने मोलोकान-धर्म को मानते हुए ज़िन्दगी बिताते और उसी में तुम्हारे दिन कट जाते। दुनिया की चिन्ताएं तुम्हें परेशान नहीं करतीं। तुम बेचैन नहीं होते, और हमें भी परेशानी नहीं होती। पर अब देखो क्या हो रहा है?"

"क्या?"

"हमारे बीच तुम इस तरह घूमते-फिरते हो जैसे थियेटर में ऊंट घूमता है। तुम यह बात भी समझना चाहते हो, वह बात भी समझना चाहते हो लेकिन समझने के लिए तुम्हारे पास साधन ही नहीं है।"

"साधन?"

"हां, त्रोफ़ीम। अब कुछ नहीं हो सकता। दिमाग़ का डिब्बा ख़ाली है। हमारे लिए तुम अजनबी हो और तुम्हारे लिए हम अजनबी हैं। अच्छा ही हुआ जो तुम दार्या से नहीं मिले।"

"अगर उससे मिलता तो क्या होता?"

"वह तुम्हें खरी खरी सुनाती।"

"मैं उसके सामने अपना दिल, अपनी सारी ज़िन्दगी खोलकर रख देता, और उसे पता चल जाता कि मुझे किन किन मुसीबतों का सामना करना पड़ा है। वह मुझे माफ़ कर देती। इसी के लिए मैं यहां आया हूं।"

उसका सिर झुक गया जिसे उसने अपने हाथों से थाम रखा था। कुछ देर के बाद उसने नाक साफ़ किया, और अपने बूट चढ़ाने लगा। फिर तुदोयेवा के पास जाकर बोला—

"कहो तो तुम्हें अपनी टुनटुनाती घड़ी दे दूं? उसमें बाईस लाल जड़े हैं। बिल्कुल नयी जैसी है। उसे ले लो और मुझे बताओ कि दार्या और नाती-पोते कहां पर छिपे हुए हैं?"

तुदोयेवा के हाथ से, जो त्रोफ़ीम के लिए तोहफ़े के तौर पर मोजों के जोड़े का दूसरा पैर भी लगभग बुन चुकी थी, यह सुनते ही बुनाई का फन्दा गिर गया। ऐसी बात उसके साथ पहले कभी नहीं हुई थी। इसकी उसे आशा नहीं थी। वह भौचक्का-सी रह गयी, और देर तक उसके मुंह में से बोल नहीं फूट पाया। पर जब संभली तो कुछ भी कहना उसने

निरर्थक समझा। अधूरे मोज़े में से उसने बुनाई की सिलाई खींच दी और चुपचाप बुने हुए मोज़ों को उधेड़ उधेड़कर ऊन का गोला बनाने लगी।

इसका जो भी अर्थ त्रोफ़ीम निकालना चाहे, निकाले।

२९

त्रोफ़ीम जितने अधिक लोगों से मिलता, उतनी ही अधिक तीव्रता के साथ वह अपने को एकाकी महसूस करता और अपने भीतर द्वन्द्व का अनुभव करता। वह निरुद्देश्य, वक़्त काटने के लिए, मुंह बाय घूमता रहता। सुपरिचित खेतों में घूमते हुए एक दिन उसकी मुलाक़ात सूअर-पालक, पान्तेलेई दोरोख़ोव से हो गयी।

लड़कपन से वह इस आदमी से परिचित था। पान्तेलेई का पिता द्यागिलेव के यहां काम किया करता था। पान्तेलेई भी त्रोफ़ीम को जानता था, पर दोनों में से किसी ने भी इस बात का संकेत नहीं दिया कि उन्होंने एक दूसरे को पहचान लिया है।

लड़कपन से ही पान्तेलेई सूअर-पालन का काम कर रहा था, और अब, अधेड़ उम्र में, सूअरों की सन्तति बढ़ाने और उन्हें मोटा करने के काम में अपने को विशेषज्ञ और बहुत बड़ा नवीकारक मानने लगा था।

वह छोटे सूअरों को दड़बों में बन्द रखने की प्रथा में विश्वास नहीं करता था, और एक बड़ा-सा घास का मैदान प्राप्त करने में सफल हो गया था जिसे उसने बाड़ों में बांट रखा था, और वहां सूअरों को "पूरी आज़ादी के साथ और उम्र के मुताबिक" घास चराया करता था।

इस विशाल, हरे-भरे मैदान में लगभग एक हज़ार सूअर घूम रहे थे। और इस सारे रेवड़ की देख-भाल पान्तेलेई और उसका बेटा करते थे। पान्तेलेई का बेटा, दार्या की नातिन कात्या के साथ पशु-विशेषज्ञ बनने की तैयारी कर रहा था।

एक हज़ार सूअरों की देख-भाल दो आदमी करें—यह देखकर त्रोफ़ीम भी हैरान रह गया, जो अपने फ़ार्म पर काम करनेवाले मज़दूर का ख़ून तक निचोड़ लेने का आदी हो चुका था। इस लिए त्रोफ़ीम ने निश्चय किया कि वह ख़ुद अपनी आंखों से जाकर देखेगा।

पान्तेलेई के रवैये को कुछ भी कहा जाय, लेकिन उसे मैत्रीपूर्ण नहीं कहा जा सकता। विदेशी मेहमान की इस दिलचस्पी को उसने अमरीकी साम्राज्यवाद की एक चाल समझा, कि वह धोखे से उससे सस्ते में सूअर पालने का उसका ढंग समझ लेगा और उसके दिमाग से लाभ उठाकर ख़ुद अमीर बन जायेगा। पर त्रोफ़ीम ने यह कहकर ही बैलून की हवा निकाल दी –

"वह कौन सियाना था जिसे सूअरों का वजन कम करने का विचार सूझा ?"

पान्तेलेई को बात तीर की तरह लगी।

"क्या मतलब, वजन कम करना ?" पान्तेलेई ने पूछा।

त्रोफ़ीम ने धीरे धीरे, धैर्य से समझाया कि दौड़ता-कूदता सूअर उस बाल्टी के समान था जिसका पेंदा ही ग़ायब हो। उसका खाया-पिया सब निकल जाता है।

पान्तेलेई बौखला उठा, उसने अपनी किरमिच की जाकेट उतार दी, आस्तीनें चढ़ा लीं, मानो लड़ाई करने जा रहा हो, अपने विरोधी को सिर से पांव तक देखा, फिर शुभारम्भ के लिए एक गाली निकाली और बोला –

"भेड़िये ने चरवाहे को सिखाया था कि रेवड़ की कैसे देख-भाल करनी चाहिए, लेकिन चरवाहे ने उसकी खाल उतार ली।" फिर वह त्रोफ़ीम के मुंह के पास मुंह ले जाकर बोला – "सूअर कहते किसे हैं ?" और ख़ुद ही अपने सवाल का जवाब दिया – "सूअर एक ऐसा स्तनधारी जीव है जिसे खुली हवा और धूप से प्रेम है। सूअर को खुली हवा और अल्ट्रा-वायोलेट किरणों की क्यों जरूरत है? उनकी उसे जरूरत इसलिए है कि उसकी बढ़ती ठीक हो और उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी हो। सूअरों को घूमने-फिरने की आजादी चाहिए ताकि स्तनधारी जानवर के सभी अंग और पंजर मजबूत हों।"

"हो सकता है तुम ठीक कहते हो, भले आदमी, लेकिन सूअर से हमें उसका मांस चाहिए, पंजर नहीं।"

यह वाक्य सुनकर पान्तेलेई के मुंह से एक और गाली निकली, फिर

वह सूअर की हड्डियों और मांसपेशियों की सामान्य बनावट की अधिक विस्तार के साथ व्याख्या करने लगा।

"अब तुम पर गोश्त बहुत है, अच्छे पले हुए आदमी हो। मैं तो कहूंगा कि तुम्हारा वजन हमारे नस्ली सूअर के बराबर ही होगा। और इसका क्या कारण है? कारण यह है कि तुम्हारी हड्डियां मज़बूत हैं, तुम्हारा पिंजर अच्छा है। यही बात सूअर पर भी लागू होती है। छोटी उम्र में उसकी हड्डियां और मांसपेशियां मजबूत बनाने की जरूरत होती है। उसी तरह जिस तरह बीज से उत्पन्न हुए पौधे को डण्डी और पत्तों की जरूरत होती है। और जब उसे यह सब मिल जाय तो तुम उसे महीने दो महीने के लिए बाड़े में बन्द कर दो, और इसपर ऐसा मांस चढ़ेगा कि इसके मुक़ाबिले में तुम्हारे विदेशी सूअर ठहर नहीं सकेंगे। चलो मेरे साथ, मैं तुम्हें दिखाऊंगा।"

पान्तेलेई त्रोफ़ीम को एक छोटे-से सूअर-बाड़े में ले गया, जहां छोटी उम्र के सूअरों को प्रबन्ध की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट नियमों के अनुसार रखा जा रहा था।

"ये आजमाइशी सूअर हैं, मतलब कि वैज्ञानिक सूअर हैं। मैं एक ही सन्तति के नन्हे सूअरों को बन्दिश और आज़ादी दोनों में पाल रहा हूं। बाड़े के अन्दर बन्द नन्हे सूअरों को मैं राशन किये बग़ैर, खुले-बन्दों, खाने को देता हूं। और जो खुले घूमते हैं उन्हें मैं खाने के लिए मुख्यत: घास और थोड़ी सस्ती-सी सूअरों की ख़ुराक़ देता हूं। अब दोनों की तुलना करके देख लो। ये मोटे हैं, लेकिन, पादरी की बेटियों की तरह छोटे और पिलपिले हैं। उनका क़द-बुत्त छोटा रह गया है।" पान्तेलेई ने कहा, फिर खेत में एक दूसरे के पीछे भागते हुए कुछेक हृष्ट-पुष्ट युवा सूअरों की ओर इशारा करके बोला—"मगर ये पतले सूअर, पतला होने के बावजूद, बाड़े में बन्द अपने इन भाइयों और बहिनों की तुलना में, अभी भी वजन में ज़्यादा हैं।"

पान्तेलेई के साथ सहमत हुए बिना नहीं रहा जा सकता था। उसकी बात में बड़ा वजन था। त्रोफ़ीम को यह बात सबसे ज़्यादा रुची थी कि खेत में चरनेवाले सूअर बहुत कम देख-भाल मांगते थे। और अगर खेत के

एक सिरे से दूसरे सिरे तक वाहक-पट्टा लगा दें जिसके एक सिरे पर चारे के डोल और दूसरे पर धोने का सामान हो तो एक अकेला आदमी एक हज़ार बच्चा-सूअरों की देख-भाल कर सकता था। लेकिन चरागाह ज़मीन के कितने बड़े टुकड़े को घेरे हुए थी! क्या ज़मीन को इस तरह इस्तेमाल करना लाभप्रद था जब इसपर शायद हज़ारों सूअरों के लिए पर्याप्त चारा पैदा किया जा सकता था?

लगता था जैसे पान्तेलेई त्रोफ़ीम का आशय भांप गया है; उसने त्रोफ़ीम के अनबोले सवाल का, मानो, जवाब देते हुए कहा—

"हिसाब लगाने की चिन्ता नहीं कीजिये मिस्टर फ़ार्मर। इसका पूरा पूरा हिसाब और तख़मीना लगाया जा चुका है। पतझड़ अपने आंकड़े पेश करेगा और नया साल जोड़ लगायेगा। जिन खोजा तिन पाइया।"

"बातचीत के लिए धन्यवाद," अपनी हल्की-फुलकी अमरीकी पानामा-टोपी उठाकर त्रोफ़ीम ने कहा और वहां से रुख़सत हुआ।

३०

बर्च-वृक्षों के जंगल के किनारे किनारे—जो सूअरों की चरागाह को घेरे हुए था—त्रोफ़ीम चहलक़दमी कर रहा था और पान्तेलेई दोरोख़ोव के बारे में सोच रहा था, जिसका बाप त्रोफ़ीम के दादा द्यागिलेव के यहां मज़दूरी किया करता था। इससे उसे गाल्या की याद आयी, बाईस बरस की युवती जो पहले विभाग पर पौध-घरों का संचालन करती थी। एक तरह से दोनों एक दूसरे से मिलते थे। गाल्या ने त्रोफ़ीम को 'टार्च' पौध-घरों की लम्बी पांतें दिखायी थीं जो वास्तव में बनावटी ढंग से पौधे उगाने की शीशे-बन्द क्यारियां थी जिन्हें इनसान के क़द जितना लम्बा कर दिया गया था और जो गली-सड़ी खाद की गर्मी से गर्म रखी जाती थीं। इन कृत्रिम क्यारियों में वह पनीरी बोयी जाती थी जिसे शीतकालीन गर्म पौध-घरों में उगाया जाता था। यह बहुत बड़ा आविष्कार तो नहीं था लेकिन इससे लाखों रूबलों का लाभ होता था।

पान्तेलेई की भांति गाल्या ने भी बड़े उत्साह के साथ ब्योरे से बताया था कि वह स्कीम बड़ी लाभप्रद थी, यहां तक कि उसने तथ्य और आंकड़े भी दिये थे। हिसाब लगाने पर पता चला था कि इन 'टार्च' पौध-घरों के निर्माण का खर्च पहले साल की फ़सल के आधे भाग से पूरा हो जाता था। और इसपर यक़ीन न करने का त्रोफ़ीम के पास कोई कारण न था, क्योंकि उसने अपनी आंखों से बढ़इयों को दस नये 'टार्च' पौध-घरों की नींवें खड़ी करते देख लिया था जो लगभग एक मील की दूरी तक फैले हुए थे।

गाल्या और पान्तेलेई के कपड़ों से राय क़ायम की जाय तो न गाल्या और न ही पान्तेलेई अभी तक इतने पैसे कमा पाते थे, जितने प्योत्र की आशानुसार वे दो साल के अन्दर अन्दर कमाने लगेंगे। अपने काम की उपलब्धियों के लिए उन्हें कोई विशेष बोनस भी नहीं मिलता था। तो फिर ये लोग इतनी तन्मयता के साथ क्यों अपने अपने काम में जुटे हुए थे, मानो सूअरों की चरागाह और वे 'टार्च' पौध-घर उनकी निजी मिल्कीयत हों?

क्या इसका कारण सामाजिक चेतना था?

क्या यह संभव था, जैसा कि तुदोयेव ने कहा था, कि काम आनन्द का स्रोत बनता जा रहा है? अगर यह सच था तो संसार में सचमुच एक नयी चीज़, एक नये प्रकार की भावना जन्म ले रही थी, जिससे त्रोफ़ीम सदा अनभिज्ञ रहा था और जो सभी भावनाओं से अधिक बलवती – सम्पत्ति की भावना – का स्थान लेने लगी थी।

एक निजी फ़ार्म के काम-काज में, केवल फ़ार्म के मालिक की ही रुचि होती है, उन लोगों की नहीं जिन्हें फ़ार्मर नियमित रूप से या मौसमी तौर पर काम पर लगाता है। ये लोग तो जहां तक हो सके, काम के प्रति लापरवाही ही बरतने की कोशिश करते थे। उन्हें इस बात की कोई चिन्ता नहीं कि त्रोफ़ीम कितने सूअरों को पाल-पोसकर मोटा करता है, या कौनसा वह ढंग है जिससे कम खर्च पर सूअरों को मोटा किया जा सकता है। इन बातों के बारे में उसे स्वयं सोचना पड़ता है। लेकिन यहां सभी इनके बारे में सोच रहे हैं। फ़ार्म पर काम करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति,

यहां तक कि सूअर-पालक भी यह जानना अपना काम समझता है कि सूअरों पर कितना ख़र्च किया जायेगा और उनमें से कितनी कमाई होगी।

बेशक, नौकरीपेशा लोग भी अपने दिमाग़ का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उनका सोचना-विचारना एक कर्त्तव्य है, आनन्ददायक काम नहीं। मजबूरी की नौकरी। कुछ लोग हाथों से जब कि अन्य लोग अपने दिमाग़ से काम लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति जैसे बन पड़ता था, अपने जीवन की व्यवस्था कर लेता था।

मिसाल के लिए गाल्या को ही लीजिये। फ़ार्म-कार्यालय के बिना ही वह जानती है कि योजनानुसार उसे प्रत्येक वर्ग मीटर भूमि के पीछे सोलह किलोग्राम खीरे हासिल करना है। लेकिन वह अठारह किलोग्राम हासिल करने का प्रयास कर रही है। पर त्रोफ़ीम के फ़ार्म पर काम करनेवाले मजदूर को केवल अपने हितों से ही मतलब था, और सोमवार के दिन से ही वह शनिवार की बाट जोहने लगता था क्योंकि उस दिन उसे पगार मिलती थी।

इसी उधेड़बुन में, त्रोफ़ीम चलता हुआ बड़ी चीशा तक जा पहुंचा, जहां बरसों पहले, वह अपने दादा की बन्दूक़ कन्धे पर रखे शिकार की तलाश में घूमा करता था। इस जगह के भी श्रमजीवी गाल्या और पान्तेलेई जैसे ही थे, यहां भी दुदोरोव और स्मेतानिन जैसे लोगों की संख्या बढ़ रही थी।

दलदल को सुखाया जा रहा है, ऐसी ही कोई बात त्रोफ़ीम ने सुन रखी थी लेकिन उसे इस बात का यक़ीन नहीं हुआ था कि उसे कृषि-योग्य भूमि में बदल दिया जायेगा। अब वह अपने सामने भूरी-काली जमीन की पट्टियां देख रहा था जिनपर हलवाही की जा चुकी थी। उसे देखकर वह मन ही मन हिसाब लगाने लगा कि उपजाऊ बनाये गये भूमि के इस विशाल टुकड़े से कितने पशुओं को चारा मिल सकता था और पाला जा सकता था।

विश्वास करना कठिन था। क्या उसकी पैनी आंखें उसे धोखा तो नहीं दे रही थीं? नहीं। त्रोफ़ीम को कोई मुग़ालता नहीं हो रहा था।

यहां पर बेहिसाब दौलत भरी पड़ी थी, जिससे अगले साल भरपूर मुनाफ़ा प्राप्त होगा।

त्रोफ़ीम अपने हिसाब में यहां तक खो गया कि उसने इस बात की ओर ध्यान ही नहीं दिया कि न जोती हुई जमीन पर जो ट्रेक्टर दहाड़ता हुआ हलवाही कर रहा था, वह ड्राइवर के बग़ैर था। वह आंखें फाड़ फाड़कर, सूरज की तेज़ रोशनी से बचने के लिए आंखों पर दोनों हाथों से आड़ करके देखने लगा। नहीं, ट्रेक्टर पर सचमुच कोई ड्राइवर नहीं था।

क्या वह स्वप्न देख रहा था? यहां पहुंचने के बाद उसे जितने झटके मिलते रहे थे, क्या उनसे उसके दिमाग़ में तो कोई दोष नहीं पैदा हो गया था? उसने आंखें बंद कर लीं और निश्चल खड़ा हो गया। रूमाल निकालकर उसने अपने को हवा की, भगवान का नाम लिया, और फिर ट्रेक्टर की ओर देखा। ट्रेक्टर घूम गया था और अब खेत में उल्टी दिशा में जा रहा था। उस पर सचमुच कोई ड्राइवर नहीं था। इस सुनसान जगह पर त्रोफ़ीम सहसा बेचैन हो उठा, पुराने दिनों में इसी जगह के बारे में डरावनी कहानियां सुनने में आया करती थीं। फिर सहसा उसने किसी की पुकार सुनी –

"कुछ बिगड़ गया है... सीधा नहीं चलता... इसे यहां भेज दो।"

आवाज़ एक युवक की थी जो झाड़ियों के साये में खड़ा था। लम्बी टांगों वाला युवक खुले गले की कमीज़ पहने था और उसकी पतलून पर जगह जगह तेल के धब्बे थे। वह चिल्लाया और सीधा ट्रेक्टर की ओर लपका, जो बेक़ाबू हो गया था। जुते हुए खेत के दूसरे छोर से एक और युवक भागता चिल्लाता हुआ आया – "मैं इसे संभाल लूंगा, मुझ पर छोड़ दो!"

जल्दी ही भगौड़े ट्रेक्टर को पकड़कर खड़ा कर लिया गया। त्रोफ़ीम को झाड़ियों में रखा एक उपस्कर नज़र आया। वह रेडियो-सेट सा लगता था। जब युवक लौटकर आये तो त्रोफ़ीम ने उनसे पूछा –

"माफ़ कीजिये, मगर इस सब का क्या मतलब है?"

ज़ाहिर था कि वे जवाब देने के मूड में नहीं थे। कहीं कुछ बिगड़ गया था। लम्बी टांगों और खुले गले की कमीज़वाला युवक तुनककर बोला –

"क्या आप देख नहीं सकते कि हम दूर के रेडियो-नियन्त्रण द्वारा ट्रैक्टर का रुख़ ठीक रखने की कोशिश कर रहे हैं?"

त्रोफ़ीम ने निश्चय किया कि वह और सवाल नहीं पूछेगा। वह फिर से गाल्या और पान्तेलेई के बारे में सोचने लगा और इन दो युवकों की तुलना भाड़े पर लगाये गये अपने हलवाहों से करने लगा। ये लोग भी दूसरी प्रकार के थे, बिल्कुल अलग क़िस्म के थे।

त्रोफ़ीम ने इस बात का इन्तज़ार नहीं किया कि युवक अपने उपस्कर को ठीक तरह से चालू कर लें। वह चलता हुआ सीधा दूर शुत्योमी की ओर जाने लगा।

३१

बर्सों पहले त्रोफ़ीम इस मार्ग पर, छिप-लुककर दार्या से मिलने जाया करता था। उन दिनों यह इलाक़ा वीरान हुआ करता था। लेकिन अब यहां मोटर-साइकलें दौड़ती-फिरती थीं...

उसे अपने पीछे घरघराने की आवाज़ आयी और वह एक ओर हट गया। फ़ार्म का चीफ़ मेकेनिक, अन्द्रेई लोगिनोव जल्दी में था, किसी काम पर जा रहा था। त्रोफ़ीम का अभिवादन करने के लिए रुक गया।

"जनाब दूर जा रहे हैं?"

"बहुत दूर नहीं," अन्द्रेई ने झेंपकर कहा। "काम पर जा रहा हूं।"

त्रोफ़ीम को वह वार्तालाप याद हो आया जो उसके भाई और अन्द्रेई के बीच कात्या के बारे में और उस एल्बम के बारे में हुआ था जो अन्द्रेई कात्या के लिये ख़रीद लाया था।

"क्या यह मुमकिन है कि यह कात्या से ही मिलने जा रहा है?"—त्रोफ़ीम ने घड़ी की ओर देखते हुए मन ही मन सोचा।

यह देखकर कि शनिवार का दिन था और साढ़े चार का वक़्त, जब सप्ताहान्त की छुट्टी के लिए सभी लोगों ने काम छोड़ दिया था, सिवाय उन दो सनकी युवकों के, जो रेडियो के ज़रिये ट्रैक्टर का दिशा-निर्देशन कर रहे थे, तो ज़ाहिर था कि अन्द्रेई किसी काम पर नहीं जा रहा था।

थे। जब दार्या के बच्चा होनेवाला था – गर्भ को नौवां महीना चल रहा था, स्वर्गीय अर्तेमी इवोलगिन न उसकी मिन्नतें कीं कि उससे शादी कर ले। पर उस वक़्त तक दार्या न अर्तेमी के साथ शादी नहीं की जब तक उसकी बेटी नदेज्दा – मतलब कि त्रोफ़ीम बख़्रूशिन की बेटी – तीन साल की नहीं हो गयी। वह उस गुण्डे का इन्तजार करती रही थी। उसे यक़ीन नहीं हुआ कि वह ओम्स्क के निकट मारा गया था। और अब वह कबाड़िये का बेटा, जीता-जागता टपक पड़ा... पर कुछ परवाह नहीं, जैसे आया था वैसे ही लौट जायेगा।"

औरत ने त्रोफ़ीम को सारी कहानी कह सुनायी, और साथ में ऐसी बातें भी जिन्हें त्रोफ़ीम न पहले कभी नहीं सुना था।

"सुनते हैं, अगले चुनावों के लिए दार्या को उम्मीदवार नामज़द किया जा रहा है। वह उस सूअर के वच्चे के साथ मेल-जोल रखकर बख़्रूशी में अपने नाम को तो बट्टा नहीं लगवा सकती," औरत ने कहा और ज़मीन पर थूक दिया।

दोराहा आ गया।

"अरे मैं सारा वक़्त बतियाती रही और आपको यहां तक ले आयी। यह सड़क मित्यागिन चरागाह को जाती है। कहते हैं वहां एक छोटा-सा गांव हुआ करता था। अच्छा, तो मैं चली। आशा है आपकी छुट्टियां आनन्द से बीतेंगी।"

त्रोफ़ीम ने औरत से विदा ली और वार्तालाप के लिए उसका धन्यवाद किया। दोराहे के निकट वह पेड़ के एक ठूंठ पर बैठ गया और अपना पाइप निकाल लिया – वह यह दिखाना चाहता था कि जिस रास्ते से वह आया था उसी रास्ते से लौटने से पहले वह थोड़ा आराम करना और पाइप पर कुछेक कश लगाना चाहता है।

३२

घण्टे-भर से ज्यादा देर तक त्रोफ़ीम उस ठूंठ पर बैठा रहा। मित्यागिन चरागाह की ओर जानेवाली सड़क पर मोटर-साइकल के टायरों के निशान उसे अपनी ओर बुलाते जान पड़ते थे। लेकिन वह

उस सड़क पर क़दम रखने का साहस नहीं बटोर पाया। उस औरत के मुंह से यह सब सुन चुकने के बाद, वह दार्या से मिलने से डरता था। निःसन्देह उसके शब्दों में दार्या के अपने रवैये की झलक मिलती थी। और क्या मालूम, वह दार्या के अपने शब्द ही दोहराती रही हो।

लेकिन उसे एक नजर देख पाने की इच्छा को वह संवरण नहीं कर सका। अगर वह दार्या के सामने दो-ज़ानू होकर और ज़मीन पर सिर रखकर कहे, "मेरे घिनौने पापों के लिए तुम्हारे मुंह से क्षमा के दो शब्द सुनने की मैं मुद्दत से बाट जोहता रहा हूं," तो शायद उसके दिल में दया जागे और वह उसे ठुकरा नहीं दे।

नहीं, उसे दूसरे शब्द खोजने होंगे। दार्या को सच सच बताना होगा, घुमा-फिराकर कहने के बजाय उसे सच सच बताना होगा कि वह किस तरह सुयोगवश ही उसके रास्ते आ निकला था। भगवान की दुहाई देने से उसके दिल का कुफ़ल नहीं खुलेगा। लेकिन आख़िर वह अपना कोई उल्लू सीधा करने के लिए तो दार्या से नहीं मिलना चाहता था। वह तो उसे इतना-भर कहना चाहता था कि जीवन में उसने केवल दार्या से ही प्यार किया है, और अगर किसी समय वह सोचता भी था कि वह एल्सा से प्रेम करता है तो केवल इस कारण कि भोग-विलास की लालसा उसके लिए अदम्य हो रही थी। वह दार्या से कहना चाहता था कि यहीं पर, इन्हीं जंगलों में, उसके प्रेम और सुख का आरम्भ भी हुआ था और अन्त भी, और यहीं पर उसकी सन्तान भी रहेगी—वे सभी लोग जो उसे अपने पिता और नाना के नाते मान्यता नहीं देना चाहते थे, उसे मान्यता देने की उपेक्षा करते थे।

शाम के साये घिरने लगे थे। जंगल पर मौन छा रहा था। हवा बन्द थी, किसी पक्षी के चहचहाने तक की आवाज़ नहीं थी। आकाश में सूर्य अभी काफ़ी ऊंचा था, उसकी किरणें चीड़ के वृक्षों की चोटी पर लगे शंकुओं को अलंकृत कर रही थीं।

प्रत्येक जीव संसार में अपनी सन्तति छोड़ जाता है। चीड़, फ़र्न, यहां तक कि चीड़ के छोटे-से पेड़ के नीचे उगता हुआ कुकुर-मुत्ता भी।

उस समय उसने उस युवा विधवा, मार्फ़ा के प्रेम का उत्साहजनक उत्तर क्यों नहीं दिया और उसके घर के अन्दर क्योंकर दाख़िल नहीं हुआ जहां हर चीज़ पुरुष के लिए लालायित थी? शायद वह इस समय इतना अकेला महसूस नहीं करता।

दूर कहीं से मोटर-साइकल की आवाज़ सुनायी दी। जरूर अन्द्रेई लोगिनोव वापिस आ रहा होगा। मित्यागिन चरागाह से दो तीन वर्स्ट की दूरी पर उससे मिलना त्रोफ़ीम को उचित नहीं जान पड़ा। यह ख़बर जरूर दूसरे दिन दार्या के कानों तक पहुंच जायेगी।

क्या उसे बख़ूशी लौट जाना चाहिए?, लेकिन वह लौटे भी तो बहुत दूर नहीं जा पायेगा। मेकेनिक उसे आ पकड़ेगा और पूछेगा कि वह घर से इतनी दूरी पर क्या कर रहा है।

मोटर-साइकल ज़्यादा नज़दीक आती जा रही थी। सबसे अच्छी बात यह होगी कि वह झाड़ियों में छिप जाय, और फिर, अन्द्रेई के निकल जाने के बाद, पुरानी पगडण्डीवाले छोटे रास्ते से—अगर उसपर झाड़-झंखाड़ नहीं उग आये हैं—वापिस लौट जाय।

लोगों की आंखों से बचने के लिए, वह और दार्या अक्सर घनी झाड़ियों में छिप जाया करते थे, और घण्टों वहीं छिपे रहते थे, यहां तक कि पेड़ों पर बैठे पक्षी भी उन्हें नहीं देख पाते थे।

जुलाई के तपश भरे महीने में जंगल की ज़मीन नरम और सूखी थी। त्रोफ़ीम उसपर लेट गया और उसे लगा जैसे नरम नरम बिस्तर पर लेट गया है। यहां खुम्मियों की गन्ध और भी अधिक तेज़ थी और बीते दिनों की याद और भी अधिक सजीव हो उठी थी।

अब मोटर-साइकल चुप थी। सींगों के बिना एक बकरी चलती हुई सड़क पर से गुजरी। यही वह घुमक्कड़ बकरी होगी जिसे गुलाबी शॉलवाली स्त्री खोज रही थी।

मोटर-साइकल ने अपने आगमन की फिर एक बार सूचना दी। अन्त में वह स्वयं प्रगट हुई। त्रोफ़ीम ज़मीन के साथ चिपक गया और सड़क को देख पाने के लिए सिर को और भी नीचा झुका लिया।

अन्द्रेई ही था। मोटर-साइकल की बग्घी में आसमानी रंग की सूती पोशाक पहने एक लड़की बैठी थी। उसने अन्द्रेई से कहा –

"इससे आगे मैं नहीं जा सकती, नानी ने मुझे मना कर रखा है।"

"मुझे मालूम है," अन्द्रेई ने उत्तर दिया।

लड़की झट से कूदकर बग्घी में से निकल आयी और अन्द्रेई की ओर हाथ बढ़ाते हुए बोली –

"कल थोड़ा जल्दी आना।"

"मैं कैसे आ सकता हूं? इतवार के दिन तुम्हारी मां जो देर तक सोये रहना चाहती हैं।"

"उसे जगा देना।"

"इसमें बहुत फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। पहले फ़ैक्टरी जाऊं और फिर यहां आऊं, इसी में तीन घण्टे निकल जायेंगे। और वह नहीं चाहतीं कि मैं मोटर-साइकल तेज़ चलाऊं। ग्यारह बजे से पहले मैं आ नहीं सकता। एक मिनट ठहरो, कात्या। मत जाओ। बग्घी में थोड़ी देर के लिए बैठ जाओ।"

यदि अन्द्रेई ने कात्या का नाम न भी लिया होता, अगर कात्या ने अपनी धीमी, सुरीली आवाज़ में एक शब्द भी नहीं कहा होता – वह आवाज़ जो सारा वक़्त उसके कानों में बजती रहती थी – अगर त्रोफ़ीम कात्या को ब्रॉडवे में या किसी अन्य अप्रत्याशित स्थान पर देख पाता, तो भी वह उसे रोक लेता और चिल्लाकर कहता – "दार्या, तुम यहां कैसे पहुंच गयीं?"

उसे पहचानने में कोई चीज़ भी बाधक नहीं बनती – न तो उसकी पोशाक जो चालीस साल पहले के चलन से बिल्कुल पृथक् थी, न ही बालों की दो चोटियां – उन दिनों औरतें बालों की एक ही चोटी बनाया करती थीं – न ही वे शब्द जिन्हें दार्या कभी नहीं बोलती।

त्रोफ़ीम का चेहरा ठण्डे पसीने से तर हो गया, और पसीने की बूंदें चूकर उसकी आंखों में गिरने लगीं। जेब में से रूमाल निकालने के लिए उसने हल्के-से करवट बदली। कात्या ने उसकी ओर मुंह फेरा।

"इस तरह यहां खड़े रहने से क्या लाभ, अन्द्रेई? आग्रो, थोड़ी दूर तक मेरे साथ चलो। न जाने क्यों, मेरा यहां बैठने को जी नहीं चाहता।"

कात्या फिर बग्घी में से कूदकर निकल आयी, और अन्द्रेई मोटर-साइकल को धकेलकर झाड़ियों में ले गया। उसका अगला पहिया, क़रीब क़रीब त्रोफ़ीम को छू रहा था। फिर, एक दूसरे का हाथ पकड़े कात्या और अन्द्रेई, सड़क पर धीरे धीरे मित्यागिन चरागाह की दिशा में जाने लगे। त्रोफ़ीम की आंखें उनपर लगी रहीं, फिर धीरे धीरे वे दूर निकल गये और उनकी आवाज़ सुनायी देना बन्द हो गयी। त्रोफ़ीम उठ खड़ा हुआ। उसके चेहरे पर से अब भी पसीने की बूदें टपक रही थीं, और रक्तचाप के कारण उसकी कनपटियों पर जैसे हथौड़े बज रहे थे।

चीड़ के एक वृक्ष के पास उसने जल्दी से पाइप में तम्बाकू भरा और जंगल में से जाने लगा। उसने मन ही मन दृढ़ निश्चय कर लिया कि दूसरे दिन इसी छिपनेवाली जगह पर अवश्य लौटेगा ताकि अपनी बेटी नदेज्दा को एक नज़र देख सके।

२२

शनिवार की शाम को प्योत्र तेरेन्त्येविच नीले रंग की कमीज़ पहने, अपनी पत्नी के साथ बैठा चाय पी रहा था। वह अच्छे मूड में था और येलेना सेर्गेयेव्ना को बताने जा ही रहा था कि रेलवे के लोगों के साथ उसकी कारोबारी बातचीत कितनी कामयाब रही है, जब छोटे फाटक की सिटकनी खुली और टेनर ने आंगन में प्रवेश किया।

"अगर साथी प० त० बख़्रूशिन घर पर नहीं हों तो उन्हें इतना बतला दीजिये, येलेना सेर्गेयेव्ना कि एक ग़रीब अकेला विदेशी बहुत ही ठुकराया हुआ महसूस कर रहा है और चाहता है कि यहां के लोग उसपर कुछ तरस खायें।"

"आओ, आओ, बेचारा, अमरीकी सह-अस्तित्व," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने पुकारकर कहा। "समावार मेज पर है, और विटामिन

सुराही में रखे हैं। शायद अगर ठाठ से तुम्हें खिलाया-पिलाया जाय तो तुम ज़्यादा अच्छा लिखोगे।"

"नहीं, नहीं, प्योत्र तेरेन्त्येविच, अमरीकी प्रेस को ख़रीदा या बेचा नहीं जा सकता। लेकिन – मैं कहता हूं 'लेकिन' – अगर मेज़बान कंजूस नहीं है, तो महान साम्राज्यवादी टेनर ज़्यादा दयालु बन सकता है।" कहते हुए टेनर ने झुककर अभिवादन करते हुए कमरे में प्रवेश किया।

"आइये, सिर-आंखों पर," जॉन की चारख़ानी कमीज़ की ओर देखते हुए जिसपर बन्दरों, ताड़-वृक्षों और दांतेदार पहियों के चित्र बने थे, येलेना सेर्गेयेव्ना ने कहा, "आज तो क़त्ल करने निकले हैं, मिस्टर टेनर। न जाने हमारी लड़कियों की आंखें कहां लगी हैं।"

"मज़ाक नहीं कीजिये ... मुझे अभी से तुदोयेवा से बड़ा लुभावना निमन्त्रण मिला है कि मेरे साथ खुम्मियां बटोरने चलो।"

गोभी के खेत में घटी उस स्मर्णीय घटना के बाद बख़्रूशिन और टेनर के बीच सम्बन्ध फिर से मैत्रीपूर्ण हो गये थे।

"कहिए आपकी कहानी कैसे चल रही है, लेखक-महोदय?" टेनर के बैठ जाने पर बख़्रूशिन ने पूछा।

"यह एक ऐसी शुरूआत है जिसका कोई अन्त नहीं।"

"और अन्त है कहां पर?"

"दार्या स्तेपानोव्ना के साथ।"

"हुं! उसका इसके साथ क्या मतलब? मैंने तो समझा था कि आपकी किताब का मुख्य प्रयोजन अपनी और त्रोफ़ीम की आंखों से सामूहिक फ़ार्म का वर्णन करना है।"

"प्रयोजन यही है। लेकिन उसे बहुत प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए ... आप हमारे पाठकों को नहीं जानते ... वे चाहते हैं कि हर चीज़ उनके लिए तैयार करके पेश की जाय। क्या आप दार्या के साथ त्रोफ़ीम की मुलाक़ात का प्रबन्ध नहीं कर सकते?"

"यह मैं कैसे कर सकता हूं? मुझे तो यह भी मालूम नहीं कि दार्या है कहां पर।"

टेनर ने पैनी नज़र से प्योत्र तेरेन्त्येविच की ओर देखा और मुस्करा दिया।

"अगर यही एक अड़चन है तो मैं आपको बता सकता हूं कि वह कहां मिलेगी," वह बोला।

अब की बार प्योत्र तेरेन्त्येविच ने पैनी नज़र से टेनर की ओर देखा और बोला –

"आपको कैसे मालूम हुआ?"

"यह भेद की बात है। भूल से मैं पत्रकार बन गया हूं – वास्तव में मुझे जासूस बनना चाहिए था। अब सुनिये... एक दिन मुझे यों ही ख़्याल आया कि गोशाला में जो लड़की ड्यूटी पर है, उसे टेलीफ़ोन कर देखें। मैंने उससे पूछा कि मुझे एक लेख लिखना है और उसके लिए मैं दार्या स्तेपानोव्ना से कैसे भेंट कर सकता हूं। उसने मुझे बताया कि दार्या स्तेपानोव्ना छुट्टी पर है और मित्यागिन चरागाह में रह रही है। मैंने 'शुक्रिया' कहा और चोंगा रख दिया।"

"और आपने यक़ीन कर लिया, मिस्टर टेनर?"

"नहीं, मैंने जांच करने का निश्चय किया। मैंने मित्यागिन चरागाह में टेलीफ़ोन किया और दार्या स्तेपानोव्ना से बात करना चाहा। हमारी टेलीफ़ोन पर बड़ी अच्छी गुफ़्तगू हुई और हमने एक दूसरे के साथ मिलने का फ़ैसला किया।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने बेचैनी से कुर्सी पर करवट बदली और उसकी आंखें टेनर से हटकर अपनी पत्नी के चेहरे की ओर गयीं, मानो कह रहा हो, "देखा, कैसा धूर्त्त निकला!"

"इसके कुछ ही दिन बाद मैं दार्या से मिला," टेनर कहता गया, "मुझे जिन बातों की ज़रूरत थी, मैंने लिख डालीं, क्योंकि मैंने सोचा कि मुमकिन है त्रोफ़ीम दार्या से नहीं मिल पाये, और उस सूरत में मेरी पुस्तक के सबसे रोचक अध्याय नहीं बन पायेंगे।"

"अगर यह बात है तो त्रोफ़ीम को दार्या के पास ले जाने में आपको कौन रोकता है?"

जवाब में टेनर ने कहा –

"मेरी परदादियों में से एक थी अंग्रेज महिला, और उसके कुलीन रक्त की कुछेक बूंदें चूकर मेरी रगों में भी पहुंच गयी हैं–ऐसा मुझे बताया गया है। तब से एक ओर तो मैं अपने को जन्टलमैन महसूस करता हूं और दूसरी ओर भड़काऊ। मैं आपकी मेहमाननेवाज़ी का नाजायज़ फ़ाइदा उठाकर त्रोफ़ीम को वह बात तो नहीं बता सकता था जिसे आप उससे छिपाये हुए थे।"

"अगर आप सच बोल रहे हैं, मिस्टर टेनर, तो मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं।"

टेनर ने सिर हिलाकर शुक्रिया क़बूल किया और बोला–

"मैं हमेशा सच बोलने की कोशिश करता हूं। शायद इस लिए नहीं कि सच बोलना मुझे अच्छा लगता है, बल्कि इस लिए कि सच बोलना फ़ाइदामन्द रहता है।"

"फ़ाइदामन्द रहता है? वह कैसे?" प्योत्र तेरेन्त्येविच ने पूछा।

"सीधी-सी बात है। एक झूठ बोलो तो उसके बाद दूसरा झूठ बोलना पड़ता है और इस तरह अन्त में इनसान झूठों के जाल में ऐसा फंस जाता है कि मजबूर होकर उसे सच बोलना पड़ता है ... मैं नहीं समझता इससे क्या लाभ होता है, इसलिए मैं सीधा सच बोल देना ही ज्यादा पसन्द करता हूं। यह आसान नहीं है, पर–कोई चारा नहीं रह जाता।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच और येलेना सेर्गेयेव्ना ने हंसकर अपनी सहमति प्रगट की। टेनर ने उन्हें वे फ़ोटो दिखाये जो उसने मित्यागिन चरागाह में लिये थे।

"दार्या अभी भी बड़ी सुन्दर है," दार्या का एक रंगीन चित्र मेज़ पर रखते हुए उसने कहा; चित्र में दार्या, अगाफ़्या के घर, खिड़की के पास अपने नाती के साथ खड़ी थी। "आपका क्या ख़्याल है, क्या लड़के की शक्ल अपने नाना से नहीं मिलती?"

"मिलती है," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने कहा, "सेर्गेई की शक्ल बहुत कुछ त्रोफ़ीम से मिलती है, जब त्रोफ़ीम छोटा हुआ करता था। ठीक इसी कारण त्रोफ़ीम को सेर्गेई से मिलने की इजाज़त नहीं दी जानी

चाहिए।" प्योत्र तेरेन्त्येविच ने ठण्डी सांस ली और टेनर के कन्धे पर हाथ रखकर धीरे से बोला, "तुम भले आदमी हो, टेनर। तुम्हें ख़ुश करने के लिए मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूं। किताबें सदा अपने लेखकों को प्रतिबिम्बित करती हैं। और मैं चाहता हूं कि तुम्हारी पुस्तक भी तुम जैसी हो। पर मुझे खेद है, दार्या कल मित्यागिन चरागाह में नहीं होगी।"

"यह सचमुच बड़े खेद की बात है, प्योत्र तेरेन्त्येविच।"

"मुझे अफ़सोस है, पर मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी किताब की ख़ातिर दार्या को वह सारी यन्त्रणा फिर से भोगनी पड़े, और अपने नाती-पोतों को इस उम्र में दुःखद बातें समझानी पड़ें ... तुम तो ख़ुद समझदार आदमी हो, जॉन, तुम्हें समझना चाहिए कि इस तरह की मुलाक़ातों से कोई ख़ुशी नहीं मिलती।"

टेनर सहमत हुआ, लेकिन अपने स्वभाववश, फिर एक बार बोला —

"बड़े खेद की बात है। किताब के लिए बहुत अच्छा मसाला मिलता ..."

३४

अब चलिये दार्या स्तेपानोव्ना और कात्या के पास।

कात्या के प्रेम का फूल इन पन्नों पर खिलना नहीं बदा है, क्योंकि ये पन्ने १९५९ के पतझड़ के अन्त तक पहुंचकर अपनी कहानी समाप्त कर देंगे, पर हम पहले से जानते हैं कि अन्द्रेई के साथ कात्या ख़ुश रहेगी। सचमुच इतनी ख़ुश कि, तुदोयेवा के शब्दों में, जी चाहता है कि "घटना-चक्र से पहले" इस जोड़े की शादी की झांकी अपनी कल्पना की आंखों से देख लें।

बेशक, शादी लेनीवी टीले पर बख़्रूशिनो के नव-निर्मित गांव में होगी, और बेशक, दार्या स्तेपानोव्ना के घर में ही होगी। उसका घर सुन्दर होगा, बड़ी बड़ी खिड़कियां, शान्ति नामक सड़क पर खुलेंगी, जिसपर

बिजली के खम्भे पहले से लग चुके हैं, और जिसे विभागों में अभी से बांट दिया गया है।

और बेशक, कन्यादान प्योत्र तेरेन्त्येविच करेगा। और कात्या की शादी के दिन के लिए तुदोयेवा जरूर एक नयी कथा गढ़ेगी—किसी श्वेत राजहंस के बारे में आह्लादपूर्ण कथा जो उड़ता हुआ शान्त झील पर अपनी प्रेयसी की खोज में आता है... या संभव है वह दार्या के तीसरे और अन्तिम यौवन की कथा होगी, पहला उसका अपना खिला यौवन था, दूसरा उसकी बेटी का यौवन और अब अन्तिम, उसकी पोती का। प्रसंगवश, यह कथा कुछ मुद्दत से तुदोयेवा के मन में बुनती चली जा रही थी, और उसके कुछेक अंश उसने अपनी सहेलियों को सुनाये भी थे...

संभवतः वे अपनी 'मोस्क्वीच' मोटर-गाड़ी में रजिस्ट्राट के दफ़्तर तक जायेंगे। निष्प्रयोजन ही तो अन्द्रेई ने बचत-बैंक में अपना हिसाब नहीं खोल रखा था।

बेशक, शादी वसन्त में होगी, जब बर्ड-चेरी के वृक्षों पर फूल खिलते हैं। दुल्हिन की सफ़ेद पोशाक के साथ फूलों के गुच्छे कैसी शोभा देंगे! और पोशाक लम्बी और सफ़ेद रंग की होगी, जैसा कि दुल्हिन की पोशाक को होना चाहिए। वह कोई नाचने का फ्रॉक थोड़ा ही है जो छोटा पहना जाता है। दार्या स्तेपानोव्ना ने अभी से उसके लिये कपड़ा ख़रीद रखा है। उसने शायद कपड़ा ख़रीदने में थोड़ी जल्दबाज़ी की है, लेकिन इसी में भला है—कौन जाने दो साल बाद इस तरह का सिल्क का कपड़ा बनाया भी जायेगा या नहीं। अगर बनेगा भी तो संभव है उसे अन्य नगरों में भेज दिया जाय, और उसकी खोज करनी पड़े। हर कोई जानता है कि हमारे व्यापार-संगठन कभी कभी किस तरह माल का वितरण करते हैं।

बेशक, कात्या और अन्द्रेई, नानी दार्या के साथ रहेंगे। नानी को बिल्कुल अकेला तो नहीं छोड़ा जा सकता। इस बात का निश्चय कर लिया गया है, हालांकि किसी ने इस बारे में एक शब्द भी मुंह से नहीं निकाला। क्या शब्दों की सदैव आवश्यकता होती है? कात्या के बेटी होगी, इसकी भी चर्चा किसी ने नहीं की, हालांकि किसी को यह सूझा

तक नहीं कि दार्या के अतिरिक्त उसका कोई और नाम भी रखा जा सकता है।

काश कि कात्या की उम्र के साथ दो साल और जुड़ जाते और उसका विवाह अन्तिम अध्याय में हो जाता! इन अध्यायों को न केवल पढ़ना ही, बल्कि लिखना भी बड़ा रोचक होता। लेकिन जो है, हमें उसी से सन्तोष कर लेना चाहिए। हमें प्यारी कात्या का आभार मानना चाहिए कि वह इन पन्नों पर उतरी, भले ही उसका आगमन प्रसंगवश और विरल रहा हो। उसके बिना वे घटनाएं नहीं घट पातीं जो घटीं। क्योंकि केवल नानी का कात्या पर ही प्रभाव नहीं है, कात्या का नानी पर भी प्रभाव है, भले ही वे एक दूसरी से कुछ नहीं कहती हों।

अपनी पोती के बारे में सोचते हुए, दार्या फिर से अपने अतीत में पहुंच जाती है। वह जानती है कि कात्या और अन्द्रेई एक दूसरे के प्रति अपना आदर-भाव बनाये रखेंगे। वे जल्दबाज़ी नहीं करेंगे, जैसी दार्या ने की थी। आख़िर उसने त्रोफ़ीम के बारे में ग़लत अन्दाज लगाया था। बेशक, वह अपनी सफ़ाई में कह सकती थी कि वह अनुभवहीन थी, कि वह ज़माना ही ऐसा था, और यह भी कि वह राजनीतिक दृष्टि से कुछ नहीं जानती थी, लेकिन इससे उसके दिल का बोझ हल्का नहीं होता था।

कात्या और अन्द्रेई के प्रेम की भांति उसका पहला प्रेम भी उज्ज्वल और पवित्र था, पर अब वह कलुषित हो चुका था, उसके जीवन पर एक काला धब्बा बन चुका था। यह सच है कि इसके लिए दार्या को कोई दोष नहीं देता था, लेकिन यह दोष देने का सवाल नहीं था। दार्या नहीं जानती थी कि कात्या इस बारे में क्या सोचती है—और कात्या से वह संसार में सबसे अधिक प्रेम करती थी। दिल की बात खुलकर कहनेवाले लोग भी एक दूसरे से कुछ न कुछ छिपा जाते हैं। ऐसा वे प्रेम के कारण, अनुकम्पा के कारण, किसी दुखती रग को छेड़ने में संकोच के कारण अथवा साधारण विनम्रता के कारण करते हैं।

कात्या ने अपनी नानी के साथ त्रोफ़ीम की चर्चा नहीं की थी। ऐसा न करके उसने अच्छा भी किया और बुरा भी। कात्या अब सयानी हो गयी थी और दार्या उसके साथ दिल की बात करना चाहती थी।

पर कैसे करे? क्या अपनी पोती की नजरों में अपने को ठीक साबित करने की कोशिश करे? लेकिन उसने कोई अपराध नहीं किया था जिसकी उसे सफ़ाई देनी हो। फिर भी दोष की भावना मौजूद थी। कुछ ऐसी ही भावना जिसका अनुभव स्मेतानिन को पार्टी में प्रवेश करते समय हुआ था—कि उसका बाप गिरजे का वाचक हुआ करता था। लेकिन सभी लोगों की तरह, मां-बाप के चुनाव में स्मेतानिन की राय नहीं पूछी गयी थी। जबकि पति अथवा पत्नी के चुनाव की बात भिन्न थी...

इस उधेड़बुन से आख़िर दार्या परेशान हो उठी और उसने कात्या के साथ परामर्श करने का निश्चय किया। वक़्त काटने के लिए दोनों, मौसम की पहली खुम्सियों को सिरके में रखने के लिए बोतलों में भर रही थीं, और सनोबर की लकड़ी की नई छत के नीचे मक्खियों की नीरस भिनभिनाहट सुने जा रही थीं, जो वहां ज़ोरों से अपना समारोह मना रही थीं।

"मैं तो दुआ मांगती हूं कि वह जल्दी से जल्दी वख़ूशी से दफ़ा हो जाय।" दार्या ने शुरू किया।

अन्द्रेई से जुदा किये जाने पर कात्या खीझ उठी थी, इसलिए पहली बार उसने अपनी नानी को उसके और त्रोफ़ीम के बारे में अपने विचार बता दिये।

"वह जब भी अमेरिका वापिस जाय, नानी, पर अगर तुम उससे कन्नी काटती रहोगी तो वह कभी भी तुम्हें चैन से नहीं बैठने देगा।"

"मैं क्यों उससे मिलूं? इसलिए कि लोग बातें कर सकें?"

'नहीं नीना... ताकि लोगों का मुंह बन्द हो जाय। ताकि हर किसी को पता चल जाय कि हमें किसी से कुछ छिपाना नहीं है—और इसमें तुम दोनों भी शामिल हो। सचमुच, हमारे पास छिपाने को है क्या? अन्द्रेई ठीक कहता है—वह कहता है कि जब तक खुलकर बात न की जाय उस वक़्त तक पता नहीं चलता कि किसी व्यक्ति के साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है।"

"हमारे बीच कोई सम्बन्ध नहीं है, जिसके बारे में दिल खोलकर बात करने की ज़रूरत हो।"

"है, नानी। दुश्मनी है। रंजिशें हैं। नफ़रत है। यहां तक कि तुम्हारा गांव से चले जाना भी।"

"अपनी नानी को सीख दे रही हो?"

"नहीं, मैं तो तुम्हारी बात का जवाब दे रही हूं। मुद्दत से तुम्हारी यह जानने की इच्छा रही है कि मैं इस बारे में क्या सोचती हूं, क्यों, नहीं क्या?"

दार्या ने लड़की को बाहों में भर लिया और उसका सिर अपनी छाती के साथ सटाते हुए बोली—

"हां, रही है। तू बड़ी समझदार बच्ची है। पर कभी कभी ऐसे सम्बन्ध भी होते हैं जिन्हें साफ़ करने की कोई जरूरत नहीं होती। क्योंकि ऐसा करते ही नये प्रकार के सम्बन्ध पैदा हो जाते हैं। कात्या, आख़िर मैं उससे प्रेम करती थी। जरा कल्पना करो, अगर तुम मेरी जगह होती, और अन्द्रेई, त्रोफ़ीम की जगह होता।"

"मैं कल्पना नहीं कर सकती। परन्तु यदि... अब भी, जब हमने एक दूसरे का चुम्बन तक नहीं किया है अगर वह मुझसे कहकर जाय कि मिलने आयेगा और नहीं आये, तो मैं कभी भी चुप नहीं रहूंगी। चुप रहना, नानी, उस बुरे, पुराने जमाने का कुप्रभाव है—साफ़ साफ़ कहूं तो औरतों का पूर्वाग्रह है।"

"बस, हमने नानी और पोती के सम्बन्धों को साफ़ कर लिया है। और हम एक दूसरी को वचन देती हैं कि इसके बाद त्रोफ़ीम की चर्चा नहीं करेंगी।"

यहीं पर वार्तालाप समाप्त हो गया, और फिर एक बार छत के नीचे मक्खियों की नीरस भिनभिनाहट सुनायी देने लगी।

वार्तालाप समाप्त हो गया और लगता था जैसे दार्या के व्यवहार में कुछ भी नहीं बदला हो। लेकिन ऐसा केवल प्रतीत होता था। उसके मुंह से यह टिप्पणी निकलते ही उसकी मन:स्थिति का पता चल गया—

"मक्खियों की भिनभिनाहट बुरा शगुन होती है।"

"हां, नानी, वे फुंकारती समावार की तरह ही बुरा शगुन होती हैं।" कात्या ने कहा, और एक हल्की-सी मुस्कराहट उसके चेहरे पर खिल उठी।

"मेरा मतलब शगुनों से नहीं था। ये मक्खियां परेशान करती हैं," दार्या स्तेपानोव्ना ने कहा और कपड़ा लेकर उन्हें बाहर निकालने लगी।

लेकिन मक्खियां कमरे में ही बनी रहीं।

३५

इतवार की सुबह देर से और ज़्यादा शान्तिमय ढंग से शुरू हुई। लोग अभी भी सो रहे थे। लगता था जैसे मुर्गों ने भी देर से बांग देना शुरू किया हो। खेतों में एक भी व्यक्ति नहीं था। केवल एक ही शब्द सुनायी दे रहा था और वह थी बड़ी चौशा पर एक ट्रैक्टर की खट खट। दूर से ट्रैक्टर की गति को नियन्त्रित करनेवाले सनकी युवक इसी काम में फिर लगे हुए थे। उस रात घर जाने के बजाय उन्होंने झाड़ियों के नीचे ही थोड़ी देर के लिए सो लिया होगा।

त्रोफ़ीम, जंगल के किनारे किनारे, गांवों का चक्कर काटकर उस जगह की ओर जा रहा था जहां वह कल छिपा था। शुत्योमी जानेवाली सड़क पर पहुंचने तक वह लुक-छिपकर चलता रहा।

खुम्भियां बटोरने के लिए टोकरी, और टाप-बूट जिन्हें उसने पहले दिन शाम को तुदोयेवा और उसके पति से मांग लिया था, यह दिखाने के लिए थे कि जंगल के उस अलग-थलग हिस्से में वह क्या करने जा रहा है।

घर से वह बहुत-सा वक़्त पहले ही निकल आया था। वह ख़ुशक़िस्मत मेकेनिक शायद अभी तक नदेज्दा को लेने नहीं गया होगा। त्रोफ़ीम को खुम्भियां चुनने का वक़्त मिल गया ताकि ख़ाली टोकरी लिये वह घर नहीं लौटे।

कल से ही कात्या का चेहरा उसकी आंखों के सामने घूम रहा था। अब भी जंगल की सड़क के प्रत्येक मोड़ पर कात्या उसे नज़र आ रही

थी। त्रोफ़ीम ने छाती पर क्रास का चिन्ह नहीं बनाया या उस छाया को दूर हटाने के लिए जो हर मोड़ पर अधिकाधिक स्पष्टता से सामने आ रही थी, धर्म-पुस्तक के पवित्र शब्द नहीं बुदबुदाये, हालांकि घने जंगल में से रोशनी छन छनकर आने लगी थी। इसके विपरीत वह कल्पना के घोड़े दौड़ाने लगा और इसमें, लगता है, उसे कुछ सफलता भी प्राप्त हुई, क्योंकि सहसा, दोराहे से थोड़ी ही दूरी पर, छाया गाने लगी थी—

"उह, नताल्या, नताल्या,
तुम कहां जा रही हो?"

प्रकटत: यह "छाया" भी सुबह जल्दी उठनेवालों में से थी। एक अजनबी को देखते ही कात्या चुप हो गयी।

"बुरा न मानो तो, बच्ची, क्या तुम मुझे बता सकती हो, यहां आस-पास खुम्मियां मिलेंगी या नहीं?" त्रोफ़ीम ने पूछा।

"मैं सोचती हूं वे फूटने लगी हैं," कात्या ने उत्तर दिया। "नानी ने उनसे टोकरी भर ली है।"

"तुम्हें खुम्मियां बटोरना पसन्द नहीं है, क्या?"

कात्या को वह आदमी रुग्ण और अभागा लगा। उसके हाथ और होंठ स्पष्टत: कांप रहे थे। आंखों में भय छाया था। कात्या ने उससे पूछा—

"क्या जंगल में आपको किसी ने डराया है?"

"अभी तक तो नहीं," उसने जवाब दिया।

नज़दीक ही कहीं से दार्या की आवाज़ सुनाई दी—

"तुम किस से बातें कर रही हो, कात्या?"

कात्या के उत्तर का इन्तज़ार किये बिना, त्रोफ़ीम घुटनों के बल बैठ गया और फिर सीधा ज़मीन पर लेटकर बोला—

"मैंने तुम्हारा चेहरा नहीं देखा, दार्या। मैंने तुम्हारी आवाज से ही तुम्हें पहचान लिया... अगर तुम मुझे नहीं देखना चाहती हो, तो जब तक तुम चली नहीं जाओगी, मैं सिर ऊंचा नहीं उठाऊंगा," त्रोफ़ीम ने इस भांति बुदबुदाकर कहा मानो स्तोत्र-पुस्तक पढ़ रहा हो। उसके कन्धे हिल रहे थे।

दार्या जंगल की ओर घूम गयी, लेकिन कात्या ने पुकारकर कहा– "तुम कहां जा रही हो, नानी?"

इन शब्दों से उसे सन्देश मिला–"अब मुलाक़ात हो गयी है तो पीठ फेरने का कोई लाभ नहीं। बेहतर है स्थिति का सामना करो।"

दार्या स्तेपानोव्ना लौट आयी।

"उठो!" दार्या स्तेपानोव्ना ने त्रोफ़ीम से कहा। "इस जंगल में तुम क्योंकर टपक पड़े?"

त्रोफ़ीम उठ खड़ा हुआ और उसने गहरा झुककर दार्या का अभिवादन किया, उसके चेहरे की ओर देखने से वह डरता था।

"जितना भी झुको, अब बीते दिनों को तुम वापिस नहीं ला सकते... कांपना बन्द करो, तुम तो पेड़ की पत्ती की तरह कांप रहे हो... मैं बुढ़ा गयी हूं, जरूर, लेकिन मैं चुड़ैल नहीं हूं... मैं तुम्हारी खाल नहीं उधेड़ूंगी।"

उनकी आंखें मिलीं। त्रोफ़ीम को आशा थी कि दार्या बुढ़िया-सी नज़र आयेगी। उसने अपने बालों को बीच में से काढ़ रखा था, कनपटियों पर के बाल सफ़ेद पड़ गये थे, जिससे उसका पतला-सा चेहरा बूढ़ा लगने के बजाय ज़्यादा सुन्दर लगता था। चेहरे पर एक भी झुर्री नहीं थी। उसकी आंखें नीली और अत्यन्त सुन्दर थीं। समय की गति ने उन्हें धुन्धला नहीं बनाया था।

"काल ने तुम पर रहम नहीं किया, छैले। देखती हूं कि तुम्हारे दिन बीत चुके हैं... देखो तो कैसे पसीना चू रहा है... बैठ जाओ... हम नहीं चाहते कि यहां तुम्हारे साथ कोई ऐसी-वैसी बात हो जाय–अमेरिका के सामने हमें जवाबदेह होना पड़ेगा।"

"वहां किसी को मेरी परवाह नहीं, दार्या स्तेपानोव्ना।"

"ये बातें छोड़ो। झूठ बाद में बोलना। पहले थोड़ा आराम कर लो। आख़िर इस तरह की मुलाक़ातें रोज़ तो नहीं होती हैं न?"

त्रोफ़ीम एक गिरे हुए पेड़ पर बैठ गया। वह सचमुच अस्वस्थ महसूस कर रहा था। उसकी कमीज़ पसीने से तर हो रही थी।

कात्या ने घबराकर अपनी नानी की ओर देखा। दार्या स्तेपानोव्ना

की एक आंख की पलक हिल रही थी। इस मुलाक़ात के तनाव को ढीला करने के लिए कात्या बोली –

"कोई ख़ास बात नहीं हुई है। आप लोगों की मुलाक़ात अमेरिका में भी हो सकती थी। नानी, वे तुम्हें वहां भेजना चाहते थे, और अगर तुम्हें नमोनिया न हो गया होता तो तुम प्योत्र नाना के साथ अमेरिका जातीं।"

"यह सच है, कात्या। इसके अलावा अगर मक्खी न जाना चाहती हो तो उससे पल्ला नहीं छुड़ाया जा सकता। शायद इसी में भला है... क्या वह सामने अन्द्रेई के साथ तुम्हारी मां चली आ रही है?"

कात्या कान लगाकर सुनने लगी, फिर भागती हुई सड़क की ओर चली गयी।

"वही आ रही है, मुझे उसे सावधान कर देना चाहिए।"

त्रोफ़ीम संभल गया लेकिन उसने सिर नहीं उठाया। इस अटपटी-सी चुप्पी को ख़त्म करने के लिए दार्या स्तेपानोव्ना बोली –

"क्या किसी ने हमारा भेद बता दिया था या तुम ख़ुद ही टोह लगाते हुए यहां आ पहुंचे?"

"एक औरत कल यहां अपनी बकरी ढूंढ़ रही थी। वह दूर शुत्योमी की रहनेवाली है। मैं उसे जंगल के नाके पर मिला। उसने मेरे ही बारे में बतियाना शुरू कर दिया। ऐसी ऐसी गालियां उसने मुझे सुनायीं कि तुम्हें क्या बताऊं। मैंने अपनी पोती को आज फिर एक नज़र देख लेने का निश्चय किया।"

"तो तुम उसे पहले देख चुके हो?"

"मैं कल झाड़ियों में लेटा हुआ था जब वे इधर से गुजरे। अच्छा लड़का है, वह लोगिनोव। मुझे उसमें कोई दोष नजर नहीं आता ..."

"अगर तुम्हें नजर आता भी हो तो यहां किसे तुम्हारी राय की ज़रूरत है?"

मोटर-साइकल पास आ गयी। कात्या अन्द्रेइ के पीछे बैठी थी, और उसकी मां नदेज्दा मोटर-साइकल की बग्घी में।

"कहो, मां," नदेज्दा ने दार्या स्तेपानोव्ना का अभिवादन करते हुए कहा, "आखिर इन्होंने तुम्हें ढूंढ़ ही निकाला ..."

त्रोफ़ीम ने घूमकर देखा और उठकर खड़ा हो गया। ठीक है, उसकी बेटी ही थी। उसका चेहरा उसके अपने चेहरे का सुधरा हुआ नारी-संस्करण ही था। नदेज्दा त्रोफ़ीमोव्ना ने पहल की – त्रोफ़ीम की ओर बढ़कर बोली –

"आप कैसे हैं, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच ?"

"शुक्रिया, आप कैसी हैं ?" त्रोफ़ीम ने जवाब दिया, "मैं सचमुच नहीं जानता कि मैं आपको किस नाम से पुकारूं।"

"मुझे नदेज्दा त्रोफ़ीमोव्ना कहकर बुलाइये। यह मेरे लिए बेहतर होगा और आपके लिए अधिक स्पष्ट।"

"ठीक है। मैं तर्क करने की स्थिति में नहीं हूं। आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई, नदेज्दा त्रोफ़ीमोव्ना। मैं नहीं जानता क्या कहूं..."

"बड़ी ख़ुशी हो रही है!" दार्या धीमे से बुदबुदायी। फिर कात्या को सम्बोधन करते हुए बोली, "विदेशी मेहमान को चाय के लिए बुलाओ, इसे हम दोराहे पर तो खड़ा नहीं रख सकते।"

"कृपया, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच, नानी ने मुझे इजाज़त दी है कि मैं आपको चाय के लिए निमन्त्रित करूं।"

"धन्यवाद।" त्रोफ़ीम ने झुककर कहा।

"मैं अन्द्रेई के साथ उसकी मोटर-साइकल पर बैठकर जा रही हूं," दार्या स्तेपानोव्ना ने कहा, "और तुम मिस्टर बख़्रूशिन को साथ लेकर पैदल आ जाओ।"

"अच्छा, मां," नदेज्दा ने कहा, और जब दार्या स्तेपानोव्ना बग्घी में बैठकर अन्द्रेई के साथ चली गयी तो त्रोफ़ीम से बोली – "आइये, हमारे साथ चलिये।"

"शुक्रिया," त्रोफ़ीम ने कहा और अपनी पोती और बेटी के पीछे पीछे तंग पगडण्डी पर घिसटता हुआ बढ़ने लगा।

३६

कड़ाही में खुम्मियां, खट्टी क्रीम में सिसकारियां भर रही थीं। सायबान के नीचे, चूल्हे पर लोहे के पतीले में मेमने का ताज़ा गोश्त उबल रहा था। अगाफ़्या ज़र्द-मछली को आलुओं में पका रही थी। कात्या और

अन्द्रेई बड़ा मेज़ लगा रहे थे, जिसे घर के बाहर निकालकर सनोबर के बड़े पेड़ के नीचे रख दिया गया था। नदेज्दा, अपने दस-साला बेटे बोरीस को साथ लेकर जंगल की झील में नहाने चली गयी थी, और त्रोफ़ीम उसके छोटे बेटे सेर्गेई के साथ ईंटों से धमन-भट्ठी बना रहा था।

अगाफ़्या, जिसके दिमाग़ में त्रोफ़ीम और दार्या की यह मुलाक़ात चक्कर काट रही थी, सहसा लम्बी चुप्पी को तोड़ते हुए बोली –

"भले ही छिलका पत्थर जैसा सख़्त हो लेकिन अन्दर से गिरी नर्म है।"

"किसकी बात कर रही हो?" दार्या ने पूछा।

"तुम्हारे दिल की।"

"नहीं, अगाफ़्या, यह बात नहीं है। पर अब इसकी चर्चा करने का क्या लाभ जब छिलका टूट चुका है और अन्दर से काल की खायी गिरी निकली है।"

"हां, यह तो ठीक है," अगाफ़्या ने कहा, और फिर अपने विचारों में खो गयी। दार्या भी अपने विचारों में डूब गयी।

नन्हा सेर्गेई ख़ूब ख़ुश था, चहक रहा था। त्रोफ़ीम ने धमन-भट्ठी को फूंकें मार मारकर जला दिया था और अब उसमें सनोबर के सूखे शंकु डाल रहा था।

जैसी स्थिति आज है, वैसी ही सदा हो सकती थी, दार्या सोच रही थी। त्रोफ़ीम अपने नाती-पोतों के बीच चैन से अपना बुढ़ापा काट सकता था। ज़िन्दगी की दोपहरी में वह अपने बच्चों की ख़ुशी और आनंद का रस लेता हुआ जी सकता था।

नन्हा, चार-साला सेर्गेई, उन जटिलताओं के बारे में कुछ नहीं जानता था जो "नानी के जंगल में" इस अजनबी के सहसा प्रगट होने से पैदा हो गयी थीं; उसे इस आदमी के साथ गहरा लगाव हो गया था, जो सचमुच की, धुआं छोड़नेवाली धमन-भट्ठियां बना सकता था। यह लड़का जो अपनी मां की तसवीर था नहीं जानता था कि उसकी शक्ल इस पाइपवाले मोटे आदमी से कितनी मिलती-जुलती थी जिसने सीधा उसके साथ धमन-भट्ठियों का खेल खेलना शुरू कर दिया था।

दस-साला बोरीस, जिसकी शक्ल-सूरत अपनी मां से नहीं मिलती थी, और त्रोफ़ीम के विचारानुसार दूसरे वंश का था, त्रोफ़ीम की ओर ग़ुस्से से घूरता रहा। ज़ाहिर था कि उसने क़िस्सा सुन रखा था। परन्तु भोला सेर्गेई, त्रोफ़ीम से चिपटा हुआ था, वह नहीं जानता था कि अपनी टें-टें से, अपनी काली, कुतूहल-भरी आंखों और अपने नन्हे हाथों के स्पर्श से वह बूढ़े के दिल में कैसी विचित्र भावनाएं जगा रहा था।

हां, वह उसी का नाती था। और यह सच था, यथार्थ था। उसकी ख़ातिर इनसान सब कुछ भूल सकता था...

त्रोफ़ीम ने पितृत्व के प्रेम और सुखद चिन्ताओं का अनुभव नहीं किया था, अब उसके दिल के कपाट खुल गये और कीच से लथ-पथ सेर्गेई, बूट पहने सीधा उसमें दाख़िल हो गया। बच्चे ने सदा के लिए उसके दिल में घर कर लिया।

संसार में नन्हा सेर्गेई ही अब त्रोफ़ीम की सबसे बड़ी निधि था। जहां भी हो, त्रोफ़ीम को अब सदा इस बात का भास रहेगा, कि संसार में उसका एक पोता है। अन्य दोनों का कोई महत्त्व नहीं था। उन्होंने तो त्रोफ़ीम को देखने से पहले ही उसके बारे में सबसे घिनौनी बातें जान ली थीं।

"असली" धमन-भट्ठी धुआं उगल रही थी। उसे सारा वक़्त गरम रखने और उसमें ईंधन डालते रहने की ज़रूरत थी, और सेर्गेई बराबर सनोबर के पेड़ों के नीचे से जलावन बटोर रहा था ताकि भट्ठी में डालता रहे। वह चाहता था कि इस काम में त्रोफ़ीम भी उसकी मदद करे, परन्तु यह न जानते हुए कि उसे किस नाम से सम्बोधन करे, सेर्गेई ने पूछा —

"तुम्हारा नाम क्या है?"

सवाल सुनकर त्रोफ़ीम घबरा गया। वह नहीं चाहता था कि और लोगों की तरह सेर्गेई भी उसे त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच कहकर पुकारे। पर यह भी नहीं चलेगा कि बच्चा उसे नाना कहकर बुलाये, क्योंकि इससे मुमकिन था औरतें उसपर बरस पड़ें। इसलिए उसने कहा —

"मुझे ग्रेंड-पा कहकर बुलाओ।"

"ग्रेंड-पा?" सेर्गेई ने पूछा, "क्या यह तुम्हारा नाम है?"

"हां, सभी बच्चे मुझे इसी नाम से पुकारते हैं।"

सेर्गेई ने व्याख्या स्वीकार कर ली। उसे नाम पसन्द था, शब्द का स्वर उसे बड़ा प्यारा लगा था। और जब दार्या ने पूछा – "ग्रेंड-पा का क्या अर्थ है?" तो हल्के-से मुस्कराते हुए त्रोफ़ीम ने जवाब दिया, "इसका मतलब है भट्ठीवाला।"

"सच?" दार्या ने सन्दिग्ध स्वर में पूछा।

"हां, नानी," कात्या ने गहरी सांस लेकर समर्थन किया, उसे स्कूल के अपनी अंग्रेज़ी पाठ याद आ गये थे।

"जैसी तुम्हारी इच्छा।" दार्या स्तेपानोव्ना ने कहा – उसे अभी भी यक़ीन नहीं हुआ था – और कात्या से अपनी मां को बुला लाने के लिए कहा। खाने का वक़्त हो गया था।

शीघ्र ही बड़े परिवार के सभी सदस्य मेज़ के इर्द-गिर्द बैठ गये।

त्रोफ़ीम सोच रहा था – जैसी स्थिति आज है, वैसी सदा हो सकती थी। पर दोष किसका था? क्या बूढ़े द्यागिलेव का, जिसने अपने पोते को अपने घर से अलग कर दिया था और उसके मन में यह विचार बैठा दिया था कि संसार में हर बात पैसे से शुरू होती है? क्या फ़ैक्टरी-मालिक के बेटे का दोष था जिसने उसे इस बात का यक़ीन दिलाया था कि बोल्शेविक देश को तबाह कर देंगे? क्या उसका अपना दोष था कि उसने अपने पिता और छोटे भाई प्योत्र की बात नहीं मानी, जो यह कहते थे कि बोल्शेविक जनता को सुख प्रदान करेंगे? अपनी जिन्दगी के साथ जैसा मन आये, वह करने के लिए आज़ाद था, और कोई ऐसी बात न थी जो उसे दार्या की प्रेमपूर्ण आवाज़ की अवज्ञा करने और कोल्चाक की भरती से कन्नी काटकर उत्तर की ओर भाग जाने से रोकती, जहां उस समय कोई स्थायी सरकार नहीं थी, और जहां पर, वह "श्वेत" फंदे में अपना सिर डाले बिना, स्थिति पर विचार कर सकता था।

पर उसने ऐसा नहीं किया। उसने बोल्शेविकों और उनके कम्युनिज़्म में विश्वास नहीं किया। तो क्या वह इस समय विश्वास करता था, जब "उनकी" स्थिति बड़ी सन्तोषजनक थी?

"तुम खा क्यों नहीं रहे हो, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच? धरती पर उतरो," त्रोफ़ीम की प्लेट में कुदाली जितनी चौड़ी, तली हुई जर्द-मछली डालते हुए,

दार्या स्तेपानोव्ना ने कहा। "बहुत सोचने से अब तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। और मछली ठण्डी पड़ जायेगी..."

दार्या ने उसके मन की बात बूझ ली है, यह जानकर त्रोफ़ीम को आश्चर्य नहीं हुआ। उसने उसे छिपाने की कोई कोशिश नहीं की थी। उसे छिपाने की जरूरत भी नहीं थी। उसकी स्थिति दूसरी दुनिया से आये प्रेत के समान थी। केवल देखने में वह ज़िन्दा जान पड़ता था, वास्तव में वह मर चुका था। दार्या के लिए, नदेज्दा के लिए, इन सभी लोगों के लिए वह मर चुका था ... शायद एक ही व्यक्ति के लिए वह ज़िन्दा था, और वह था सेर्गेई। अन्य सभी लोगों के लिए वह मर चुका था। और किसी को उसकी परवाह नही थी।

इस नतीजे पर पहुंचते हुए त्रोफ़ीम बोला –

"मरे हुए आदमी के लिए संसार में बने रहना बहुत बुरा है।"

"इससे भी बुरा क्या हो सकता है," दार्या स्तेपानोव्ना ने वार्तालाप जारी रखने के लिए कहा, "अगर जीता-जागता आदमी महसूस करे कि वह मर चुका है तो जरूर ही यह बहुत बुरी बात है।"

त्रोफ़ीम ने उसकी ओर देखा और निश्चय किया कि अपने गंभीर दार्शनिक विचार ज़्यादा कमसमझ लोगों को ही सुनाना बेहतर होगा। वह चुप हो गया और कांटे से मछली उठा उठाकर खाने लगा।

३७

एक ओर कहीं बिजली कड़की थी और बादल बरसे थे, जिससे हवा में ठण्डक आ गयी थी। मेज़ पर बैठे लोग चुपचाप खाना खाते रहे और भोजन के बाद एक एक करके सरक गये, और दार्या तथा त्रोफ़ीम अकेले रह गये। दार्या ने कोई आपत्ति नहीं की।

देर-अबेर उन्हें बात करनी ही थी, एक दूसरे से मिल जो लिया था। इसलिए अब इसे स्थगित करने से क्या लाभ?

सनोबर के पेड़ के नीचे वे मेज़ पर बैठे रहे। दार्या मेज़ के एक ओर, त्रोफ़ीम दूसरी ओर।

"अब सुनाओ अपनी कहानी, तुमने कैसे अपने वचन तोड़े, कैसे हमसे नाता तोड़ा, और अपने को ज़िन्दा दफ़नाया।"

"जैसे मुझे भगवान से कुछ नहीं छिपाना है, वैसे ही तुमसे भी, दार्या, मुझे कुछ नहीं छिपाना है। मां के पेट में ही भगवान ने मुझे अभिशाप दिया होगा, क्योंकि मैं स्वार्थ-लोलुपता की पैदाइश था..."

"सृष्टि के आरम्भ से तुम अपनी कहानी शुरू नहीं करो, त्रोफ़ीम; इस तरह तो आदम और हव्वा तक पहुंचते पहुंचते दिन के भोजन का वक़्त हो जायेगा। और अपना साम्प्रदायिक लहजा भी छोड़ो। मैं तुम्हारे मोलोकान मत के माननेवालों में से नहीं हूं। तुम सीधा एल्सा से शुरू करो, दो दो पत्नियां ब्याहनेवाले... बाक़ी क़िस्सा हर घर में लोग जानते हैं।"

"मैं एल्सा से ही शुरू कर रहा हूं। बाक़ी सभी बातों के बारे में मैंने तुम्हें लिख दिया था। सर्वशक्तिमान के अभिशाप की चर्चा किये बिना मैं एल्सा के बारे में तुम्हें कैसे बता सकता हूं? मैं अब भी उसके साथ स्वार्थ और लोलुपता की ज़िन्दगी बिता रहा हूं, पट्टे से बन्धे कुत्ते की भांति। अब सुनो। जैसे बन पड़ेगा मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाऊंगा। और जो कुछ तुम नहीं सुनना चाहो उसे बुहारकर फेंक दो।"

"उस सारे कचरे को बुहारने के लिए तो मुझे बहुत लम्बे-चौड़े झाड़ू की ज़रूरत होगी। मैंने सुना है कि तुम बड़े बातूनी आदमी हो। अच्छा तो तुम अमेरिका के केर्जाक गांव से शुरू करो, जहां तुम एक अच्छी जगह टपक पड़े थे—एक विधवा के यहां जिसका अपना घर था।"

"तो तुम इस बारे में भी जानती हो..."

"तुम क्या चाहते हो मैं कानों में रुई ठूंसे रखूं? तुदोयेवा यहां पर दो एक बार चाय पीने आयी थी और उसी के मुंह से तुम्हारे 'दिल का रोना' सुन चुकी हूं।"

"दिल का रोना, ठीक है। अब भी मेरा दिल ख़ून के आंसू रो रहा है।"

"छोड़ो इन आंसुओं को। तुम्हारा मतलब है तुम लगभग चालीस साल से उस औरत के साथ बिना प्रेम के रह रहे हो? बंसी के साथ कोई चारा जरूर रहा होगा।"

"हां, ठीक है। चारा बड़ा लुभावना था, ऐसा चकाचौंध करनेवाला कि उसने मुझे लगभग अन्धा कर दिया। यह मत भूलो कि उन दिनों मेरी उम्र बीस साल से कुछ ही ज़्यादा रही होगी। सुनो। जब मैं केर्जाक गांव में पहुंचा तो मैंने सोचा कि मेरे दिल की मुराद पूरी हो गयी है। अपने देश को तो मैं यों भी नहीं लौट सकता था। इसके अलावा, मैंने यह भी अनुमान लगाया कि तुम भी ज़्यादा देर तक विधवा नहीं बनी रहोगी... मुझे याद है, बरसों पहले, अर्तेमी इवोलगिन की तुम पर नज़र हुआ करती थी..."

"आर्तेमी को इसमें मत घसीटो," दार्या ने बात काटते हुए कहा। "यह बिल्कुल दूसरा क़िस्सा है, और मैं अभी नहीं कह सकती कि तुम उसे सुनने के अधिकारी भी हो या नहीं।"

"मैंने यों ही ज़िक्र किया है। मेरा मतलब तुम्हें नाराज़ करने से नहीं था।" त्रोफ़ीम ने माफ़ी मांगते हुए कहा। "जिस मार्फ़ा को केर्जाकों ने मेरे लिए चुना था, गढ़ी हुई मूरत थी, लेकिन वह मेरे लिए नहीं बनी थी। उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था। कपड़े पहनने में भी फूहड़ थी। मुंह से बोल तक न फूटता था। लगता जैसे वह अमेरिका में नहीं, किसी खोह में पैदा हुई हो। लेकिन थी आग की लपट।"

"मैं देखती हूं कि तुम राय क़ायम करने में होशियार थे," दार्या ने बीच में जोड़ा।

"शंघाई शहर ने मुझे दो-एक बातें सिखा दी थीं—बड़ी चहल-पहलवाला शहर है। नहीं जानता अब वह शहर कैसा है लेकिन उन दिनों वहां दुनिया-भर के लोगों का जमाव हुआ करता था। मैंने बहुत कुछ वहां देखा। मैं सोचता हूं, मार्फ़ा को मुझसे प्रेम था। उसने स्वयं मेरे सामने यह स्वीकार किया था, और घर का मालिक बनने का मुझे न्योता दिया था... मेरे लिए इन्कार करना मूर्खता मानी जाती—क्योंकि उस समय मैं केवल एक खेत-मज़दूर था। लेकिन उस वक़्त मुझे एक एक क़दम फूंक फूंककर रखना था, एक एक शब्द तौल तौलकर बोलना था। प्रेम का एक शब्द मुंह से निकाला नहीं कि उम्र-भर के लिए फंसे नहीं। केर्जाक लोग समुद्र के तल में से भी मुझे खोज निकालते और जबरदस्ती उसके साथ मेरी शादी कर देते। मैं किसी निश्चय पर पहुंचने की कोशिश कर रहा था। तरह

तरह के बहाने बनाकर उसे टालता रहता — एक बार कहा कि लैण्ट है, फिर बहाना बनाया कि उसके पति को मरे अभी साल-भर पूरा नहीं हो पाया— मार्फ़ा का पति शादी के तीसरे दिन ही चल बसा था। मार्फ़ा न तो कुंवारी रही थी, न पत्नी न विवाहिता। पर वह मेरी एक न सुनती... ज्यों ही हम एक दूसरे से मिलते वह मेरे साथ सट जाती और कहती 'प्यारे, तुम्हें मुझ पर रहम नहीं आता? अगर पत्नी बनाकर नहीं रखना चाहते तो मुझे रखैल ही बना लो। मै अपने लोगों को नहीं बताऊंगी, वे मुझे आग में झौंक दें तो भी नहीं बताऊंगी। मैं तुम्हें शादी करने पर मजबूर नहीं करूंगी'।"

"देखा, मार्फ़ा तुमसे कितना प्यार करती थी," दार्या ने द्रवित होकर कहा, "पर तुमने उस बेचारी पर रहम नहीं किया..."

"मैं ज़रूर रहम करता पर एल्सा वहां पहुंच गयी। वह एक बग्घी में वहां आयी। बग्घी को दो बढ़िया घोड़े खींच रहे थे। उन दिनों फ़ार्मों पर फ़ोर्ड-मोटरों का फ़ैशन अभी शुरू ही हुआ था। वह आयी और मुझे उठा ले गयी..."

"क्या मतलब? तुम्हारी मर्ज़ी के बिना?"

"तुम उसे जानती नहीं हो, दार्या। वह शैतान की आंत हुआ करती थी। वह जर्मन दोगला थी, उसकी नाड़ियों में स्पेनी ख़ून था। नासिकाएं इतनी नाज़ुक जैसे नर्म काग़ज। और गर्दन — द्यागिलेव के नस्ली घोड़े जैसी थी। गर्दन पर ख़ूब लम्बी, स्याह-काली चोटी झूमती। लहराती अयाल। मुंह में दान्त ही दान्त और सभी मोतियों जैसे सफ़ेद। आंखें अलकतरा की मशालों जैसी। होंठ कमान की तरह खिंचे हुए, और मुंह छोटा-सा, चिड़िया के मुंह जितना। टांगें लम्बी और हिरनों जैसी फुरतीली। उसे देखते ही, जैसे धरती मेरे पांवों के नीचे से खिसक गयी। यहां तक कि मैंने आंखें बन्द कर लीं, मानो मैं सूरज की ओर देखता रहा था..."

"और वह?" दार्या ने उसे याद दिलाते हुए कहा जब त्रोफ़ीम अपनी वार्ता कहते कहते रुक गया मानो बीते दिनों की स्मृतियों का रस ले रहा हो।

"तुम किस बात की आशा कर सकती हो जब उसका पति, राबर्ट, पैंसठ साल का हो चुका था, और मेरी जवानी पूरे जोबन पर थी... वह

खेत में सीधी मेरे पास चली आयी और अपनी सुलगती आंखों से मेरी ओर एकटक देखती रही, फिर बोली – "हमें सौदा तय करने की कोई ज़रूरत नहीं है, तुम देखोगे कि मैं तुम्हारी अच्छी चुकौती कर दूंगी।"

"इसी तरह कह दिया?"

"बिल्कुल। और बिना कुछ बोले वह मुझे बग्घी में लिवा ले गयी, मानो मैं कोई घोड़ा था। बाक़ी लोग जिन्हें उसने मौसम के लिए गांव में भाड़े पर ले रखा था, पैदल उसके फ़ार्म पर गये। बस, रात को हम अकेले थे – हम दोनों। वास्तव में वह प्रेम नहीं था, दार्या, वह तो जैसे शराब का नशा था। अब वह आग बुझ चुकी है। दुनियावी चीज़ों के प्रति मैं मर चुका हूं। मैं अपने को एक अजनबी की तरह महसूस करता हूं, मुझे तुम्हारे सामने झूठ बोलने की कोई ज़रूरत नहीं है। वह प्रेम नहीं था। शायद वह प्रेम का रूप ले लेता अगर हम उसे पनपने का मौक़ा देते। दोपहर के वक़्त एल्सा केर्जाक गांव में आयी, और आधी रात के वक़्त वह पेड़ों के कुंज में मेरे सामने नंगी नाच रही थी, लम्बे धारीदार मोज़ों के अलावा सारे शरीर पर कुछ न था। मैं तुम्हें बता दूं कि न तो मैंने इससे पहले कभी ऐसे नाच देखे थे और न देखूंगा। पर यह भी सच है कि अपनी दार्या को छोड़कर मैंने कभी किसी से प्रेम नहीं किया... मैं मेहमान के नाते शिष्टाचार निभाने के लिए ऐसे नहीं कह रहा हूं। दार्या, मैं अपने पहले प्रेम के पहले क्षण से ही तुमसे प्रेम करने लगा था, और मैं आख़िरी दम तक तुमसे प्यार करता रहूंगा। मैं न तो अपनी बात कह रहा हूं, न तुम्हारी, दार्या। मैं उन दो लोगों के बारे में कह रहा हूं जो अब नहीं रहे..."

त्रोफ़ीम फिर चुप हो गया। उसकी कहानी से, जिसमें अतिशयोक्तियों के बावजूद सचाई की झलक मिलती थी, दार्या द्रवित हो उठी, और उसे जारी रखने के लिए आग्रह नहीं किया। इसके अतिरिक्त आवाज़ें सुनायी देने लगी थीं।

अपनी मां के साथ दार्या के नाती-पोते आ रहे थे।

त्रोफ़ीम ने दिन के भोजन तक रुकने से इन्कार कर दिया पर आग्रह किया कि उसे फिर मिलने के लिए आने की इजाज़त दी जाय।

"इतना लम्बा रास्ता तुम कहां पांव घसीटते आओगे," दार्या ने

कहा। "मैंने कल वख्रूशी लौट जाने का निश्चय किया है। हम वहां एक दूसरे से मिलते रहेंगे। सब के सामने।"

अन्द्रेई लोगिनोव ने प्रस्ताव किया कि त्रोफ़ीम उसके साथ मोटर-साइकल पर चलें। कात्या ने अपनी मां और नानी से इजाज़त मांगी कि क्या वह अन्द्रेई के साथ मोटर-साइकल पर थोड़ा घूमने चली जाय, और उसे इजाज़त मिल गयी।

"मैं भी जाऊंगा, मैं भी," सेर्गेई चिल्लाया, "मैं ग्रेंड-पा की गोद में बैठूंगा, और उनकी घड़ी की टिक टिक सुनूंगा। मुझे ले चलो, ग्रेंड-पा..."

"तुम अब नानी के लड़के हो, सेर्गेई, तुम्हें उनसे पूछना होगा।" नदेज्दा त्रोफ़ीमोव्ना ने कहा।

"उसे जाने दो," दार्या ने कहा।

कहने की देर थी कि सेर्गेई मोटर-साइकल की बग्घी में चढ़कर त्रोफ़ीम की गोद में बैठ गया।

अन्द्रेई ने मोटर-साइकल का इंजन चलाया तो दार्या ने बड़े घरेलू लहजे में उससे कहा—

"गड्ढों पर से धीरे से जाना, और ध्यान से चलाना। मैं अपने छोटे नातिन को तुम्हारे भरोसे पर भेज रही हूं।"

"चिन्ता नहीं कीजिये, दार्या स्तेपानोव्ना। मैं ख़्याल रखूंगा।" अन्द्रेई ने कहा।

मोटर-साइकल चलने लगी। सेर्गेई ख़ूब चहकने और तालियां बजाने लगा। त्रोफ़ीम ने अपने बांहों में उसे कसकर बांध लिया...

अगर यह दृश्य प्योत्र तेरेन्त्येविच देखता तो निश्चय ही उसे ख़ुशी नहीं होती, क्योंकि अपने नातिन के सम्बन्ध में वह बड़ा ईर्ष्यालु आदमी था। उन्हें जाते देख दार्या यही सोच रही थी।

३८

"अफ़सोस, सद अफ़सोस! इतना धन और वक़्त बरबाद हुआ और ऐसा अच्छा मौक़ा हाथ से निकल गया... मास्को में अमेरिका दिखाने का नादर मौक़ा!" जंगल के बीच एक मैदान में अलाव जलाले

हुए जॉन टेनर ने अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए कहा। वह मास्को में आयोजित अमरीकी प्रदर्शनी की चर्चा कर रहा था।

स्तेकोल्निकोव अमरीकी यात्री को भूला नहीं था और उस दिन—वह इतवार का दिन था—उसने शुत्योमी जंगल में खुम्मियां बटोरने के लिए उसे आमन्त्रित किया। इसका उसने कब से वचन दे रखा था।

जो खुम्मियां हाथ लगीं वे बहुत नहीं थीं, लेकिन येलेना सेर्गेयेव्ना और स्तेकोल्निकोव की पत्नी ने वचन दे रखा था कि वे अमरीकी मेहमान को खुम्मियों का उराली शोरबा बनाकर खिलायेंगी।

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने, जो घर से तरह तरह की खाने की चीज़ें बटोर लाया था, घास पर दस्तरख़ान बिछाया और उसपर उन्हें सजा दिया। इन्हें लाते हुए उसके दिमाग़ के एक कोने में यह विचार भी रहा था कि सम्भव है टेनर अमरीकी टेलीवीजन के लिये उनकी फ़िल्म लेना चाहे। वहां खाने के लिए इतना कुछ था, जितना तीन बड़े बड़े परिवारों के लिए कम से कम एक हफ़्ते के लिए काफ़ी होता। यह बात टेनर को बड़ी विनोदपूर्ण लगी। बोला—

"देखो फ़्योदोर, प्योत्र तेरेन्त्येविच छोटे पैमाने पर वही ग़लतियां कर रहा है जो अमरीकी प्रदर्शनी ने की हैं। इतनी केवियार उठा लाया है, कि अगर पूरी दो बटालियनें बड़े बड़े चम्मच हाथ में लिये इसपर टूट पड़ें तो भी ख़त्म न होगी। नहीं फ़्योदोर, मैं तो हमेशा यही कहूंगा कि एक दूसरे को समझने का सबसे अच्छा माध्यम सचाई है।"

बख़्रूशिन ने वार रोकने के लिए मज़ाक लिया।

"मैं तो त्रोफ़ीम के लिए दस्तरख़ान विछा रहा हूं। सचाई के लिए नहीं। अगर त्रोफ़ीम पहुंच गया तो यह सामान बहुत नहीं होगा।"

सभी हंस पड़े। सभी जानते थे कि त्रोफ़ीम बड़ा पेटू है।

"मानना पड़ता है कि तुम्हारे अख़बार कुछ हद तक प्रयोजनबद्ध होते हैं। ऐसे हुए बिना वे रह नहीं सकते," टेनर कहता गया। "पर कोई मजायका नहीं। अख़बार कहते ठीक हैं। अमरीकी प्रदर्शनी में अमेरिका नहीं है। अमेरिका है—चुस्त-दुरुस्त मशीन-औज़ार, कन्वेयर, इस्पात... संसार में—इसमें अमेरिका भी शामिल है सबसे महत्वपूर्ण

चीज़ श्रम है—श्रम जो हर जीज़ की सर्जना करता है... पेप्सी-कोला और चूइंग-गम से लेकर, वॉल स्ट्रीट के अरबों डालरों तक। लेकिन प्रदर्शनी में वह कहां देखने को मिलता है? नाच? फ़ैशन-परेड? क्रिसमस-कार्ड घर? प्रदर्शनी अमेरिका का वैसा ही प्रतीक है जैसे टब में पेश की गयी केवियार। हमें सच बोलना चाहिए, फ़्योदोर। सच सबसे उत्तम हथियार है।"

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूं, जॉन।" आग को तेज़ करने के लिए उसमें बर्च-वृक्ष की छाल झोंकते हुए स्तेकोल्निकोव ने कहा।

छाल कड़कड़ायी और भड़ककर जलने लगी।

"अनुभव का आदान-प्रदान महान् चीज़ है, फ़्योदोर, भले ही उससे आदमी अलाव जलाना ही सीख पाय। मिस्टर ख़्रुश्चोव बिल्कुल ठीक कहते हैं! सौ फ़ी सदी ठीक, फ़्योदोर! मैं अमेरिका में ज़रूर उनसे मिलूंगा, और जब मिलूंगा तो यह बात उन्हें रूसी भाषा में कहूंगा। अमेरिका से प्यार किये बिना मैं रह नहीं सकता, फ़्योदोर। वह मेरा देश है... टेनर वंश—यैंकी वंश है। साइबेरियाई ढंग से कहें तो हम टेनर लोग अमेरिका के चाल्दोन—आदिवासी—हैं। अमेरिका उत्पादन-क्षमता की जन्मभूमि है। दुनिया की नज़रों में उत्पादन-क्षमता उसका गर्व है और उसका अपमान भी है। आज अमेरिका में उत्पादन-क्षमता का मतलब है गगनचुम्बी इमारत जो अपनी नींवों को खोखला करते हुए, बादलों के ऊपर उठ रही है। क्या तुमने अलंकार समझा है?"

"ज़रूर।"

"तुम मेरी बात को समझते हो, इसकी मुझे बड़ी ख़ुशी है, फ़्योदोर। नींव तो जनता होती है। अमेरिका की महान्, शानदार, साधनसम्पन्न जनता। वे स्वसंचालित तथा श्रम की बचत करनेवाली मशीनों का आविष्कार करती है। ताकि बोझल काम से छुटकारा पा सके... पर मशीनें उसका समस्त काम से ही छुटकारा करा देती हैं, उसे बेरोज़गार बना देती हैं, उसकी टेक्नीकल प्रतिभा का फल उससे लूट लेती हैं। यही अमेरिका की टेक्नीकल प्रोस्पेरिटी की दुःखान्त कहानी है। बिना बुनियाद के कोई भी घर खड़ा नहीं रह सकता।"

"आज तो तुम एक कम्युनिस्ट की तरह तर्क कर रहे हो, जॉन। तुम्हें डर नहीं लगता, कि तुम्हारे शब्द अगर मैंने किसी को बता दिये तो अमेरिका में अधिकारी तुम्हें धर दबायेंगे?" स्तेकोल्निकोव ने मज़ाक करते हुए कहा।

"उस स्थिति में तुम्हें दस करोड़ अन्य अमरीकियों को भी कम्युनिस्ट कहना पड़ेगा," टेनर ने जवाब दिया। "तुम क्योंकर ऐसा सोचते हो कि अगर कोई आदमी पूंजीवाद की आलोचना करता है तो वह ज़रूर कम्युनिस्ट ही होगा?"

"वह ज़रूर होगा, मैं सोचता हूं। अगर वह आदमी अपने को कम्युनिस्ट नहीं कहना चाहता, या कहने से डरता है, या स्वयं जानता ही नहीं कि वह कम्युनिस्ट है, तो भी। मेरे पिता की भी ऐसी ही स्थिति थी। कम्युनिस्ट विचार कम्युनिस्टों के विशेषाधिकार नहीं हैं। वे उतने ही स्वाभाविक ढंग से जन्म लेते हैं जितने स्वाभाविक ढंग से अपने ज़माने में लिपिबद्ध भाषा ने जन्म लिया था। इनसान या यों कहें कि मानव-जाति सदैव एक बेहतर और अधिक न्यायसंगत जीवन-पद्धति के लिये प्रयासशील रही है... क्या यह ठीक नहीं है, जॉन?"

"हां, लेकिन इससे साबित क्या होता है?"

"इससे साबित यह होता है कि केवल वही जीवन-पद्धति न्यायसंगत है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को जीने का समान और पूर्ण रूप से सुनिश्चित अधिकार प्राप्त है और जीवन के सभी वरदानों और ख़ुशियों का भोग करने का अवसर प्राप्त है। ऐसी जीवन-पद्धति जिसमें मनुष्य की मनोवृत्ति प्रत्येक अन्य व्यक्ति को मित्र और भाई बनाने के लिए उत्प्रेरित करती है। उसी जीवन-पद्धति को कम्युनिस्ट प्रणाली अथवा कम्युनिज़्म का नाम दिया जाता है। और यदि अमेरिका मार्क्स, लेनिन और मास्को से अलग-थलग रहे, यदि अमरीकी लोगों ने कम्युनिज़्म का कभी नाम भी नहीं सुना हो, तो भी, वे कम्युनिज़्म की ओर आयेंगे। जॉन, यह सामाजिक विकास का वस्तुगत नियम है। यह ऐतिहासिक अनिवार्यता है।"

"नहीं, यह प्रोपेगेण्डा है, साथी पार्टी-समिति-सेक्रेटरी। यह कट्टरता है... मैं इसका आदर करता हूं," अपने दिल पर हाथ

रखते हुए टेनर ने कहा। "मैं तुम जैसे लोगों से ईर्ष्या कर सकता हूं... पर क्या कारण है कि सामाजिक विकास का यह वस्तुगत नियम अमेरिका में काम नहीं करता? यह कम्युनिस्ट अनिवार्यता उसे बिना छुए क्यों निकल जाती है?"

"प्रत्येक देश सामाजिक विकास के अपने ही रास्ते पर चलता है और सामाजिक चेतना में वृद्धि भी उसकी अपनी रफ़्तार से होती है।" स्तेकोल्निकोव बोला।

"यह उत्तर बहुत मोटा है," टेनर ने कहा। "इतना मोटा कि वास्तव में वह कोई उत्तर नहीं है। अमेरिका के जनवादी पूंजीवाद का अपना विशिष्ट स्वरूप है, और उसी में उसकी शक्ति निहित है।"

"जनवादी पूंजीवाद?" आग के पास जाता हुआ बख़्रूशिन बीच में बोल उठा। विशिष्ट स्वरूप? अनादि और अनन्त?"

"मैंने यह नहीं कहा, प्योत्र तेरेन्त्येविच। उसकी अपनी मुसीबतें होंगी, लेकिन वे मुसीबतें ऐसी नहीं होंगी जो इसे जान से मार डालें। वे ऐसी होंगी जो उसका रूपान्तरण कर देंगी।"

"किसमें रूपान्तरण कर देंगी? शायद समाजवादी पूंजीवाद में?"

"शायद। अमरीकी पूंजीवाद में अभी से समाजवाद के तत्त्व पाये जाते हैं..."

बख़्रूशिन, टेनर के पास एड़ियों के बल बैठ गया। टेनर के कन्धे पर हाथ रखते हुए उसने मैत्रीपूर्ण लहजे में कहा—

"प्रिय मिस्टर टेनर, क्या तुम संजीदगी के साथ ऐसा ही सोचते हो? तुम तो बड़े अक़्लमन्द आदमी तो हो..."

ऐन उसी वक़्त त्रोफ़ीम और तुदोयेव आ पहुंचे। वार्तालाप बीच में कट गया। त्रोफ़ीम ने सीधे, दार्या स्तेपानोव्ना के साथ अपनी मुलाक़ात का ब्योरा देना शुरू कर दिया।

"वह मुझसे मिली, और मेरी सारी दास्तान सुनी। यहां तक कि अपने नातिन सेर्गेई को भी, मुझ पर भरोसा करके, मेरे साथ भेज दिया। बिल्कुल पुराने दिनों जैसा था..."

इस से प्योत्र तेरेन्त्येविच आवेश में आ गया, और उसने निश्चय कर लिया कि वह अब और शिष्टाचार नहीं बरतेगा और उसी दिन टेनर और त्रोफ़ीम को खरी खरी सुनायेगा।

३९

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने खाने पीने के सामान के बारे में ग़लत अन्दाज़ नहीं लगाया था। त्रोफ़ीम केवियार पर यों टूटा जैसे रीछ शहद पर टूटता है। वख़्रूशिन और स्तेकोल्निकोव इसी कोशिश में रहे कि उस ओर देखें ही नहीं कि त्रोफ़ीम का रोएंदार पंजा किस तरह केवियार के कटोरे और उसके मुंह के बीच बराबर चल रहा था, यहां तक कि एक हठी बर्रे को उसके चम्मच पर बैठने तक का मौक़ा नहीं मिल रहा था। जॉन को बड़ी घिन हुई। आख़िर तो त्रोफ़ीम उसी के देश का रहनेवाला था। इसके बिना भी वोद्का शराब और केवियार के लिए अमरीकियों का शौक़ स्थायी उपहास का विषय बना हुआ था। टेनर ने त्रोफ़ीम को अंग्रेज़ी भाषा में कुछ कहा। स्तेकोल्निकोव ने सारी बात तो नहीं समझी लेकिन उसका आशय समझ लिया। जॉन त्रोफ़ीम से कह रहा था कि पेट में खुम्मियों के शोरबे के लिए जगह ख़ाली रहने देना।

इसका जवाब त्रोफ़ीम ने रूसी भाषा में दिया—

"प्रत्येक का अपना अपना माप होता है।"

जब केवियार ख़त्म हो गयी और तृप्त त्रोफ़ीम ने शोरबा खाने से इन्कार कर दिया और अपना पाइप सुलगाने लगा तो टेनर ने उपस्थित मण्डली को सम्बोधन करते हुए कहा—

"देवियो और भद्र पुरुषो, तथा केवियार के वीर विजेता, ऐसे शानदार भोजन के बाद, मुझे लगता है, मीठी चीज़ का स्थान प्योत्र तेरेन्त्येविच के दो-टूक भाषण को लेना चाहिए जिसका उन्होंने वचन दे रखा है।"

मण्डली के अन्य सदस्यों ने टेनर के सुझाव का समर्थन किया, और प्योत्र तेरेन्त्येविच ने अपना कथन शुरू किया—

"अच्छी बात है," उसने कहा, "मैं भी उन्हीं लोगों में से हूं जो यह विश्वास करते हैं कि सचाई सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाती है, बिगाड़ती नहीं। और यदि लोग एक दूसरे के साथ अच्छे सम्बन्ध नहीं रखना चाहते तो दो-टूक कहा गया एक शब्द भी उन्हें एक दूसरे से सम्बन्ध-विच्छेद करने और अपने अपने रास्ते चले जाने में मदद कर सकता है।"

पेश्तर इसके कि प्योत्र तेरेन्त्येविच अपना भाषण जारी रखे, हम यह कहना चाहते हैं कि न केवल हमारे ज़माने में ही, बल्कि हर काल और समय में, साफ़ और दो-टूक वक्तृता उन साहित्यिक रचनाओं की आवश्यक सहगामिनी रही है जिनमें चरित्रों के माध्यम से समुदाय का जीवन दिखाने की कोशिश की जाती है।

हम पाठक को पहले से सावधान किये देते हैं कि चालीसवां अध्याय जो अभी शुरू होने जा रहा है, एक स्वगत भाषण है, किसी राजनीतिक अख़बार में छपनेवाले उस लेख से मिलता जुलता है जिसे ऊंची आवाज़ में पढ़कर सुनाया गया हो। पर चूंकि वह घटना-क्रम को और त्रोफ़ीम बख़्रूशिन के व्यवहार में हुए कुछेक भटकावों को निर्धारित करता है, इसलिए ग़लतफ़हमी से बचने के लिए हमें धैर्य से प्योत्र तेरेन्त्येविच के भाषण को अन्त तक सुनना चाहिए।

तक़रीर शुरू करने से पहले बख़्रूशिन का भीतरी रिले-उपकरण जिसका पहले ज़िक्र किया जा चुका है, ऊंचे स्वर पर आ गया, मानो वह किसी पिकनिक पार्टी पर यों ही बतिया नही रहा हो, बल्कि प्रोसिक्यूटर की भांति लोगों के सामने भाषण दे रहा हो।

सुनें वह क्या कहता है।

४०

"मैं अपनी बात इस तरह से शुरू करूंगा, मिस्टर टेनर। यह समझना भूल होगी कि हम रूसी लोग, या मुझ जैसे अशिष्ट रूसी किसान, अमेरिका के बारे में नहीं सोचते या वहां की जीवन-प्रणाली के बारे में

कुछ नहीं जानते। मेरी नजरों में तो, यों कहूं कि अमेरिका अतीत की पुनरावृत्ति है केवल उसपर ज़्यादा जटिल आवरण चढ़ा है। अमरीकी पूंजीवाद की तुलना में रूसी पूंजीवाद की चिमनी ज़्यादा छोटी थी और धुवां भी कम घना था, पर उसका विषैलापन और चिमनी की कभी न मिटनेवाली भूख वैसी ही थी।"

यहां प्योत्र तेरेन्त्येविच ने त्रोफ़ीम की ओर देखा जो ऊंघते हुए सिर हिलाने लगा था।

"यह भाषण तुम्हारे लिये भी दिया जा रहा है त्रोफ़ीम, शायद मुख्यतः तुम्हारे लिये।"

फिर उसने उपस्थित मण्डली को सम्बोधन किया।

"मैं अमेरिका नहीं गया हूं। दार्या स्तेपानोव्ना की भांति मैं भी उस महान् देश की यात्रा नहीं कर पाया, लेकिन उसके बारे में मेरी जानकारी का स्रोत केवल अख़बारें और सिनेमा ही नहीं हैं। त्रोफ़ीम की तुलना में, जो अमेरिका में चालीस साल से रह रहा है, हमारे लोग जो थोड़ी मुद्दत तक ही वहां रहे हैं, बहुत ज़्यादा बातें बताते हैं। त्रोफ़ीम तो उस बेटिकट यात्री की भांति है, जो उस बड़े जहाज़ के बारे में – जिसके पेंदे में वह सफ़र करता रहा – इससे अधिक कुछ नहीं बता पाया कि जहाज़ के पेंदे में कोयला रखा था जो रंग से काला और वज़न से बोझल था।"

औरतों के हंसने की आवाज आयी, टेनर ठहाका मारकर हंसा और तुदोयेव खरखराती आवाज़ में किकिया दिया। अब त्रोफ़ीम बिल्कुल जग गया था।

"तो तुमने मुझे नंगा करने का फ़ैसला कर लिया है?" उसने प्योत्र तेरेन्त्येविच से कहा।

"नंगे आदमी को कोई कैसे नंगा कर सकता है? मैं तो केवल इतना भर चाहता हूं कि तुम्हें तुम्हारा नंगापन और मानवीय अधिकारहीनता नजर आ जायं। कौन कह सकता है कि जिस आदमी ने कपड़े पहन रखे हैं उसका बदन ढका हुआ है और जिस आदमी ने कपड़े नहीं पहने हैं, वह नंगा है। अब उस जाकेट को ही लो जो तुमने पहन

रखी है। यह चारख़ाने कपड़े की चुस्त जाकेट है, भले ही यह ख़ालिस ऊन की नहीं बनी है। लेकिन क्या यह तुम्हारी है?"

त्रोफ़ीम खीसें नपोरने लगा और मच्छरों के झुण्ड पर मुंह का सारा धुआं छोड़ दिया।

"तुम क्या सोचते हो किस की जाकेट है? मैंने किराये पर तो नहीं ले रखी है।"

"तुमने बिल्कुल ऐसा ही किया है। यह तुम्हें पहनने के लिए दी गयी है।" प्योत्र तेरेन्त्येविच ने ज़ोर देकर कहा। "तुम्हें कुछ वक़्त के लिए यह इस्तेमाल करने के लिए दी गयी है, उसी फ़ार्म की भांति जिसके बारे में तुम सोचते हो कि वह तुम्हारी मिल्कियत है।"

"तुम्हारा मतलब है कि फ़ार्म एल्सा के नाम पर है और अगर वह चाहे तो मुझे निकाल बाहर कर सकती है?"

"नहीं, त्रोफ़ीम, मुझे इस बात की परवाह नहीं कि फ़ार्म किसके नाम पर है। मेरा मतलब है कि पूंजीवादी देशों में अन्य बहुत-सी चीज़ों की तरह जिनके बारे में समझा जाता है कि वे निजी मिल्कियत हैं, तुम्हारा फ़ार्म भी, मिल्कियत के वेष में तुम्हें भाड़े पर दिया गया है।"

"यह बात मेरी अक़्ल के बाहर है, प्योत्र। मैं इसे समझा नहीं ..."

"मैं भी नहीं समझा," टेनर ने जोड़ा।

"अगर आप चाहें तो मेरी बात समझ लेंगे, मिस्टर टेनर," बख़्रूशिन ने कहा। उसने मण्डली को फिर सम्बोधन करते हुए कहा, "त्रोफ़ीम का फ़ार्म क्या है? वह एक छोटा-सा पूंजीवादी उद्यम है जिसपर त्रोफ़ीम दर्जन, दो दर्जन नियमित और मौसमी कामगारों को नौकरी देता है। वह इस एकमात्र उद्देश्य से उन्हें काम देता है कि उसके काम के फल को—यदि सम्भव हो तो अधिकांश भाग को—स्वयं हड़प ले और उसे मुद्रा में बदल दे। क्या यह ठीक है या नहीं?"

"ठीक है!" टेनर ने कहा।

"ऐसा फ़ार्म चलाने का क्या लाभ अगर उससे कुछ वसूल न होता हो?" त्रोफ़ीम ने सहमति प्रगट करते हुए कहा।

"इसलिए फ़ार्मर त्रोफ़ीम एक पूंजीपति अथवा शोषक है, भले ही वह बहुत छोटा हो," प्योत्र तेरेन्त्येविच कहता गया।

"पर वह स्वयं काम भी तो करता है," टेनर ने विरोध किया।

"हां, मैं निकम्मा बैठा उंगलियां नहीं चटकाता रहता," त्रोफ़ीम फिर बीच में बोला।

"क्या एक बैंक-मालिक, या फ़ैक्टरी-मालिक भी बैठा उंगलियां चटकाता रहता है? क्या उसके पास करने के लिए कुछ नहीं है, या अपना काम चलाने के बारे में उसे कुछ सोचना नहीं पड़ता? लेकिन क्या उसका काम उन मुनाफ़ों के अनुरूप है जिन्हें वह बटोरता है? वह संसार का सबसे अक़्लमंद बैंक-मालिक हो सकता है, लेकिन उसके एक दिन के काम का मूल्य दस लाख डालर नहीं हो सकता, पचास लाख की तो बात ही क्या... आप ज़्यादा सही तौर पर जानते हैं, मिस्टर टेनर कि इन लोगों की एक दिन की कमाई कितनी अधिक बन जाती है, और किसको नुक्सान पहुंचाकर वह बनती है। पर बात यह नहीं। मैं त्रोफ़ीम के फ़ार्म की बात कर रहा हूं, जो स्वामित्व के वेष में उसे भाड़े पर दिया गया है। यह फ़ार्म उन लोगों द्वारा इसे दिया गया है जो हर चीज के मालिक हैं, उन लोगों द्वारा जो देश का संचालन करते हैं। इस मूक गैरेंटी के आधार पर उसे फ़ार्म दिया गया है कि वह—पूंजीवादी संहिता के अनुसार—उस फ़ार्म पर मज़दूरों से जितना निचोड़ सकता है, निचोड़ेगा। उनमें से जितना पीसकर निकाल सकता है निकालेगा और उसे मुद्रा में बदल देगा; वह मुद्रा उन लोगों को देगा जो देश के मालिक हैं, और अपने पास उन मुनाफ़ों का उतना अंश अपने पास रख लेगा जिससे उसे इस बात का आभास मिलता रहे कि वह एक मालिक है।"

"आग ख़ूब लौ दे रही है," टेनर ने स्तेकोल्निकोव से फुसफुसाकर कहा। "मैं प्योत्र तेरेन्त्येविच को नये रंग में देख रहा हूं..."

"क्या अपने फ़ार्म पर तुम मालिक हो, त्रोफ़ीम?" प्योत्र तेरेन्त्येविच ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा। "जवाब देने की तुम्हें कोई ज़रूरत नहीं। इस सवाल का जवाब मैं ख़ुद दूंगा, क्योंकि

तुम्हारे फ़ार्म के बारे में मैं तुमसे ज़्यादा जानता हूं, हालांकि मैंने उसे कभी देखा तक नहीं है। नहीं, तुम अपने फ़ार्म के मालिक नहीं हो उसी तरह जिस तरह मिस्टर टेनर अपने 'फ़ार्म' के मालिक नहीं हैं, जिसमें उनका टाइप-राइटर और सफ़ेद काग़ज़ रूपी खेत शामिल है जिसपर वह समझते हैं कि वह आज़ाद और स्वतन्त्र शब्द की खेती कर रहे हैं। इन दोनों में से कोई भी अपने फ़ार्म में जैसा चाहे वैसा करने में, अपने विचारों के अनुसार उसका संचालन करने में आज़ाद नहीं है। अपने फ़ार्म पर त्रोफ़ीम मालिक नहीं है, उसकी स्थिति दांतेदार लोहे के चक्र की सी है जिसे कोई दूसरा बड़ा चक्र चलाता है ... हम उस दूसरे चक्र को कम्पनी का नाम देंगे। मैं नहीं जानता कि वह किस प्रकार की कम्पनी है। लेकिन मैं यह ज़रूर जानता हूं कि वह भी एक दांतेदार चक्र है जो विराट पूंजीवादी मशीन में अपने आप नहीं चलता। और तुम्हारी रफ़्तार तनिक भी शिथिल होने की देर है, त्रोफ़ीम, कि तुम्हारे सभी दांते तोड़ दिये जायेंगे, और स्वयं तुम्हें भी कूड़े के ढेर पर फेंक दिया जायेगा। एक नया मालिक फ़ार्म पर अधिकार जमा लेगा, एक ऐसा मालिक जो ठीक रफ़्तार से चलने की क्षमता रखता है क्योंकि वह तुमसे ज़्यादा निर्दयी है और अपने मज़दूरों से ज़्यादा मुनाफ़े निचोड़ने में अधिक सफल होगा। ज़्यादा मुनाफ़े—मुख्य बात यही है। यही तुम्हारी प्रशंसनीय पूंजीवादी होड़ की मांग है, एक ऐसी होड़ जिसमें मनुष्य दूसरे मनुष्य के प्रति भेड़िये के अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता। धूसर, नीला, धारीदार या चारख़ाना भेड़िया हो ... पर इसी पर बस नहीं है। मुख्य बात यह है कि इनसान को जीवन-भर डर लगा रहता है कि वह निगल लिया जायेगा, और इस उम्मीद पर जीता है कि वह दूसरे को फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर देगा या कम से कम उसमें अपने दान्त गाड़ेगा ताकि ख़ुद ज़िन्दा रह सके।

"इसी आम झगड़े और लोगों के आपसी संघर्ष पर, इसी आम आत्म-प्रवंचना पर, कि यही झगड़ा और संघर्ष जनता के अस्तित्व और ख़ुशहाली का एकमात्र साधन हैं, पूंजीवाद और उसके उत्प्रेरक खड़े हैं। मैं इस शब्द का प्रयोग बावजूद इस बात के कर रहा हूं, कि त्रोफ़ीम

इससे सर्वथा अनभिज्ञ और प्रिय मिस्टर टेनर इससे उतनी अच्छी तरह से परिचित हैं जितना अपने छविचित्र से।"

टेनर बीच में बोलने जा रहा था लेकिन वख़्रूशिन ने इशारे से उसे रोक दिया, और फिर एक बार अपने भाई की ओर मुख़ातिब हुआ।

"इसी तरह से त्रोफ़ीम जीता रहा है—अपने पड़ोसियों को निगलते हुए—उन अन्य निःसहाय छोटे छोटे चक्रों को जिनकी आसानी से स्थान-पूर्ति की जा सकती है—इस डर से कि कहीं वे इसे नहीं निगल जायं। और उसी तरह से यह अब भी जी रहा है... मुझे त्रोफ़ीम को यक़ीन दिलाने की ज़रूरत नहीं है—वह मुझसे बेहतर जानता है कि वह मज़बूत ज़मीन पर नहीं खड़ा है, हालांकि वह उसकी अपनी है। नहीं, त्रोफ़ीम, तुम्हें बिल्कुल इस बात का यक़ीन नहीं है कि यह नीम-ऊनी जाकेट तुम्हारे बदन पर से खींचकर उतार नहीं ली जायेगी... अब भी तुम निश्चित रूप से नहीं जानते कि वह तुम्हारे बदन पर है या नहीं..."

प्योत्र तेरेन्त्येविच अब फिर टेनर को सम्बोधन करने लगा—

"यदि यह प्रोपेगेण्डा है, मिस्टर टेनर, तो आप सचाई को क्या कहेंगे जो हमें एक दूसरे को और अपने आपको बेहतर जानने में सहायक होती है? जो कुछ मैंने कहा है, यदि वही पूंजीवाद के समाजवादी तत्त्व हैं, तो आप उन शैतानों के जुआघर को क्या कहेंगे जो एक दूसरे की ज़िन्दगी का दांव लगाकर जुआ खेलते हैं? और जब सारी बात की व्याख्या की जाती है, इसका स्पष्टीकरण किया जाता है तो पूंजीवाद अपनी पूरी नग्नता में सामने आ जाता है भले ही आप उसे किसी भी नाम से पुकारें—जन-पूंजीवाद, श्रम-पूंजीवाद, या अति-समाजवादी पूंजीवाद। तब आपको पता चल जायेगा कि आपका देश या कोई दूसरा पूंजीवादी देश उस वस्तुगत नियम से कन्नी काट सकता है या नहीं, जिसका स्तेकोल्निकोव ने ज़िक्र किया था।"

"इससे मुझे कोई हानि नहीं पहुंचेगी," टेनर बोला। "मैं चाहता हूं कि आप इस बात को समझ लें कि इतिहास का जलवायु बनाने में

न तो आपके भाई का, न मेरा और न ही लाखों अमरीकियों का कोई हाथ है।"

"तो फिर किसका हाथ है?" लम्बी चुप्पी को तोड़ते हुए स्तेकोल्निकोव ने कहा। "पर जवाब देने की ज़रूरत नहीं है; आइये थोड़ी चाय पीकर इस बहस को गले से उतारें। मैं सोचता हूं चैनक में पानी उबल रहा है।"

घास पर बिछे दस्तरख़ान के आस-पास जब सभी लोग बैठकर चाय पीने लगे तो त्रोफ़ीम ने ब्रैंडी निकाल ली।

"जो कुछ प्योत्र ने कहा है उसे हलक से उतारने के लिए चाय की तुलना में किसी ज़्यादा तेज़ चीज की ज़रूरत है।" उसने खिन्नभाव से कहा, "ठीक है, मेरी ज़िन्दगी एक भेड़िये की सी ज़िन्दगी रही है... मैं सचमुच नहीं जानता कि यह जाकेट मेरी है या नहीं।" उसने उदास नज़र से मण्डली के सभी सदस्यों की ओर देखा, इनैमल के पात्र में ढाली हुई ब्रैंडी आख़िरी बूंद तक चढ़ायी और चुप हो गया।

टेनर भी, जो हमेशा चहकता, शोर मचाता रहता था, शान्त हो गया। लेकिन कभी कभी मौन भी भावपूर्ण और वाक्-पटु होता है।

४१

अपना सन्तुलन खो बैठने पर, त्रोफ़ीम ने बेहतर जीवन-प्रणाली पर फिर कोई तर्क नहीं किया। संभवतः टेनर के माध्यम से, जो प्योत्र तेरेन्त्येविच की समझ-बूझ और मानसिक दृष्टिक्षेत्र का ऊंचा मूल्य आंकता था, त्रोफ़ीम ने समझ लिया था कि जीवन की गतिविधि के बारे में दोनों की जानकारी के बीच आकाश-पाताल का अन्तर पाया जाता है।

त्रोफ़ीम को लगने लगा जैसे उसने अपना सारा जीवन अमेरिका नाम के एक बड़े जहाज के पेंदे में बिता दिया है, और अपने फ़ार्म को छोड़कर कुछ भी नहीं देखा। जीवन में उसकी एकमात्र रुचि अपने फ़ार्म की आमदनी और ख़र्च गिनने में रही है। अगर वह कभी न्यू-यार्क गया

भी तो नगर के पेंदे में ही पड़ा रहा, उससे ऊंचा उठने का उसे कभी अवसर नहीं मिला।

इसके विपरीत, प्योत्र ने सामूहिक फ़ार्म में रहते हुए, समस्त देश की रुचियों को अपनी रुचियां बनाया। वह इस्पात के उत्पादन, अनाज की निवल फ़सलों, और अमेरिका के साथ शान्तिपूर्ण प्रतियोगिता के बारे में इस ढंग से बात कर रहा था कि सर्वज्ञानी टेनर, अमेरिका में जिसने सचमुच जन्म लिया था, आश्चर्यचकित होकर उसकी बातें सुन रहा था।

त्रोफ़ीम ने सोच रखा था कि प्योत्र तेरेन्त्येविच एक अशिष्ट किसान से अधिक कुछ नहीं होगा, जिसे वह अपने कपड़ों से, अपनी टुनटुनाती घड़ी से, नये चमकते सूटकेसों और अमरीकी ख़ुशहाली से चकाचौंध कर देगा। लेकिन बात उलटी निकली थी। जितना वह अपने को जानता था, उससे बेहतर ये लोग इसे जान गये थे।

प्योत्र की अपनी आस्थाएं थीं, विश्वास था। उसकी नज़रों में भविष्य एक रोपा हुआ फल-बाग़ था। वह सही तौर पर जानता था कि कैसे सेब पैदा होंगे और उनसे अमुक साल में उसे कितना फल मिलेगा।

और त्रोफ़ीम की झोली में क्या था? कुछ भी नहीं। सफलता की अस्थिर आशा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। और कौन जाने इस समय जब वह अमेरिका के बाहर आया हुआ था, क्या मालूम उसके फ़ार्म को . . .

लेकिन वह ऐसी भयानक संभावना की कल्पना भी नहीं करना चाहता था। वह उसके बारे में सोचना तक नहीं चाहता था, विशेषकर इस बस में, जिसमें हर कोई उसकी ओर देख रहा था, और शायद प्योत्र की ही भांति एक खुली किताब की भांति उसे पढ़ सकता था।

बस फ़ेक्टरी के पोलीक्लिनिक के बाहर खड़ी हो गयी, जहां नदेज्दा काम करती थी। त्रोफ़ीम ने अन्द्रेई लोगिनोव से मालूम कर लिया था कि उसका काम करने का वक़्त कौनसा है। और उसने ऐसा प्रबन्ध किया था कि वह उसके काम के ऐन ख़त्म होने के वक़्त वहां पहुंच जायेगा।

"अन्दर आ जाओ," दरवाज़े पर दस्तक सुनकर अन्दर से नदेज्दा ने पुकारा। वह दरवाज़े की ओर पीठ किये, अपने कक्ष में बैठी थी।

नदेज्दा त्रोफ़ीम का इन्तज़ार तो नहीं कर रही थी लेकिन उसे देखकर उसे आश्चर्य भी नहीं हुआ।

"कैसे आना हुआ ?" नदेज्दा ने पूछा।

"मैं तुमसे बात करना चाहता हूं।"

"किस बारे में?"

"मैं स्वयं ठीक ठीक नहीं जानता। पर मैं सोचता हूं कि तुम, एक बुरे बाप को अपनी अच्छी बेटी के साथ बातें करने की मनाही नहीं करोगी।"

"बैठो, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच, मैं नहीं जानती कि आख़िर इस सब की क्या ज़रूरत है। चालीस साल तक तुम्हारे लिए मेरी कोई हस्ती नहीं थी। तुम्हें यह भी मालूम नहीं था कि मेरा अस्तित्व भी है या नहीं। यदि तुम यहां आते नहीं तो तुम मेरे या मेरे बच्चों के बारे में कभी सुन भी नहीं पाते।"

"लेकिन मै आया, और मैंने देखा कि मेरे बेटी है, और नाती-पोते हैं। क्या तुम्हें मुझ पर ज़रा भी तरस नहीं आता? अपने बाप को जवाब देने से पहले ज़रा सोच लो।"

"तुम्हारे पूछने से पहले ही मैं सोचती रही हूं। उस वक़्त से जब तुमने मेरी मां को वह ख़त लिखा था। क्या यहां आने का निश्चय करते समय तुमने उसके बारे में सोचा था? क्या तुमने सोच रखा था कि पुराने मुर्दे उखाड़ने से उसे ख़ुशी होगी? क्या तुमने सोच रखा था कि तुम्हारे आने से उसकी शोभा बढ़ेगी? तुम्हें उसकी कोई चिन्ता नहीं थी। तुम केवल अपने बारे में सोच रहे थे। या शायद मैं भूल कर रही हूं?"

"नहीं तुम भूल नहीं कर रही हो। मैं केवल अपने बारे में ही सोचा करता था। लेकिन अब मैं उस ढंग से नहीं सोचता हूं।"

"इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। तुम्हारे यहां आने से न तो मुझे और न ही मेरे बच्चों को कोई ख़ुशी मिली है। तुम्हें हमारे अस्तित्व के बारे में भी मालूम नहीं था, इसलिए मैं तुम्हें दोष नहीं दे सकती। लेकिन मां... मां के प्रति तुम निर्दयी रहे हो, निर्दयी... और बेशर्म। केवल उसी आदमी को जिसने अपने अतीत के बारे में गहरा पश्चात्ताप किया हो और उससे नाता तोड़ दिया हो, उसी को फिर उसके प्रति लौटकर आने का अधिकार

है। पर तुमने ऐसा नहीं किया। तुम मां को देखने आये हो, अपना दिल गुदगुदाने आये हो, तुम आये हो अपने पुराने सभी परिचितों और अपने भाई के सामने अपनी अमीरी दिखाने और इसके बाद लौट जाने के लिए आये हो। तुमने तो इसे एक नाटक बना रखा है। और इस नाटक में भाग लेने के लिए हमें मजबूर करने पर हम तुम्हारा धन्यवाद नहीं कर सकते। अगर तुममें रत्ती-भर भी शराफ़त होती तो तुम उसी दिन के बाद लौट जाते जब चचा प्योत्र ने तुमसे कह दिया था कि मेरी मां तुमसे मिलना नहीं चाहती। लेकिन यह तुम्हारे मन्सूबों के मुआफ़िक नहीं था। तुम अभी भी केवल अपने बारे में ही सोच रहे थे, और शायद हिसाब लगा रहे थे कि इस सफ़र पर तुम्हारा कितने डालर ख़र्च आया है। तुम अपने पैसों का पूरा पूरा लाभ उठाना चाहते थे..."

"शायद तुम ठीक कहती हो," त्रोफ़ीम ने स्वीकार किया, "मैं सोचता हूं ठीक कहती हो। लेकिन इसके उलट भी हो सकता था। क्षण-भर के लिए कल्पना करो कि मैं अमेरिका कभी नहीं गया था; कि मैं सही सलामत कोल्चाक की सेना में से लौट आया था। क्या उस स्थिति में तुम मुझे पिताजी कहकर पुकारतीं और मेरे नाती-पोते मुझे नानाजी कहकर बुलाते?"

"क़ुदरती बात है।"

"फिर इस वक़्त ऐसा करने में तुम्हें कौन रोक रहा है? मैं अभी भी वही आदमी हूं..."

"नहीं उस हालत में तुम वह नहीं होते जो आज हो। सोवियत संघ में चालीस वर्ष बिताकर तुम इनसान बन जाते। हमारे यहां सैकड़ों मिसालें हैं। तुम जैसे आदमी, जो पहले जानी दुश्मन थे, अब अच्छे सोवियत नागरिक बन गये हैं, यहां तक कि कम्युनिस्ट बन गये हैं... उन्होंने अपने अतीत को दफ़ना दिया है, मानो उसका कभी अस्तित्व ही नहीं रहा हो। और कोई भी अब उन्हें उसकी याद नहीं दिलाता ... लेकिन तुम ... तुम श्वेत गार्ड में शामिल हुए थे, अपने अज्ञान के कारण, इसलिए कि अपने इस निकृष्ट हाड़-मांस को, अपनी मांद को खो नहीं पाओ। अगर स्थिति दूसरी होती तो स्वयं चचा प्योत्र, सारा गांव तुम्हारी आंखें खोलने में सहायता

करता ... गांव तो क्या, स्वयं जीवन तुम्हारी आंखें खोल देता। तब शायद मैं अपने पिता पर गर्व करती, जिस तरह आज मैं अपनी मां पर गर्व करती हूं। कितने ही लोग हैं जिन्हें कोल्चाक ने धोखा दिया था, बहकाया था, लेकिन वे इस समय सुख से जीवन बिता रहे है। मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहती, लेकिन हमारे अस्पताल का बड़ा डाक्टर, कोल्चाक की सेना में अफ़सर हुआ करता था। और अब वह प्रादेशिक सोवियत का सदस्य है और दो पदकों से विभूषित हो चुका है। या उस ... फ़ैक्टरी-मालिक के बेटे को ही लो जिसके साथ तुम जंगल में जा छिपे थे। इस समय वह अपने बाप की फ़ैक्टरी का डायरेक्टर है – लेकिन तुम अब उस फ़ैक्टरी को पहचान नहीं सकोगे और न स्वयं उसे ही। कौन जानता है हमारे देश में तुम क्या से क्या बन जाते!"

"तुम्हारा मतलब है वह बच रहा है, उसने अपना पक्ष वदल लिया था क्या?"

"मैं नहीं जानती तुम्हारी भाषा में इसे क्या कहते हैं लेकिन मां ने हमें बताया कि उसने घुटने टेक दिये और आग्रह किया कि उसे क़ानून के अनुसार कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाय।"

"चालाक लोमड़ी निकला!"

"क्या तुम लोगों के बारे में इस तरह से सोचना बन्द नहीं कर सकते मानो वे तुम्हारे जंगल के रिश्तेदार हों?"

नदेज्दा उठ खड़ी हुई, जिसका मतलब था कि वह चाहती थी कि त्रोफ़ीम वहां से चला जाय। लेकिन त्रोफ़ीम ने इशारा समझने से इन्कार कर दिया।

"उन लोगों ने वक़्त पर प्रायश्चित कर लिया, यों कहें कि मुझे प्रायश्चित करने में देरी हो गयी।"

"केवल मरे हुए लोगों को ही देरी हो जाती है।" नदेज्दा ने कहा।

"लेकिन मैं तो जीता-जागता हूं!"

"अपने को धोखा नहीं दो, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच!"

नदेज्दा ने नर्स को बुलाया और त्रोफ़ीम की ओर इशारा करते हुए कहा कि "मरीज़" को बस-स्टाप तक पहुंचा आओ।

"शुक्रिया, नदेज्दा त्रोफ़ीमोव्ना, अभी टांगों में ताक़त है, मैं स्वयं चल सकता हूं।" त्रोफ़ीम ने कहा और बिना विदा का शब्द कहे, सिर ताने, बाहिर निकल गया।

नर्स ने कंधे बिचकाये।

"क्या यह वही आदमी है, नदेज्दा त्रोफ़ीमोव्ना?" उसने पूछा।

"हां!"

नर्स इस विषय को लेकर बातें करना चाहती थी, लेकिन नदेज्दा त्रोफ़ीमोव्ना ने उसकी ख़्वाहिश पहले से जान ली और उसे एक गिलास में शान्तिदायक द्रव्य–तगरमूल के अर्क की दोहरी मात्रा डालकर लाने को कहा।

इसकी शायद नदेज्दा को ज़रूरत नहीं थी, लेकिन नर्स ने इशारा समझ लिया कि वह अपने पिता की चर्चा नहीं करना चाहती।

४२

इतवार के दिन दार्या स्तेपानोव्ना बख़ूशी लौट आयी, उसी दिन जिस दिन वह त्रोफ़ीम से मिली थी। प्योत्र तेरेन्त्येविच को यह अच्छा नहीं लगा।

"क्या बात है, दार्या? इतवार के दिन मैंने तुम्हारे लिए ख़ास तौर पर मोटर भेजी थी कि तुम्हें अपने भतीजे के पास कून्शा ले जाय, और तुम... क्या उस मरदूद ने तुम पर जादू कर दिया है, या क्या बात है? क्या उसने तुम्हारे दिल में रहम जगा दिया है?"

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए दार्या को कुछ भी नहीं सूझ पाता–वह परस्पर-विरोधी भावनाओं के चंगुल में थी, जिस कारण उसके मन में तूफ़ान मचा हुआ था। एक बात स्पष्ट थी–वह छिपकर अपने को हीनावस्था में नहीं डालना चाहती थी। इसलिए उसने कहा–

"मैं चाहती हूं कि सब बात साफ़ और खुल्लमखुल्ला हो। इससे लोग बातें कम करेंगे और मेरा मन भी अधिक शान्त रहेगा। वरना जान पड़ सकता है कि मेरे मन में कोई डर समाया हुआ था। अगर भांड़ा फूटना है तो सब के सामने फूटे, छिपे-लुके नहीं।"

फाटक पर दार्या से विदा लेते हुए, बख़्रूशिन ने कहा—

"मुझपर नाराज़ नहीं होना, दार्या। मैं बहुत चाहता हूं कि रेलवे का यह मामला किसी तरह ख़त्म हो, और इमारतें ढहाने के काम के लिए पैसे और दस्तावेज़ मिलें, इसलिए मेरे पास निजी मामलों की ओर ध्यान देने के लिए बिल्कुल वक़्त नहीं है। लेकिन मैं तुम्हें सावधान कर दूं कि त्रोफ़ीम के एक भी शब्द पर, उसके एक भी आंसू पर विश्वास नहीं करना... उस वक़्त भी नहीं जब वह सच्चा और दिल से निकला हुआ जान पड़ता हो। क्योंकि वह मिनट मिनट में बदलनेवाला आदमी है, उसके कोई उसूल नहीं हैं। उसके साथ इनसान कभी भी आश्वस्त महसूस नहीं कर सकता। मामला निबटाओ और उसे उसकी एल्सा के पास चलता करो।"

यह कहकर प्योत्र तेरेन्त्येविच अपनी घोड़ा-गाड़ी में बैठ गया और फ़ार्म के दफ़्तर की ओर चल दिया।

दार्या फाटक पर रुकी रही। वह बछड़ा-घर में, और कुछ देर के लिए दफ़्तर में भी जाना चाहती थी, लेकिन सेर्गेई को किसके पास छोड़ती? कात्या मिनट-भर के लिए बाहर गयी थी, और घण्टे से ज़्यादा हो गया था, अभी तक लौटी नहीं थी, और बड़ा नातिन बोरीस मछलियां पकड़ने चला गया था।

त्रोफ़ीम मोड़ पर से आता हुआ दिखायी दिया। दार्या उसकी ओर पीठ नहीं फेर सकती थी, इसलिए भी कि उसने टोपी उठाकर दार्या का अभिवादन कर दिया था।

"मैं कात्या की राह देख रही हूं," फाटक पर अपनी उपस्थिति का कारण बताती हुई दार्या बोली, "घर में कोई नहीं है जिसके पास सेर्गेई को छोड़ सकूं। धमन-भट्ठी का खेल तुमने उसे क्या सिखाया कि अब वह दियासिलाई को छोड़ता ही नहीं। किसी दिन घर को आग लगाकर रहेगा।"

त्रोफ़ीम का चेहरा खिल उठा।

"गेंद खिलाड़ी के पास पहुंच जाता है। मुझे इजाज़त दो, मैं अपने नातिन के पास रहूंगा। मैं इसी लिए आया हूं। मेरे साथ वह ख़ुश रहेगा। डरो नहीं। मैं उसे गांव में घुमाने ले जाऊंगा और जब कहोगी वापिस ले आऊंगा।"

उसी वक़्त खटाक से खिड़की खुल गयी। सेर्गेई ने त्रोफ़ीम की आवाज़ सुन ली थी। चिल्लाकर बोला—

"ग्रेंड-पा! ग्रेंड-पा! खिड़की के रास्ते अन्दर आ जाओ। मैं तुम्हें सचमुच का साही दिखाऊंगा।"

"कहो जी, सेर्गेई," त्रोफ़ीम ने अपने नातिन का हाथ चूमते हुए कहा, "खिड़कियों में से अन्दर आना अब मेरे बस की बात नहीं, बहुत मोटा हो गया हूं। बेहतर होगा तुम खिड़की के रास्ते मेरे पास आ जाओ। चलो नदी की सैर करने चलें, तुम और मैं। नानी ने इजाज़त तो दे दी है शायद? क्या मालूम कोई क्रेफ़िश हमारे हाथ लग जाय और क्या मालूम कोई बड़ी पाइक-मछली ही मिल जाय..."

सेर्गेई खिड़की में से कूदकर सीधा त्रोफ़ीम की बांहों में आ गया।

"चलिये," उसने कहा।

लड़के ने अपनी बांहें त्रोफ़ीम के गले में डाल दीं और अपना गर्म गर्म गाल बूढ़े के गाल के साथ सटा दिया। दार्या ने पीठ फेर ली और पड़ोसियों की खिड़कियों की ओर कनखियों से देखा।

"घण्टा दो घण्टे के लिए तुम लोग जा सकते हो..." उसने कहा, "मुझे कोई एतराज़ नहीं... अब तुम बहुत दिन तो यहां रहोगे नहीं।"

"बस, आठ दिन और। तो तुम्हें कोई एतराज़ नहीं है न? शुक्रिया।" दार्या के सामने त्रोफ़ीम ने झुककर कहा। उसने लड़के को नीचे उतार दिया, कमीज़ सीधी की, फिर कांखने का सा शब्द करते हुए नीचे झुका और लड़के के बूट का फीता बांधा, और उसका हाथ थामे, धूप में नहायी सड़क पर उसके साथ साथ जाने लगा।

भारी भरकम त्रोफ़ीम को सुनहरे बालों वाले नन्हे बालक का हाथ थामकर ले जाते हुए हर किसी ने देखा। हर कोई जानता था कि बालक का नाम सेर्गेई है और वह त्रोफ़ीम का नातिन है। वे जानते थे, उन्होंने देखा, लेकिन चर्चा नहीं की। इसलिए नहीं कि उनके पास कुछ कहने को नहीं था, या कोई राय ज़ाहिर करने को नहीं थी... ज़ाहिर है, जीवन में कुछेक बातें ऐसी होती हैं जिनका मौन द्वारा ही सबसे अच्छा मूल्यांकन किया जाता है।

आखिर वे कह भी क्या सकते थे? यह बात अच्छी थी या बुरी? त्रोफ़ीम के साथ अपने नातिन को भेजकर दार्या ने ठीक किया या नहीं? इसका जवाब अनेकों बार "हां" और "न" में दिया जा सकता था, और उनके साथ हजारों "लेकिन" भी जोड़े जा सकते थे... शायद दार्या स्तेपानोव्ना का कोई छिपा अभिप्राय हो। अकारण ही तो वह सहसा वख़्रूशी में नहीं लौट आयी थी। वह भली-भांति जानती थी कि वह क्या कर रही है। अकारण ही तो वह जंग के दिनों में फ़ार्म की अध्यक्षा नहीं बना दी गयी थी, जब सभी लोग उसके क़दमों पर चलते थे।

सेर्गेई इस बात से बेख़बर था कि वह बहुत-से लोगों के कुतूहल का केन्द्र बना हुआ है। वह ख़ुशी ख़ुशी त्रोफ़ीम के चेहरे की ओर देखता, कभी किसी बड़े-से झींगुर को सड़क पार करते देखने के लिए रुक जाता, या यह सोचकर कि आज वे बड़ी-सी पाइक-मछली पकड़ेंगे, चहकने लगता। और त्रोफ़ीम भी सड़क की ओर से, खिड़कियों और झांकती आंखों की ओर से बेख़बर था। वह उस व्यक्ति का हाथ अपने हाथ में लिये चला जा रहा था जो उसके लिए संसार में सबसे बेशक़ीमत था, एक ऐसे दुलारे बालक का जिसकी ख़ातिर वह कुछ भी करने को तैयार था, यहां तक कि सामूहिक फ़ार्म में अनाजघर का चौकीदार बनकर रह जाने तक के लिए भी तैयार था। शायद... त्रोफ़ीम जानता था कि वह "चंचल-वृत्ति आदमी है", पर उस घड़ी तो वही बालक उसके जीवन का एकमात्र सुख, एकमात्र प्रयोजन था।

लोगों ने दोनों को नदी की ओर जाते देखा। वहां पहुंचकर उन्होंने कुछेक छोटी छोटी मछलियां पकड़ीं जिन्हें वह उस बड़ी पाइक-मछली को पकड़ने के लिए ज़िन्दा चारे के रूप में इस्तेमाल करना चाहते थे। लोगों ने त्रोफ़ीम को सेर्गेई से कहते सुना—

"जितनी देर में बड़ी पाइक-मछली पकड़ी जायेगी उतनी देर चलो, ट्रेक्टर चलायें।"

सेर्गेई ट्रेक्टर-चालक बन गया और त्रोफ़ीम—ट्रेक्टर। लड़का ट्रेक्टर की पीठ पर चढ़ बैठा, जो अपने चारों पंजों के बल खड़ा था, और कान

मरोड़ मरोड़कर उसे कभी एक ओर तो कभी दूसरी ओर घुमाने लगा और अन्त में उसे सीधा पानी की ओर ले गया।

ट्रेक्टर-रूपी त्रोफ़ीम कोहनियों तक गहरा पानी में चला गया, फिर "उसका इंजन बन्द हो गया"।

"इंजन में पानी चला गया है, सुलगना बन्द हो गया है।" त्रोफ़ीम ने कहा और मुंह से घरघराने का ऐसा शब्द किया जैसा रुकने से पहले इंजनों में सुनायी देता है।

लोगों ने ट्रेक्टर को बालू पर लुढ़कते, अपने को सुखाते देखा, फिर सहसा वह चिल्ला उठा—

"देखो, लगता है पाइक-मछली पकड़ ली गयी है!"

त्रोफ़ीम और सेर्गेई दोनों मछली पकड़ने की बंसी की ओर लपके, जिसे उन्होंने तट पर खोंस रखा था। डोरी तन गयी थी। कहना कठिन था कि मछली पकड़ने के दो शौक़ीनों में से कौन ज़्यादा ख़ुश था। दोनों पागलों की तरह चिल्ला रहे थे...

टेनर सदा की भांति अप्रत्याशित ढंग से और ऐन वक़्त पर नमूदार हो गया। सामनेवाले तट से वह, बिना किसी के देखे, "ट्रेक्टर" का दृश्य सिने-कैमरे से कामयाबी से खींचता रहा था। इस डर से कि मछली कहीं निकल नही जाय उसने चिल्लाकर कहा कि डोरी को धीरे धीरे खींचो।

लेकिन इस वक़्त टेनर की किसे परवाह थी! त्रोफ़ीम ने आख़िर अपना वचन पूरा कर दिया था। वह अपने नातिन की नजरों में बल्लियों ऊंचा उठ गया था। और इस घड़ी उसके लिए यही सबसे बड़ी बात थी।

"भगवान करे कि मछली डोरी को नहीं तोड़ दे!" उसने मन ही मन कहा।

उसने मछली को धीरे धीरे थका मारा, मछली जोर से डोरी को खींचती झकझोरती रही, लेकिन लड़कपन में त्रोफ़ीम पाइक-मछलियां पकड़ता रहा था और उनके रंग-ढंग से वाकिफ़ था।

आख़िर मछली पानी की सतह के क़रीब आयी। वह निकल भागने के लिए छटपटा रही थी। सेर्गेई किलकारियां भरने लगा। मछली को हाथ

से पकड़ने के लिए वह पानी के अन्दर घुसा, लेकिन मछली इतनी बड़ी थी कि वह डर गया।

त्रोफ़ीम मछली को तट पर ले आया। शीघ्र ही भीड़ इकट्ठी हो गयी—हैरानी की बात थी कि इतने लोग कहां से आ गये थे। सेर्गेई का भाई बोरीस भी उन्हीं में से था। उसकी आंखें नाच रही थीं।

"कैसी बढ़िया मछली है!" उसने चहककर कहा।

पर त्रोफ़ीम पर उसके चहकने का कोई असर नहीं हुआ। त्रोफ़ीम की नज़रों में उसका यह नातिन एक अजनबी था। कारण यह कि दस-साला बोरीस जानता था कि उसका नाना, नाना नहीं धूसर भेड़िया है जो अमेरिका भाग गया था। इस बात की कोई संभावना नहीं थी कि दोनों एक दूसरे के निकट आ पायेंगे। सेर्गेई बच्चा था, उसे अभी भी अपने पक्ष में किया जा सकता था। बच्चे लोगों के बारे में उनके व्यवहार के अनुसार राय क़ायम करते हैं, इस आधार पर कि कौन उनके लिए क्या करता है।

बालू पर पाइक-मछली छटपटाती रही। त्रोफ़ीम चाहता तो था कि पत्थर उठाकर उसके सिर पर दे मारे और इस तरह उसे शान्त कर दे, लेकिन वह सेर्गेई के सामने ऐसा नहीं कर सकता था। लड़के को, जो आंखें गाड़े मछली की ओर देखे जा रहा था, ख़ून नज़र आ गया।

"क्या उसे दर्द हो रहा है?" उसने त्रोफ़ीम से पूछा।

"मैं तो नहीं समझता कि उसे दर्द हो रहा है," त्रोफ़ीम ने उसे विश्वास दिलाते हुए कहा। "है तो केवल मछली ही।"

लेकिन लड़का प्रश्न पूछता गया—

"नदी में उसके नन्हे-पाइक भी हैं?"

मछली को हांपते देखकर सेर्गेई के चेहरे पर व्याकुलता का भाव आ गया था, त्रोफ़ीम ने नर्मी से कहा—

"इसके बच्चे कैसे हो सकते हैं! यह तो बूढ़ी मछली है! देखो तो कितनी बड़ी है... हां, शायद इसके कुछेक नाती-पोते होंगे।"

सेर्गेई ने सहसा उसका हाथ पकड़ लिया।

"ग्रेंड-पा, ग्रेंड-पा! नानी-पाइक को छोड़ दो, उसे वापिस नदी में डाल दो!"

सभी हंसने लगे। बोरीस भी हंसने लगा।

"क्या सच, तुम यही चाहते हो, सेर्गेई?" त्रोफ़ीम ने पूछा।

सहसा उसे बच्चे की आंखों में आंसू नज़र आये। झट से, मगर सावधानी के साथ उसने पाइक-मछली में से कांटा निकाला, और अपराधियों की तरह बुदबुदाया—"एक मिनट, सेर्गेई, बस एक मिनट..."

फिर उसने बड़े ध्यान से मछली को उठाकर नदी में फेंक दिया।

सेर्गेई भागकर त्रोफ़ीम के पास गया, और उसकी टांग से चिपटकर धीरे से पूछा—

"क्या उसका मुंह ठीक हो जायेगा?"

"कल ही वह बिल्कुल स्वस्थ हो जायेगी। एक डाक्टर-मछली उसे दवाई देगी, और वह सौ साल की उम्र तक जीती रहेगी।"

तट पर खड़े लोग चुप थे। टेनर भी चुप था। त्रोफ़ीम ने सेर्गई को गोद में उठा लिया और घर की राह ली, नन्हा बालक नानी-पाइक को विदा करते हुए, जो तैरती हुई अपने नाती-पोतों के पास चली गयी थी, हाथ हिलाता रहा।

जब यह बात प्योत्र तेरेन्त्येविच को बतायी गयी तो उसने कहा—

"सांप के सामने बीन बजाओ तो वह वश में आ जाता है। पर इससे उसका ज़हर कम नहीं हो जाता।" फिर ठण्डी सांस भरकर बोला—"दार्या को नहीं चाहिए था कि सेर्गेई से उसे मिलने देती। त्रोफ़ीम के कानों के लिए वह धुन बहुत मधुर है। और अगर नदेज्दा, त्रोफ़ीम को नहीं बल्कि अर्तेमी इवोलगिन को अपना पिता मान लेती, तो सेर्गेई भेड़िये का नातिन हरगिज़ नहीं रहता। लेकिन इसकी चर्चा करने का क्या लाभ? त्रोफ़ीम के चले जाने के हफ़्ता दो हफ़्ते बाद सेर्गेई उसे बिल्कुल भूल जायेगा। मैं तो चाहता हूं कि वह जल्दी यहां से दफ़ा हो जाय।"

यह इच्छा अकेले प्योत्र तेरेन्त्येविच के ही मन में नहीं थी। लेकिन ताज्जुब की बात है, कि बख़्रूशी में अमरीकियों के निवास के अन्तिम कुछेक दिनों की घटनाओं में, नन्हे सेर्गेई ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

पाइक-मछली की इस छोटी-सी घटना ने, जिसे पहले पकड़ा गया और बाद में पानी में डाल दिया गया था, और सेर्गेई के प्रति त्रोफ़ीम की विस्मयजनक आसक्ति ने लोगों के दिल पर असर किया। लगता था जैसे त्रोफ़ीम के प्रति व्यवहार में दार्या स्तेपानोव्ना का दिल भी कुछ पिघलने लगा है।

"तुम्हारे अन्दर अभी भी कुछ अच्छाई रह गयी होगी कि तुम्हें उस बूढ़ी पाइक-मछली पर रहम आ गया।" दार्या स्तेपानोव्ना ने त्रोफ़ीम से कहा। दोनों क़ब्रिस्तान में बैठे थे।

द्यागिलेव परिवार की क़ब्रों पर नये क्रास और उनके इर्द-गिर्द कच्चे लोहे के नये डण्डहरे लगाये जा रहे थे।

"अब हर चीज उचित और ठीक है। बुजुर्गों को अब कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए।" त्रोफ़ीम ने कहा। वह ख़ुश नजर आ रहा था। "ये क्रास अच्छे हैं, इनके खम्भों पर राल लगा है। डण्डहरे मजबूत हैं, और अन्दर जगह भी खुली है। और यहां जिस ज़मीन पर वे लेटे हैं वह भी रेतीली और सूखी है।"

"हां, यहां नमी नहीं है।" वार्तालाप जारी रखने के लिए दार्या ने जोड़ा। "अमेरिका में कैसे क़ब्रिस्तान होते हैं? वहां क़ब्रों की बड़ी भीड़ रहती होगी?"

"यह कई एक बातों पर निर्भर करता है। पैसेवाले आदमी के लिए हमेशा जगह मिल जाती है। एल्सा के मरने पर मैं उसके शव को राबर्ट की क़ब्र में दफ़ना दूंगा। आख़िर वही क़ानूनी तौर पर उसका पति था, और उसकी बगल में ही उसका उचित स्थान भी है।"

दार्या ने, मानो मन ही मन तर्क करते हुए, व्यंग की पुट देकर कहा –

"जब आदमी को पता चल जाय कि कब किस की बारी है और किसे कहां दफ़नाना होगा तो यह बड़ी अच्छी बात होती है। उसकी उम्र क्या है, तुम्हारी उस एल्सा की?"

"सत्तर से ऊपर है। मुझ से बहुत बड़ी है। यह सच है कि सत्तर साल कोई बहुत बड़ी उम्र नहीं है, लेकिन उसकी जवानी जल्दी खिली थी, और वह उसे लापरवाही से लुटाती रही थी। अब तो वह चल भी नहीं सकती।"

दार्या ने उसकी ओर देखा और बोली—

"उसके बारे में तुम बातें तो यों कर रहे हो मानो वह कोई अजनबी हो। आख़िर है तो वह तुम्हारी पत्नी..."

"एक तरह से पत्नी है। दूसरी तरह से... चलो मैं तुम्हें बाक़ी का सारा क़िस्सा भी सुना ही दूं जो मैंने मित्यागिन चरागाह पर सुनाना शुरू किया था।"

"सुनाओ," दार्या ने कहा, "तुम्हारे पारिवारिक जीवन के बारे में कुछ पता चल जाय तो क्या बुरा है।"

"मैं चाहता हूं कि तुम्हें सब कुछ पता चल जाय। मैं कहां तक तुम्हें सुना चुका हूं?"

"उस जगह तक जहां एल्सा केवल मोज़े पहने तुम्हारे सामने नाचने लगी थी।" दार्या ने याद दिलाया।

"ठीक है। तुम्हारी याददाश्त अच्छी है। अब इसके बाद के सालों के बारे में सुनो। इस काल में हुआ तो बहुत कुछ लेकिन उसे याद करने की मेरी इच्छा नहीं होती। क़िस्सा यह है। एल्सा मुझे फ़ार्म पर ले गयी और अपने पति राबर्ट से मेरा परिचय कराया। पहले राबर्ट ने मुझे घोड़ों की रखवाली के काम पर लगाया। फिर उसने मुझे फ़ार्म पर अपना मुख्य सहायक बना लिया। उसने मुझपर विश्वास करके मुझे दूध, मांस, और सब्जियां बेचने का काम सौंप दिया, और अपनी पत्नी को भी सौंप दिया—उसे मैं घोड़ा-गाड़ी में गिर्जे में ले जाया करता था। गिर्जे का वह कैसा दौरा हुआ करता था, इसके बारे में तुम्हें बताने की ज़रूरत नहीं है। मैं नहीं जानता कि बूढ़े राबर्ट ने भांप लिया था या नहीं कि मेरे साथ उसकी पत्नी का इश्क चल रहा है, और इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि मैं उन दिनों पागल हो रहा था। मैं एल्सा के साथ मेक्सिको या ऐलास्का या किसी भी जगह पर भाग जाने के लिए तैयार था।"

"तो तुम सचमुच उससे प्रेम करते थे?" स्पष्टता के लिए दार्या ने पूछा।

"हां, सोचता हूं करता ही था। लेकिन वह उस प्रेम की ख़ातिर अपने फ़ार्म को, अपने घर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थी। मुझसे उसने सब्र करने को कहा। कुछ ही देर बाद राबर्ट मर गया। मछली खाकर।"

"ज़हर से?"

"हां। डाक्टरों ने मौत का कारण प्रमाणित करते हुए यही लिखा। मछली से उसे जहर चढ़ गया। वास्तव में क्या कारण था, मैंने एल्सा से कभी नहीं पूछा... मैं जानना भी नहीं चाहता। मैं तो केवल इतना जानता हूं कि वह हर रात गहरे अनुराग से प्रार्थना किया करती थी। घण्टों उसकी क़ब्र के सिरहाने बैठी, रोती रहती। मैं यह सोचना नहीं चाहता कि वह राबर्ट के जल्दी मर जाने का प्रयोजन बनी थी। फिर भी, हर शाम को, वह हमारे बिस्तर के इर्द-गिर्द पवित्र जल छिड़का करती थी।"

"क्या इससे सहायता मिली?"

"हां, मिली। वह भूत बनकर मेरे पास रात को कभी नहीं आया। बाद में हमने एक नया घर बना लिया।"

"और तुम उसके पति बन गये?"

"जीवन में—हां। पर वास्तव में मैं एल्सा के फ़ार्म का केवल मैनेजर ही हूं। तुम जानो कि जमीन-जायदाद उसके और उसकी बेटी के नाम लिखी गयी थी। मुझे यह सूझा तक नहीं कि इसके विपरीत भी बात हो सकती थी। पर जब मैं बातों को समझने लगा और पड़ोस का फ़ार्म ख़रीदा, और बाद में तीन और फ़ार्म ख़रीदे तब मेरी आंखें खुलीं कि मालिक कौन था और गधा कौन। हर चीज़ एल्सा के नाम पर थी, मुझे केवल तनख़्वाह, एक तरह का जेब-ख़र्च मिलता था। और इसी तरह बात चलती रही। मैं धन कमाता था, लेकिन धन की मालकिन वह होती थी। अब भी फ़ार्म का संचालन मेरे हाथ में है। मेरे बिना वे कुछ भी नहीं कर सकते। पर मुझे इसमें से बस, यही कुछ मिलता है।"

"अजीब बात है! कल्पना करना कठिन है कि तुम जैसे भेड़िये को एक भेड़ निगल जाय!" दार्या ने उकसाते हुए कहा ताकि त्रोफ़ीम और बातें बताय।

"किये को मिटाया नहीं जा सकता। फिर से इनसान ज़िन्दगी नहीं बिता सकता। मैं अभी भी हंसिया चला सकता हूं, जैसा कि तुम जानती हो, लेकिन एल्सा आराम कुर्सी से जुड़ गयी है, और अभी भी अपनी मांगें पूरी करवाना चाहती है, बुढ़िया डाइन। मैं ही उसे उठाकर बिस्तर पर लिटाता हूं और मैं ही उसे बिस्तर में से बाहर निकालता हूं। उसका वज़न बहुत नहीं है, बेशक, फिर भी उसके लिए बोझल है। वह मेरे लिए अजनबी है। मुझे उससे अब रत्ती-भर भी प्यार नहीं। हमारे बीच घृणा के अतिरिक्त कुछ नहीं। केवल एक ही कारण से मैं उसे सहे जा रहा हूं, कि भगवान मुझे उस कुकर्म की सज़ा दे रहे हैं जो मैंने तुम्हारे प्रति किया था।"

"अब तुम क्या सोच रहे हो?" दार्या ने पूछा।

"अब मैं क्या कर सकता हूं? मेरा अपना यही कुछ है जो तुम्हारे सामने है। अपने वसीयतनामे में एल्सा ने फ़ार्म अपनी बेटी ऐनी के नाम लिख दिया है। वह शादी-शुदा है। उसके दो बेटे हैं। लेकिन वे मेरे नाती नहीं हैं। उसका पति भी मेरा दामाद नहीं है। वह बुरा आदमी नहीं है, लेकिन कमसमझ है। जिस दिन मैंने फ़ार्म को छोड़ा और फ़ार्म उसके संचालन में हुआ कि वह धूल में मिल जायेगा। एल्सा जानती है कि मेरे लिए फ़ार्म सब कुछ है। सो एल्सा ने अपनी वसीयत में लिख दिया है कि अगर ऐनी चाहे कि कोई दूसरा आदमी उसके लिए फ़ार्म का संचालन करे तो उसे सारी ज़मीन-जायदाद का तीसरा हिस्सा मुझे देना होगा। लेकिन ऐनी ऐसा कभी नहीं करेगी। ऐनी, बेवकूफ़ नहीं है। वह जानती है कि मेरे बिना फ़ार्म नहीं रहेगा, ऐनी स्वयं नहीं रहेगी। अपनी मां की भांति वह भी मुझे फ़ार्म पर एक तरह का सम्मानित खेत-मजदूर बनाकर रखना चाहेगी।"

उसने गहरी सांस ली जो कराहने से मिलती जुलती थी।

"काश कि मैं वह फ़ार्म एल्सा से ख़रीद सकू ... उसे ख़रीदूं और किसी दूसरे आदमी के हाथ बेच दूं।"

"किस लिए? यह तुम्हें क्योंकर करना चाहिए?" दार्या स्तेपानोव्ना ने हैरान होकर पूछा।

"मैं बताता हूं क्यों। उस हालत में एल्सा के पास कोई घर नहीं रहेगा जिससे उसे प्यार हो। कोई ऐसा बाग़ नहीं रहेगा, जिससे उसे लगाव हो। कोई तालाब नहीं रहेगा, कुछ भी नहीं रहेगा। उसे किराये पर फ़्लैट लेकर रहना पड़ेगा और वह किसी दूसरे के घर में मरेगी।"

"और तुम्हारा क्या बनेगा?"

"मेरा? मैं डेनमार्क चला जाऊंगा या पुण्य-भूमि को निकल जाऊंगा। स्थानों का कोई अन्त थोड़े ही है..."

"शायद रूस?"

"शायद। मैंने यहां पर किसी को क़त्ल तो नहीं किया था। आपकी सरकार की नज़रों में मैं पापी नहीं हूं। जहां तक विचारों का सवाल है, कि मैं उस तरह से नहीं सोच सकता जिस तरह से तुम सब लोग सोचते हो, तो मैं तो कहूंगा कि अनाज-घर के चौकीदार के लिए यह दसवें दर्जे का सवाल है।"

"तुम्हारा भाग्य खोटा निकला, मिस्टर सम्मानित खेत-मजदूर। लेकिन तुमने ही उसे ऐसा बनाया था। तुम्हीं अब भी उसके कर्ता-धर्ता हो। यह दर्दभरी कहानी सुनाकर तुम चाहते हो कि मेरी आंखों में आंसू भर आयें। तुम चाहोगे कि मैं तुम्हें क्षमा कर दूं। लेकिन यह मेरे क्षमा करने का सवाल नहीं है। क्या केवल मेरे साथ ही तुमने अन्याय किया है? ज़रा दिल से पूछो तो। अपने दिल को टटोलकर तो देखो कि क्या इस धरती के प्रति तुम्हारे दिल में अपराध की भावना है या नहीं?"

दार्या बेंच पर से उठी और तनकर खड़ी हो गयी। उसकी आंखें खेतों और जंगलों के विस्तार को, क्षितिज पर उभरती हुई पर्वतमाला को और दूरवर्ती फ़ैक्टरियों में से उठती हुई धुएं की शिखाओं को निहारने लगीं।

"अगर तुम्हारे हृदय में अनुताप की भावना नहीं है, एक ऐसी भावना जो तुम्हें स्वयं जीवन से भी अधिक प्यारी होनी चाहिए, तो दुःख-दर्द की यह दास्तान जो तुम मेरे सामने कहते रहे हो, यह मात्र भावुक कहानी है, अपने पर तरस खाने का एक बहाना है, इससे अधिक कुछ नहीं है।"

"लेकिन अगर यह सच हो तो? अगर मैं यहां रहना चाहूं, तो? तब तुम क्या कहोगी?"

"इसमें 'अगर' बहुत हैं।"

"तुम हां या न भी तो नहीं कहती हो!"

"यह तो दीवार के साथ माथा फोड़ने वाली बात है। अगर तुमने सावधानी नहीं बरती तो बूढ़ा द्यागिलेव क़ब्र में छटपटाने लगेगा। क्या तुम उसकी आहोपुकार नहीं सुनते? —'और मेरा क्या हुआ? उस सोने का क्या हुआ जो तुम धोखे से मुझ से ले गये थे, ख़ुदा तुम्हें ग़ारत करे ...' यह इतना आसान नहीं है—'अगर मैं यहां रहना चाहूं, तो?' मैं तो सोच भी नही सकती कि तुम अपनी जन्म-भूमि में रहोगे, मैं तो कल्पना में भी तुम्हें यहां नहीं देख सकती।"

"और धरती के नीचे?"

"तुम जैसे लोग अपने वक़्त से पहले वहां नहीं पहुंचते। भले ही वे जिन्दगी में कुछ न करें, और उनसे बदबू आती रहे, लेकिन वे इतने ज़िद्दी होते हैं कि जहां तक हो सके जिन्दगी से चिपटे रहते हैं। फ़ार्म को ख़रीदना और फिर किसी दूसरे के हाथ उसे बेच देना ... तुम्हें शर्म आनी चाहिए! फ़ार्म तुम्हारा हो या न हो, तुम उसे अपने साथ क़ब्र में तो नहीं ले जा सकते। एल्सा के प्रति तुम्हारे दिल में इतना द्वेष क्यों होना चाहिए? क्या इसलिए कि उसके दिल में तुम्हारे लिये प्रेम था? क्या इसलिए कि उसने फंदे की रस्सी को इस डर से नहीं छोड़ा कि कहीं घोड़ा हाथ से न निकल जाय... वह बूढ़ी औरत है। उसे समझना चाहिए ... शरीर भले ही मर चुका हो पर दिल अभी भी धड़क रहा है। आगे की ओर देखो, पीछे मुड़ मुड़कर नहीं देखो। जो मर गये हैं वे नहीं चाहते कि लोग मुड़ मुड़कर उनकी ओर देखें।"

वे चुप-चाप चलते रहे। दोनों अपने अपने विचारों में खोये हुए थे। विदा होते समय दार्या ने कहा—

"कम से कम इनसानों की तरह यहां से जाने की कोशिश करो। हम सब का तुमसे केवल यही अनुरोध है।"

त्रोफ़ीम लेनीवी टीले की ओर जाने लगा, और दार्या अपने विधवा

के घर की ओर। जो कुछ वह त्रोफ़ीम से कहना चाहती थी, उसने कह दिया था, और अब त्रोफ़ीम से फिर मिलने का कोई प्रयोजन नहीं रह गया था।

जब ये विचार दार्या के मन में उठ रहे थे उस समय सूर्य धीरे धीरे अस्त हो रहा था। हम चाहेंगे कि सूर्य जंगल के पीछे छिप जाय और उसके बाद हम गांव के मेहमान-घर की राह लें।

४४

उस शाम त्रोफ़ीम ने इतनी ज़्यादा शराब पी ली कि नशे में चूर हो गया। वह एक लिटर वोद्का शराब और एक सुराही ब्लैक करेंट ब्रैंडी पी गया। न तो टेनर ने और न ही तुदोयेव पति-पत्नी ने उसे कभी इस स्थिति में देखा था।

त्रोफ़ीम एल्सा को गालियां दे रहा था। जब उसे कमरे में बन्द करके बाहर से ताला लगाने की कोशिश की गयी तो उसने चौखटे समेत दरवाज़े को तोड़ डाला। उसकी ज़बान लड़खड़ाने लगी, लेकिन टांगें मज़बूती से खड़ी रहीं।

उसे शान्त करने के लिए टेनर से जो बन पड़ा उसने किया। टेनर उससे अंग्रेज़ी में बात करता तो जवाब में त्रोफ़ीम उसे रूसी में गालियां निकालता, उसे चिच्चड़ कहकर बुलाता जो उसके शरीर से चिपटा, डालरों की ख़ातिर उसका ख़ून चूस रहा था।

अन्त में त्रोफ़ीम ने सिर पर से टोपी उतारी और एक पुराना क्रान्तिकारी गीत गाने लगा—

"ख़तरे की आंधियां ..."

तुदोयेवा प्योत्र तेरेन्त्येविच को टेलीफ़ोन करने लगी, लेकिन त्रोफ़ीम उस वक़्त तक गांव में पहुंच चुका था, और चिल्ला चिल्लाकर गीत के शब्द बोल रहा था। एकमात्र मिलिशिया-सिपाही, जो रहता तो बख़्रूशी में था लेकिन काम वहां नहीं करता था, असमंजस में पड़ गया।

एक ओर तो स्पष्टतः शान्ति भंग की गयी थी। दूसरी ओर — विदेशी नागरिक, जिसका वीज़ा अभी तक ख़त्म नहीं हुआ था। और वह गा भी कोई ऐसी वैसी धुन नहीं रहा था, बल्कि एक अच्छा गीत गा रहा था, हालांकि सुर को कहीं कहीं गड़बड़ा देता था।

"मैंने फ़ैसला कर लिया है! हां, फ़ैसला कर लिया है!" बख़्रूशिन गृह के बाहर त्रोफ़ीम ने चिल्लाकर कहा। "मैं बख़्रूशी में रहूंगा। आओ घर बांट लें। तुम घर का जो हिस्सा चाहो, अपने लिए चुन लो। मुझे कोई परवाह नहीं है। कुछ भी कहो। मैं वहीं मरना चाहता हूं जहां पैदा हुआ था। कोई ऐसा सोवियत क़ानून नहीं है कि जहां दो बेटे मौजूद हों, वहां एक बेटे को घर मिल जाय। मैं तेरेन्ती बख़्रूशिन का सगा बेटा हूं। श्वेत गार्डों ने मेरा उल्लू बनाया ... मुझे एक काग़ज़ दो, मैं सामूहिक फ़ार्म के नाम अर्ज़ी लिखना चाहता हूं ..."

उसके साथ तर्क करने का कोई लाभ नहीं था। इसके अतिरिक्त, एक छोटी-सी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। प्योत्र तेरेन्त्येविच बाहर निकल आया, और उसे बाजू से पकड़कर घर के अन्दर ले गया।

"अच्छी बात है, आओ, घर बांट लेते हैं। मुझे कोई एतराज़ नहीं है। अगर कहोगे तो आरी के साथ इसके दो हिस्से कर लेंगे। अब चलो, थोड़ी देर सो लें। देखो, जल्दी पौ फूटेगी।"

"मुझे काग़ज़ दो, प्योत्र, मैं दरख़्वास्त लिखना चाहता हूं," त्रोफ़ीम ने आग्रह किया। "यहां मेरे पास सेर्गेई है, वहां मेरे पास कोई भी नहीं... मैं वहां निपट अकेला हूं। एल्सा मेरे लिए कोई नहीं। उसने मेरा सारा ख़ून चूस लिया है। और अब मैं ख़ाली बोतल की तरह और ज़्यादा जीना नहीं चाहता। मेरा एक नातिन है, सेर्गेई ... वह मुझसे प्रेम करता है। उसे बूढ़ी पाइक-मछली पर भी रहम आ गया था... मुझे काग़ज़ दो।"

बड़ी मुश्किल से त्रोफ़ीम को बिस्तर पर लिटाया गया। देर तक वह अपनी क़िस्मत पर आंसू बहाता और एल्सा को गालियां देता रहा।

प्योत्र तेरेन्त्येविच, येलेना सेर्गेयेव्ना और टेनर, जो भागता हुआ आया था, आधी रात तक नहीं सो पाये। आख़िर त्रोफ़ीम को झपकी

आ गयी। पर वह गहरी नींद नहीं सो पाया। बार बार उसकी नींद टूटती रही, और वह सपनों में गालियां बकता और सेर्गेई को बुलाता रहा।

सुबह वह प्योत्र तेरेन्त्येविच से पहले जग गया, और मेमने की तरह विनीत महसूस करने लगा।

"मुझे बड़ा अफ़सोस है, प्योत्र, मैंने बेवकूफ़ों की तरह व्यवहार किया।" भाई से मिलने पर वह बोला। "मैं पिये हुए था। पर मुझे एक एक बात याद है।" उसने सिर उठाकर धुंधली आंखों से देखा। "मैंने बख़्रूशी में रहने का निश्चय कर लिया है।"

"पर यह एक गांव छोड़कर दूसरे गांव में बस जाने जैसी बात नहीं है ..."

"जानता हूं। पर मेरी यही इच्छा है... आख़िर तो यह मेरा वतन है, और मेरा नातिन सेर्गेई यहां पर है। सारे संसार में मेरा और कोई नहीं है। मैं यहीं पर रहूंगा और बस। मुझे जबरदस्ती तो मेरे गांव में से नहीं निकाला जा सकता, क्यों?"

लगता था जैसे उसने दृढ़ निश्चय कर लिया हो, लेकिन प्योत्र तेरेन्त्येविच को यक़ीन नहीं हो रहा था।

"तुम्हारे फ़ार्म का क्या बनेगा?" उसने कुरेदते हुए पूछा।

"मेरा कोई फ़ार्म नहीं है। मेरा कुछ भी नहीं है। दार्या जानती है। उससे पूछ लो। मेरा सर्वस्व यहीं पर है। केवल मरा हुआ आदमी ही पश्चात्ताप नहीं कर सकता। पर मैं अभी पूरी तरह से मरा नहीं हूं।"

"लेकिन तुम यहां पर करोगे क्या?"

"अनाज-घर में चौकीदार की नौकरी करूंगा।"

"बेवकूफ़ों की सी बातें नहीं करो," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने रुखाई से कहा, "मुझे तुमपर विश्वास नहीं है। तुम बहुत चिल्लाते और हाथ-पांव पटकते हो, मानो तुम लोगों को आश्चर्यचकित करके उनपर मेहरबानी करना चाहते हो। उनके हितैषी की भूमिका अदा करते फिरते हो। एक तो यह बात है। दूसरे यह कि तुम अपने विचार बदलने से

डरते हो, इस लिए तुम खुल्लमखुल्ला अपनी नाव फूंक रहे हो ताकि तुम्हें लौटना नहीं पड़े। जादू-टोना करनेवाला अपने जादूगरी में भले ही यक़ीन करता हो लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि उसमें कोई सचाई है।"

"विश्वास करनेवाला प्राणी ही भाग्यवान होता है। मैंने पक्का निश्चय कर लिया है।"

"कितनी देर के लिए? तुम्हारा तन-मन वहीं पर, अपनी मांद में है। हमारी धरती पर तुम्हारे पैर की छोटी उंगली भी नही खड़ी है। हफ़्ता बीतने की देर है कि तुम्हें फिर से तुम्हारा फ़ार्म बुलाने लगेगा। सम्पत्ति-भावना। तुम ज़िन्दगी-भर के लिए उसके ग़ुलाम बन चुके हो। तुम केवल अपने लिए जीते हो, और बाक़ी सारी दुनिया को तुम बूट की नोक पर लिखते हो।"

प्योत्र तेरेन्त्येविच ने अपना कोट पहना, मछली डालकर तैयार की हुई कचौड़ी काग़ज़ में लपेटकर जेब में डाली और बाहर निकल गया। छोटे फाटक की चिटख़नी की आवाज़ आयी, और त्रोफ़ीम ने येलेना सेर्गेयेव्ना को सम्बोधन किया जिसने इस वार्तालाप के दौरान एक शब्द भी मुंह से नहीं निकाला था।

"इस बात का कोई मतलब नहीं है कि फ़ार्म मेरा नहीं है। फिर भी मैं उसका मुखिया हूं, मैं न रहूं तो फ़ार्म एक लाश के समान रह जाता है। एल्सा भी फ़ार्म की मालकिन नहीं है। फ़ार्म रबर के पुराने टायर की भांति फट सकता है। बहुत-से फ़ार्म फट चुके हैं और मैंने उन्हें अपने संचालन में ले लिया है। यही बात हमारे फ़ार्म के साथ भी हो सकती है। एक तीखा मोड़ और सब कुछ खड्ड में जा गिरेगा। मैं इन बातों को प्योत्र से बेहतर जानता हूं... लोगों के पास बस, तन के कपड़े-भर बच रहते हैं। क्योंकि वे सभी लोग अपना बहुत कुछ एक दांव पर लगा देते हैं, और दुर्दिन के लिये कुछ भी बचाकर नहीं रखते। अगर किसी फ़ार्मर का दीवाला बोल जाय तो क़र्ज़ चुकाने के लिए उसके दो डालर के कुत्ते को भी बेच डालेंगे। कुत्ता भी फ़ार्मर की कार्यवाहक पूंजी में शामिल होता है। बड़ी हास्यजनक बात है, लेकिन जब मेरे

पड़ोसी, ग्राइवर टुड का दीवाला निकला, उसे अपना कुत्ता तक दे देना पड़ा था। असल कोल्ली नस्ल का कुत्ता था वह। वह किकियाता, मेरे घर में नहीं रहना चाहता था। लेकिन टुड के क़र्ज़ चुकाने के लिए उसे भी बेच दिया गया था। बीस डालर में नीलाम हुग्रा। मैंने उसे ख़रीद लिया था। छोटी उम्र का कुत्ता था। पर वह मर गया। टुड के बेटे के विछोह में मर गया। इसी तरह से शायद मेरी भी मौत होगी।"

"छोड़ो, छोड़ो, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच," येलेना सेर्गेयेव्ना ने कहा। "ग्रादमी इस तरह एकदम ही तो भिखारी नहीं बन जाता।"

"ग्रमेरिका में केवल ऐसे ही बनता है। ग्राप वहां केवल करारे पर ही जी सकते हैं ग्रौर होड़ कर सकते हैं। ग्रगर ग्रापका सूग्रर मोटा होने में ग्रापके प्रतिस्पर्द्धी के सूग्रर से कुछ पौण्ड या कुछेक दिन पीछे रह गया है, तो इसी में ग्रापकी तबाही है। लखपती भी दमड़ियां गिनते हैं। मैंने लाखों का नुक़सान होते देखा है, क्योंकि लोगों ने ग्रपनी दमड़ियों का ख़्याल नहीं रखा। जब पीछे बचत की पूंजी का कोई सहारा न हो तो एक छोटी-सी भूल का क्या मतलब हो सकता है, मैं जानता हूं। बिज़नेस में एक एक सेंट लगा होता है। हर साल मैं खाई को फांदकर पार करता हूं। ग्रौर हर साल ही डरता रहता हूं कि कहीं इंच-भर पीछे रहने के कारण उसे पाटने में ग्रसफल न रह जाऊं। इस समय भी, यहां पर बैठे हुए, मैं ग्रपनी छलांगों में से एक छलांग लगा रहा हूं। मैं नहीं जानता कि मण्डी मुझे यह छलांग लगाने देगी या नहीं। ग्रौर लोगों के लिए छलांगें लगाने ग्रौर ग्रपनी ज़िन्दगी छोटी करने से मैं तंग ग्रा गया हूं। लेकिन मैं विवश हूं। वहां के जीवन में या तो ख़ुश-क़िस्मत छलांगें हैं या ग्रौंधे मुंह गिरना। एक इंच... ग्राप लोग नहीं जानते कि एक इंच का क्या मतलब है..."

त्रोफ़ीम की बातों को येलेना सेर्गेयेव्ना बहुत कम समझ पा रही थी, लेकिन कोई ग्रसंगत टिप्पणी करने के डर से उसने चुप रहना बेहतर समझा। जहां तक त्रोफ़ीम का सम्बन्ध है, येलेना सेर्गेयेव्ना को कुछ भी नहीं कहना था, क्योंकि वह ग्रपने से बातें कर रहा था, दो परस्पर-विरोधी त्रोफ़ीमों के बीच मामला साफ़ कर रहा था। एक त्रोफ़ीम बुरी

तरह से परास्त हुआ था और निःशक्त पड़ा था, हालांकि अभी भी उसकी सांस चल रही थी। दूसरा उसे ख़त्म कर रहा था ताकि वह फिर कभी भी सिर नहीं उठा पाय और उसका मख़ौल नहीं उड़ा सके।'

जिस स्थिति में से इस समय त्रोफ़ीम गुज़र रहा था, वह उस स्थिति से कहीं अधिक विकट थी जिसमें उसने प्रावोस्लाव मत का त्याग करके मोलोकान मत अपनाया था। अब तो उसे सचमुच अपनी नाव फूंकनी पड़ रही थी। और उसे आग अच्छी तरह से पकड़ नहीं पा रही थी। आग की लौ को पंखा करने की ज़रूरत थी। आधा गिलास वोद्का शराब और उसके बाद मछली की कचौड़ी से उसने पिछली रात के नशे को दूर करने का निश्चय किया। उसके बाद फिर शिकवा-शिकायत करने लगा—

"प्योत्र और अन्य लोगों को कोई चिन्ता नहीं। उनका कभी भी दीवाला नहीं निकल सकता। अगर फ़सल ख़राब निकले या सूअरों में कोई बीमारी फूट पड़े तो क्या? सलोतरियों की यहां भीड़ लग जायेगी। फिर तुम्हें उधार और जाने क्या क्या दिये जायेंगे। प्योत्र मित्यागिन चरागाह में सौ या दो सौ कुन्दों के अध-बने घर तैयार कर के अच्छे दामों बेच सकता है। मेरे वहां भी जंगल का टुकड़ा है। लेकिन उनमें से एक पेड़ भी मेरा नहीं है। एक एक को गिन लिया गया है और उसे गिरवी रखकर पैसे वसूल कर लिये गये हैं। और उस सारी की सारी रक़म से डकारती गायें और मुटियाते सूअर ख़रीदे गये हैं—आख़िरी सेंट तक खेल में लगाना पड़ता है। तुम बैंक के ख़िलाफ़ खेलते हो, बाज़ार ही बैंक है। और हर साल पतझड़ के मौसम में शेयर-बाज़ार तुम्हें बता देता है कि तुम अगली छलांग के लिए तैयारी कर सकते हो या तुम्हें अपने को ज़िन्दा दफ़नाना होगा। हर साल मुझे डर लगा रहता है कि सारा खेल ख़त्म न हो जाय। अगर मैं बचकर निकल भी जाऊं तो मुनाफ़ों से मुझे कोई ख़ुशी नहीं होती। हर डालर को फ़ार्म निगल जाता है। उसके दांतेदार चक्कर, एक घण्टे के लिए, एक मिनट के लिए भी रुक नहीं सकते। सारा वक़्त तुम्हें मशीन को बेहतर बनाना, अतिरिक्त काम करनेवालों, अतिरिक्त खानेवालों को हटाते रहना पड़ता है। अगर

तुम ऐसा नहीं करोगे तो वे अतिरिक्त खानेवाले ही तुम्हारा घर-बाहर खेंच खायेंगे।"

इन सारी बातों को सुनते हुए येलेना सेर्गेयेव्ना को जैसे उबकाई-सी आने लगी। उसने चाय के कुछेक घूंट भरे जो ठण्डी पड़ गयी थी, और इस विश्वास के साथ आराम से बैठ गयी कि अभी और सुनने को मिलेगा और त्रोफ़ीम दोपहर तक यहीं आसन जमायेगा। लेकिन त्रोफ़ीम उठ खड़ा हुआ और खड़े खड़े ही अपनी कहानी समाप्त की।

"और अगर तुम्हें अपने कामगार पर रहम आने लगे – भले ही वह तुम्हारा सह-धर्मी, मोलोकान मत का माननेवाला ही क्यों न हो – और उसे हटाकर तुम उसकी जगह नयी मशीन को नहीं रखते, जैसे तुम्हारे पड़ोसियों और प्रतिस्पर्द्धियों ने किया है, तो पतझड़ का मौसम आने पर जब तुम अपने मुनाफ़ों का हिसाब लगाने लगोगे तो मिस्टर बाज़ार तुम्हें क्षमा नहीं करेगा।"

त्रोफ़ीम ने सिर पर टोपी रखी और जाने को हुआ। लेकिन उसे अपना भाषण समाप्त करना था। और इसे उसने इन शब्दों से समाप्त किया –

"वहां सीमित मुनाफ़ों से सन्तुष्ट रहने की कोशिश करते हुए तुम एक शरीफ़ जोंक नहीं बने रह सकते। जिन लोगों को रहम की बीमारी है वे बरबाद हो जाते हैं। भाड़ में जाय यह सारा तमाशा! मैं किसी दूसरे के छकड़े का बड़ा पहिया होने के बजाय, ठोस जमीन पर सुख से रहनेवाला अनाज-घर का चौकीदार बनना ज़्यादा पसन्द करूंगा... मैं बख़्रूशी में ही रहूंगा।"

दुलकी चाल से त्रोफ़ीम घर में से बाहर भाग गया। बाहर पहुंचकर वह खड़ा हो गया और सोचने लगा कि वह दार्या के पास जाकर उसे अपने निश्चय के बारे में बताये या नहीं। दोबारा विचार करने पर उसने निश्चय किया कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, और बड़ी सड़क पर चलने लगा, इस विचार से कि किसी राहजाती मोटर को इशारा करके शहर तक उसमें चला जायेगा। अपने अमरीकी फ़ार्म पर न लौटने के अपने अटल निश्चय की घोषणा बख़्रूशी में तो नहीं की जा सकती थी!

४५

बख़्तूशी में त्रोफ़ीम के अप्रत्याशित आगमन से लोग इतने उत्तेजित नहीं हुए थे जितने इस सूचना से कि त्रोफ़ीम बख़्तूशी में ही सदा के लिए रह जाने का इरादा रखता है। संभवतः इसका कारण यह था कि अमेरिका में खेतीबारी की सुविधाओं का इतना अधिक गुण-गान करने के बाद इस विस्मयजनक निश्चय के लिए लोग बिल्कुल तैयार नहीं थे। अलबत्ता, लोगों को इस बात की आशा हो सकती थी कि एक बार अमेरिका लौट जाने के बाद–टेनर के विपरीत–वह उस सारे आतिथ्य और सम्मान को भूल जायेगा जो उसे यहां पर मिला था। उसे वे सब बातें भूल जायेंगी जिनकी उसने बख़्तूशी में प्रशंसा की थी, और केवल सामूहिक फ़ार्म के जीवन की केवल अभागी त्रुटियों को याद रखेगा, और उनसे वह पूरा पूरा फ़ाइदा उठायेगा। कीचड़ उछालनेवाले किसी प्रचारक को इन्टर्व्यू देते हुए त्रोफ़ीम–जिसकी पैदाइश रूस में हुई थी और इस लिए जिसके साक्ष्य को विश्वसनीय माना जा सकता था–एक चापलूस पाखण्डी के कपटपूर्ण लेकिन बाहर से पवित्र लगनेवाले अनुताप के साथ अपने जन्म के गांव की बदनामी करेगा। यहां तक कि वह शायद उस कम्युनिस्ट दासता और कमर-तोड़ परिश्रम पर आंसू बहाये, जिसमें उसका भाई प्योत्र और भूतपूर्व पत्नी दार्या रह रहे थे–दार्या तो जैसे जीवन-भर के लिए गोशाला से बन्धी थी और उसे जीवन का कोई भी सुख नसीब नहीं हुआ था।

अगर इनसान चाहे तो हर चीज़ की निन्दा कर सकता है, हर चीज़ पर आपत्ति कर सकता है। त्रोफ़ीम को यह कहने से कौन रोक सकता था कि प्योत्र के पास छाल के वैसे ही जूतों का जोड़ा था, जैसे पुराने ज़माने में ग़रीब किसान रूस में पहना करते थे! उसने यह जोड़ा अपनी आंखों से प्योत्र के घर में देखा था, ड्योढ़ी में एक कील के साथ लटक रहा था। इसे साबित करने के लिए वह एक फ़ोटो भी पेश कर सकता था। यह किसी को नहीं सूझेगा कि छाल के वे जूते वास्तव में प्योत्र के बाप के थे, जिन्हें वह अपने लड़कपन के दिनों में

पहना करता था जब वह फ़ैक्टरी में मौसमी मज़दूर की हैसीयत से काम करता था, और प्योत्र उन्हें याद्दाश्त के लिए रखे हुए था।

अमेरिका में कौन इस बात का अनुमान लगायेगा कि प्योत्र तेरेन्त्येविच अपने घर को और साथवाले दो घरों को पुरानी जीवन-पद्धति की प्रदर्शनीय वस्तुओं के संग्रहालय के रूप में रखने का इरादा रखता था, जब कि येलेना सेर्गेयेव्ना को भी अभी तक इसके बारे में मालूम नहीं था। इसी से पता चल जाता था कि उसने दीवारों पर से पुराने बेंच क्यों नहीं उतारे थे और अपने गांव से तथा आस-पास के गांवों से पुराना घरेलू कूड़ा-करकट क्यों इकट्ठा करके अटारी में ढेर लगाता जा रहा था। यहां तक कि वहां पुरानी दुनिया के देव-चित्र भी थे जिन्हें उसने बड़ी सावधानी से सन्दूक़ में बन्द कर रखा था।

यह कहने के लिए अच्छा बहाना मिल जाता था कि "देखो, यह है कम्युनिस्ट प्योत्र बख़्रूशिन का असली रूप!" अब साबित करने की कोशिश करो – अगर कर सकते हो तो – कि यह सब संग्रहालय बनाने के नेक इरादे से किया गया था।

उस ज़बान से ज़्यादा ख़तरनाक कोई चीज़ नहीं जो असरदार और दिखावटी ढंग से लोगों की निंदा करने की क्षमता रखती है। और त्रोफ़ीम से ठीक इसी बात की आशा की जा सकती थी, जिसकी अस्थिरता उसके चरित्र की एक विशेषता ही नहीं थी, बल्कि जीने का एक ढंग थी।

सुबह के वक़्त उसने दुदोरोव को "चाभीवाला खिलौना" का नाम दिया था, और शाम के वक़्त तुदोयेवा के सामने उसकी प्रशंसा करते हुए उसे "भविष्य का पैग़म्बर" कहकर पुकारा था। सूअर-पालक पान्तेलेई दोरोख़ोव जिसे "प्योत्र के मनोविनोद के लिए सूअर की ख़ाली नांद" का नाम दिया गया था, दूसरे ही दिन "जादूगर" बन गया था, और उसके अगले ही दिन उसकी तुलना झूठी खुम्भी से की गयी थी, जो "देखने में ठीक लेकिन ज़ायक़े में ग़लत" थी।

लेकिन किसी ने भी यह नहीं सोचा था कि त्रोफ़ीम ऐसा उल्टा रुख़ पकड़ेगा, और ऐसे महत्त्वपूर्ण सवाल पर। पर उसने ऐसा ही किया। अपने फ़ार्म के जीवन को बुरा-भला कहते हुए और पूंजीवादी प्रणाली के

सड़े-गले फोड़े-फुन्सियों की चर्चा करते हुए हर किसी ने त्रोफ़ीम को सुना था। और ऐसा वह सही और मुनासिब तौर पर करता था, हालांकि राजनीतिक दृष्टि से वह जाहिल आदमी था।

"लगता है जैसे उसकी आंखें खुल गयी हैं," तुदोयेव ने कहा। "कड़वे अनुभव से उसने जान लिया है कि अपने फ़ार्म पर वह मालिक नहीं है, बल्कि गुलाम है, और अमरीकी, जमीन के असली मालिक, मिस्टर पूंजी ने स्वामित्व का स्वांग भरने की इसे इजाजत दे रखी है।"

अपने बूढ़े हमजोलियों के सामने तुदोयेव पूंजीवादी देशों के बारे में अपने विचारों को देर से व्यक्त कर रहा था।

"अगर कोई ऐसी जगह है जहां स्वामित्व सबसे ज़्यादा लड़खड़ा रहा है तो उन देशों में जहां स्थिर निजी सम्पत्ति को सबसे पवित्र माना गया है। क़ानून तो स्थिर है पर सम्पत्ति अस्थिर। यही कारण है कि वहां प्रत्येक अमीर आदमी को सोते समय यह डर लगा रहता है कि कहीं उठने पर वह भिखारी न बन चुका हो।" त्रोफ़ीम के शब्दों को दोहराते हुए उसने कहा।

सूअर-पालक ने, जिसे त्रोफ़ीम के बारे में उसके बेटे ने बताया था मन ही मन फ़ैसला किया—"इसका मतलब है कि वह किसी विशेष गुप्त उद्देश्य के लिये यहां भेजा गया है।" उसने त्रोफ़ीम के ईमानदार इरादों में विश्वास करने से इन्कार कर दिया। उसकी दृष्टि में मिस्टर त्रोफ़ीम केवल एक भेड़िया था, इससे अधिक कुछ नहीं।

यही राय तुदोयेवा की भी थी। दार्या स्तेपानोव्ना के साथ वार्तालाप करते हुए, उसने इस विषय की बड़ी सावधानी और शिष्टता से चर्चा की—

"लड़की, जितना कम इस बारे में सोचोगी, उतना अच्छा। बेशक जो कुछ वह तुम्हारे लिए है, वह और लोगों के लिए तो नहीं है। वह मर चुका है, पर दफ़नाया नहीं गया। अगर मैं त्रोफ़ीम को समझ पायी हूं तो थोड़ा-बहुत वह और रोब गांठेगा, और इसके बाद, अपना खिलवाड़ कर चुकने पर, वह जहां से आया है, वहीं लौट जायेगा।"

"वह रोब क्यों गांठना चाहेगा भला? तुम नहीं जानती हो कि उसने

कैसा जीवन बिताया है। क़ब्र के पास उसने मुझे सब कुछ बता दिया था। येलेना को उसने और भी अधिक विस्तार के साथ बताया है। मैं येलेना से मिली हूं। उसने मुझे बताया कि यह आदमी राजनीतिक मामलों में टांग अड़ाने लगा है। त्रोफ़ीम ने कहा कि वहां जिन्दगी नहीं, क़रारे पर नाचना है। जिस तरह उसने पूंजीवाद का भण्डाफोड़ किया है, चाहिये था कि उससे रेडियो पर भाषण करवाते। अन्दर ही अन्दर कोई चीज़ उसे कचोटती रही होगी। वह अपने साथ तर्क करता रहा है। शायद वह दुदोरोव के साथ केवल इसलिए बहस करता रहा कि वह हमारे जीवन को समझना चाहता था... और फिर वह फोड़ा, जो अन्दर ही अन्दर सड़ रहा था, फट पड़ा और त्रोफ़ीम की इच्छा हुई कि हमारे सामने और अपने अन्तःकरण के सामने अपने दोष से छुटकारा पाय।"

दुदोयेवा ने सिर हिलाया लेकिन अपना प्रतिरोध जारी रखा—

"तुम बच्ची हो, दार्या। त्रोफ़ीम यहां पर करेगा क्या? जरा सोचो तो। क्या तुम सचमुच मानती हो कि वह अनाज-घर या अस्तबल का चौकीदार बनकर रहेगा? पेनशन पाने की उम्र है उसकी। और कौन उसे पेनशन देगा? किस लिए देगा? उसके फ़ार्म के लिये? इसका मतलब है कि उसे काम करना पड़ेगा। कहां काम करेगा? तुम उसे फ़ार्म के प्रबन्ध-मण्डल का सदस्य तो नहीं चुनोगी न?"

"शुरू में वह चौकीदार के तौर पर काम कर सकता है। इसमें क्या बुराई है? और अगर वह काम अच्छा करेगा तो लोग ख़ुद देख लेंगे। फिर देखा जायेगा..."

"क्या देखा जायेगा—ज़िला पार्टी-समिति का उसे सेक्रेटरी तो नहीं बनाया जायेगा?"

"हरगिज नहीं... त्रोफ़ीम का अपना रास्ता है। लड़कपन से ही ख़रीद-फ़रोख़्त करने के काम में उसका दिमाग़ चलता था। और इसमें अमेरिका ने उसे ख़ूब होशियार बना दिया है... बिक्री का काम करनेवाले हमारे कर्मचारी-मण्डल को तो तुम जानती हो... सबसे बढ़िया खीरों को सबसे कम क़ीमतों पर बेचते हैं... और फिर त्रोफ़ीम किसी भी भण्डारी को मात दे सकता है।"

तुदोयेवा मान गयी लेकिन पूरी तरह से उसे अभी भी यक़ीन नहीं हुआ था —

"मान लिया कि वह बिक्री के काम में बड़ा चुस्त है। देखने में भी बड़ा ठोस है, सिर पर टोपी, मुंह में पाइप और सफ़ाचट चेहरा। सामूहिक फ़ार्म के लिए वह दसियों लाख रूबल अतिरिक्त कमाई करेगा... वह चुकन्दर के पत्तों तक में से पैसे बनायेगा... पर तुम यह कहावत तो जानती हो न, इसे, भेड़िये को, लाख खिलाओ-पिलाओ, पर उसका मुंह सदा जंगल की ओर ही रहता है।"

"पर उसका जंगल है भी कोई?" दार्या ने कहा, "शायद उसके जंगल में से सेर्गेई नाम की केवल एक झाड़ी ही बच रही है... उसे देखते ही त्रोफ़ीम के झुरझुरी होने लगती है। उसे ख़ुश करने के लिए त्रोफ़ीम कुत्तों की तरह भूंकता है, उसकी सवारी के लिए घोड़ा बनता है..."

तुदोयेवा के नीले होंठ फुरफुराते रहे, फिर उनपर जीभ फेरकर बोली —

"तो उसे क्षमा कर देने का सोच रही हो क्या? उस सारे अन्याय को भूल जाना चाहती हो जो उसने तुम्हारे साथ किया है? उफ़, दार्या, दार्या, आख़िर तुम भी लगता है मोम की बनी हो।"

बात दार्या स्तेपानोव्ना को चुभ गयी। उसकी बायीं आंख की पलक फड़फड़ाने लगी। कुछ देर तक उसने तुदोयेवा को कोई जवाब नहीं दिया। उसने खिड़की में से बाहर झांका मानो देखना चाहती हो कि आंगन में सेर्गेई क्या कर रहा है। फिर कनपटियों पर अपने सफ़ेद बालों को सहलाकर बोली —

"मुझे तो इसमें कोई ग़लत बात नज़र नहीं आती कि त्रोफ़ीम अपने लोगों के प्रति अपनी भूल सुधार ले, और अपनी जन्म की धरती पर ज़िन्दगी के आख़िरी दिन बिताये। प्योत्र की तरह मैं भी उसकी हरेक बात का यक़ीन नहीं करती हूं लेकिन किसी बात का तो यक़ीन करना ही चाहिये... आख़िर उसके दिल में हलचल मची है। मुझसे तुम यह आशा तो नहीं करती हो कि अगर वह यहां रहना चाहे तो मैं उसे मना करने की कोशिश करूं? या उसे समझा-बुझाकर अमेरिका लौट जाने के लिए राजी कर लूं। तुम समझती हो कि नहीं?"

"हां, हां," तुदोयेवा ने निष्प्रयोजन ही बुदबुदाया और बात बदलकर जौ की फ़सल की चर्चा करने लगी; उस साल जौ की भरपूर फ़सल उतरी थी।

"हाय, कितनी देर हो गयी है," उसने सहसा चिल्लाकर कहा। "बेचारा जॉनी मेरी राह देखते देखते थक गया होगा। इस वक़्त वह आम तौर पर अपना दूसरा नाश्ता करता है—जिसे वह लंच कहता है। ताज़े नमकीन खीरे और साथ में लस्सी। चाय नहीं पीता ताकि पेट नहीं बढ़े। मुझे अब जाना चाहिए..."

वह जल्दी से निकल गयी, हालांकि वह भली-भांति जानती थी कि टेनर मेहमान-घर में उस वक़्त नहीं था।

टेनर अब जाने की तैयारी कर रहा था, और अपने निवास के अन्तिम दिनों में एक एक घड़ी से पूरा पूरा लाभ उठा रहा था। ऐन उस वक़्त वह एक युवा वास्तुकार से भेंट कर रहा था जिसने लेनीवी टीले पर बख़्रूशिनो नामक नये गांव का डिज़ाइन तैयार किया था।

वास्तुकार टेनर को सड़कों के मानचित्र और घरों के अगवाड़ों के ख़ाके दिखा रहा था। टेनर ने उन ख़ाकों के फ़ोटो ले लिये जो उसे सबसे अधिक पसन्द आये थे। यह भेंट पुराने क्लब-घर में चल रही थी जहां नये गांव के लिए डिज़ाइनों की प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी।

सामूहिक फ़ार्म की पार्टी-समिति का सेक्रेटरी, दुदोरोव भी वहीं पर था। अन्दर क़दम रखते हुए उसने टेनर का अभिवादन किया, कुछ देर हंसी-मज़ाक करता रहा, फिर बोला—

"मिस्टर टेनर, लगता है इस बात से आपको कोई परेशानी नहीं हुई कि त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच ने अमेरिका न जाने का निश्चय कर लिया है। अपनी पुस्तक के लिए आप इतने महत्त्वपूर्ण पात्र को खो रहे हैं।"

"मुझे परेशान क्यों होना चाहिए?" टेनर ने प्रतिवाद किया, "एक ही ऐसा गुण है जिसका मुझमें अभाव नहीं है, और वह है सहजबुद्धि। क्या आप सचमुच समझते हैं कि वह चौपाया अपनी पचास हज़ार डालर या इससे भी ज़्यादा की पूंजी को लात मार देगा जिसे उसने एल्सा से छिपाकर 'जेनरल मोटर्स' के हिस्सों के रूप में लगा रखा है? और क्या आप

सोचते हैं कि मेरे जैसा आदमी, जिसके सिर पर क़र्ज़ है और हजारों जिम्मेवारियां हैं, एक ऐसे आदमी के चरित्र के इर्द-गिर्द अपनी कहानी बुनेगा जिसे अमेरिका नहीं लौटना था? क्या मेरे माथे पर 'बेवकूफ़' लिखा है? आप मुझे जो नाम देना चाहें, दें—कारबारी, सट्टेबाज़, मुनाफ़ाख़ोर, कुछ भी कहें। मैं वितर्क नहीं करूंगा। शायद, ये शब्द मुझपर कमोबेश लागू होते भी हैं। लेकिन मेरा आचार-व्यवहार उस समाज से भिन्न नहीं हो सकता जिसमें मैं रहता और काम करता हूं। और मैं ऐसे नियमों के अनुसार काम करता हूं जिनका शायद मैं समर्थन नहीं करता। पर मेरी जान-पहचान आपके साथ इतनी गहरी नहीं है जितनी स्तेकोल्निकोव के साथ है। और मैं इतना श्रद्धालु और निष्कपट आदमी भी नहीं हूं जितना मैं शायद बनना चाहूंगा। कारण कि 'मेरा भगवान मेरे अन्दर है, उस तख्ते पर नहीं है जिसपर देव-चित्र रखा जाता है'। यह वाक्य उस चौपाये-भलेमानुस द्वारा प्रयोग किया गया था और अब मैं इसे अपने पर लागू करते हुए दोहरा रहा हूं, लेकिन प्रत्यक्ष अर्थ में नहीं। इस यात्रा पर निकलने से पहले मैंने उन सभी सूत्रों के बारे में पक्की तरह से मालूम कर लिया था जो इस मानवरूपी चौपाये को अमेरिका से बांधे हुए हैं। ऐसा करना मेरे लिए अनिवार्य था। मैं जोखम तो मोल नहीं ले सकता था।"

"आप उसके नातिन सेर्गेई जैसे सूत्र के बारे में क्या कहेंगे, जिस पर वह जान देता है?" दुदोरोव ने पूछा।

टेनर ने तनिक खीजकर जवाब दिया—

"मैं फिर कहूंगा, जब कोई चौपाया दो टांगों पर खड़ा हो जाय तो वह इनसान से मिलने-जुलने लगता है। हां, मिलने-जुलने लगता है। उसके दिल में अपने नातिन के प्रति प्रेम जागा है। यहां तक कि वह स्वयं मानने भी लगा है कि अब उसका सारा जीवन सेर्गेई की मुट्ठी में है। लेकिन ये भावनाएं दिल से नहीं उठी हैं, वे बाहर से आनेवाले यात्रियों जैसी हैं, ज्यों ही वे लौट जायेंगी, वह फिर अपनी चारों टांगों पर खड़ा हो जायेगा, और फिर उसे दो टांगों पर खड़ा करना मुश्किल होगा। एक चौपाये के लिए चार टांगों की मुद्रा सामान्य होती है, जबकि उसे दो टांगों पर चलते देखकर दिल को धक्का-सा लगता है, या ज़्यादा से ज़्यादा

सरकस का करतब-सा लगता है। ऐसे मैं सोचता हूं और ऐसे ही प्योत्र तेरेन्त्येविच भी सोचता है। और प्योत्र तेरेन्त्येविच ऐसा आदमी है जो अत्यन्त जटिल संगीत को भी सुन और समझ सकता है। आर्केस्ट्रा की दृष्टि से मिस्टर भेड़िये का स्वभाव हृदयहीन कर्कश ध्वनियों के समान है जिसके साथ पुरानी समावार कराह रही है और एक वायलिन पर कभी भावुक और कभी अवसादपूर्ण धुनें बज रही हैं। पर इन ध्वनियों में न तो प्योत्र तेरेन्त्येविच और न मैं, और न ही, आशा है, आप भी विश्वास करते हैं। बस, मुझे इतना ही कहना है क्योंकि मैं आप की नज़रों में, अपने एक देशवासी को इस से ज्यादा गिराना नही चाहता हूं।"

४६

इस बीच त्रोफ़ीम नगर की प्रधान सड़क – लेनिन सड़क – पर चला जा रहा था। उसने पहले से ड्यूटी पर खड़े एक मिलीशिया-सिपाही से पूछ लिया था कि विदेश से आनेवाले व्यक्ति को जो सोवियत संघ में बस जाना चाहता हो, कहां पर अपनी दरख़्वास्त देनी चाहिए। मिलीशिया-सिपाही ने, थोड़ी देर तक सोचने के बाद उसे प्रादेशिक सोवियत की कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष की ओर भेज दिया था।

इस तरह हम त्रोफ़ीम को लेनिन सड़क पर चलते हुए पाते हैं। वह चलता जा रहा था और सोचता जा रहा था कि इस पुराने नगर में, जिस से वह परिचित था, जिस में वह किसी ज़माने में रहता भी रहा था, और जिस में वह संभवतः फिर से रहने लगेगा, कैसी कैसी शानदार इमारतें उठ खड़ी हुई हैं। 'जेनरल मोटर्स' के हिस्सों में लगायी गयी सत्तावन हज़ार डालर की रक़म अच्छी ख़ासी पूंजी थी, और क़ानून के मुताबिक उसे इस रक़म से वंचित नहीं किया जा सकता था। और अगर 'जेनरल मोटर्स' के कारोबार में तेज़ी आ गयी तो उसके सत्तावन हज़ार चार सौ तेईस डालरों में कुछ लाभांशों की और रक़म भी जुड़ जायेगी। इस पूंजी से वह रूस में मज़े से रह सकेगा, काफ़ी मज़े से रह सकेगा।

वह खाद्य-सामग्री की एक दूकान के सामने रुक गया; खिड़कियों में कांच के फलक लगे थे, और अन्दर ख़रीदारों का तांता लगा हुआ था, और उसे देखते हुए त्रोफ़ीम सामूहिक फ़ार्म की उस दूकान के बारे में कल्पना के घोड़े दौड़ाने लगा जो वह खोलेगा। वह यहां अनाज-घर का चौकीदार बनकर तो, ज़ाहिर है, नहीं रहेगा! उसका यह मतलब तो सचमुच नहीं था। यह तो उसने अपने इरादों को आज़माने के लिये कह दिया था।

त्रोफ़ीम अपने विचारों पर मुग्ध हो रहा था। अपनी कल्पना में वह सामूहिक फ़ार्म की लारियों को तेज़ी से आते जाते देख रहा था। हर दो घण्टे के बाद बख़्रूशी से खाद्य-पदार्थ आते थे। ताजा गोश्त, ताजा दूध, क्यारियों से निकाली हुई सब्ज़ियां, रेफ़्रीजरेटर से क्रीम। जांघों का मांस, सूअर का मांस। धुआंधार व्यापार चल रहा है। कल्पना में उसने अपने को फ़ार्म की दूकान में टहलते हुए और ग्राहकों की बातें सुनते हुए देखा। वह बख़्रूशी से टेलीफ़ोन मिलाता है, "हल्लो, प्योत्र, क्या तुम बोल रहे हो? दो-तीन सौ पेकिंग बत्तखें भेज देना, सुना? और मुरोम खीरों के पांच पीपे भी रवाना कर देना।" – "ओ-के!" प्योत्र कहता है, और उसका दिल ख़ुशी से नाच उठता है। धन की धारा दूकान के रास्ते से सामूहिक फ़ार्म में बहती हुई जाती है, उसके एक एक कोपेक का श्रेय त्रोफ़ीम को है।

नये जीवन की अपनी योजनाओं में खोया हुआ, त्रोफ़ीम शीघ्र ही प्रादेशिक सोवियत के कार्यालय के सामने पहुंच गया। अध्यक्ष के दफ़्तर का रास्ता पूछकर वह लिफ़्ट में ऊपर गया और रिसेप्शनिस्ट के दफ़्तर में जा पहुंचा।

"मैं अमेरिका से आया हूं," सेक्रेटरी को अपना परिचय देते हुए त्रोफ़ीम ने कहा। "यह है मेरे निवास का आज्ञापत्र और यह रहा मेरा विज़िटिंग-कार्ड।"

सेक्रेटरी अध्यक्ष के दफ़्तर में चली गयी और मिनट-भर बाद आकर त्रोफ़ीम से अन्दर चलने को कहा।

"आइये, मिस्टर बख़्रूशिन," अध्यक्ष ने कहा, "प्योत्र तेरेन्त्येविच मेरे निजी मित्र हैं, और इस इलाक़े के जाने माने व्यक्ति हैं। उनके अमरीकी भाई से मिलकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। तशरीफ़ रखिये। आप किसी बात

की शिकायत करने तो नहीं आये हैं न? बख़्रूशी में किसी ने कोई गुस्ताख़ी तो नहीं की ?"

त्रोफ़ीम सेक्रेटरी से प्रधान का नाम पूछना भूल गया था, और अब सीधा उस से पूछना चूंकि अटपटा लगता था, इसलिए उसने उसे प्रधान जी कहकर बुलाने का निश्चय किया।

"नहीं, नहीं, प्रधान जी, बल्कि इसके उलट। मैं आप को किसी दूसरी ही बात के बारे में परेशान करने आया हूं।"

त्रोफ़ीम ने घूमकर चारों ओर देखा। प्रधान का निजी कार्यालय बहुत बड़ा था– प्रधान का मेज़, एक और मेज़, जिस के आस-पास बहुत-सी कुर्सियां रखी थीं। त्रोफ़ीम ने लेनिन के चित्र की ओर घबराकर देखा और कुर्सी पर बैठ गया।

"कहिये, मिस्टर बख़्रूशिन, मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूं?"

"मैं आप से यह कहने आया हूं, प्रधान जी, कि मैं बख़्रूशी में ही रहना और वहीं पर मरना चाहता हूं।"

"समझा। यह निश्चय आपने कब किया ?"

"पिछली रात।"

"इसका कारण क्या है, मिस्टर बख़्रूशिन ?"

"मैं पूंजीवाद से अपना नाता सदा के लिए तोड़ना चाहता हूं। वहां मैं बिल्कुल अकेला हूं। वहां मेरे लिए सभी अजनबी हैं। पर यहां पर मेरा नातिन है– सेर्गेई, जिस के अस्तित्व के बारे में मुझे मालूम तक नहीं था। अगर मैं 'जेनरल मोटर्स' के अपने हिस्से रूस में स्थानान्तरित करवा सकूं तो बड़ी अच्छी बात है, अगर यह नहीं हो सकता तो न सही, भाड़ में जायें वे! मैं उनके बिना भी रहूंगा। किस व्यक्ति के नाम मुझे दरख़्वास्त देनी चाहिए और दरख़्वास्त को किन शब्दों में लिखना चाहिए ?"

"जहां तक मैं जानता हूं, देश में आप के निवास के आज्ञापत्र की अवधि शीघ्र ही समाप्त हो रही है। आप की दरख़्वास्त पर विचार करने के लिए तीन-चार दिन से ज़्यादा वक़्त दरकार होगा।"

"मुझे कोई जल्दी नहीं है, प्रधान जी, मैं इन्तजार कर सकता हूं।"

जवाब में प्रधान ने नम्रता से कहा–

"लेकिन अमरीकी अधिकारी इस बारे में क्या कहेंगे?"

"मुझे परवाह नहीं कि वह क्या कहते हैं। आप कृपया मुझे इतना बतला दीजिये कि मुझे अपनी दरख़्वास्त किस के नाम लिखनी होगी, आप के नाम, प्रधान मन्त्री के नाम या प्रेज़िडेण्ट के नाम।"

"सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मण्डल के प्रधान के नाम।"

"मेहरबानी करके यह एक काग़ज़ पर लिख दीजिये। जहां तक इस बात का ताल्लुक़ है कि इस में कितनी देर लगेगी, तो इसकी आप चिन्ता नहीं कीजिये। मेरी जन्म-भूमि का जंगल आज्ञापत्र के बिना भी मुझे छिपाये रखेगा। जंगल में छिपने की यह पहली बार नहीं होगी। आप किसी आदमी को अपना देश छोड़ने के लिए मजबूर नहीं कर सकते..."

"मैं देखता हूं कि आप बड़े दृढ़ निश्चय के आदमी हैं, लेकिन एक बात के बारे में मैं आप को सावधान कर दूं– मैं आपके निश्चय को किसी तरह भी प्रभावित नहीं करना चाहता–मैं आप को सावधान कर दूं कि शायद आपकी दरख़्वास्त मंजूर नहीं की जाय..."

"*क्यों नहीं? मैं पूरी सचाई के साथ, शुद्ध हृदय से यह काम कर* रहा हूं।"

अध्यक्ष ने बड़े धैर्य और स्थिरता से समझाया–

"इस प्रकार की स्थितियां सरसरी नज़र से देखने पर भले ही बड़ी स्पष्ट जान पड़ें, पर कभी कभी अप्रत्याशित स्थितियां पैदा हो सकती हैं। मैं यह नहीं कहता कि आप के साथ ऐसी बात होगी, लेकिन मैं आप को सावधान कर देना चाहता हूं। एक आदमी अपनी जन्म-भूमि के जंगल में महीना-भर या दो महीने तक, या तीन महीने तक छिप सकता है, पर उसके बाद पतझड़ आ जाता है। और फिर सर्दी का मौसम... हम बड़ी उम्र के लोग हैं, मिस्टर बख़्रूशिन।"

"धन्यवाद, प्रधान-जी। अब मैं जान गया हूं कि मुझे क्या करना है... शुक्रिया... मुझे विश्वास है कि सोवियत संघ के नागरिक, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच बख़्रूशिन को, इस साल नहीं तो अगले साल आप से मिलकर बड़ी ख़ुशी होगी..."

"ज़रा ठहरिये। क्या आपने यह नहीं कहा था कि मैं एक काग़ज़ पर..."

"शुक्रिया। मुझे याद है। सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मण्डल के प्रधान के नाम... शुक्रिया... अगर आप का मिलीशिया मुझे शुत्योमी के जंगल में ढूंढ़ने की कोशिश करे, तो वह अपना समय बर्बाद करेगा... जवानी के दिनों में लोगों ने मेरा उपनाम 'धूसर भेड़िया' रख छोड़ा था। कुछ लोग अभी भी मुझे इसी नाम से पुकारते हैं। अपनी जन्म-भूमि में ज़िन्दगी के आख़िरी दिन बिताने के लिए जब मैं इजाज़त लेने की कोशिश कर रहा हूं तो मुझे आशा है, कि यह नाम मेरी अन्तिम सेवा तो कर देगा। और यदि प्रधान जी, इसकी इजाज़त मुझे नहीं मिलेगी तो मुझे अपनी जन्म-भूमि में दफ़नाये जाने के लिए किसी की इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं है। भगवान की भी नहीं। गुड बाई, प्रधान जी, नमस्कार!"

४७

आकाश में सूर्य काफ़ी ऊंचा पहुंच चुका था जब त्रोफ़ीम बस में से उतरा। बस-स्टाप से गांव तक का फ़ासिला एक किलोमीटर से भी कम रहा होगा। त्रोफ़ीम ने सीधा दार्या के पास जाने का निश्चय किया। टेनर से मिलने की उसे इच्छा नहीं थी। वह पहले सर्वोच्च सोवियत को लिखेगा, और बाद में इसकी घोषणा करता फिरेगा।

टेनर के माध्यम से वह एल्सा को अपना अन्तिम सन्देश और अभिशाप भेजेगा, जो उसकी ज़िन्दगी को और उसके फ़ार्म को चाट गयी थी। जहां तक हिस्सों का सवाल है, मोलोकान मत का उसका विश्वसनीय धर्म-भाई, जिस के पास वह उन्हें छोड़ आया था, उन्हें बेचकर रुपये यहां स्थानान्तरित कर देगा। इसके बदले में, त्रोफ़ीम मोलोकान-भाई को अपनी बूढ़ी पत्नी के साथ रूस लौटने और बख़्तूशी अथवा नगर में नौकरी हासिल करने में मदद कर सकता था।

पांच या छः महीने तक वह यहां रहेगा, फिर वह जल में मछली की भांति महसूस करने लगेगा। संभव है लोग उसे सामूहिक फ़ार्म के प्रबन्ध-

मण्डल के लिए भी चुन लें। उसने अपनी बेटी नदेज्दा और अन्य लोगों के मुंह से सुना था कि सोवियत सरकार मुजरिमों तक को क्षमा-दान कर देती है, यदि वे सच्चे दिल से पश्चात्ताप करें, अपने अतीत से नाता तोड़ें और अपने निष्कपट काम द्वारा उसे प्रमाणित करें। वह भी प्रमाणित करेगा। तब दार्या का दिल भी पिघल जायेगा, और सब बात पटरी पर आ जायेगी।

दार्या उसे घर के सब्ज़ी-बाग़ में मिली। छूटते ही तोफ़ीम बोला—

"मैं गवर्नर से मिला हूं। मैं सर्वोच्च सोवियत के नाम एक प्रार्थना-पत्र दाखिल कर रहा हूं। उसे लिखने में मेरी मदद करो, दार्या, ताकि वह दिल से निकला हुआ प्रार्थना-पत्र जान पड़े। ठीक ठीक शब्द ढूंढने में मेरी मदद करो।"

"अगर तुम सच्चे दिल से उसे लिखना चाहते हो तो शब्दों के लिए तुम्हें दूसरों के पास जाने की ज़रूरत नहीं है। वे स्वयं तुम्हारे दिल में से निकलने लगेंगे," दार्या ने कहा। "जाओ और सब बात जो तुम अपने देश से कहना चाहते हो, जिस से तुम क्षमा याचना कर रहे हो—प्योत्र की टाइपिस्ट साशा को लिखा दो।"

"तुम ठीक कहती हो। इस मामले में तुम्हें घसीटने की कोई ज़रूरत नहीं है। केवल मुझे डर है कि मैं मामले को उलझा दूंगा। ज़रूरत है केवल सार की बात कहने की। आदमी सारी आप-बीती तो नहीं लिखा सकता।"

"तो जैसा तुम कहते हो, केवल सार की ही बात उसे बताना।"

"पर मेरे मामले में सार की बात है कौनसी, दार्या?"

"अगर तुम्हें मालूम नहीं तो किसे मालूम है?"

"यह भी तुमने ठीक कहा। जब मैं भागा था तो मैंने किसी से सलाह नहीं मांगी थी, और अब जब मैं अपने किये पर पर्दा डालने की कोशिश कर रहा हूं, तो मददगार ढूंढने लगा हूं... नहीं, मैं ख़ुद ही करूंगा। मेरे पास ऐसे शब्द हैं जो सीधे दिल के तार छुयेंगे। अब तो मैं ख़ुद अपना सिर भी काट सकता हूं। दफ़्तर तक पहुंचने से पहले ही ठण्डा पड़ जाऊं तो दूसरी बात है।"

"यही मैं सोचती रही हूं। जानते हो, तुम तिनके की तरह हो, झट से भभककर जलने लगते हो, और झट से ही बुझकर ठण्डी राख़ बन जाते हो।"

"इसकी चिन्ता नहीं करो। मेरा मतलब शब्दों के बारे में ठण्डा पड़ने से था। शुक्रिया। दफ़्तर बन्द होने से पहले मैं वहां पहुंचना चाहता हूं..."

वह जल्दी से चला गया।

दार्या ने त्रोफ़ीम को मन में से निकालने की कोशिश की। तुदोयेवा से मिलने के बाद, दार्या ने प्योत्र तेरेन्त्येविच से इस बात की चर्चा की थी, और उसने कहा था—

"त्रोफ़ीम में विश्वास करना चाहो तो करो, लेकिन कम से कम लोगों को पता नहीं चलने दो, ताकि उसके चले जाने के बाद तुम्हें लज्जित नहीं होना पड़े।"

प्योत्र को पक्का यक़ीन था कि त्रोफ़ीम वापिस चला जायेगा। दार्या इसे स्वीकार किये बिना नहीं रह सकती थी, लेकिन अब, जब त्रोफ़ीम प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति में भी हो आया था और सर्वोच्च सोवियत के नाम प्रार्थना-पत्र लिखने जा रहा था तो दार्या के लिए शक करने का कोई कारण नहीं रह गया था।

आजीवन दार्या ने प्योत्र को सबसे निपुण व्यक्ति माना था। उसे अपनी आंखों और कानों पर शायद इतना विश्वास नहीं था जितना प्योत्र पर। पर वह ग़लती भी कर सकता था। था तो वह आख़िर इनसान ही...

दार्या को सहसा इस बात का बोध हुआ कि वह मन ही मन त्रोफ़ीम के बख़्रूशी में रह जाने की कामना कर रही थी। उसने अपने से पूछा कि वह क्यों ऐसी कामना कर रही थी। और इस सवाल का जो जवाब दार्या ने दिया, उससे उसका मन आश्वस्त हो गया।

त्रोफ़ीम के बख़्रूशी में रुक जाने के निश्चय से दार्या की शोभा नहीं बढ़ी और बढ़ी भी तो यह एक दसवें दर्जे का सवाल था न कि पहले दर्जे का। दार्या के लिए वह अजनबी था। वह जितनी देर के लिए भी यहां पर रहे, दार्या की नज़रों में वह अपने को कभी भी दोष-मुक्त नहीं कर पायेगा, भले ही वक़्त गुज़रने पर दार्या उसे क्षमा कर दे।

अतीत सो सकता है, पर मरता नहीं। वह भुलाया जा सकता है लेकिन इतनी दृढ़ता के साथ नहीं कि वह, आपकी किसी क्रियावश जग जाने पर भी कभी याद नहीं आये।

एक स्वस्थ व्यक्ति उस व्यक्ति से भिन्न होता है जिसने बीमार रह चुकने के बाद स्वास्थ्य-लाभ किया हो।

अब दार्या के मन में हर बात अपनी जगह पर आ गयी, वह फिर काम में जुट गयी और अपने नाती-पोतों के लिए ताज़ा छोटे छोटे आलू खोदकर निकालने लगी।

इस बीच त्रोफ़ीम दफ़्तर में बैठा और लोगों के चले जाने का इन्तज़ार कर रहा था; जब वे चले गये, तो टाइपिस्ट को अपनी दरख़्वास्त लिखाने लगा। दरख़्वास्त इस तरह शुरू होती थी—

"ढलती उम्र में, जन्म-भूमि से अपने बिछोड़े का असाध्य बोझ महसूस करते हुए, मैंने—संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यू-यार्क राज्य के निवासी, त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच बख़्रूशिन ने—जो इस समय अपने जन्म के गांव बख़्रूशी में रह रहा है, जीवन के अन्तिम वर्ष अपने इसी गांव में रह जाने का दृढ़ निश्चय किया है..."

दरख़्वास्त लम्बी और ब्योरेवार थी, यहां तक कि उस में अनेक अनावश्यक बातें भी थीं। इसने लिखा कि वह किस भांति लाल फ़ौजवालों से छिपकर जंगल में रहता रहा था, किस भांति उसने सोवियत सत्ता में विश्वास करने से इन्कार कर दिया था, और किस भांति वह कोल्चाक की सेना में से भाग गया था। उसने एल्सा के बारे में पूरा विवरण दिया, जिस के लिए वह आजीवन फ़ार्म का नौकर बना रहा था, साथ ही 'जेनरल मोटर्स' के हिस्सों में लगाये गये सत्तावन हज़ार डालरों का भी ज़िक्र किया जिन्हें वह, आवश्यकता पड़ने पर, रेड क्रॉस अथवा नये बख़्रूशिनो के निर्माण के लिए दान के रूप में देने के लिए तैयार था।

त्रोफ़ीम ने बताया कि उसने अपने जन्म के गांव को किस रूप में देखा और पहली बार उसे पता चला था कि उसके तीन नाती-पोते—कात्या, बोरीस और सेर्गेई तथा उनकी मां, उसकी अपनी बेटी, नदेज्दा मौजूद हैं।

टाइपिस्ट लड़की—साशा—ने दरख़्वास्त में लगभग कोई भी संशोधन नहीं किया। यहां तक कि उसने वे शब्द भी नहीं काटे जिनका प्रयोग सर्वोच्च सोवियत के नाम प्रार्थना-पत्र में किया जाना अनुचित था, ऐसे शब्द जिन में उसने ईसा मसीह के नाम पर याचना की थी कि उसे उसका

देश लौटा दिया जाय, नाना के नाते उसे अपने नाती-पोतों को देखने का अधिकार दिया जाय, और अपनी जन्म की मिट्टी में दफ़नाये जाने का अधिकार दिया जाय।

त्रोफ़ीम को टाइप किया हुआ मूल-पाठ सुनाते हुए साशा ने भी मन ही मन इस बात की सराहना की कि दर्ख़्वास्त में कहीं भी, किसी एक भी पंक्ति में त्रोफीम ने दार्या स्तेपानोव्ना का अथवा समाजवादी श्रम वीरांगना की उस उपाधि का ज़िक्र नहीं किया था जिससे दार्या सम्मानित की गयी थी, हालांकि वह जानता था कि इससे उसकी दर्ख़्वास्त पर जल्दी विचार किये जाने और शायद उसके पक्ष में फ़ैसला किये जाने में मदद मिलती थी।

देर हो चुकी थी। साशा ने कहा कि प्रार्थना-पत्र की एक साफ़ प्रति वह दूसरे दिन सुबह तैयार कर देगी। वह सुबह तड़के जाग जायेगी और आठ बजे तक दर्ख़्वास्त तैयार कर देगी और बढ़िया काग़ज पर टाइप करेगी।

४८

त्रोफ़ीम मेहमान-घर को लौटना नहीं चाहता था। उसे डर था कि टेनर उसे दरख़्वास्त भेजने के बारे में हतोत्साह करने की कोशिश करेगा।

टेनर से मिलकर वह अब क़िस्मत को प्रलोभन क्यों दे! रात सुहावनी और छोटी थी। वह गोरामिल्का नदी के तट पर रात बिता सकता था। वह वहां रात-भर चांद की रोशनी में अकेला बैठा रहेगा और नदी की झिलमिलाती लहरों को निहारता रहेगा। वह नर्म नर्म घास पर लेटा रहेगा ... और आधी रात बीत जाने पर, जब टेनर गहरी नींद सो रहा होगा, वह मेहमान-घर को लौट जायेगा, और फिर सुबह जल्दी ही उठकर सीधा दफ़्तर जा पहुंचेगा और दर्ख़्वास्त पर दस्तख़त करके स्वयं उसे डाक में डाल देगा।

इस तरह हम त्रोफ़ीम को नदी-तट पर पाते हैं। टेनर के एक संगीतात्मक रूपक का प्रयोग करते हुए, त्रोफ़ीम की आत्मा में नदी की

झिलमिलाती लहरियों के साथ एक वायलिन का उल्लासपूर्ण संगीत बज रहा था। तुरहियों, ढोलों और नवीनतम अमरीकी साजों की ध्वनियों का बेमेल मिश्रण, जो कान के पर्दे फाड़नेवाला घृणित शोर पैदा कर सकता था, अब त्रोफ़ीम के अन्दर शान्त हो चुका था।

उसने अपना चारख़ानेदार कोट उतारकर सिर के नीचे रखा, और तट की हरी हरी घास पर लेट गया और सोचने लगा कि अब उसकी नयी ज़िन्दगी कौनसा रुख़ पकड़ेगी।

उसकी आत्मा में वायलिन का मधुर संगीत बज रहा था...

यहां पर दार्या स्तेपानोव्ना के साथ हमें भी त्रोफ़ीम के इरादों की इमानदारी पर विश्वास कर लेने का अवसर जुटाया जाता है। दार्या स्तेपानोव्ना का तर्क सहज बुद्धि के प्रतिकूल नहीं है। रंग-मंच पर, रजत-पट पर, साहित्य में प्रस्तुत बहुत-सी रचनाएं, साथ ही वे सच्ची कहानियां भी जिन्हें हम ने पत्रिकाओं और अख़बारों में पढ़ रखा है, इसी भान्ति ख़त्म होती हैं।

लेकिन हमें प्योत्र तेरेन्त्येविच और टेनर की युक्तियों से भी सहमत होने से कोई रोक नहीं सकता। आप को याद होगा, टेनर ने बड़ी वाक्पटुता के साथ हम से अनुरोध किया था कि त्रोफ़ीम की आत्मा के इस आकस्मिक उफान में हमें एक जानवर की आत्मा को देखना चाहिए।

इस बीच त्रोफ़ीम के अन्दर वायलिन का संगीत ज़ोरों से बज रहा था, कहानी के लिए बड़े रोचक अन्त का आश्वासन दे रहा था, जिसे संगीतात्मक प्रहसन के किसी थियेटर में देखते हुए (यदि इसे वहां पेश किया जाय) दर्शकों की आंखों में कोमल भावनाओं के आंसू भर आयेंगे। वास्तव में, नाचनेवाले जोड़ों के अन्तिम दृश्य में—त्रोफ़ीम और दार्या, अन्द्रेई और कात्या, प्योत्र तेरेन्त्येविच और येलेना सेर्गेयेव्ना, यहां तक कि टेनर और तुदोयेवा भी (संगीतात्मक प्रहसन में हर बात की इजाज़त रहती है) व्यापक समझौते के पद गायेंगे और फिर अख़बारों में प्रशंसात्मक समालोचनाओं का इन्तज़ार करेंगे।

दुर्भाग्यवश, एक उपन्यास में, कहा नहीं जा सकता कि पात्रों का व्यवहार क्या रुख़ पकड़ेगा। नियन्त्रण को तोड़ने और रुख़ बदलने के वे

अभ्यस्त होते हैं, और उसी लेखक के साथ जिसने उन्हें जन्म दिया होता है, बिगड़ने लगते हैं।

और ठीक यही बात अगले अध्याय में, अध्याय ४६ में होने जा रही है, उस नन्ही-सी सुन्दर नदी, गोरामिल्का के तट पर, जो नक़्शों पर मानचित्रों के अनुरूप कुछ कुछ संशोधित नाम से प्रगट होती है।

४६

गोरामिल्का नदी की झिलमिलाती लहरियों को आंखें भरकर देख चुकने और चन्द्रमा के साथ गुप्त वार्तालाप कर चुकने के बाद, त्रोफ़ीम 'जेनरल मोटर्स' के अपने हिस्सों के बारे में सोचने लगा।

रेड क्रॉस सोसाइटी अथवा नये गांव के निर्माण-कोष में हिस्से सौंपने का वचन देकर क्या उसने जल्दबाजी नहीं की? बेशक, इस नेक काम की प्रेरणा उसे दिल से मिली थी, लेकिन फिर भी सोचा जाय तो लाभांशों समेत साठ हज़ार डालर की रक़म काफ़ी बड़ी रक़म बनती थी ...

मन ही मन त्रोफ़ीम ने डालरों को रूबलों में बदला, और उसकी रीढ़ की हड्डी में, ऊपर से नीचे तक ठिठुरन-सी दौड़ गयी। संभव है वह ठण्डी हवा के कारण रही हो जो नदी की ओर से आ रही थी। कुछ भी हो, एक बात निश्चित थी, कि यहां पर पलक मारते ही सारा का सारा धन हड़प लिया जायेगा। उसी तरह जिस तरह कुत्ता मक्खी पर झपटता है। अम्‌म् ... और गयी रक़म! सामूहिक फ़ार्म के लाखों रूबलों में वह विलीन हो जायेगी और पता तक नहीं चलेगा कि किस काम पर उसे ख़र्च किया गया था ...

त्रोफ़ीम ने कोट पहन लिया और अपने फ़ार्म के बारे में सोचने लगा। इस बात की ओर आंखें नहीं मूंदी जा सकती थीं कि फ़ार्म नरक तुल्य था और उसमें वह ज़ंजीर से बन्धी बन्दियों की टोली के एक बन्दी जैसा महसूस करता था। फिर भी, वह वहां बर्सों से था ... मशीन का पुर्ज़ा बनने का वह आदी हो चुका था ... फ़ार्म का दीवाला निकल

सकता था, यह भी सच है। देर-अबेर यह बात अवश्य होगी। लेकिन अगर कल उसने अर्जी पर दस्तख़त करके उसे सर्वोच्च सोवियत को भेज दिया तो, उसी दिन फ़ार्म उसके हाथ से निकल जायेगा। कल वह उन सब चीज़ों से हाथ धो बैठेगा जिनके लिए वह इतने सालों से जी रहा था। यहां तक कि वे नस्ली कबूतर भी जिन्हें उसने पालकर बड़ा किया था, उसके नहीं रहेंगे। कबूतरों की कोई बात नहीं। वह उन्हें यहां भी पाल सकता है ... लेकिन 'ब्यूक' मोटर गाड़ी? उम्र में वह त्रोफ़ीम के कुत्ते से भी बड़ी थी, ठीक है, लेकिन अभी भी काफ़ी तेज चलती थी।

लेकिन उसे अपनी 'ब्यूक' गाड़ी के बारे में नहीं सोचना चाहिए जो कूड़े के ढेर पर फेंकने के क़ाबिल थी। अब जब कि उसने फिर से जीवन आरम्भ करने का निश्चय किया था, उसे इन तुच्छ बातों को मन में जगह नहीं देनी चाहिए। अमेरिका में उसके पांव के नीचे दृढ़ नींव नहीं थी। यहां वह अपने बुढ़ापे के दिन शान्ति और निश्चिन्तता से नहीं बिता पायेगा। कुछेक सालों में ही युवा निर्दयी पांव उसे उसी तरह रौंद डालेंगे जिस तरह उसने बूढ़े आइवर और राबर्ट को रौंद डाला था ... नहीं उसने राबर्ट को नहीं रौंदा था! यह काम एल्सा ने किया था ... लेकिन किस की ख़ातिर?

त्रोफ़ीम ने अतीत की दिशा में देखने से इन्कार कर दिया, लेकिन भविष्य में उसके लिए देखने को क्या था? फ़ार्म पर उसका भविष्य तनिक भी उज्ज्वल नहीं था।

"क्या सचमुच ऐसा ही है?" पराजय की धूल में से सिर उठाते हुए दूसरे त्रोफ़ीम ने सहसा अपने से पूछा, क्या वह इस बात की इजाज़त देगा कि उसे रौंद डाला जाय? क्या वह इतना ही बूढ़ा और निःसहाय था? और फिर—त्रोफ़ीम और प्योत्र की मुलाक़ात में से सारा धन टेनर ही क्यों ले जाय? इस मुलाक़ात में क्या त्रोफ़ीम मुख्य अभिनेता नहीं था? क्या यह नाटक उसके बिना शुरू किया जा सकता था?

क्या वह बेवकूफ़ नहीं था कि अपने जन्म के गांव को देखकर और बीते दिनों को याद करके द्रवित हो उठा था? दार्या भी अतीत की

थी। क्या उसका पोता सेर्गेई दार्या के गर्व के कांटे में लगे लुभावने चुग्गे के समान नहीं था? क्या त्रोफ़ीम उस बेवकूफ़ पाइक-मछली के समान नहीं था, जिसके लिए बाद में किसी को अफ़सोस नहीं होगा और जिसे वापिस नदी में नहीं फेंक दिया जायेगा?

उसे वह फ़ार्म क्यों छोड़ देना चाहिए जिसमें से वह अभी भी धन कमा सकता था और छिपे-लुके उस धन को हिस्सों में परिणत कर सकता था, जो आपत्-काल में उसके लिए सुरक्षा का साधन बनेंगे? और बख्रूशी सम्बन्धी किताब से प्राप्त होनेवाला सारा धन टेनर ही क्यों हज़म कर जाय? क्या उसमें से एक अंश का त्रोफ़ीम अधिकारी नहीं था?

फ़ार्मर त्रोफ़ीम जो धूल में तिरस्कृत चारों शाने चित्त पड़ा था, चारों पंजों के बल उठ खड़ा हुआ और फुसफुसाकर उस दूसरे त्रोफ़ीम से बातें करने लगा जो अपनी जन्म-भूमि के नदी-तट पर, पैर फैलाये खड़ा था –

"अभी रात नहीं बीत पायी है," उसने अनुरोध किया। "हर बात के बारे में आख़िरी बार बड़े ध्यान से सोच-विचार कर लेना चाहिए। अगर तुम ने रूस में बस जाने का निश्चय कर ही लिया है तो इतनी जल्दबाज़ी क्यों? क्या पहले अमेरिका जाकर जितनी भी रक़म मिलनेवाली है, उसे वसूल करके फिर यहां नहीं लौटा जा सकता? वह धर्म-भाई, मोलोकान मत का साथी, सांसारिक लोभ में फंसकर तुम्हारे हिस्सों को हड़प कर सकता है। मामले को अदालत में नहीं ले जाया जा सकता, क्योंकि इससे ख़ुद फंस जाने का डर है। बात ज़ाहिर हो जायेगी कि तुम ने उस फ़ार्म को लूटा है जो एल्सा और उसकी बेटी की मिल्कीयत था। क़ानून मामले को इसी नज़र से देखेगा।"

नहीं, रात अभी नहीं बीती है और अभी भी बातों के बारे में सोचने के लिए वक़्त है। एल्सा अब बहुत दिन की मेहमान नहीं है। त्रोफ़ीम के लौटने से पहले ही शायद वह चल बसे, और त्रोफ़ीम उसकी बेटी, ऐनी के लिए बखेड़ा खड़ा कर सकता है। अगर वह त्रोफ़ीम से अलग होने का निश्चय करे तो उसे ज़मीन-जायदाद का एक-तिहाई भाग देना पड़ेगा। और यह अच्छी ख़ासी रक़म बनती है!

हां, उसे इस बारे में फिर सोचना होगा, हालांकि बात काफ़ी साफ़ थी कि पलड़ा सहजबुद्धि की ओर झुक रहा था। और सहजबुद्धि उसे कह रही थी कि कुछ देर के लिए अमेरिका लौट जाओ।

पर वह दार्या से क्या कहेगा? वह सब लोगों से क्या कहेगा? उसने अपनी इच्छा सब लोगों पर ज़ाहिर कर दी थी ... लोगों को यह बताना कि स्थिति कैसी है, कि वह क्या सोचता है—असम्भव था। उसके उद्देश्य के बारे में किसी को यक़ीन नहीं होगा। इन लोगों का दृष्टिकोण भिन्न था।

"एक और रास्ता भी था—कुछ भी नहीं कहा जाय। और यही सबसे अच्छा रास्ता है," एक त्रोफ़ीम ने दूसरे त्रोफ़ीम को उकसाते हुए कहा।

दोनों त्रोफ़ीम एक दूसरे में इतने घुल-मिल गये थे कि उनका अन्तर कोई चतुर मनोवैज्ञानिक ही बता सकता था। मेहमान-घर में पहुंचने तक यह द्वैत लगभग मिट चुका था।

सिनेमा के पर्दे पर इसे बड़े सजीव ढंग से, कैमरे के भावपूर्ण प्रयोग से दिखाया जा सकता है। पहले हम दोनों त्रोफ़ीमों को निकट से दिखाते हैं, फिर, ज्यों ज्यों मामला साफ़ होता जाता है, वे एक दूसरे में धीरे धीरे विलीन हो जाते हैं... लेकिन ये कौतुक आधुनिक फ़िल्मों में ही खेले जा सकते हैं, और दुर्भाग्यवश वे उपन्यास-रचना की परिधि से बाहर हैं।

टेनर घर पर नहीं था। वह आख़िरी बार स्तेकोल्निकोव से मिलने गया था और आधी रात के बाद भी देर तक उसी के यहां बैठा रहा था। तुदोयेवा सो रही थी। कमरे की चाभी निश्चित जगह पर—सीढ़ियों के नीचे—रखी थी। त्रोफ़ीम कमरे के अन्दर दाख़िल हुआ और बिजली जला दी। मेज़ पर एक तार रखा था जो एल्सा की ओर से न्यू-यार्क से भेजा गया था।

तार निजी संकेताक्षरों में था और अच्छी से अच्छी अंग्रेज़ी जाननेवाला व्यक्ति भी उसका अर्थ नहीं लगा सकता था, पर त्रोफ़ीम ने तार से समझ लिया कि फ़ार्म के मामले अप्रत्याशित रूप से अच्छे चल रहे हैं। "पहला" (अर्थात् दूध), जिसके बारे में त्रोफ़ीम चिन्ता करता

रहा था, "पहले से ज्यादा मोटा-ताज़ा और ख़ुशमिज़ाज" निकला था। मतलब कि दूध का उत्पादन, घनता और क़ीमतें बढ़ गयी थीं। आगे चलकर तार में "दूसरे" और "तीसरे" में सफलता का ज़िक्र किया गया था, मतलब मांस और सब्ज़ियों में। और अन्त में लिखा था "पेड़ से अच्छे फल वसूल हो रहे हैं", जिसका मतलब था कि ऐनी का पति, यूजीन, फ़ार्म का अच्छी तरह से प्रबन्ध कर रहा था।

इस आख़िरी ख़बर ने सभी ख़बरों को ढक लिया और गोरामिल्का के तट पर त्रोफ़ीम की सोच-विचार के निष्कर्ष को निश्चित कर दिया था। वह सदा अपने को फ़ार्म का धुरा समझता रहा था, और अब लगता था कि उसके स्थान पर उन लोगों को एक और धुरा मिल गया है। त्रोफ़ीम के तन-बदन में सहसा डाह की आग भड़क उठी और वह साहसा क़दम उठाने के लिए तत्पर हो गया।

बड़ी जल्दी से उसने अपना सारा सामान छोटे-से सूटकेस में रखा और सभी के नाम पत्र लिखने के लिए मेज पर बैठ गया। गलियारे में शोर सुनकर उसने बत्ती बुझा दी। उसने सोचा कि टेनर वापिस आ रहा है। शोर दूसरी बार हुआ। त्रोफ़ीम बैठा ध्यान से सुनता रहा। वास्तव में बिल्ली का बच्चा झाड़ू के साथ खेल रहा था। चिट्ठी लिखने के बारे में त्रोफ़ीम ने अपना इरादा बदल लिया। और बिना बत्ती जलाय, कमरे में से बाहर निकल गया। फ़र्श के तख़्तों पर बड़े ध्यान से क़दम रखते हुए, ताकि वे चरमराएं नहीं, उसने गलियारे को लांघा, नीचे उतरा, घर में से बाहर निकला और गांव से दूर जानेवाले रास्ते पर जाने लगा।

बूढ़ा, द्वैतहीन भेड़िया जिसमें कोई दोहरी विशेषताएं नहीं रह गयी थीं, बर्च-वृक्षों के एक तरुण झुरमुट को पार कर भाग रहा था। उसने कनखियों से पीछे की ओर देखा और टीले पर चढ़ गया ताकि गांव छोड़कर प्रधान सड़क पर पहुंच जाय।

उसे मुड़कर पीछे देखने की ज़रूरत नहीं थी। उसका पीछा करने का किसी का इरादा नहीं था। तुदोयेवा ने, जो बुढ़ापे की कच्ची नींद सो रही थी, सबसे पहले त्रोफ़ीम को भागते हुए देखा था। लेकिन प्योत्र

तेरेन्त्येविच को टेलीफ़ोन द्वारा यह ख़बर देने के बारे में उसे ख़्याल तक नहीं आया था।

तुदोयेवा अपने चहेते रूसी मुहावरों की सचाई में विश्वास रखती थी। उनमें से एक की सचाई अभी अभी प्रमाणित हुई थी।

भागते त्रोफ़ीम को देखकर, उसने अपनी कथा के लिए एक नयी पंक्ति और गढ़ ली—

" ... और रात के वक़्त जब चांद खिला था, और चारों ओर चुप्पी छायी थी, वह छिपकर बख़्रूशी में से भाग गया, और सोये हुए गांव के प्रति, जिसने उसकी इतनी ख़ातिरदारी की थी, एक बार पूंछ हिलाकर धन्यवाद भी नहीं किया ... "

५०

पहाड़ी की चोटी पर से त्रोफ़ीम ने चांदनी में झिलमिलाते सड़क के फीते को देखा। रात के वक़्त भी वहां पर काफ़ी आमद-रफ़्त थी, लारियां आ-जा रही थीं।

त्रोफ़ीम ने एक बहुत बड़ी लारी को हाथ दिखाकर खड़ा कर लिया जिस पर ताज़ी गोभी से भरा डिब्बा रखा था।

"मुझे शहर तक ले चलोगे?" त्रोफ़ीम ने नौजवान ड्राइवर से पूछा। "मैं इसके लिए तुम्हें इनाम दूंगा।"

"बैठ जाइये," ड्राइवर ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा, "मुझे भी थोड़ी देर के लिए साथी मिल जायेगा।"

लारी में बैठकर त्रोफ़ीम आश्वस्त महसूस करने लगा। उसने ठीक ही किया था, यही एक बात वह कर सकता था। भाग जाना ही उसके लिए सबसे अच्छा रास्ता था।

लारी-ड्राइवर ने—जो बख़्रूशी से सामूहिक फ़ार्म को गोभी पहुंचा रहा था—त्रोफ़ीम को उसी वक़्त पहचान लिया था जब वह हाथ उठाये सड़क के किनारे खड़ा था। उसे यह बात अजीब-सी लगी थी कि त्रोफ़ीम

बड़ी सड़क पर आधी रात के वक़्त बख़्रूशी से तीन किलोमीटर दूर लारी में बैठकर कहीं जाना चाहता था।

"आप कहां जा रहे हैं?" लेवेल-क्रासिंग पर लारी को रोकते हुए ड्राइवर ने लापरवाही से पूछा।

"हवाई अड्डे की ओर," त्रोफ़ीम ने जवाब दिया, "मैं सुबह के हवाई जहाज़ से निकल जाना चाहता हूं।"

"आप टैक्सी बुला सकते थे। आप को इतना बड़ा चक्कर नहीं काटना पड़ता।"

"क्या करता? स्थिति ही ऐसी बन गयी। मेरा यहां से जाने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन मैंने सहसा निश्चय कर लिया।"

"किसी से झगड़ा हो गया होगा, क्यों?"

"अपने ही साथ झगड़ा हुआ था, इसी कारण रात के वक़्त जा रहा हूं ... एक तरह से, भाग रहा हूं।"

"और सेर्गेई?" ड्राइवर ने सहसा पूछ लिया।

"सेर्गेई?" त्रोफ़ीम ने कहा और घूरकर ड्राइवर के चेहरे की ओर देखने लगा। "तुम बख़्रूशी के रहनेवाले हो—यह और भी अच्छी बात है। अब मुझे चिट्ठी नहीं लिखनी पड़ेगी। मेरे लिए कोई चारा नहीं था ... मैं देखता हूं कि मेरा सर्वस्व अमेरिका में है, मानो मैं अमेरिका से कभी बाहर आया ही नहीं था। यहां मेरे शरीर में कोई और आदमी जी रहा था। तुम कौन हो?"

"मेरा नाम अलेक्सेई है। चीफ़ मेकेनिक अन्द्रेई लोगिनोव का चचेरा भाई हूं।"

"मुझे इस बात की ख़ुशी है कि तुम उसके चचेरे भाई हो।"

"आप को क्योंकर ख़ुशी होनी चाहिए? आप की पोती का वह दूल्हा है, मैं तो नहीं हूं।"

"ख़ुश इस लिए हूं कि तुम सेर्गेई के लिए मेरी टुन-टुन करनेवाली घड़ी ले जा सकते हो। उसे कान लगाकर टुन-टुन सुनने का बड़ा शौक़ है। मैं दिन में दसियों बार उसे बजाकर सुनाया करता था। तो उसे तुम दे दोगे न, अलेक्सेई?"

"मुझे कोई एतराज़ नहीं है, जब लड़के को संगीत का शौक़ है। बाद में दे दीजियेगा – मेरे हाथ इस वक़्त रुके हुए हैं।"

"और मेहरबानी करके दार्या स्तेपानोव्ना से कहना ... "

"उससे क्या कहूं?"

"मैं सचमुच नहीं जानता। उससे कह देना कि तुम मुझसे मिले थे। जो कुछ मैंने तुम से कहा है उसे बता देना, कि त्रोफ़ीम धूसर रात को ... भाग गया है। अपने भेड़िये के चरित्र के अनुकूल ही उसने काम किया है।"

लारी में आदमी चुप थे। लारी पूरी रफ़्तार से आगे बढ़ती जा रही थी। उनींदे गांव और मज़दूरों की बस्तियां पीछे छूटती जा रही थीं। नगर से सुबह का ट्रेफ़िक अभी शुरू नहीं हुआ था। लारी की खुली खिड़कियों में से सनोबर के पेड़ों की महक बह बहकर आ रही थी। हवा में कुछ ख़ुनकी आ गयी थी।

जंगल के पीछे आकाश में धमन-भट्ठियों की लौ कभी तेज़ होती कभी बुझ जाती। धातुमल उंडेला जा रहा था। चांद ने व्यंग में त्रोफ़ीम को आंख मारी और त्रोफ़ीम ने नज़र फेर ली।

"प्योत्र तेरेन्त्येविच के लिए कोई सन्देश?" अलेक्सेई ने पूछा।

त्रोफ़ीम कुछ देर तक चुप रहा, जिस बीच उसने पाइप सुलगाया, फिर बोला –

"किसी सन्देश की ज़रूरत नहीं है। जितनी अच्छी तरह से वह मुझे जानता है, मैं स्वयं अपने को नहीं जानता हूं। टेनर को बता देना कि मैं मास्को में, उसी होटल में उसका इन्तज़ार करूंगा। अगर उसका मन आये तो मेरा बाक़ी सामान लेता आय। अगर नहीं तो पेलागेया कुज़्मीनिश्ना तुदोयेवा का जैसे मन आये उसके साथ करे।"

लारी नगर के बाहरी इलाक़े में पहुंच गयी थी। गड्ढों पर से उछलती हुई लारी निर्माण-स्थलों का चक्कर लगाती हुई जा रही थी जिनके आस-पास अस्थायी बाड़ लगा दी गयी थी। अन्त में वे एक टैक्सी-स्टाप के पास पहुंचे।

"मैं सोचता हूं मैं यहीं उतर जाऊंगा," अलेक्सेई का हाथ छूते हुए त्रोफ़ीम ने कहा।

"जैसी आप की इच्छा।" मोड़ पर लारी खड़ी करते हुए ड्राइवर ने जवाब दिया।

त्रोफ़ीम बटुआ टटोलने लगा, लेकिन अलेक्सेई ने कहा—

"चिन्ता नहीं कीजिये, हम मेहमानों से पैसे नहीं लेते।"

"तो फिर यह ले लो," अलेक्सेई को अपना सिगरेट-लाइटर देते हुए, त्रोफ़ीम ने कहा—सेर्गेई के लिए उसने जो घड़ी भेजने का वादा किया था, उसे त्रोफ़ीम जंजीर पर से उतारना बिल्कुल भूल गया—और लारी में से उतरकर और टोपी उठाकर बोला—"तुम्हारा बिजनेस फले फूले।"

"शुभ यात्रा!" अलेक्सेई ने कहा, और लारी चल दी।

५१

सुबह साढ़े सात बजे तक साशा, त्रोफ़ीम का प्रार्थना-पत्र एक अच्छे कागज पर बड़ी सफ़ाई से टाइप कर चुकी थी। अब वह अपने कृत्य को एक नजर देख रही थी, इस बात की पूर्वाशा से कि त्रोफ़ीम तेरेन्त्येविच उसकी सराहना करेगा। पिछली शाम को उसने चिट्ठी की कच्ची प्रति अपनी मां और नानी को पढ़कर सुनायी थी। दोनों ख़ुश हुई थीं, न केवल इसलिए कि आख़िर, अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में त्रोफ़ीम की आंखें खुली थीं, बल्कि इसलिए भी कि दख़्वास्त को बड़े सुन्दर वाक्यों में शब्द-बद्ध किया गया था। दख़्वास्त का एक एक शब्द एक एक गीत था।

साशा भी ख़ुश थी। अपने छोटे-से जीवन-काल में उसने कभी भी कोई पत्र इतनी महत्त्वपूर्ण संस्था के नाम टाइप नहीं किया था। वह पत्र की ओर एक कुशल टाइपिस्ट के नाते गर्व से देख रही थी। दख़्वास्त एक पुस्तक-सी लग रही थी, जिसमें दायें हाथ के हाशिये उतने ही साफ़ थे, जितने बायें हाथ के।

घड़ी ने आठ बजाये। "मास्को समय छः बजे"—लाउड-स्पीकर ने घोषणा की। दफ़्तर के कमरों में चहल-पहल शुरू हो गयी। प्योत्र

तेरेन्त्येविच कब से अपनी जांच के दौरे पर निकल गया होगा। दिन बीतने लगा था लेकिन दर्ख़ास्त अभी भी मेज़ पर पड़ी थी, मानो किसी को उसकी परवाह नहीं हो।

इसके सम्बन्ध में साशा ने क्यों इतनी जल्दी की थी? क्यों वह पौ फूटने से पहले ही जागकर, नये नीले सांभर के अपने जूते पहने, ओस में से भागती हुई दफ़्तर आ गयी थी?

साशा, साशा, जब तुम्हें रात की घटनाओं के बारे में पता चलेगा तो तुम्हारे दिल को बड़ा क्लेश पहुंचेगा। इतनी सफ़ाई से टाइप किये हुए तुम्हारे इन सात पन्नों की अब किसे परवाह है? ज़रा सुनो तो बख़्रूशी में लोग क्या कह रहे हैं।

शहर में गोभी पहुंचाने के बाद, अलेक्सेई लौट आया और रात के वक़्त त्रोफ़ीम के साथ हुई अपनी मुलाक़ात का ब्योरा प्योत्र तेरेन्त्येविच को दे दिया।

प्योत्र तेरेन्त्येविच चुपचाप सुनता रहा। पौ फटने पर वह पेलागेया से पहले ही मिल चुका था।

"मुझे इसके अलावा और किसी बात की आशा भी नहीं थी, अलेक्सेई," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने कहा और ड्राइवर से अनुरोध किया कि दार्या स्तेपानोव्ना के घर तक उसे ले चले।

प्योत्र तेरेन्त्येविच को दार्या की, और केवल दार्या की ही चिन्ता थी। दार्या को यह ख़बर सबसे पहले प्योत्र को ही देनी पड़ी। हर ख़बर देनेवाला व्यक्ति यह देखने का इच्छुक होता है कि सुननेवाले पर उस ख़बर का क्या असर हुआ है। दार्या, प्योत्र की केवल रिश्तेदार ही नहीं थी, वह सामूहिक फ़ार्म की एक प्रतिष्ठित कार्यकर्त्री भी थी। इसके अतिरिक्त इन दिनों उसका नाम हर किसी की ज़बान पर रहा था।

दार्या को यह समझाना ज़रूरी था कि त्रोफ़ीम का नैतिक पतन अनिवार्य था।

त्रोफ़ीम के भाग जाने की ख़बर देने के बाद, उसने कहा—

"इसकी उम्मीद ही थी, दार्या। इससे अपने मन को दुखी नहीं करो। आख़िर इसका तुम्हारे लिए कोई महत्त्व भी तो नहीं है, क्यों?"

"महत्त्व है," दार्या ने दृढ़ता से कहा। "मैंने उसपर विश्वास किया था।"

दार्या ने अपने आंसू रोकने या छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। अपलक दृष्टि से वह खुली खिड़की में से एकटक देखती रही, जहां कुछ ही दिन पहले त्रोफ़ीम, अपने बड़े बड़े कांपते हाथ सेर्गेई की ओर बढ़ाये हुए खड़ा था।

वह दिखावा तो नहीं कर रहा होगा ... वरना दार्या भांप जाती और उसे कभी भी अपने भेड़िये के से पंजों में उस पोते को उठाने नहीं देती जो दार्या और प्योत्र की आंखों का तारा था।

सिवाय इस बात के कि उसने त्रोफ़ीम को अपने पोते से मिलने दिया था, दार्या ने कोई ऐसी हरकत नहीं की थी, जिससे वह अपने ग्रामवासियों की नज़रों में गिरे। इस बारे में प्योत्र को चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। उसके बारे में कोई भी अप्रिय बात नहीं कही जा सकती। परन्तु उसे स्वयं यह स्वीकार करना पड़ा कि उसने पेलागेया, या प्योत्र या टेनर पर विश्वास नहीं किया था, उसने हर बात के बावजूद त्रोफ़ीम के चरित्र में अच्छाई का पक्ष देखना चाहा था।

और इसमें क्या वह अकेली थी? क्या मैं और आप भी यही कुछ देखना नहीं चाहते थे?—हम अपने दिल से भी यह सवाल कर सकते हैं।

दार्या से भूल हुई थी। पर क्या यह उसका दोष था कि प्रकृति ने उसका स्वभाव ही ऐसा रचा था कि उसे पशु में भी इनसानीयत का अंश नजर आता था?

"मैं बड़ी लज्जित महसूस कर रही हूं, प्योत्र, परन्तु इसका मुझे पश्चाताप नहीं है। आख़िर, उसके अन्दर इनसान जागा था, भले ही वह एक दिन के लिए जागा हो। हमारे सत्य ने उसे पराभूत किया। यह एक अच्छा लक्षण है ... मुझे पछतावा नहीं है, प्योत्र, हालांकि मैं शर्मिन्दा ज़रूर हूं।"

"ख़ूब। बहुत ख़ूब," प्योत्र तेरेन्त्येविच ने कहा, "घर पर हम जी भरकर रो लेंगे, लेकिन और लोगों को अपने आंसू नहीं देखने देंगे।

इस कारण नहीं कि हम उन्हें छिपाना चाहते हैं, बल्कि इस लिए कि नेक आंखों के अलावा हमारे यहां बुरा चाहनेवाली आंखें भी हैं। उन्हें रस ले लेकर बातें करने का मसाला क्यों जुटाया जाय? जरूरी बात यह है कि तुम ने सब बात समझ ली है, और स्वयं उसकी ऐसी व्याख्या कर दी है जैसी मैं नहीं कर सकता था ... अकारण ही तो मैं तुम्हें अपनी उस बहिन की तरह प्रेम नहीं करता जिससे मैं सदा वंचित रहा हूं।"

इस वार्तालाप के बाद, गांव-भर की नजरों के सामने सेर्गेई का हाथ थामे, उसे चलाते हुए दोनों सड़क पर जाने लगे। सेर्गेई को वे चाची येलेना के घर छोड़ने जा रहे थे जहां वह अपने जैसे ही अन्य नातिनों से, नाना प्योत्र के नातिनों से मिलेगा। उस दिन वे सब एक बड़ी बस में आ रहे थे।

कितना मज़ा रहेगा!

५२

पिछली रात की घटनाओं की ख़बर पाते ही, जॉन टेनर ने दुदोरोव को टेलीफ़ोन किया –

"मैं यह रिपोर्ट देने की आज्ञा चाहता हूं कि कल रात चौपाये ने फिर से अपनी सामान्य मुद्रा ग्रहण कर ली। वह सेर्गेई को एक पुरानी टाइम-पीस भेंट करना चाहता था, लेकिन लारी पर से उतरते समय उसे ज़ंजीर पर से उतारना भूल गया। प्योत्र तेरेन्त्येविच से आप को सभी तफ़सीलें मिल जायेंगी। दुर्भाग्यवश, भगौड़ा होटल का बिल अदा करके नहीं गया है, अपने भोजन के लिए तुदोयेवा के पैसे भी नहीं चुकाये, पर कोई चिन्ता नहीं, मैं स्वयं चुका दूंगा। अमेरिका में सभी तरह के लोग रहते हैं। अच्छा, ख़ुदा हाफ़िज़।"

दुदोरोव को टेलीफ़ोन करने के बाद उसने स्तेकोल्निकोव को टेलीफ़ोन किया।

"हल्लो, फ़्योदोर, कहो दोस्त, जमकर बैठे हो न, लो तुम्हें नयी ख़बर सुनायें ..."

त्रोफ़ीम के भागने की ख़बर उसने एक अख़बारी समाचार की तरह ब्योरे से सुनायी।

"अगर आज रात मैं होटल डि बख़्रूशी का कुछ सामान उठाकर चम्पत हो जाऊं तो किसी को भी हैरानी नहीं होगी। उसने मेरी इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी है। बख़्रूशी में अब किसी को भी इस बात का विश्वास नहीं होगा कि मैं अमेरिका लौटने पर सोवियत-विरोधी किताब नहीं लिखूंगा। पर कोई चिन्ता नहीं, लोग बेशक मुझे बुरे से बुरा आदमी समझें... लोगों को विस्मय में डालना मुझे अच्छा लगता है। माफ़ करना, मैं भगौड़े सज्जन की चीज़ों के फ़ोटो लेना चाहता हूं जो कमरे में बिखरी पड़ी हैं। मैं फिर तुम्हें टेलीफ़ोन करूंगा।"

प्रादेशिक अख़बार में अपने बारे में प्रशंसा-लेख छप जाने के बाद, फ़ार्म के प्रतिष्ठित सूअर-पालक पान्तेलेई दोरोख़ोव को पहले से भी ज़्यादा यक़ीन हो गया था कि वह हर बात में सही है, सूअर पालने के तरीक़े के बारे में भी और अन्य सभी बातों के बारे में भी।

त्रोफ़ीम के भाग जाने के बारे में टिप्पणी करते हुए उसने अपने बेटे से कहा—

"इसका मतलब है कि देश में त्रोफ़ीम को घुसेड़ने के बारे में उन्होंने अपना इरादा बदल लिया है... या फिर हमारे लोगों को उसके बारे में सब बात का पता चल गया होगा... तुमने सुना था न, डाकख़ाने की लड़की अरीशा कह रही थी, कि त्रोफ़ीम को गुप्त भाषा में तार आया था। बस, जिस रात तार आया उसी रात वह भाग गया। इससे क्या मतलब निकालते हो?"

उड़ान की ख़बर पाते ही बूढ़े तुदोयेव ने पैपर-ब्रैण्डी की नन्ही-सी बोतल ख़ाली कर दी।

"अब मैं फिर से पूंजीवाद के जुए से मुक्त हुआ हूं। और मुझे किसी बात की भी जवाबदेही नहीं करनी है।" उसने चहककर कहा।

दोरोख़ोव की भांति सतर्क और एक एक शब्द तौल तौलकर बोलनेवाले फ़ार्म के मुख्य कृषि विशेषज्ञ, स्मेतानिन ने, इस उड़ान के बारे में यही समझा कि दाल में कुछ काला है, कि सारा मामला जांच करने लायक है।

टाइपिस्ट लड़की साशा, यह देखकर कि उसका किया-कराया अकारथ गया है, उसे "उचित स्थान" पर पहुंचा देना चाहती थी, लेकिन दोबारा सोचने पर उसने उसकी एक प्रति प्योत्र तेरेन्त्येविच को, एक दुदोरोव को, और एक प्रति मिलीशिया के उस सिपाही को दे दी जो बख़्रूशी में रहता था।

दार्या के पोते बोरीस ने बर्डोक की झाड़ियों में अपने सहपाठियों की एक गुप्त सभा बुलायी और उन्हें बताया कि भगौड़ा जंगल के गुप्त रास्तों से अपने फ़ार्म की ओर जा रहा है। एक नया खेल खेला जाने लगा। पहले तो उन्होंने बारी निश्चित की कि कौन फ़ार्मर बनेगा, फिर आंखें बन्द करके सौ तक गिनते रहे जिस बीच फ़ार्मर भाग गया। फिर वे भगौड़े को खोजने लगे और जब वह मिल गया तो फिर बारी निश्चित करने लगे।

पर नन्हा सेर्गेई "ग्रेंड-पा" की बाट जोह रहा था। घर में नन्हे नन्हे नये दोस्तों के आ जाने से बड़ी चहल-पहल थी, पर सेर्गेई का मन उसमें नहीं लग रहा था। वह सचमुच की जीती-जागती गिलहरी, जो पिंजरे के साथ चचा प्योत्र ने उपहार स्वरूप दी थी, जब चक्कर चलाती तो बड़ा मज़ा आता था, सेर्गेई ख़ूब हंसता था, लेकिन उसकी आंखें लेनीवी टीले से हटाये नहीं हटती थीं, जहां से "ग्रेंड-पा" किसी वक़्त भी प्रगट हो सकते थे।

नानी की सभी परी-कथाओं में सेर्गेई विश्वास करता था, पर उसे इस बात का विश्वास नहीं हो सकता था कि "ग्रेंड-पा" भेड़िया था, जो इनसान बनने का स्वांग रच रहा था, और अब फिर भेड़िये का रूप लेकर, सागरों के पार अपनी मांद में भाग गया था।

अगर वह सचमुच भेड़िया होता तो सेर्गेई को उसके बड़े बड़े नाख़ून, लम्बे लम्बे दान्त या कम से कम उसकी ख़ूंख़्वार आंखें नज़र आ जातीं। पर उसकी आंखें तो अच्छी थीं, दयालु थीं।

नहीं, सेर्गेई को विश्वास नहीं हो सकता था। वह "ग्रेंड-पा" की राह देख रहा था...

बचपन की पैनी याद्दाश्त उन प्रिय चीज़ों की याद को त्यागना नहीं चाहती थी जिन्हें त्रोफ़ीम उसपर अंकित कर गया था। वह शानदार धमन-भट्टी, जो लगभग असली थी... वह घड़ी जिसके अन्दर नन्हा-सा संगीतज्ञ

नन्ही नन्ही तारें बजाता था... सचमुच की पाइक-मछली, जिसे केवल वही पकड़ सकता था और जिसपर केवल उसे ही रहम आ सकता था... और अब, सहसा लोगों ने उसे भेड़िया बुलाना शुरू कर दिया था! यहां तक कि मौजी चचा जॉन ने भी, जो नानी-मां से विदा कहने आया था...

गिलहरी के उपहार के साथ नानी-मां ने चार सफ़ेद कबूतर भी जोड़ दिये थे, जो "ग्रेंड-पा" सेर्गेई को देने का इरादा रखता था। और उनके लिए चचा अन्द्रेई ने बड़ा सुन्दर कबूतर-ख़ाना बना दिया। यह उन्होंने इसलिए किया कि वे नहीं चाहते थे कि सेर्गेई "ग्रेंड-पा" का और ज्यादा इन्तज़ार करे। पर सेर्गेई फिर भी इन्तज़ार किये बिना नहीं रह सकता था। उसे यक़ीन नहीं हो पा रहा था कि "ग्रेंड-पा" ने उसके "नन्हे-से दिल में थूक दिया है", उस वक़्त भी नहीं जब मां भी यही कहती थी...

पर दिन पर दिन बीत रहे थे और "ग्रेंड-पा" का कहीं नाम-निशान नहीं था...

५३

टेनर की रवानगी का दिन आ गया। मेहमान-घर के बाहर अच्छी-ख़ासी भीड़ जमा हो गयी, और इस अवसर ने बिना किसी तैयारी के, खुली सभा का रूप ले लिया। लोगों की इस पहलक़दमी पर दुदोरोव मन ही मन बहुत ख़ुश हुआ।

"किसी ने भी इसका आयोजन नहीं किया था, फिर भी इससे बेहतर सभा नहीं हो सकती थी," उसने प्योत्र तेरेन्त्येविच से कहा।

तुदोयेवा, अन्द्रेई लोगिनोव, पशु-पालन विशेषज्ञ वोलोद्या और अन्द्रेई के भाई अलेक्सेई ने बारी बारी से भाषण दिये, मित्र समान अतिथि के लिए शुभ यात्रा की कामना की और यह विश्वास प्रगट किया कि यह परिचय जो इतने अच्छे ढंग से शुरू हुआ था, ग़लत रुख़ नहीं अपना सकता।

उन दिनों नि० से० ख़ुश्चोव की आगामी अमेरिका-यात्रा के बारे में अख़बारों में और रेडियो पर बड़ी चर्चा थी, इसलिए पेलागेया कुज़्मीनिश्ना

तुदोयेवा हालांकि वह "ग़ैर-पार्टी" थी, अपने भाषण में टेनर को यह परामर्श दिये बिना नहीं रह सकी –

"जॉन, जब अमेरिका में तुम हमारे प्रिय साथी ख़्रुश्चोव का स्वागत करोगे, तो यह मत भूलना कि मैंने तुम्हारी यहां कितनी देख-भाल की, कैसे कैसे केक और टिकियां बना बनाकर तुम्हें खिलायीं, और तुम्हारे कपड़े धोये, धुलाई-मशीन में नहीं, बल्कि अपने बूढ़े हाथों से... मैं इसलिए नहीं कह रही हूं कि तुम्हारी बेट्सी भी हमारे लोगों के लिए खाना पकाए – नहीं, उनके पास खाने का सामान बहुत होगा। मैं इसलिए कह रही हूं कि जब तुम उन्हें देखो तो हम सब लोग भी तुम्हारी आंखों के सामने आ जायं – और मैं भी, – तुम्हारी देख-भाल करनेवाली बुढ़िया तुम्हें नजर आ जाऊं... अब आओ, मेरे चपल-चकोरे, आओ, तुम्हारे गंजे सिर पर तुम्हें चूम लूं। तुम इसके अधिकारी हो, और क्यों, यह तुम स्वयं भली-भांति जानते हो।"

और तुदोयेवा ने टेनर को सिर पर चूम लिया। सभी लोग ज़ोर ज़ोर से तालियां बजाने लगे। जवाब में टेनर ने उसके हाथ चूम लिये, जिसपर देर तक तालियां बजती रहीं।

युवा कम्युनिस्ट, अन्द्रेई लोगिनोव ने, टेनर के रूप में, अमरीकी जनता का और शान्ति के संघर्षकारियों का अभिवादन किया, और इन शब्दों से अपना भाषण समाप्त किया –

"आपसे मिलकर, हमारे सामूहिक किसानों को उस अमेरिका की झांकी मिली जिसे हम पसन्द किये बिना नहीं रह सकते। विशेषकर मुझे। मशीनरी मेरा पेशा ही नहीं है, वह मेरा सर्वस्व है। प्रिय मिस्टर टेनर, आप नहीं जानते कि हमारे सामूहिक किसानों के साथ अपनी मुलाक़ातों में आपने अपने को शान्ति और जनता की मैत्री का कितना बड़ा समर्थक प्रदर्शित किया है। सचाई को अलंकृत करने की जरूरत नहीं होती – आप में बहुत कुछ ऐसा है जिसे हमारे लोग नहीं समझते, पर फिर हम में भी कुछ ऐसा है जिसे आप नहीं समझ पाते। इस आशय से कि आप हमारी जीवन-प्रणाली को बेहतर ढंग से समझ सकें, मिस्टर टेनर, मैं आपको अंग्रेजी भाषा में यह पुस्तक भेंट करना चाहता हूं। पुस्तक है – 'परिवार, निजी सम्पत्ति और राज्य का उद्भव' जिसे फ़्रेडरिक एंगेल्स ने लिखा है। साथ

ही यह छोटा-सा कार-विंच भी उपहारस्वरूप स्वीकार कीजिये, जिसे मैंने बनाया है और जिसपर अंग्रेजी और रूसी भाषाओं में 'बख़ूशी में बनाया गया' शब्द अंकित है। गहरे से गहरे कीच में फंसी हुई आपकी मोटर को भी—मैं गैरंटी करता हूं—यह विंच उठा लिया करेगा।"

फ़ार्म के चीफ़-मेकेनिक के भाषण पर लोग ठहाका मारकर हंसे। उपहारों को ग्रहण करते हुए टेनर भी हंस पड़ा।

"मुझे भी इजाज़त दीजिये..." टेनर न कहा, "मैं भी उपहार के बारे में सोच रहा था। मैं ऐसे लोगों में से नहीं हूं जो जाने से पहले अपना उपहार ज़ंजीर पर से उतारना भूल जाते हैं। मैं इसे अभी उतार लूंगा।"

उसने अपना सिने-कैमरा उतारा और अन्द्रेई को दे दिया।

"अब मैंने अपना तोड़-फोड़ का काम ठीक और उचित तरीक़े से आरम्भ कर दिया है।" टेनर ने कहा। "प्यारे अन्द्रेई, मैंने तुम्हें अमरीकी टेलीवीजन के संवाददाता के रूप में भरती कर लिया है। जब तुम उस विशेष व्यक्ति का फ़िल्म लेते हुए थक जाओ जिसका नाम मैं नहीं जानता—और जिसका नाम यहां उपस्थित लोग भी नहीं जानते—तो मैं अनुरोध करूंगा कि लेनीवी टीले पर निर्माण-कार्य का फ़िल्म, जिसे मैंने खींचना शुरू किया था, तुम पूरा कर देना। विंच के लिए धन्यवाद। बहुत दिनों से उसपर मेरी नज़र रही है, जिस तरह मेरे कैमरे पर तुम्हारी नज़र रही है। अब हमारे बीच बांटने को कुछ भी नहीं रह गया है।"

लोग फिर ठहाका मारकर हंसे।

"किताब के लिए भी शुक्रिया। अलग अलग लोगों से मुझे अभी तक इस किताब की सात प्रतियां मिल चुकी हैं, पर मैं इसे भी ले लूंगा।"

इस के बाद युवा पायोनियरों ने टेनर का अभिवादन किया। बिगुल बजाने के बाद, एक एक करके और सम्मिलित रूप से वे कुछेक छन्द पढ़ने लगे, जो प्रकटतः बड़ी उम्र की लोगों की मदद से तैयार किये गये थे।

कविता की दृष्टि से तो ये पंक्तियां अच्छी नहीं हैं, छापने लायक भी नहीं कही जा सकतीं, लेकिन उनके बिना यहां हमारा काम नहीं चलता। तो लीजिये—

गन का मौजी, सब का मीत
बच्चों का दिल लेता जीत,
कहो तो क्या है उसका नाम?
मिस्टर टेनर, मिस्टर जॉन!

कभी न थकता कर कर काम
मिस्टर टेनर, मिस्टर जॉन!

कपड़े पहने छैलों से
फ़ैशन के मतवालों से
कहो तो क्या है उसका नाम?
मिस्टर टेनर, मिस्टर जॉन!

फ़ोटो खींचे पोखर के
करे घोटाला बढ़ बढ़के
कौन करेगा ऐसा काम?
था कोई और, नहीं था जॉन!

गांव का पेटू मन-भर खाये
फिर भी उसका जी ललचाये
किसने उसके खींचे कान?
मिस्टर टेनर, मिस्टर जॉन!

बस इतने से छन्द हमारे
करते हैं गुण-गान तुम्हारे
शुभ यात्रा हो, प्रिय मेहमान
मिस्टर टेनर, मिस्टर जॉन!

फिर फिर आओ हमारे गांव
मिस्टर टेनर, मिस्टर जॉन!

"ठहरो, बच्चो," टेनर ने चिल्लाकर कहा, ख़ुशी से उसका चेहरा खिल उठा था, "इसके साथ और पंक्तियां भी हैं। मैं भी कविता लिख सकता हूं। यह सुनो –

कैसे सुन्दर छन्द तुम्हारे
दिल को छूते भाव तुम्हारे
बस इतना कह पाये जॉन
जॉनी जॉनी जॉनी जॉन!"

सदा की तरह, टेलीवीजन का कैमरा-मैन देर से पहुंचा, पर फिर भी बच्चों के साथ विदाई के सीन का फ़िल्म ले लिया गया और उसका टेप-रेकार्डिंग भी कर लिया गया। टेनर ख़ुश हुआ और कैमरे के सामने कुछ कुछ अदा के साथ मुद्रा भी बनाता रहा।

टेलीवीजन का साज़-सामान आ जाने से जिस बेतकल्लुफ़ी से विदाई की सभा चल रही थी, उसमें थोड़ा फ़र्क पड़ गया, और येलेना सेर्गेयेव्ना वख़्रूशिना संभवतः वह सब नहीं कह पायी जो वह कहना चाहती थी। लेकिन बिना औपचारिकता के, उसने फिर भी काफ़ी कुछ कह दिया।

सफ़र पर साथ ले जाने के लिए वह टेनर के लिए खाने-पीने के सामान का एक डिब्बा लेती आयी थी। टेनर को सम्बोधन करते हुए, उसने चूककर "मिस्टर टेनर" कहने के बजाय "साथी टेनर" कह दिया। वह घबराकर कुछ देर के लिए चुप हो गयी, फिर उसने भूल को ठीक करने के बजाय उसकी पुष्टि करना बेहतर समझा।

"प्रिय साथी जॉन टेनर!" उसने कहा, "इस डिब्बे में खाने-पीने का सामान है। यह न्यू-यार्क तक, आपके लिए काफ़ी रहेगा, भले ही आपके साथ कोई पेटू भी हाथ बंटाता रहे। पर मैं नहीं चाहूंगी, जॉन, कि आप यह सामान अजनबियों में बांटते फिरें। इस डिब्बे में कोई भी ऐसी चीज़ नहीं है जो रास्ते में ख़राब हो सकती हो, और मुझे यह जानकर बड़ी ख़ुशी होगी कि इसमें से कुछ सामान आप अपने घर तक ले जा पाये हैं, और आपकी पत्नी बेट्सी, आपके पिता मिस्टर थामस टेनर, आपकी माता मिसिज़

जॉय टेनर और आपके बच्चों जैक और किट्टी ने, और सबसे छोटे बच्चे ने जिसका नाम–पीटर–मुझे विशेष रूप से प्यारा है, इनको चखा है। इसके अन्दर पीटर के लिए एक छोटा-सा ख़ास बटुआ भी है जिसपर मुर्ग़ की तसवीर बनी है। विदा, मौजी जॉन। अपना पता यहां छोड़ते जाना। मुझे आशा है कि प्योत्र तेरेन्त्येविच को अमेरिका जाने का मौक़ा मिलेगा। अगर वह गया तो मैं भी उसके साथ जाऊंगी, क्योंकि अब अमेरिका में मेरी जान-पहिचान के लोग होंगे, और रहने के लिए ठिकाना होगा। इस तरह, इस डिब्बे के लिए तुम्हें काफ़ी क़ीमत अदा करनी पड़ेगी..."

टेनर ने झुककर येलेना सेर्गेयेव्ना का अभिवादन किया और फिर उसका हाथ चूमा। येलेना सेर्गेयेव्ना, जिसने बढ़िया पोशाक पहन रखी थी, इत्र लगा रखा था, कन्धों पर गुलाबी रंग की शॉल डाल रखी थी जिससे उसका चेहरा और भी ज़्यादा दमक रहा था, बड़ी ख़ुश थी और अपनी तक़रीर पर फूली नहीं समा रही थी।

भीड़ में खड़ा प्योत्र तेरेन्त्येविच अपनी पत्नी की ओर निःसंकोच, प्रशंसा भरी निगाहों से देखे जा रहा था। उस दिन की हर बात से वह सन्तुष्ट था–भाषणों से, हंसी-मज़ाक से, यहां तक कि अपनी पत्नी की लैस की बनी पोशाक और ऊंची एड़ी के जूतों से भी। यह सब यथोचित था, क्योंकि वे चीज़ें विदा होनेवाले अतिथि के प्रति सम्मान प्रदर्शित कर रही थीं। विदाई की सभा सचमुच बड़ी कामयाब रही थी। यह स्वाभाविक ही था, यह देखते हुए कि लोगों की भावनाएं सच्ची और स्वतःस्फूर्त थीं।

यहां तक कि ड्राइवर, अलेक्सेई लोगिनोव ने भी, आह्लादपूर्ण भावना को वाणी दी जब वह टेनर को स्टेशन तक ले जाने के लिए बस में आया।

"मैं ख़ुशक़िस्मत आदमी हूं, मिस्टर टेनर," उसने कहा, "आप दूसरे अमरीकी यात्री हैं जिन्हें मुझे हवाई-अड्डे तक ले जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। केवल, अब की मुझे आशा है कि बख़शीश या सिगरेट-लाइटर मुझपर नहीं ठोंसा जायेगा, और मेरी सवारी मेरे साथ हाथ मिलाना और ख़ुदा हाफ़िज़ कहना नहीं भूलेगी।"

इस मौक़े पर टेनर भी पीछे नहीं रहा।

"क्या, मैं? लाइटर? क्या तुम मुझे पागल समझते हो? धूप की ऐनकों की बात दूसरी है..."

और पेश्तर इसके कि अलेक्सेई को मालूम हो पाता कि वह कहां है, टेनर की धूप की ऐनकें उसके नाक पर थीं।

"मैं कुछ भी ठोंस नहीं रहा हूं। मैं तो केवल चीजों को अपनी जगह पर रख रहा हूं। इन ऐनकों से एक तो तुम थकोगे नहीं, दूसरे, इनसे यात्रियों के बीच पाये जानेवाले अन्तर को समझने में भी तुम्हें मदद मिलेगी। सीधी-सादी गिनती – एक, दो – के आधार पर उन्हें आंकने के बजाय, उनके विदा लेने के ढंग से उनका अन्तर पहचानने लगोगे।"

"शुक्रिया। मैं समझता हूं, मिस्टर टेनर। इसी लिए गोभी ढोनेवाली गाड़ी में आने के बजाय मैं बस में आया हूं जिसमें बयालीस मुसाफ़िर बैठ सकते हैं।"

टेनर को हवाई-अड्डे तक ले जाने के लिए ड्राइवर के निमन्त्रण पर अत्यधिक संख्या में लोग तैयार हो गये। इससे बख़्रूशिन को चिन्ता हुई। लेकिन सब बात सुभीते से हो गयी। टेनर को विदा करने के लिए लड़कों में से दो "रेड इन्डियन" चुने गये। तुदोयेवा ने सोचा कि उसने पहले ही टेनर को विदा कर दिया है। येलेना सेर्गेयेव्ना ने भी ऐसे ही महसूस किया। विदा करनेवाले लोगों में अधिकांश पुरुष थे।

बख़्रूशिन ने यह बस इस अभिप्राय से ख़रीदी थी कि शनिवार और इतवार के दिनों में सामूहिक किसानों को थियेटर और सरकस आदि में ले जाया करेगी, इस समय यह बस एक और अच्छा काम दे रही थी। टेलीवीजन कैमरे के लिए यह भी प्रदर्शन-वस्तु होगी। अख़बारों में, रेडियो पर और टेलीवीजन पर फ़ार्म की उपलब्धियों की चर्चा उसे अच्छी लगती थी। वह बस को एक सांस्कृतिक उपलब्धि मानता था और उसे इस बात का खेद था कि उसकी ओर अभी तक ध्यान नहीं दिया गया था। यह सोचकर कि संभव है टेलीवीजन आपरेटर इसे किराये की बस समझे बैठा हो वह उसके साथवाली सीट पर बैठ गया, और बड़े धैर्य किन्तु चतुराई के साथ उसे समझाने लगा कि बस का विषय आने पर ध्वनि-लेखन में क्या टिप्पणी दी जानी चाहिए।

जब बस हवाई-अड्डे पर पहुंची तो स्तेकोल्निकोव वहां पहले से मौजूद था। वह जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष और स्थानीय अख़बार के सम्पादक को साथ ले आया था, टेनर को यह दिखाने के लिए कि उनकी नज़रों में वह केवल यात्री नहीं था।

आदर-सत्कार के शब्दों के आदान-प्रदान के बाद जिनमें यह आशा व्यक्त की गयी थी कि संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के परस्पर-सम्बन्धों में स्निग्धता आने लगेगी और ऐसे औपचारिक मौक़ों पर जो कुछ कहा जाता है, या यों कहें, जो कुछ सूत्रबद्ध किया जाता है, कह चुकने के बाद, दोनों प्रतिनिधियों ने टेनर के लिए शुभ-यात्रा और उसकी पुस्तक की सफलता की कामना की, और बल देकर कहा कि उसके बदनसीब साथी की उड़ान से वह रुचिकर प्रभाव धुंधला नहीं पड़ा है, जो अमरीकी प्रेस के प्रगतिशील प्रतिनिधि ने उनके मन पर डाला था।

अख़बार के सम्पादक ने कहा—

"क्या हमारे अख़बार के लिए मिस्टर टेनर कोई बयान देंगे?"

टेनर ने इस सम्मान के लिए उनका धन्यवाद किया और एक संवाददाता को लिखाते हुए स्वागत के लिए, सोवियत देहात में जीवन की गतिविधि का अध्ययन करने के लिए जुटाये गये असीम अवसरों के लिए, और अन्त में सम्मानपूर्ण विदाई के लिए और उन आशाओं के लिए आभार प्रगट किया जिनका अधिकारी उसने अपने को अभी तक प्रमाणित नहीं किया था।

शीघ्र ही, यात्रियों को हवाई जहाज़ में सवार होने के लिए आमन्त्रित किया गया और कुछ ही मिनट बाद इस्पात का बड़ा पक्षी उड़ चला। उसे उड़ते देखकर प्योत्र तेरेन्त्येविच का दिल भर आया।

महीना-भर पहले टेनर के आगमन के बारे में सोचकर उसका मन शंकित हुआ था, परन्तु अब, जबकि वह टेनर से मिल चुका था, और उसका अभ्यस्त हो चुका था, उसे अफ़सोस होने लगा था कि महीना इतनी जल्दी बीत गया था। इतनी जल्दी कि वह टेनर को उन बातों का दसवां भाग भी नहीं बता पाया था जिन्हें वह चाहता था कि टेनर अपने साथ अमेरिका लेता जाय।

पर कौन जानता था कि बख्तूशी में जो कुछ टेनर ने देखा था उसका वह किस भांति प्रयोग करेगा? आख़िर वह अपना मालिक तो नहीं था।

परन्तु आशा की जाती थी कि अन्त भला ही होगा। पर आशा करने का मतलब भ्रम पालना नहीं था।

जीवन विस्मयकारी घटनाओं से भरा पड़ा है...

५४

टेनर की यात्रा के दौरान विभिन्न स्थानों से बख्तूशी में आह्लादपूर्ण तार प्राप्त हुए और उसके बाद एक और तार आया जिसमें उसके कुशल-पूर्वक न्यू-यार्क पहुंच जाने की सूचना दी गयी थी और स्वादिष्ट तोहफ़ों के लिए परिवार की ओर से धन्यवाद दिया गया था। त्रोफ़ीम के बारे में उनमें एक भी शब्द नहीं था।

त्रोफ़ीम हवाई जहाज में अकेला गया था, या टेनर के साथ, कोई नहीं जानता था। यों तो इसका कोई महत्त्व नहीं था। टेनर की ओर से जब पत्र आयेगा तो उसमें त्रोफ़ीम का भी ज़िक्र होगा।

लेकिन टेनर की ओर से कोई पत्र नहीं आया।

वक़्त गुजरता गया, और डाकख़ाने की लड़की अरीशा के मुंह से केवल एक ही टिप्पणी बार बार सुनने में आती—"अमेरिका से कोई ख़बर नहीं।"

उदारहृदय पतझड़, वर्ष के प्रारम्भिक परिणामों का तख़मीना लगाने लगा था। शाम के वक़्त, मुनीम के साथ दफ़्तर में बैठा प्योत्र तेरेन्त्येविच हिसाब लगाता कि लेनीवी टीले पर गांव को बसाने में कितना ख़र्च वे कर सकेंगे। फ़ार्म और रेलवे से प्राप्त हुई लाखों रूबलों की धन-राशि को काम में लगाने में वह तनिक भी समय नहीं खोना चाहता था।

लेनीवी टीले पर निर्माण का काम दिन-रात चल रहा था। इमारती का; में मदद देने के लिए बाहर से अतिरिक्त लोगों को काम पर लगाया

गया था। प्रधान कृषि-विशेषज्ञ स्मेतानिन और फ़ार्म के पार्टी-समिति के सेक्रेटरी दुदोरोव से लेकर प्रत्येक व्यक्ति निर्माण-स्थल पर काम करता था, भले ही घण्टा, दो घण्टे रोज़ाना के लिए हो।

मेहमान-घर को निर्माण-कर्मियों के कार्यालय के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था। इसमें कुछ ही समय पहले अमरीकी रह चुके थे, इस तथ्य का एकमात्र साक्ष्य नक़्क़ाशी किये हुए मुर्गों और जालीदार सजावट के रूप में वास्तुकला के आडम्बर के साथ तख़्तों का बना पायख़ाना था जिससे अब स्थानीय मसख़रों को तरह तरह की फ़िकरेबाज़ी करने का विषय मिल गया था। त्रोफ़ीम के बारे में तरह तरह के मज़ाक किये जाते कि आख़िर अपनी जन्म-भूमि पर अपना कुछ तो छोड़ गया है, एक ऐसी चीज़ जो उसी की विशिष्टता को संक्षेप में व्यक्त कर देती है।

पर बख़्रूशी में टेनर की लोग अभी भी तारीफ़ करते थे। उसे केवल इसी कारण याद नहीं किया जाता था कि उसने सामूहिक फ़ार्म के लोगों को फ़ोटो भेंट किये थे, या इस कारण कि उस के साथ उनकी स्मर्णीय मुलाक़ातें हुई थीं। उसका 'टेनर' नाम अभी तक गांव में प्रचलित था; किसी कारण यह नाम भारी कुन्दे ढोनेवाले ट्रेलर को दिया गया था, मौजी तबीयत के, फुर्तीले थवई को दिया गया था जो निर्माण-स्थल पर काम करने आया था, यहां तक कि उस सिने-कैमरा को भी 'टेनर' के नाम से ही पुकारा जाने लगा था जो टेनर ने अन्द्रेई लोगिनोव को उपहारस्वरूप दिया था।

अमरीकियों का दौरा, जिसे हाल ही में बहुत बड़ी घटना माना जाता था, अब सामूहिक फ़ार्म के जीवन में मामूली-सा प्रसंग बनकर रह गया था।

निर्माण-कार्य के सामने अन्य सभी बातें हेच पड़ गयी थीं।

निर्माण-कार्य में सभी की गहरी दिलचस्पी थी। लोगों के घर नयी जगह पर ढोकर ले जाये जा रहे थे और वहां या तो उन्हें पुन:निर्मित किया जा रहा था या नये सिरे से बनाया जा रहा था। इस क्रिया में कहीं कहीं हृदयस्पर्शी दृश्य देखने में आते। गांव के लोग केवल गोरामिल्का के दूसरे तट पर जाकर बसने लगे थे, फिर भी वे अपने पुराने घरों को त्याग रहे थे जिनमें उनके मां-बाप और उनसे पहले उनके दादे-परदादे रह चुके थे।

पुरानी जगह का एक एक पेड़, एक एक पत्थर, एक एक कुवां उन्हें सहसा प्यारा हो उठा था।

क्या हुआ जो नये बख़्रूशिनो में सड़कों पर नल लगेंगे, और लोग चाहें तो अपने घरों में भी नल लगवा सकते हैं—नल के पानी में वह मिठास कहां जो अपने कुएं के जल में होती है। अलावघर का तोड़ा जाना ही अपने में एक घटना था। उस पर दादा सोया करते थे। सर्दी के मौसम में वे स्वयं उस पर चढ़कर खेला करते थे। और अब उसकी ईंटें मलबे का ढेर बनकर रह गयी थीं।

नगर में लोग निश्चिन्तता से अपने पुराने फ़्लैट नये फ़्लैटों के साथ बदल लेते हैं, लेकिन गांव में इससे जटिलताओं और भावनाओं का गोरखधन्धा पैदा हो जाता है, लोग ठण्डी आहें भरते हैं और पुराने, काई-जमे, और भुरभुराते लकड़ी के छत के लिए बिलख बिलखकर रोते हैं।

ऐसे समय में टेनर को कौन याद करता, त्रोफ़ीम की तो बात ही क्या।

पर निकीता सेर्गेयेविच ख़्रुश्चोव की अमेरिका-यात्रा से स्वाभाविकतः त्रोफ़ीम और टेनर की याद ताजा हो आयी।

जितनी देर ख़्रुश्चोव अमेरिका में रहे बख़्रूशी समेत सारा देश अपने रेडियो और टेलीवीजनों को चालू रखे रहा। शान्ति को सुदृढ़ करने के लिए हर मनुष्य के हृदय में आशाएं तरंगें ले रही थीं, और सोवियत देश के सन्देशवाहक के सफल भाषणों के कारण लाखों के दिल ख़ुशी से झूम रहे थे।

प्योत्र तेरेन्त्येविच अख़बारों और रेडियो का एक एक शब्द ध्यान से पढ़ता-सुनता और उसके आधार पर टेनर और त्रोफ़ीम के प्रति अपने हाल ही के रवैये की जांच करता। बुनियादी सवालों के संबन्ध में अपने सामूहिक फ़ार्म के पैमाने पर क्या उसने वही उसूल अपनाये थे जो साथी ख़्रुश्चोव ने संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के पैमाने पर अपनाये हैं?

त्रोफ़ीम का फ़ार्म और प्योत्र तेरेन्त्येविच का सामूहिक फ़ार्म, अमेरिका और सोवियत संघ की तुलना में भले ही छोटे छोटे कण रहे हों लेकिन उन कणों का स्वरूप वही था जो उनके देशों का था।

पैमाना अलग था लेकिन सार एक ही था।

अपने व्यवहार, कामों और कथनों की नज़रसानी करते हुए, प्योत्र तेरेन्त्येविच को कुछ भी ऐसा नज़र नहीं आया जिसके लिए वह अपने को दोष दे सके। उसी के विचारों, उसी की इच्छाओं को इस समय अमेरिका में वाणी दी जा रही थी। वह शायद उन्हें इतने साहसिक और दो-टूक ढंग से व्यक्त नहीं कर पाता, और उनमें से कुछेक विचार और प्रयोजन शायद उसके अपने मन में न रहे हों लेकिन इस समय नि० से० ख़्रुश्चोव के कथनों को पढ़ते और सुनते हुए, उसे लगता था जैसे उसी के विचारों और धारणाओं को जारी रखा जा रहा है। क्या फ़र्क पड़ता है अगर वह इतनी पूर्णता के साथ उन्हें सूत्रबद्ध नहीं कर पाया। महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उन्हें अब वह अपनी गहरी आस्थाएं मान सकता था।

त्रोफ़ीम के बारे में शायद प्योत्र तेरेन्त्येविच के मन में कोई और विचार न उठता, लेकिन उसे इस बात ने विचलित किया था कि त्रोफ़ीम विदा का एक शब्द भी कहे बिना, और औपचारिकता के नाते अमेरिका से धन्यवाद का पत्र तक लिखे बिना चला गया था। इसका मतलब था कि वह उनके लिए हाथ में छुरा लेकर गया था। शायद इसी समय, साथी ख़्रुश्चोव की अमेरिका-यात्रा के दौरान, कोई दुष्ट शक्ति किसी सभा में त्रोफ़ीम को खींचकर ले आये, और वह, पैसे का पीर, बख़्रूशी पर कीच उछालने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा हो।

एक अफ़वाह से इन अनुमानों को और भी रंग मिला–और इसकी पुष्टि स्तेकोल्निकोव के टेलीफ़ोन-सन्देश द्वारा हुई–कि टेलीवीजन के पर्दे पर टेनर की झलक मिली थी, स्वागत करनेवाली न्यू-यार्क निवासियों की भीड़ में वह भी खड़ा निकीता सेर्गेयेविच ख़्रुश्चोव के सम्मान में तालियां बजा रहा था।

इसका मतलब था कि त्रोफ़ीम भी वहीं कहीं होगा... लेकिन घटनाओं ने इस अनुमान की पुष्टि नहीं की।

फिर भी, प्योत्र तेरेन्त्येविच के शक अन्ततः सच्चे साबित हुए। भेड़िये की कारसाज़ी अपने चरित्र के अनुरूप ही रही।

५५

जब बर्फ़ का पहला छींटा पड़ा और जाड़े की महक हवा में आयी, और खेतों, जंगलों और मकानों की छतों पर सफ़ेदी पुत गयी तो अमेरिका से एक पत्र प्राप्त हुआ। अरीशा ने उसे देते हुए टिप्पणी की–

"भेड़िया बोल पड़ा है ..."

पहले पत्र की भांति यह पत्र भी टाइप किया हुआ था–हालांकि टाइप-राइटर दूसरा था, और हिज्जों की ग़लतियां नहीं थीं। पत्र इस प्रकार था–

"न्यू-यार्क,

३१ अक्तूबर, १९५९

"मुझे शाप देनेवाले मेरे भाई को, और मेरी पहली और अन्तिम पत्नी दार्या स्तेपानोव्ना को जिसके साथ मैं दो बार विश्वासघात कर चुका हूं, यह ख़त मिलेगा तो मैं संभवत: यहां पर नही हूंगा।

"तुमने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया। अब मेरी आत्मा, पुराने तहख़ाने की तरह, ख़ाली हो चुकी है। मैं खेल में से बाहर निकल आया हूं, लेकिन किसी बेवकूफ़ की तरह अपनी जेब नहीं कटवायी, और उस वक़्त तक खेल में से भी नहीं निकला जिस वक़्त तक हरेक के साथ अपना लेखा पूरा नहीं कर लिया। टेनर के साथ भी।

"हमारी मुलाक़ात के एवज़ टेनर को जो कुछ मिलना था, उसमें से उसने मुझे आधी रक़म देने से इन्कार कर दिया। पर मैं बेवकूफ़ नहीं हूं, कोई मेरी आंखों में धूल नहीं झोंक सकता। मैंने कंपनी के चीफ़ से कह दिया कि मैं '२१ वीं पार्टी कांग्रेस' नामक फ़ार्म के गौरव-गान की सच्चाई का समर्थन करने से इन्कार करता हूं, जिसके प्रति टेनर ने, शायद अनजाने में, एक इतवार के दिन शुत्योमी के जंगल में हुई पिकनिक के वक़्त वोद्का के नशे में और एल्ब नदी के अपने मित्र, कम्युनिस्ट फ़० प० स्तेकोल्निकोव के प्रभावाधीन, वफ़ादारी की शपथ ली थी।

"मुझे अपनी कमाई का आधा हिस्सा देने में उसके पेट में शूल उठता था, लो सारी रक़म गंवा बैठा है। उन लोगों ने उन पेशगी

रक़मों के लिए टेनर को धर दबाया जो रूस जाने से पहले टेनर ने उनसे वसूल की थीं, और बख़्रूशी के बारे में पुस्तक लिखने के लिए स्वयं मुझसे कहा। पर चूंकि मैंने ज़िन्दगी में कभी कोई पुस्तक नहीं लिखी थी, इसलिए मैंने किसी दूसरे से इसे लिखवाया।

"यह पुस्तक तुम्हें पसन्द नहीं आयेगी, न दुदोरोव को, न ही मिस्टर स्तेकोल्निकोव को। यह सच्चाई को विकृत करेगी। लिखे जाने के बाद मैंने इसे दोबारा पढ़ा तक नहीं है। क्या फ़र्क पड़ता है? अगर मैं सच्चाई को विकृत नहीं करता तो कोई दूसरा कर देगा। और जो करेगा, उसे इस काम के लिए पैसे मिल जायेंगे। तो फिर मैं ही क्यों न करूं? जहां सत्यानास, वहां सवा सत्यानास। इसके अलावा, मैं पैसे से इन्कार नहीं कर सका; पुस्तक के एक एक पन्ने पर दस्तख़त करने के फ़ौरन बाद सारी रक़म नक़द मेरे सामने रख दी गयी थी। पुस्तक का नाम है—'वे अमेरिका से कैसे आगे निकल रहे हैं'। मुझे उन सभी लोगों के साथ हिसाब चुकता करने के लिए पैसे की ज़रूरत थी, जिन्होंने मेरे साथ बुराई की थी। एल्सा का फ़ार्म ख़रीदने में मैंने वह रक़म इस्तेमाल की। मैंने एल्सा से कहा कि मालिक बनकर मरना चाहता हूं। मेरे मरने के बाद तो ऐन्नी यों भी इसकी वारिस बन जायेगी। एल्सा ने कड़वा घूंट भर लिया। और हफ़्ता-भर बाद मैंने फ़ार्म एक नौजवान पाजी के हाथ बेच दिया। इस तरह अब एल्सा के पास कोई फ़ार्म, कोई पाप्लर-वृक्ष, यहां तक कि अपना सोने का कमरा तक नहीं है। मैं भी उसका नहीं रहा। उसके पास कुछ भी नहीं है। केवल पैसा है। मेरे प्रति उसकी सारी नेकी के लिए, मेरी सारी ज़िन्दगी बरबाद करने के लिए उसे मैंने पूरी रक़म अदा कर दी है। अब एल्सा के पास सोचने के लिए मसाला होगा। टेनर के पास भी।

"मैं अभी तक नहीं जानता हूं कि मैं कहां पर रहूंगा। इस समय तो मैं होटलों में रह रहा हूं। शायद मैं स्वीडन चला जाऊं। कहते हैं वहां की पहाड़ियां बिल्कुल उराल की पहाड़ियों से मिलती-जुलती हैं। या शायद मैं इंगलैंड में बस जाऊं। मेरे पास अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने और अपने पोते सेर्गेई के लिए छोड़ जाने के लिए काफ़ी धन है, जिससे वह

अपने धूसर भेड़िया रूपी नाना को याद किया करेगा। मैंने उसके लिए ढेरों खिलौने और खेल भेजे हैं। अगर तुम उन्हें सेर्गेई को नहीं देना चाहते हो, तो यह तुम्हारा काम है। लेकिन बच्चे को उसकी ख़ुशियों से क्यों वंचित किया जाय? उसे यह बताने की जरूरत नहीं है कि वे मेरी ओर से आये हैं। वे फ़ादर क्रिसमस की ओर से भी लाये जा सकते हैं। खिलौने बड़े क़ीमती हैं। उनपर मैंने दो सौ छत्तीस डालर ख़र्च किये हैं। घड़ी भी उन्हीं के साथ भेजी गयी है।

"बस, लगभग इतना ही मुझे लिखना था। मेरे बारे में जैसा मन आये, सोचो। अब मुझे कोई परवाह नहीं है। तुम्हारे लिए मैं सदा के लिए मर चुका हूं।

"तुम्हारा, त्रोफ़ीम त० बख़्रूशिन"।

पत्र पढ़ चुकने के बाद प्योत्र तेरेन्त्येविच ने साशा को बुला भेजा और उसे पत्र को शब्दशः टाइप करके, मूल-पत्र के साथ ले आने को कहा।

त्रोफ़ीम का पत्र पढ़ते हुए प्योत्र तेरेन्त्येविच को लगा जैसे वह पत्र उसके जीवन में फिर बेचैनी पैदा कर देगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। उसने केवल मन ही मन कहा—"उस सूअर से और किस बात की आशा की जा सकती है जो बेशर्मी के साथ अपनी ही गन्दगी पर इठलाता है? कौन सोच सकता था कि यह पत्र उसी आदमी के हाथ का लिखा हुआ था जिसने सर्वोच्च सोवियत के नाम आवेदन-पत्र लिखा था ... उसने आवेदन-पत्र पर दस्तख़त नहीं किया था, यह सच है, पर जबान तो वही थी जिसने उसे बोल बोलकर लिखाया था ..."

विश्वास नहीं होता था। इनसान के रूप में नीच से नीच काम करनेवाले जन्तुओं में भी वह सबसे अधम था।

उसे उम्मीद थी कि जिन्दगी उस नीच को सबक़ सिखायेगी, वह एक घिनौने पिस्सू के समान था और पिस्सू ही की तरह ज़िन्दगी उसे पीस डालेगी।

५६

इस स्थल तक पहुंचकर, अमेरिका का दौरा करना ख़ूब रहेगा और इस उपन्यास को मुकम्मल करने के लिए जिन बातों की ज़रूरत है, उन्हें अपनी आंखों से देख लिया जाय। एल्सा को खोजकर उससे बात की जाय। उस फ़ार्म पर जाया जाय जो एक ज़माने में एल्सा की मिल्कीयत हुआ करता था। इस बात का पता लगाया जाय कि टैनर की क्या गति हुई। उसने एक भी पत्र नहीं लिखा था। क्या यह मुमकिन है कि उसके साथ कोई बुरी घटना घट गयी हो?

बेशक, देर-अबेर, उससे पत्र आयेगा तो ज़रूर। लेकिन पत्रों से पूरी स्थिति का पता नहीं चल पाता। भले ही वे बड़े ब्योरे के साथ लिखे गये हों। जो बातें इनसान की आंख देखती है वे सब पत्र नहीं बता सकते।

एल्सा, त्रोफ़ीम के बारे में क्या सोचती थी, यह सुनना रुचिकर होगा, और इस सारी कार्रवाई के प्रति, त्रोफ़ीम की सौतेली बेटी ऐन्नी के पति यूजीन का क्या रवैया रहा। वह ऐसा बेवकूफ़ तो नहीं होगा कि बूढ़ा भेड़िया उसकी आंखों के सामने उसका फ़ार्म लूट ले जाय और वह खड़ा देखता रहे। उपन्यास के अन्तिम अध्यायों के लिए इन सभी तफ़सीलों से रोचक सामग्री उपलब्ध हो पाती। लेकिन जो कुछ इनसान के हाथ में हो, उसी से काम चलाना पड़ता है।

प्योत्र तेरेन्त्येविच और स्तेकोल्निकोव के साथ हम केवल टैनर के पत्र की प्रतीक्षा ही कर सकते हैं।

"कम से कम कुछ तो लिख ही सकता था!"—स्तेकोल्निकोव ने बख़्रूशिन से कहा, "यह भी कहीं उस दूसरे जैसा तो नहीं निकला?"

"हरगिज़ नहीं," बख़्रूशिन ने ज़ोर देकर कहा, "मैं जान की बाज़ी लगाकर कह सकता हूं।"

बख़्रूशिन ने भूल नहीं की। टैनर की ओर से पत्र आया। पहली पंक्ति से ही वह आदमी पत्र में सजीव हो उठा। लगता था कि ख़त उसी की आवाज़ में बोल रहा है—

"हल्लो फ़्योदोर, हल्लो प्रिय फ़्योदोर पेत्रोविच, कामरेड स्तेकोल्निकोव ! यार, अब कुर्सी का सहारा छोड़ो और कुल्ला करके उन सभी गन्दे शब्दों को मुंह में से थूक दो जो अभी तक मेरे बारे में इस्तेमाल करते रहे हो ।

"प्यारे फ़्योदोर, मैं नहीं चाहता कि मेरे पत्रों से लोग परेशान हों। और लोगों पर यह काम छोड़ दो। मैं सदा लोगों को ख़ुश करना चाहता हूं। यह मेरी आदत है, मुझे विरासत में मिली है, जिस से मैं अपना पिण्ड नहीं छुड़ा पाया।

"यह आदमी जो नेक मोलोकानवादी बनने का स्वांग भर रहा था, ज़हरीला सांप निकला, अब इसके बाद मैं तुम्हें क्या लिख सकता हूं, उसके मुक़ाबले में काला नाग भी कीड़ा नज़र आता है। उसने मेरी सारी योजनाओं को धूल में मिला दिया और मेरे सभी कन्ट्रैक्ट मेरे हाथ से छिन गये। उसने वही चीज मुझ से लूट ली जिसके लिए मैं उसे समुद्र-पार ले गया था। वह मेरी इज़्ज़त को बट्टा लगाने में यहां तक कामयाब हो गया कि उसके लांछनों के कारण राष्ट्र का दुश्मन घोषित किये जाने के बजाय, मुझे यही सबसे अच्छा लगता था कि जेल में ठूंस दिया जाऊं।

"कन्ट्रैक्ट रद्द किये जाने के बाद फ़ौरन ही मेरे ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई की गयी ताकि वे रक़में जो मैं पेशगी वसूल कर चुका था, मुझ से वापिस ली जायं। मेरी सारी बचत की पूंजी जो मैंने दुर्दिन के लिए बचा रखी थी–जिसे तुम लोग रूस में 'काला' दिन कहते हो– दे देने के बाद, हमारा परिवार उस घर को छोड़ने की तैयारी करने लगा जिस से हडसन नदी का दृश्य नज़र आता है।

"लेकिन ... मै कहता हूं, फ़्योदोर, लेकिन !

"मैं थोड़ी देर के लिए तनाव बनाये रखूंगा, फ़्योदोर, ताकि तुम मिनट-भर के लिए उस बेचैनी का अनुभव कर सको जिसे मैं इतनी देर तक अनुभव करता रहा हूं, और किसी कारण नहीं तो एक मित्र के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने के लिए ही। मुझे लगता है जैसे एक शताब्दी बीत गयी हो। क्योंकि एक एक दिन एक एक सप्ताह के बराबर था, और एक एक सप्ताह एक एक साल के बराबर।

"लेकिन ... मिस्टर ख्रुश्चोव पहुंच गये। पहले तो इस घटना के कारण मेरे जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। तुम जानते हो कि कुछ लोग किस प्रकार के स्वागत की तैयारियां कर रहे थे, और बाद में, जब लाखों लोगों ने मिस्टर ख्रुश्चोव की तक़रीरें सुनीं तो लोगों की मानसिक क्रिया में क्या परिवर्तन हुआ? उन लोगों की मानसिक क्रिया में भी जिन्होंने मिस्टर मोलोकानवादी की किताब छापना शुरू किया था, जिसमें स्थानों की भौगोलिक स्थिति भी असंगतियों से भरी थी? कंपनी ने बदनाम होने से नुक़सान उठाना ज़्यादा पसन्द किया, और उस किताब को, पेश्तर इसके कि बेचारा मिस्टर टेनर, अपने हडसनवाले घर में से बन्धना-बोरिया उठाकर निकले, कूड़े के ढेर पर फेंक दिया।

"निकीता सेर्गेयेविच ख्रुश्चोव को मेरे अस्तित्व के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था, इसलिए उन्हें नहीं मालूम हो सकता था कि उनकी अमेरिका-यात्रा का मेरे लिए क्या महत्त्व था। अब कृपया धीरे धीरे पढ़ो ... वरना तुम किसी महत्त्वपूर्ण बात को पकड़ नहीं पाओगे।

"एक दिन शाम के वक़्त, जब मैं हिसाब लगा रहा था कि अपना क़र्ज़ चुकाने के लिए और किस किस चीज़ को बेचूं, टेलीवीजन के पर्दे पर किरील तुदोयेव नाम का एक रूसी किसान प्रगट हुआ। अनाउंसर ने बताया कि अमरीकियों की रुचि और रूस के बारे में उनकी धारणाओं के अनुरूप, तुदोयेव ने पुराने ढंग से और नंगे पांव घास काटना स्वीकार किया है, और रूसी भाषा जाननेवाले सुविख्यात पत्रकार मिस्टर टेनर के लिए तसवीर खिंचवायी है, जो हाल ही में रूस की यात्रा कर चुके हैं और लौटने पर 'एक ही ग्रह के दो पक्ष' नामक पुस्तक लिख चुके हैं। यह पुस्तक उन सभी लोगों के लिए निःसन्देह रोचक साबित होगी जो हमारी पृथ्वी के दूसरे पक्ष को निष्पक्ष दृष्टि से देखना चाहते हैं।

"'बेट्सी!' मैंने चिल्लाकर कहा, 'उन सूटकेसों को छोड़ो और इधर आओ, टेलीवीजन की किरणों में अपने आंसू सुखा लो। मुझसे पूछो तो कामयाबी ने तुम्हारे पति के क़दम चूमे हैं।'

"बेट्सी भागती हुई अन्दर आयी। मेरा बूढ़ा बाप मेरे गिलास में कुछ उंडेलने लगा।

"इस बीच तुदोयेव पर्दे पर से ग़ायब हो चुका था और उसके स्थान पर बड़ी बड़ी घास काटनेवाली मशीनें और घास के बड़े बड़े ढेर आ गये थे, और हमने लड़कियों का वह गीत सुना जिसे मैंने अपने दस्ती टेप-रेकार्डर पर भर लिया था।

"फिर फ़िल्म का बाक़ी हिस्सा दिखाया गया, बिल्कुल उसी रूप में जिस रूप में मैंने उसे खींचा था। दार्या स्तेपानोव्ना और उसकी गायें, नयी नस्ल की गाय तैयार करने के लिए दार्या स्तेपानोव्ना को पुरस्कृत किया गया सोने का तारा—टेलीवीजन के सारे पर्दे पर छा गया। किसी ने उसे काटा नहीं। सुनते हो फ़्योदोर, किसी ने उसे काटा नहीं था। उस वक़्त मैंने अपने पिता जी से कहा, 'पिता जी, यहां तो एक और बोतल की जरूरत होगी। इसका कारण मैं आपको बाद में बताऊंगा।' मेरा बाप दो बोतलें ले आया। वह एक तरह से अपने बेटे जॉन से मिलता-जुलता है।

"फिर कात्या और सेर्गेई पर्दे पर आये। बिल्कुल नजदीक से उन्हें दिखाया गया था। दार्या स्तेपानोव्ना का चेहरा धुंधला पड़ने पर उसी के स्थान पर कात्या का चेहरा उभर आया। लगता था जैसे दार्या स्तेपानोव्ना ही फिर जवान हो उठी हो। वह रंगीन फ़िल्म थी। अब कात्या को हालीवुड में नौकरी मिल सकती है और तुदोयेवा न्यू-यार्क में मशहूर मॉडल-प्रदर्शिका बन सकती है—मैंने उसे दर्जनेक पोशाकों में, १६ वीं शताब्दी और उसके बाद की पोशाकों में दिखाया है।

"लाखों लोगों ने बख़्रूशिनो गांव की नयी बुनियादों को डाले जाते हुए देखा। वह दृश्य भी कात्या के चेहरे की तरह, एक दृश्य के धुंधले पड़ जाने के बाद उभरकर सामने आया था... माफ़ करना, मुझे ठीक शब्द नहीं सूझ रहा है, यों कहें कि नाने-गांव के धुंधले पड़ जाने पर नये गांव का चेहरा उभरकर सामने आता है।

"फिर छोटे छोटे रेड इन्डियन रेंगते हुए जई के खेत में से निकले। वे वायलिन-वादकों में बदल गये और सारे अमेरिका ने उनका वादन सुना। फिर वे कबूतरबाज़ों में परिणत हो गये। विशालकाय सामूहिक कबूतर-ख़ाने की छत पर से सफ़ेद कबूतर उड़ चले। फ़िल्म में वे ख़ूब

फ़िट बैठे! इस पहले ब्राडकास्ट के अन्त में ड्राइवरहीन ट्रेक्टर बड़ी चौशा में हल चलाता दिखाया गया और साथ में मेरी टिप्पणियां सुनायी गयीं जिन्हें मैंने गर्मी के मौसम में रेकार्ड करवाया था।

"अब सुनो आगे क्या हुआ। भाग्य ने पलटा खाया।

"मेरे प्रकाशकों ने कन्ट्रैक्ट को फिर से बहाल करने का प्रस्ताव रखा। पर अब और लोग भी मेरी पुस्तक छापने के लिए तैयार थे। मैंने महसूस किया कि अब मौक़ा है चौपाया बनकर दान्त दिखाने का। मैं लालची सट्टेबाज नहीं हूं, प्योदोर, हालांकि वस्तुगत दृष्टि से शायद मै हूं। मैं केवल उन्हीं नियमों के अनुसार जी सकता हूं और संघर्ष कर सकता हूं जिन्हें यहां पर व्यवहार का उचित प्रतिमान माना जाता है।

"मैं नहीं चाहता कि तुम यह समझो कि पैसा मेरे लिए भगवान है, हालांकि इस वक्त मैं पैसे की जरूर पूजा करता हूं क्योंकि मुझे इसकी ज़रूरत है। मैं अपनी ओर से एक और किताब प्रकाशित करना चाहता हूं–तुम जानते हो,–'स्वप्न और आंकड़े' जिसका मैंने प्योत्र तेरेन्त्येविच को वचन दिया था।

"मैंने मुतालिबा किया कि प्रकाशक मेरे सारे नुक़्सान को पूरा करें, जो मुझे बिलाक़सूर अपना सामान जल्दी में बेचकर उठाना पड़ा था। इस के बाद, और अभी भी चौपाये की मुद्रा में, मैंने मांग की कि मौलिक क़रार के अन्तर्गत मुझे जितनी रक़्म दी जानी थी, अब मुझे उससे दुगनी रक़्म दी जाय और उसी शाम नक़द या चैक के रूप में अदा की जाय।

"जब तक यह काम पूरा नहीं हो गया, मैं क़लम उठाकर तुम्हें पत्र लिखना मुनासिब नहीं समझता था। मैंने फ़ौरन तुम्हें पत्र नहीं लिखा क्योंकि पाण्डुलिपि ने अभी पुस्तक का रूप नहीं लिया था। जहां हर बात इतनी 'महाद्वीपीय' हो, वहां अपनी स्थिति के बारे में मनुष्य को कभी भी दृढ़ विश्वास नहीं हो पाता। जल-वायु। बदलती मनस्थिति। फिर भी, अब किताब तख़्तों पर पहुंच गयी है, और कोई भी आंधी उसे पाठकों के हाथों से उड़ाकर नहीं ले जा सकती। वह जीती है, बोलती

है, और मैं अंग्रेजी पंक्तियों के बीचोंबीच रूसी पंक्तियां लिख रहा हूं ताकि तुम्हें यक़ीन हो जाय कि हम एल्ब नदी पर मिलने के बाद निरर्थक ही गोरामिल्का के तट पर नहीं मिले थे।

"मैं जानता हूं तुम चाहोगे कि पुस्तक में और भी बहुत कुछ जोड़ा गया होता। लेकिन पुस्तक में तुम्हें ऐसी कोई बात नहीं मिलेगी जिसे तुम उसमें नहीं देखना चाहते।

"सामाजिक चेतना के पकने की रफ़्तार के बारे में मैं हमारे वार्तालाप को नहीं भूला हूं, तुम भले ही भूल गये हो। तुम्हारे शब्द अभी भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं। यह उस इतवार के दिन की बात है जब जंगल के अन्दर छोटे-से मैदान में उस मोलोकानवादी ने – उसका नाम लेने से मुझे घिन उठती है, जबकि वही नाम एक ऐसे व्यक्ति का भी है जिसका मैं हृदय से आदर करता हूं – चम्मच के साथ सारा का सारा केवियार हड़प लिया था।

"मैं सोचता हूं ... पर इस बारे में तुम्हें मिलने पर बताऊंगा। अगले वसन्त मुझे अपनी किताव के बारे में तुम्हारी टिप्पणियां सुनने का अवसर मिलेगा। मैं फिर रूस की यात्रा करने का इरादा रखता हूं।

"तुम्हारी मितभाषिनी सुन्दर पत्नी तथा बच्चों को मेरी ओर से और सारे टेनर-परिवार की ओर से सर्वोत्कृष्ट अमरीकी प्रशंसा शब्द और झुककर रूसी अभिवादन। प्योत्र तेरेन्त्येविच, (वह तो भी मेरा शिक्षक है), दार्या स्तेपानोव्ना, कात्या, दुदोरोव, स्मेतानिन, माननीय किरील तुदोयेव और उनकी पत्नी मिसिज़ तुदोयेवा को जो अब अमेरिका-भर में मशहूर हो गयी है, हार्दिक अभिवादन। अन्द्रेई लोगिनोव को भी ... और वहां के उन सभी लोगों को जिनसे मैं प्रेम करने लगा हूं और जो संभवत: मन ही मन मुझ पर अभी हंस रहे होंगे। जैसा बोवोगे, वैसा काटोगे।

तुम्हारा बातूनी जॉन, नवम्बर ५९
हडसन दृश्यवाला कैम्प-बेट्सी
मेरे अध्ययन-कक्ष की पूर्वी दीवार पर

तुम्हारे छवि-चित्र सहित"।

पत्र के नीचे छोटा-सा अतिरिक्त अंश लिखा था:

"पुनश्च। तुम शायद हैरान हो रहे हो कि मैंने भेड़िये का ज़िक्र नहीं किया। मैं उन्हीं पन्नों पर उसकी संगति बरदाश्त नहीं कर सकता था।

साथ जोड़े गये पन्नों को पढ़ो। और फिर इन्हें अन्य सभी लोगों को भी पढ़ने के लिए देना। वे एक तरह के उपसंहार हैं, और शायद पेलागेया कुज़्मीनिश्ना तुदोयेवा उनका प्रयोग कर सकेगी"।

५७

"एक सच्चा अमरीकी पत्रकार होने के नाते, मैं मानता हूं कि रोचक बनने के लिए एक पत्र में भी कहानी का सा कथानक होना चाहिए। मुझे आशा है कि बख़्रूशी के सभी मित्रों के लाभ के लिए लिखा मेरा यह पत्र इस दृष्टि से सराहा जायेगा।

"तो, सुनो ...

"न्यू-यार्क के एक सांध्यकालीन अख़बार में छोटे अक्षरों में आत्महत्याओं की ख़बरों में एक ख़बर छपी थी (कतरन साथ भेज रहा हूं) और उसमें कहा गया था कि पुलिसमैन हेनरी फ़िशमैन ने, ब्रुकलिन पुल पर, रात की ड्यूटी के समय, एक आदमी को नदी में कूदते देखा। आत्महत्या करनेवाले व्यक्ति ने कूदने से पहले अपना कोट उतार दिया। पुलिसमैन को कोट के जेब में से कुछेक काग़ज़ात मिले जिनमें बिना सरनामे के एक पत्र भी था जिस पर केवल एक पंक्ति लिखी थी— "भगवान मेरा निर्णय करें"। काग़ज़ात पर त्रोफ़ीम त० बख़्रूशिन, फ़ार्मर, लिखा था।

"मिस्टर भेड़िये की रवानगी पर अख़बार में कोई टिप्पणी नहीं की गयी थी। लेकिन यदि 'शीत युद्ध' सेवा के किसी संवाददाता को इस घटना का ब्योरा देना होता तो वह फ़ार्मर की मौत का कारण

सोवियत संघ की उसकी हाल की यात्रा ही बताता, जहां उपरोक्त सज्जन को कम्युनिस्ट प्रोपेगेण्डा का विष खिलाया गया था, जिसके फलस्वरूप वह पटरी पर से उतर गया, रास्ता भटक गया, और अन्त में ब्रुकलिन पुल पर से कूदकर मर गया।

"उसके बाद उन ख़तरों के बारे में निष्कर्ष निकाला गया होता जो एक समझदार आदमी को (और मृत व्यक्ति आजीवन समझदार रहा था) सोवियत संघ की यात्रा करने और कम्युनिस्ट विचारों के विनाशकारी प्रभाव का शिकार बनने में उठाने पड़ते हैं जिनका अस्थिर स्वभाव के लोगों पर बहुत गहरा असर पड़ता है।

"कुछ लोग इसपर विश्वास कर लेते।

"यदि धर्मनिष्ट एल्सा से इस विषय पर भेंट की जाती तो वह कहती कि भगवान ने उसकी हार्दिक प्रार्थना स्वीकार करके और बिना तनिक भी वक़्त खोये उस आदमी को सज़ा दी है।

"एल्सा ने, न जाने किस को धोखा देने के लिए—अपने को या अपने भगवान को—मुझे बताया कि उसके पति राबर्ट को स्वर्ग पहुंचाने में त्रोफ़ीम का शायद हाथ रहा हो। यह विचार एल्सा के मन में अभी आया था जब उसे त्रोफ़ीम के असली रूप को देखने का अवसर मिला।

"हड़ियल बुढ़िया डायन परलोक में अपने पति से मिलने की ख़ुद भी तैयारी कर रही है। मेरे साथ बातें करते हुए प्रकटतः वह पति के साथ अपनी आगामी भेंट का पूर्वाभ्यास कर रही थी और आशा करती थी कि मछली से जहर पहुंचने के बारे में अगर उसके पति के मन में कोई शक रह गया हो तो उसे वह दूर कर देगी।

"इसके बाद मैं एल्सा के दामाद, यूजीन से मिला। जेबों में हाथ डाले, शेख़ीबाज़ों की मुद्रा में खड़े उस आदमी को देखकर मुझे अक्षर 'फ़' की याद हो आयी, जिससे फ़ेशनपरस्त शब्द बनता है, और इस अक्षर से शुरू होनेवाले अन्य मुनासिब शब्द भी बनते हैं।

"नेवले-सा यह आदमी मुझसे कहने लगा कि बुढ़ऊ उसके डर के मारे पुल पर से कूद गया था।

"'वह हमेशा मुझ से ख़म खाता था। डरता था कि फ़ार्म में मैं उसपर हुक्म चलाने लगूंगा। डरता था कि मैं उसके मुकाबले में बहुत ज़्यादा चुस्त-चालाक हूं और फ़ार्म को ज़्यादा नये तरीक़ों से चलाऊंगा। और जब उसने हमें धोखा देकर पहले फ़ार्म को ख़रीदा और फिर बेच दिया, तो वह डरने लगा कि मैं उसे छोड़ूंगा नहीं। मैं उसे फटकाई-मशीन में डालकर उसके टुकड़े टुकड़े कर देता, या कुन्द चाकू से उसकी गर्दन काट डालता।'

"यूजीन ने भयंकर और कराल दिखने की कोशिश की, लेकिन वह केवल एक भूखे गीदड़-सा दिख पाया जो भेड़ियों द्वारा छोड़ी गयी बची-खुची बोटियां चबा रहा हो।

"पर उसकी पत्नी, एल्सा की बेटी, ऐन्नी के दान्त अभी से तेज़ हो रहे हैं और यह ख़ूब पला हुआ तेंदुआ बन गयी है, बोली—

"'मुझे अफ़सोस है कि मैं उसके तम्बाकू में कोई ऐसी गैसरूपी चीज़ नहीं मिला पायी जिस से उसकी आन्तड़ियां ही जल जातीं। तब हमारे साथ यह बात नहीं होती। जो लोग रास्ते का रोड़ा बने हों, उन्हें हटा देना चाहिए, पेश्तर इसके कि वे तुम्हारी ज़िन्दगी को ख़राब करें।'

"जैसा कि तुम देख रहे हो उसकी विचार-रचना में फ़ासिस्टवाद के भूरे धब्बे साफ़ नज़र आते हैं। अपने गिरोह के नेताओं से पिण्ड छुड़ाने के उसके तरीक़े उसकी मां के तरीक़ों से ज़्यादा सुरुचिपूर्ण हैं।

"पुरानी ठग-मण्डली के सभी सदस्यों से क्रमिक रूप से परिचय प्राप्त करते हुए मैं मिस्टर भेड़िये के धर्म-भाई के पास जा पहुंचा, उस व्यक्ति के पास जिसकी हिफ़ाज़त में 'जेनरल मोटर्स' के हिस्से रखे गये थे।

"यह आदमी त्रोफ़ीम पर बौखला रहा था क्योंकि फ़ार्म के नये मालिक ने इसे नौकरी से बर्ख़ास्त कर दिया था, त्रोफ़ीम को वह चोर कहकर पुकारता था, जिसने फ़ार्म के मुनाफ़ों को छिपाये रखा और उपरोक्त हिस्सों में लगा दिया।

"'मैंने ही उसके पापी जीवन का अन्त किया,' उसके धर्म-भाई ने कहा, 'वह डरता था कि अगर यह भेद निकल गया तो वह क़ानून की गिरफ़्त में आ जायेगा। वरना वह मुझे दो हज़ार डालर देकर ख़रीदने की कोशिश क्यों करता? वह सस्ते में छूटना चाहता था। नौकरी छूट जाने के मुआवज़े के रूप में मैंने वह धन ले लिया और यूजीन और एल्सा को जाकर बता दिया कि किस भांति त्रोफ़ीम फ़ार्म को लूटता रहा था। नौकरी छूट जाने और सिर पर से घर का आश्रय छूट जाने के बाद मेरे पास खोने को और कोई चीज़ नहीं रह गयी थी।'

"प्राणि-शास्त्र के क्षेत्र में इस मोलोकानवादी सज्जन से मिलता-जुलता कोई जन्तु ढूंढ़ पाना आसान नहीं है। मैं सोचता हूं उसे उन रेंगनेवालों की श्रेणी में रखना चाहिए जो छूने पर डंक मारते हैं।

"पुल पर से कूदने की घटना का उस प्रकाशन गृह के चीफ़ ने बड़ा रोचक और प्रभावशाली ब्योरा दिया, जिसे त्रोफ़ीम की पुस्तक के कारण – जो अब रद्दी बराबर रह गयी थी – नुक़्सान उठाना पड़ा था। इस चीफ़ को भेड़िये का नाम देने का किसी के मन में भी विचार नहीं उठेगा। बल्कि उसकी कार्रवाइयों और बयानों के धारीदार स्वरूप को देखते हुए वह एक बाघ से ज़्यादा मिलता-जुलता था। गर्म और सर्द। "हां" और "ना"। काला और सफ़ेद . . . संक्षेप में, सभी परस्पर-विरोधी तत्त्व उतने ही स्वाभाविक ढंग से शिकारी जानवर की रचना करते हैं, जितने स्वाभाविक ढंग से बाघ की खाल पर रक्षात्मक धारियां बनती हैं। उसे बाघ बुलाने का एक और कारण यह भी है कि वह बड़ी ख़ूबसूरत छलांगें लगाता है, और पंजों के नर्म नर्म गद्दों में अपने नाख़ून छिपा सकता है और वक़्त आने पर उन्हें अपने शिकार के शरीर में गहरा घुसेड़ सकता है।

"क्या उसने अपने नाख़ून मेरे शरीर में नहीं घुसेड़े थे जब काली धारियां सबसे ऊपर थीं? क्या अपवादिक पुस्तक का वह प्रधान स्रष्टा नहीं था, जो क़रीब क़रीब छप चुकी थी, एक ऐसी पुस्तक जिसके प्रत्येक पन्ने पर त्रोफ़ीम ने हस्ताक्षर किया था मानो वह कोई क़ानूनी दस्तावेज़

हो ? और अब चूंकि बाघ अपनी सफ़ेद धारियां उघाड़कर दिखाने के लिए बाध्य था, उसने अपने नाखून त्रोफ़ीम में घुसेड़े, यह घोषणा करते हुए कि कंपनी क़रीब क़रीब गुमराह हो गयी थी।

"बाघ ने मेरे साथ समझौता करने की कोशिश की, कहने लगा कि 'एक ही ग्रह के दो पक्ष' शीर्षक मेरी किताब बिल्कुल वस्तुपरक है, हालांकि वस्तुपरक सत्य में उसकी रत्ती-भर भी दिलचस्पी नहीं है। उस समय सोवियत संघ के बारे में वस्तुपरक सत्य एक बिकने लायक चीज़ थी, साथ ही अपने नाखून छिपाने का एक तरीक़ा भी। मैं एक क्षण के लिए भी यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि बाघ पालतू बन गया है। उसे केवल इस बात की जरूरत थी कि अगली छलांग लगाने से पहले, कार्यनीति की दृष्टि से उसे थोड़ा विराम मिल जाय। और इस बात का श्रेय मुझे है कि मैं उस विराम से लाभ उठा पाया और अपनी किताब छपवा ली।

"वक़्त आ सकता है जब मुझे फिर एक 'अपवाद फैलानेवाले' के रूप में और मिस्टर भेड़िये को वीर नायक के रूप में देखा जायेगा, जिसने संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में स्वतन्त्र संसार के लिए अपनी जान दे दी।

"परन्तु इस समय कंपनी का चीफ़ हर बात का दोष भेड़िये पर लगा रहा है। उसने मुझ से कहा—

"'हमारे वकील ने उसे जाल में फांस लिया और उसके सामने दो ही विकल्प थे, या तो वह धन जो उसने छल-कपट से कंपनी से वसूल कर लिया था, 'जेनरल मोटर्स' के हिस्सों समेत वापिस करे या फिर जेल में जाय।'

"इस तरह जूडास न केवल चांदी के अपने तीस सिक्के खो बैठा, बल्कि उन झूठों की छपाई का ख़र्च भी पूरा करने पर बाध्य हुआ, जिन्हें अन्य लोगों की सहायता से उसने गढ़ा था।

"भेड़िये को ज़रूर पिंजरे में बन्द कर दिया जाता। अदालत भी उसका पक्ष नहीं लेती। न ही जन मत के निर्माता उसका पक्ष लेते जो इस समय, मैत्री और शान्ति के लीडर के रूप में अमरीकी जनता के

साथ ख्रुश्चोव की मुलाक़ातों के फलस्वरूप होनेवाली प्रतिक्रियाओं के बाद अपने पर सफ़ेदी पोतना ज्यादा लाभप्रद समझते हैं।

"यह दौरा सारे अमेरिका के लिए, आबादी की सभी श्रेणियों, वर्गों, तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटना था। उनको शायद पहली बार इस बात का पता चला कि संयुक्त राज्य अमेरिका की जीवन-प्रणाली से विभिन्न भी एक प्रणाली दुनिया में है। अन्य लोग जो यह जानते तो थे लेकिन जिनके मन में संशय थे, उस अस्थिरता की स्थिति से निकल आये जिसमें वे रहते आये थे। और उन लोगों को जिन्हें सब कुछ मालूम था, और जो हर बात को समझते थे, पता चल गया कि ख्रुश्चोव के पीछे, न केवल उनके अपने देश में बल्कि अमेरिका में भी शक्तियां मौजूद थीं। आख़िर लोगों ने उनकी प्रशंसा की थी, उन के प्रति सद्भावना प्रगट की थी। और उन्होंने इसलिए सद्भावना नहीं व्यक्त की थी कि उसे वापिस ले लेंगे, भले ही बाद में कुछ लोग मिस्टर ख्रुश्चोव की अमेरिका-यात्रा के महत्त्व को कम करने या मिटाने की कोशिश करें, जिस प्रयोजन के लिए अमेरिका की सारी की सारी प्रोपेगेण्डा-मशीन चालू की जायेगी।

"जिस समय लोगों को पता चला कि पृथ्वी सूर्य के इर्द-गिर्द घूमती है, तो यह जानकारी केवल कुछेक व्यक्तियों तक सीमित थी। लेकिन जब अंधकारवादियों ने इस तथ्य को मानने से इन्कार कर दिया और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे कि पृथ्वी तीन मगरमच्छों की पीठ पर खड़ी है, तब लोगों के मन में सन्देह पैदा हुआ। प्रोपेगेण्डा ने अपने ही प्रयोजन को परास्त किया – लोग इस बात के प्रति सचेत हुए जिसे मानने से अंधकारवादी इन्कार करते थे। और इन्कार करने की जितनी ही ज्यादा उन्होंने कोशिश की उतने ही अधिक वे लोगों के मन में संशय पैदा करते गये।

"पर चलिये, भेड़िये की ओर लौट चलें।

"मैं यह दिखाने के लिए इससे कहीं ज़्यादा साक्ष्य पेश कर सकता हूं कि धूसर भेड़िये का उपनाम और भी अधिक संख्या में लोगों पर उचित रूप से लागू किया जा सकता है जिनका नाम यहां लिया गया

है तथा नहीं लिया गया। संभवतः, विस्तृत अर्थों में धूसर भेड़िये का विचार इससे कहीं ज़्यादा विस्तृत चीज़ पर लागू किया जा सकता है, एक ऐसी चीज पर जो कुछेक देशों की जीवन-पद्धति है . . . लेकिन मोटे सामान्यीकरणों से मुझे प्रेम नहीं है। ब्रुकलिन पुल पर से भेड़िये की छलांग के बारे में कोई मेरी राय जानना चाहे तो मैं कहूंगा कि उसने छलांग बिल्कुल नहीं लगायी थी। मैं यह केवल इसलिए नहीं कहूंगा कि मेरी सीमित सहजबुद्धि बताती है कि ऐसा साहसिक कार्य करने का उसमें दम नहीं है, इसलिए नहीं कि मैं झुठलाने की उसकी पहली कार्रवाई के बारे में जानता हूं जब उसने बहाना बनाया था कि वह ओम्स्क के निकट मारा गया था। मैं इसलिए कहूंगा कि जिस सावधानी से अपनी मौत के बारे में वह भौतिक गवाही छोड़ गया था वह मुझे सन्दिग्ध जान पड़ती है। उसे अपना कोट क्यों फेंक जाना चाहिए था जिस में काग़ज़ात और वह चिट्ठी रखी थी, जिस पर भले ही सरनामा न हो लेकिन जो प्रत्यक्षतः उसके लेनदारों के लिए थी?

"समस्या के बारे में अत्यधिक मौलिक दिमाग़ से न सोचते हुए, मैं उस धन के बारे में हैरान हुए बिना नहीं रह सकता जो उसने फ़ार्म की बिक्री और 'जेनरल मोटर्स' के हिस्सों के रूप में प्राप्त किया था, जिनको उसने संसार में किसी को वसीयत नहीं किया, परलोक में अपनी आत्मा के उद्धार के लिए भी नहीं।

"उस धन का क्या हुआ? वह सारे डालर और हिस्से अपने साथ परलोक में तो नहीं ले गया था, सेंट पीटर की मुट्ठी गर्म करने के लिए कि वह उसे स्वर्ग में दाख़िल होने दे? उसे इस बात का यक़ीन नहीं हो सकता था कि स्वर्ग में इस तरह की रिश्वतख़ोरी चलती है, और दूसरे कि वहां अमरीकी डालरों और 'जेनरल मोटर्स' के हिस्सों को मान्यता प्राप्त है।

"और इस तरह मैंने पोलीसमैन हेनरी फ़िशमैन से दू-बदू बात करने की ठानी जो उस आत्महत्याकारी छलांग का एकमात्र गवाह था,

जिसका उसने शाम के अख़बार के संवाददाता के सामने ब्योरा दिया था।

"उससे वाकफ़ीयत गांठने में मुझे कोई दिक़्क़त नहीं हुई। हेनरी फ़िशमैन को मैंने पुल पर पाया, और एक भावी ख़ुदकुशी करनेवाले की डांवांडोल-सी मुद्रा धारण करके मैंने उसका ध्यान आकृष्ट किया। हम बातें करने लगे। मैंने उसे बताया कि जीवन को बिना त्यागे उसमें से निकल जाना चाहता हूं। भोले हेनरी ने कहा–'अरे, पिछले एक हफ़्ते में यह दूसरी घटना है . . .'

"इस उत्तर से मैं सब कुछ समझ गया। लेकिन मैं और अधिक जानना चाहता था। ड्यूटी ख़त्म होने पर हम बेकन, अण्डों और व्हिस्की शराब के साथ आराम से बतियाने के लिए गये। और जब हेनरी को पता चला कि मैं बाज़ार में अच्छे कथानकों का ख़रीदार था तो उसने उस तरह के माल की मूल्य-सूची में काफ़ी दिलचस्पी ज़ाहिर की। व्हिस्की से और जिस फ़ीस का मैंने उसे वचन दिया उससे वह खिल उठा और कहने लगा कि उसके किसी बूढ़े सहकर्मी ने किसी ख़ास पुल पर से छलांग लगाने की गवाही देने के लिए एक बूढ़े सज्जन से तीन हज़ार रूबल वसूल किये थे। कूदनेवाले ने 'आत्महत्या' से पहले पांच सौ डालर और बाद में, अख़बारों में उसकी 'मौत' की ख़बर छप जाने के बाद बकाया अढ़ाई हज़ार डालर अदा किये थे। हेनरी ने मेरी अपनी छलांग के लिए भी इसी प्रबन्ध का प्रस्ताव रखा।

"मैंने उसका शुक्रिया अदा किया, यह कहते हुए कि मुझे कहानी की ख़ातिर ही केवल इस मामले में दिलचस्पी थी, और उसकी फ़ीस अदा कर दी।

"अब पेलागेया कुज़्मीनिश्ना तुदोयेवा कथा को जैसे ठीक समझे वैसे समाप्त कर सकती है। भेड़िया भेड़ियों जैसी मौत मरा, या उसने ओम्स्कवाली चालाकी को न्यू-यार्क की तर्ज़ में दोहराया, और अजनबी देशों में भटकता हुआ तिल तिलकर मरा, इससे, जहां तक मेरा ताल्लुक है, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। न ही, प्यारे दोस्तो, मैं सोचता हूं, इससे आपको कोई फ़र्क़ पड़ता है।

सदैव तुम्हारा, जे० टी०"

५८

दो सप्ताह बाद स्तेकोल्निकोव को वह पुस्तक मिली जिसका टेनर ने वचन दिया था। प्योत्र तेरेन्त्येविच को भी उसकी प्रति मिली। और इससे पहले दार्या स्तेपानोव्ना को सेर्गेई के लिए खिलौनों का पार्सल मिला।

दार्या स्तेपानोव्ना अपने पोते को ये खिलौने ऐसे ढंग से दे सकती थी जिससे सेर्गेई को भूला हुआ "ग्रेंड-पा" याद नहीं आता। इन अच्छे अमरीकी खिलौनों को ज़ाया करते हुए खेद होता था! लेकिन इसमें दार्या स्तेपानोव्ना के लिए भी और सेर्गेई, दोनों के लिए भी कुछ अपमानजनक बात थी। प्योत्र तेरेन्त्येविच से मशविरा करने के बाद उसने खिलौने किण्डरगार्टन में भेज दिये। बख़्रूशी के किण्डरगार्टन में नहीं, दूर-पार के एक सामूहिक फ़ार्म के किण्डरगार्टन में।

टुन-टुन करनेवाली घड़ी भी जो पार्सल में आयी थी, उसने किरील तुदोयेव को यह कहकर दे दी—

"उस यन्त्रणा के लिए जो त्रोफ़ीम के कारण तुम्हें सहनी पड़ी। आख़िर, उसके कारण तुम्हें अपने जीवन का एक महीना फ़िज़ूल में खोना पड़ा।"

तुदोयेव ने यह कहते हुए घड़ी ले ली—"मैं इसे पहनूंगा नहीं, हां यों किसी काम आ सकती है . . ."

और वह तुदोयेव के नहीं, पेलागेया के काम आयी।

धूसर भेड़िये के बारे में अपनी कथा का रंगीन ताना-बाना बुनते हुए, पेलागेया बार बार उसे, लम्बी शामों में फुसफुसाकर दोहराती लेकिन उसका मुनासिब अन्त उसे नहीं मिल रहा था।

और तब यह घड़ी घर में आ गयी, और सहसा एक अन्धेरी, निस्तब्ध रात में, घड़ी ने टुनटुनाकर पेलागेया के कान में कथा का अन्त सुना दिया, जिसे बाद में उसने इन शब्दों में व्यक्त किया—

"और विशाल संसार में भेड़िये के पांवों के निशान खो गये। उसके बारे में एक शब्द भी फिर किसी ने नहीं सुना, कभी उड़ती ख़बर भी उसके बारे में किसी के कानों तक नहीं पहुंची। उसका जो कुछ बच रहा था वह थी एक टुनटुनाती घड़ी और धूसर भेड़िये की यह

कथा, जो जीवन के अन्तिम वर्षों में इनसान बनना चाहता था, लेकिन नहीं बन पाया क्योंकि उसके अन्दर का पशु बहुत अधिक बलवान था . . . ''

तुदोयेवा की कथा के अन्त को सुनते हुए, दार्या स्तेपानोव्ना ने एक बार गंभीरता से कहा—

"मैं नहीं जानती कि वह कभी अपनी जन्म-भूमि में आया भी था या नहीं . . . शायद आख़िर यह एक कथा ही थी। अपने देश के साथ ग़द्दारी करने के अक्षम्य पाप की कथा . . ."

१९५९–१९६०

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।